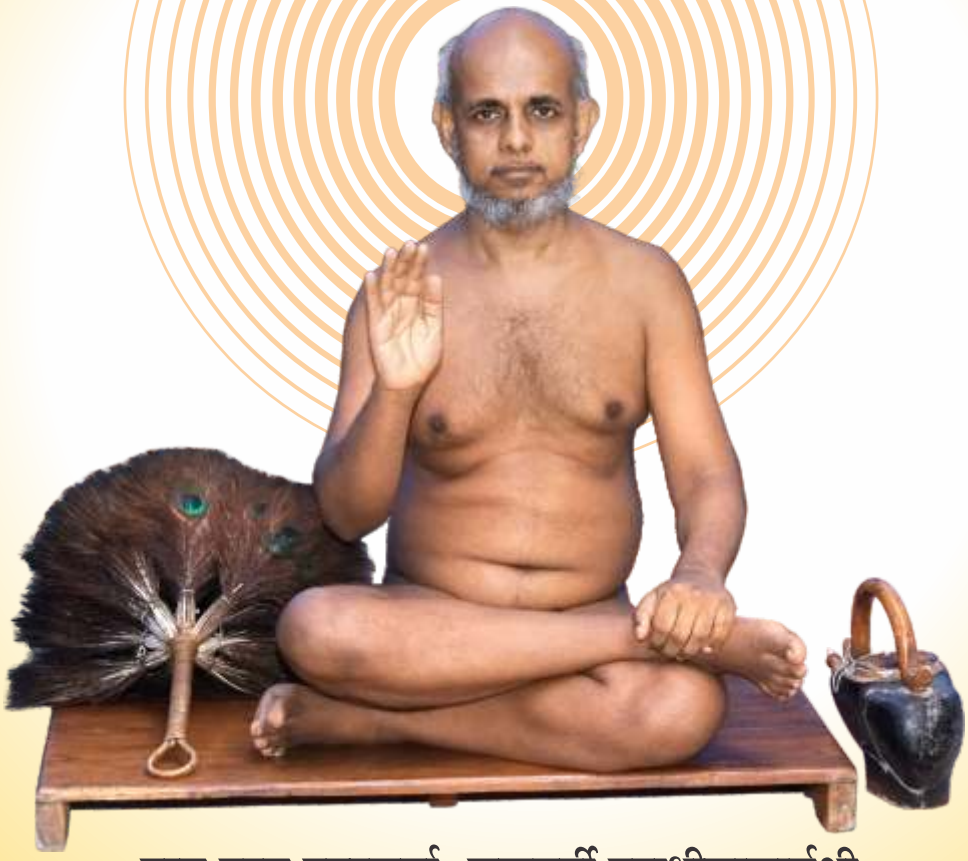

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

त्रैलोक्य विधान

रचयित्री : पूज्या गणिनी-आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी

प्रकाशक
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर-मेरठ (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

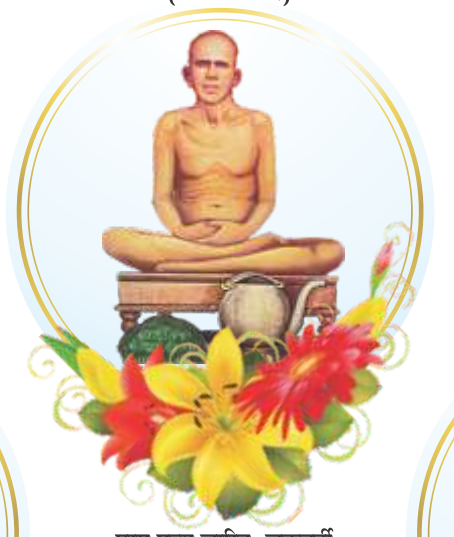

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 93
ISBN 978-93-80353-42-5

त्रैलोक्य विधान

–रचयित्री –

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

ऋषभगिरि मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर विराजमान 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव मूर्ति के निर्माण की प्रेरणास्रोत दिव्यशक्ति परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में आयोजित श्रुतपंचमी पर्व एवं स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी के जन्मदिवस (9 जून 2016) के शुभ अवसर पर प्रकाशित।

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280994

Website : www.jambudweep.org, www.encyclopediaofjainism.com

E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com

Facebook : divyashaktigyanmatimataji

दशम संस्करण	वीर नि.सं. 2542,	मूल्य
500 प्रतियाँ	ज्येष्ठ सुदी पंचमी, 9 जून 2016	140/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

प्रथम संस्करण-1988 से चतुर्थ संस्करण-2004 तक 4400 प्रतियाँ
पंचम संस्करण-2006, 500 प्रतियाँ, षष्ठ संस्करण-2008, 1100 प्रतियाँ,
सप्तम संस्करण-2010, 1100 प्रतियाँ, अष्टम संस्करण-2012, 500 प्रतियाँ,
नवम संस्करण-2014, 500 प्रतियाँ प्रकाशित

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

अनुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
	मंगलाचरण	1
	मंगलाष्टक स्तोत्र	1
	चैत्य भक्ति	2
	पूजाएं	
1.	नवदेवता पूजन	5
2.	भगवान महावीर पूजा	9
3.	त्रैलोक्य जिनालय पूजा	14
4.	भवनवासी जिनालय पूजा	19
5.	मध्यलोक जिनालय पूजा	33
6.	सुदर्शन मेरु पूजा	38
7.	जम्बूद्वीपस्थ जम्बूवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा	46
8.	जम्बूद्वीप पर्वत जिनालय पूजा	52
9.	विजयमेरु पूजा	70
10.	पूर्वधातकीखंड धातकीवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा	79
11.	पूर्वधातकीखंड पर्वत जिनालय पूजा	85
12.	अचलमेरु पूजा	105
13.	पश्चिमधातकी खंडस्थ धातकीवृक्ष शल्मलीवृक्ष जिनालय पूजा	116
14.	पश्चिमधातकीखंड जिनालय पूजा	119
15.	धातकीखंडद्वीप इष्वाकार जिनालय पूजा	138
16.	मंदर मेरु पूजा	144
17.	पूर्वपुष्करार्धद्वीप पुष्करवृक्ष शाल्मलि	152
18.	पूर्वपुष्करार्ध पर्वत जिनालय पूजा	158
19.	विद्युन्माली मेरु पूजा	175
20.	पश्चिमपुष्करवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा	183
21.	पश्चिमपुष्करार्ध पर्वत जिनालय पूजा	190
22.	पुष्करार्धद्वीप इष्वाकर जिनालय पूजा	207
23.	मानुषोत्तर जिनालय पूजा	213

24.	नंदीश्वरद्वीप जिनालय पूजा	220
25.	कुंडलगिरि जिनालय पूजा	235
26.	रुचकगिरि जिनालय पूजा	241
27.	व्यंतरदेव जिनालय पूजा	247
28.	जयोतिष्कदेव जिनालय पूजा	260
29.	वैमानिक देव जिनालय पूजा	269
30.	सिद्ध शिला जिनालय पूजा	278
31.	कृत्रिम जिनालय पूजा	288
32.	भगवान बाहुबली पूजा	296
	त्रैलोक्य जिनचैत्य वंदना	301
	(बड़ी जयमाला)	
	श्री त्रैलोक्य विधान प्रशस्ति	304
	आरती	305
	भजन	306

प्रस्तावना

श्री गौतमस्वामी समवसरण में प्रवेश कर सर्वप्रथम भगवान महावीर का दर्शन करते ही भक्ति में विभोर हो गद्‌गद् वाणी में प्रभु का स्तवन करते हुये बोले–

"जयतु भगवन् हेमाम्भोज प्रचारविजृंभितै" हे भगवन् आपकी जय हो जय हो, इत्यादि। इस चैत्यभक्ति में श्री गौतमस्वामी ने भगवान् महावीर की स्तुति करके अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, जिनधर्म, जिनागम, जिनचैत्य और चैत्यालय इन नवदेवताओं की स्तुति की है। पुनः जिनचैत्य अर्थात् जिन प्रतिमा इनकी विशेष रूप में वंदना की है। इसीलिए इस भक्ति का चैत्यभक्ति नाम सार्थक है। जिन मन्दिर और जिनप्रतिमायें अकृत्रिम अनादिनिधन तीनों लोक में है तथा कृत्रिम इस ढाई द्वीप की पंद्रह कर्मभूमियों में ही है। इन पंद्रह कर्मभूमियों में पांच विदेह के एक सौ साठ भेद हो जाने से एक सौ सत्तर कर्मभूमियां हो जाती हैं। इन कर्मभूमियों में ही अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु ये पांच परमेष्ठी एवं जिनधर्म, जिनागम रहते हैं तथा कृत्रिम जिनचैत्य, चैत्यालय भी यहीं होते हैं।

इस त्रैलोक्य विधान में भी मुख्य रूप से तीनों लोकों के अकृत्रिम जिनचैत्य, चैत्यालयों की पूजा हैं तथा संक्षेप में कृत्रिम मन्दिर व प्रतिमा की भी पूजा है। इसे 'लघु त्रैलोक्य विधान' भी कह सकते हैं। इसमें बत्तीस पूजायें हैं।

पूजायें	अर्घ	पूर्णार्घ
1. भगवान महावीर पूजा	5	0
2. नवदेवता पूजा	0	0
3. त्रैलोक्य जिनालय पूजा	0	0
4. भवनवासी जिनालय पूजा	30	4
5. मध्यलोक जिनालय पूजा	0	0
6. सुदर्शन मेरु पूजा	16	3
7. जम्बूवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा	2	2
8. जम्बूद्वीप पर्वत जिनालय पूजा	60	4

9. विजयमेरु पूजा	16	3
10. धातकी वृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा	2	2
11. पूर्वधातकी पर्वत जिनालय पूजा	60	4
12. अचलमेरु पूजा	16	3
13. धातकी शल्मली वृक्ष जिनालय पूजा	2	2
14. पश्चिमधातकी पर्वत जिनालय पूजा	60	4
15. इष्वाकार जिनालय पूजा	2	2
16. मंदर मेरु पूजा	16	3
17. पुष्कर वृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा	2	2
18. पूर्वपुष्करार्ध पर्वत जिनालय पूजा	60	4
19. विद्युन्माली मेरु पूजा	16	3
20. पुष्कर शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा	2	2
21. पश्चिम पुष्करार्ध पर्वत जिनालय पूजा	60	4
22. इष्वाकार पर्वत जिनालय पूजा	2	2
23. मानुषोत्तर पर्वत जिनालय पूजा	4	2
24. नंदीश्वरद्वीप जिनालय पूजा	52	2
25. कुंडलगिरि जिनालय पूजा	4	2
26. रुचकगिरि जिनालय पूजा	4	2
27. व्यंतर देव जिनालय पूजा	24	6
28. जयोतिष देव जिनालय पूजा	10	2
29. वैमानिकदेव जिनालय पूजा	14	3
30. सिद्ध शिला जिनालय पूजा	16	1
31. कृत्रिम जिनालय पूजा	15	1
32. भगवान बाहुबली पूजा	0	0

इस प्रकार इस विधान में पांच सौ सड़सठ (567) अर्घ व चौहत्तर (74)

पूर्णार्घ्य हैं। जो कि कुल 641 हैं। बत्तीस पूजायें व तैंतीस जयमालायें हैं। अधोलोक में भवनवासी देवों के भवनों में जिनमन्दिर 7 करोड़ 72 लाख है। मध्यलोक में 458 अकृत्रिम जिनमन्दिर हैं और ऊर्ध्वलोक में 84967023 जिन मन्दिर हैं। अधोलोक व मध्यलोक में व्यंतर देवों के जिनमन्दिर असंख्यात हैं तथा ज्योतिष देवविमानों के जिनमन्दिर भी असंख्यात हैं। इस विधान में संक्षेप में इन सबकी पूजा है।

त्रैलोक्य विधान की विधि—जिस महीने में भी विधान करना हो तो शुभमुहूर्त में झण्डारोहण करके अंकुरारोपण, जलयात्रा, वेदी शुद्धि करके बिधान करना चाहिए। इसमें जिन मन्दिर या बड़े से पांडाल में सर्वप्रथम भगवान की वेदी बनाकर उसके सामने तीनलोक का मण्डल मांडना चाहिए। इस मण्डल के बीच में ऊंची चौकी पर गंधकुटी रखकर सिंहासन में जिन प्रतिमा विराजमान करना चाहिए। इस मण्डल को चंदोवा, तोरण, वंदनमाला, छत्र, चंवर आदि से अच्छी तरह सजाना चाहिए। मण्डल पर यथास्थान पांचमेरु स्थापित करने चाहिए और सामने मण्डल पर आठ मंगलद्रव्य रखने चाहिए। जिन मन्दिर या पांडाल को भी अच्छी तरह सजाकर मण्डल के एक धूपघट व एक तरफ अखंडद्वीप रखना चाहिए।

पूजन करने वाले इंद्र इंद्राणी एक सदृश केशरिया वस्त्र पहनकर हार मुकुट आदि से सुसज्जित हो इंद्र सदृश दिखने चाहिए। पूजन की सामग्री में मण्डल पर अर्घ्य, पूर्णार्घ्य, जयमाला में श्रीफल नारियल चढ़ाना चाहिए। तथा पूजन की सामग्री में आठों द्रव्य सुन्दर और वास्तविक रखने चाहिए।

जाप्यानुष्टान—इस विधान में इन दो जाप्यों में से किसी भी एक जाप्य का सवा लाख जाप्य करना चाहिए।

(1) ॐ ह्रीं असि आ उ सा सर्व जिनालय जिन प्रतिमाभ्यो नमः।

(2) ॐ ह्रीं अर्हं कृत्रिमाकृत्रिम सर्वजिनालय जिनप्रतिमाभ्यो नमः।

इनमें से प्रथम 21 अक्षरी मन्त्र है व द्वितीय 24 अक्षरी मन्त्र है।

जाप्य और विधान पूर्ण होने पर तीन कुंड बनाकर शास्त्रोक्त विधि से हवन करना चाहिए। अनन्तर रथयात्रा करके 1008 या 108 कलशों से जिनप्रतिमाजी का महाभिषेक करना चाहिए। अपने विधान में विराजमान आचार्य संघ में मुनि, आर्यिकाओं को पिच्छी दान, शास्त्रदान, आर्यिका, क्षुल्लक आदि को वस्त्रदान आदि देकर चतुर्विध संघ की पूजा करके विधान समापन समारोह करना चाहिए।

पुनः धर्म प्रभावना के लिए पूजन करने वाले व उनके सगे सम्बन्धियों का आपस में सम्मान, वस्त्रदान आदि करके प्रीतभोज आदि का भी आयोजन कर सकते हैं। गरीब, दीन, अंधे, लंगड़े आदि को भोजन, वस्त्र, औषधि आदि करुणा दान भी देना चाहिए।

इस प्रकार विधान करने वाले श्रावक श्राविकायें जिनभक्ति के प्रभाव से इस लोक में सर्व अमंगल, रोग, शोक, दुःख संकट को दूर कर परलोक में अनेक प्रकार के अभ्युदय प्राप्त कर क्रम से निर्वाण सुख को प्राप्त कर लेते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है। इन विधान आदि कार्यों में जितना भी धन खर्चा जाता है वह कुंये के जल के समान दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है और सर्व मनोरथों को पूर्ण करके सर्व मंगल करता है। इस विधान को करने वालों को, कराने वालों की ओर देखने वालों को तो पुण्य मिलता ही है। साथ ही देश में, राज्य में और राष्ट्र में भी क्षेम, सुभिक्ष होता है। अतः हे भव्यजीवों! आप लोग प्रेम से इस विधान को करके अचिन्त्य फल प्राप्त करो। यही मेरी मंगलकामना है।

रत्नत्रयनिलय, जंबूद्वीप **—आर्यिका ज्ञानमती**

हस्तिनापुर

सम्पादकीय

साहित्य धर्म एवं समाज का दर्पण है। साहित्य ही धर्म एवं संस्कृति को जीवित रखने में सक्षम है। साहित्य निर्माण में पूर्वाचार्य पूर्ण सजग रहे हैं। पच्चीस सौ साल में अनेकानेक आचार्य हुए जिन्होंने आत्मध्यान करते हुए ग्रंथों का निर्माण किया। उन्हीं कतिपय ग्रंथों के आधार पर आज हम जैनधर्म को हृदयंगम कर पा रहे हैं।

यदि शास्त्र न होते तो न तो हम आत्मा का अस्तित्व जान पाते, न कर्म सिद्धांत का ज्ञान होता और बिना कर्म व्यवस्था को समझे चतुर्गति रूप संसार से भी अनभिज्ञ ही रहते। शास्त्र तो मानो साक्षात् केवली का ही स्वरूप है। इन्हें पढ़कर हम अपने वर्तमान, भूत, भविष्यत को जान रहे हैं। मात्र केवल जान ही नहीं रहे हैं अपितु हेयोपादेय का निर्णय भी कर रहे हैं।

चार अनुयोग रूप जिनवाणी उपलब्ध है उसी के आधार पर श्रावक एवं साधु दिखाई दे रहे हैं और सभी अपने-अपने अनुरूप मोक्षमार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। प्राचीन आचार्यों ने मूल सूत्र एवं श्लोकों में ग्रंथों की रचना की। बाद के आचार्यों ने उसकी टीकाएं करके उन्हें और स्पष्ट कर दिया। जैसे-जैसे क्षयोपशम घटता गया वैसे-वैसे बाद के आचार्यों ने हिन्दी टीकाएं करके उनका स्वाध्याय और अधिक सुगम बना दिया।

शास्त्रों को सूत्र या श्लोकों में लिखना और उनकी टीकाएं करना दोनों ही कार्य अपने आप में कठिन एवं महत्वपूर्ण होते हैं। पूर्व समय में ग्रंथ थोड़ी मात्रा में ही इसलिए रहे क्योंकि उनकी अधिक प्रतियाँ एक साथ तैयार करने का साधन नहीं था। इस सुविधा के अभाव में अनेक ग्रंथ नष्ट हो गये, उनकी अधिक प्रतिलिपियाँ तैयार नहीं हो सकी।

आज के इस वैज्ञानिक युग में इस कमी की पूर्ति हुई। टाइप प्रिंटिंग, ऑफसेट प्रिंटिंग, साइक्लोस्टाइल, टाइपराइटर, फोटो स्टेट आदि के माध्यम से हजारों प्रतियाँ अति अल्प समय में तैयार की जा सकती है। ग्रंथों की छपाई का कार्य तो सौ-डेढ़ सौ साल से जैन समाज में प्रचलित हुआ है किन्तु इतने साधन बढ़ने के बाद भी उनका पर्याप्त सदुपयोग नहीं हो पा रहा है।

यह तो था साहित्य निर्माण संबंधी इतिहास। पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री

ज्ञानमती माताजी ने इस बीसवीं सदी में साहित्यिक क्षेत्र में अभूतपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है। कातंत्र व्याकरण जैसी छोटी-सी पुस्तक को पढ़कर संस्कृत का महान् ज्ञान अर्जित कर लिया। सन् १९६५ में श्रवणबेलगोल में भगवान बाहुबली के चरणों में बैठकर बाहुबली स्तोत्र ४४ पदों में वसंततिलका छंद में संस्कृत में लिखकर लेखनी को गति दी। उसके बाद लगे हाथ १११ पद्यों में हिन्दी की बाहुबली स्तुति अत्यंत भावपूर्ण अलंकारिक शैली में लिखी। उन्हीं दिनों में माताजी द्वारा कन्नड़ में लिखी गयी बारह भावना आज भी पूरे कर्नाटक प्रान्त में पढ़ी जाती है।

वह दिन था और आज दिन है। एक-एक करके २५० ग्रंथ पूज्य माताजी द्वारा लिखे जा चुके हैं। अष्टसहस्री जैसे दुरूह ग्रंथ की टीका भी की तथा बालविकास जैसी छोटी-छोटी बालोपयोगी पुस्तकें भी लिखी। भक्ति में तन्मय होने वालों के लिए इन्द्रध्वज विधान लिखा तथा आत्मा का आनन्द लेने वालों के लिए नियमसार जैसे महान आध्यात्मिक ग्रंथ की संस्कृत एवं हिन्दी में टीका की। अनेक संस्कृत प्राकृत स्तुतियों का हिन्दी अनुवाद भी अत्यंत रोचक शैली में किया है।

माताजी की कलम को विश्राम नहीं मिलता है। अस्वस्थता के कारण यदि किसी दिन बाध्य होकर लेखनी बंद करनी पड़ती है तो उस दिन माताजी को मन में बड़ा खेद होता है। घाटे का अनुभव होता है। लेखन कार्य भी दैनिक भोजन की तरह है, जैसे भोजन के बिना शारीरिक शिथिलता आती है उसी प्रकार माताजी को भी लेखन के अभाव में शिथिलता का अनुभव होता है।

प्रस्तुत ग्रंथ "त्रैलोक्य विधान" को ही ले लीजिए और विचार कीजिए कि कितना श्रम किया होगा विचारों को छंदोबद्ध करने के लिए तथा विषय संयोजन के लिए कितने ग्रंथों का अवलोकन किया होगा। घृत एवं घृत से बने मिष्ठान खाने वालों को भले ही घृत निर्माण के कष्ट का अनुभव न होता हो परन्तु घृत निर्माता तो जानता ही है कि दूध निकालने से घृत बनाने तक कितना श्रम करना पड़ता है।

पूज्य माताजी प्रारंभ से ही दृढ़ निश्चय की धनी रही हैं। सहसा बिना विचारे कोई काम किया नहीं और इतना अधिक विचार भी नहीं किया कि वह काम ही न हो पाये। एक बार शुद्ध मन से विचार किया और दृढ़तापूर्वक करने का निश्चय करके कार्य को प्रारंभ कर दिया। पुनः कैसी भी विघ्न बाधाओं को आने पर उसे छोड़ा नहीं। यही कारण है कि प्रत्येक कार्य में उन्होंने सफलता प्राप्त की।

''**श्रेयांसि बहुविघ्नानि**'' अच्छे कार्यों में बाधाएँ तो आती ही हैं किन्तु महापुरुष वे ही होते हैं जो उनसे घबड़ाकर कार्य को बीच में नहीं छोड़ते हैं। पूज्य माताजी जब दीक्षा लेने के लिए तत्पर हुई थीं तभी से रुकावट डालने वाले, विरोध करने वाले सामने आते रहे। दूसरे तो दूसरे अपने वाले ही इस काम में अग्रणी होते देखे गये। किन्तु ''सांच को आंच नहीं'' की सूक्ति के अनुसार माताजी सदैव आगे बढ़ती रहीं।

जम्बूद्वीप रचना निर्माण के पीछे भी यही स्थिति रही, किन्तु माताजी सुमेरु की तरह अचल रहीं। विरोध करने वालों को, विघ्न डालने वालों को सदैव पूज्य माताजी के चरणों में नतमस्तक होते देखा गया। आज तक भी उसी विधि के अनुसार कार्य हो रहे हैं।

किस प्रकार से मानव मात्र को सुख शांति प्राप्त हो इसी पुनीत भावना से ओत-प्रोत होकर सुगम भक्ति मार्ग को प्रधानता देकर पूज्य माताजी ने पूजन विधान लिखना प्रारंभ किया। प्रथम तो पूजाओं के निर्माण काल में स्वयं माताजी को बड़ी भारी आत्मशांति मिलती है तथा पूजा करने वालों को भी चार-आठ दिन तक स्थिरतापूर्वक धर्म तत्त्वों को श्रवण करने तथा स्वयं भक्ति में तन्मय होने का सहज सुअवसर प्राप्त होता है।

मनुष्य का स्वभाव सदैव नूतनता को ग्रहण करने का रहता है। पूज्य माताजी ने चारों अनुयोगों को पूजाओं से समाविष्ट किया है जिससे पूजा करने वालों को, पढ़ने वालों को तथा सुनने वालों को गहन धर्म तत्त्वों की सहज रूप में जानकारी हो जाती है। पूजाएँ अनेक छंदों में होने से भिन्न-भिन्न स्वरलय से पढ़ने में थकान का भी अनुभव नहीं होता।

कल्पद्रुम विधान की तरह यह विधान भी लोकप्रिय बन चुका है। भक्तगण इस विधान को करके सातिशय पुण्य का बंध करेंगे, जो कि इस लोक एवं परलोक के लिए सुखशांति में कारण होगा। पूजा कराने का भाव एक व्यक्ति करता है और लाभ हजारों नर-नारियों को मिलता है। पूज्य माताजी दीर्घायु हों एवं उनका श्रम हम सबके लिए लाभप्रद हो, यही भगवान जिनेन्द्र से प्रार्थना है।

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

आद्य वक्तव्य

इस शताब्दी में जैन जगत् की महान साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी ने अपने साधु जीवन में विपुल साहित्य का निर्माण किया है जिनके द्वारा बड़े से बड़े विद्वान और छोटे से छोटे अल्पज्ञानी भी सहज ही लाभ प्राप्त करते हैं। क्योंकि जहाँ अष्टसहस्री, नियमसार, समयसार, कातंत्र व्याकरण आदि क्लिष्ट संस्कृत ग्रंथों की हिन्दी एवं संस्कृत भाषाओं में टीकाएं लिखीं वहीं युवा पीढ़ी और बालकों के हित को ध्यान में रखते हुए जैन पुराणों पर उपन्यास एवं प्राथमिक शिक्षा के साधन बाल विकास जैसी पुस्तकों की भी रचना की है।

पूज्य ज्ञानमती माताजी ने प्रारंभ से लेकर आज तक जो भी कार्य किया वह इस सदी के लिए अपने आप में नूतन एवं अनोखा रहा। आप दृष्टि डालें उनके जीवन के प्रारंभिक चरण पर-सन् १९३४ में पिता छोटेलाल और माता मोहिनी की गोद में जन्म लेने वाली कन्या मैना ने १७ वर्ष पूर्ण करके सन् १९५२ में जब त्याग मार्ग की ओर कदम बढ़ाया तब जैन समाज के लिए आश्चर्यजनक घटना थी क्योंकि उससे पहले किसी कुमारी कन्या ने ऐसा साहस ही नहीं किया था। जब से मैना ने संघर्ष झेलकर अपना मार्ग प्रशस्त किया तब से कुमारी कन्याओं का तांता लग गया और आज तो सैकड़ों कुमारियां ज्ञानमती माताजी के पथ पर अग्रसर हो रही हैं।

इसी प्रकार सन् १९६५ में श्रवणबेलगोला भगवान बाहुबली के चरण सानिध्य में उन्होंने अपनी लेखनी का शुभारंभ किया उससे पूर्व २५०० वर्ष के इतिहास में किसी आर्यिका ने कोई साहित्य रचना नहीं की थी। उस लेखनी के पश्चात् लगभग सभी आर्यिकाओं ने साहित्य सृजन प्रारंभ कर दिया। आगमवर्णित जम्बूद्वीप रचना की ओर कभी किसी का ध्यान नहीं गया उसे पूज्य माताजी ने साक्षात् पृथ्वी पर दिखा दिया। सन् १९८२ में तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. इन्दिरा गांधी द्वारा **'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ'** का प्रवर्तन, पुनः सन् १९९८ में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा **'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ'** का प्रवर्तन एवं सन् २००३ में बिहार के तत्कालीन राज्यपाल श्री विनोद कुमार

पाण्डे द्वारा **'भगवान महावीर ज्योति रथ'** का प्रवर्तन इन्हीं त्यागमूर्ति के आशीर्वाद से संभव हुआ। नारी जाति का इतिहास इस महाविभूति से अनंतकाल तक गौरवान्वित होता रहेगा।

अपनी साहित्यिक कृतियों में पूज्य ज्ञानमती माताजी ने पूजन विधान के क्षेत्र में अद्वितीय प्रतिभा का दिग्दर्शन कराया है। सन् १९७६ में रचे हुए इन्द्रध्वज विधान ने सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में नया अलख जगाया है। उसके पश्चात् तो आचार्यों द्वारा वर्णित चारों प्रकार की पूजाओं की रचना का मानो कोई संकल्प ही ले लिया हो क्योंकि **नित्यमह** पूजाओं में नवदेवता, सिद्ध आदि पूजाओं के साथ **इन्द्रध्वज विधान** और उसके पश्चात् **कल्पद्रुम मण्डल विधान** ने भी आधुनिक चक्रवर्तियों के अस्तित्व को बतलाया है एवं चौथा सर्वतोभद्र विधान का निर्माण भी सम्पन्न होकर भक्ति संगीत रसिको के हाथों में पहुँच चुका है।

मण्डल विधानों की श्रृंखला में प्रस्तुत है-**त्रैलोक्य विधान**। यह तीन लोक विधान का ही संक्षिप्त रूपक है। इसमें तीनों लोकों के समस्त अकृत्रिम जिनमंदिरों एवं प्रतिमाओं की पूजा है। इसे कोई भी भक्तगण ८-१० दिनों में सुविधापूर्वक सम्पन्न कर सकते हैं। इसे लघु **तीन लोक विधान** कहते हैं।

लगभग ३० प्रकार के छंदों का प्रयोग पूज्य माताजी ने इस विधान में किया है। जो संगीत की धुनों से जन-जन का मन मोह लेती हैं। क्योंकि माताजी द्वारा रचित समस्त पूजाएं इतनी सरस एवं मधुर है कि क्रियाकाण्ड, पूजापाठ से दूर रहने वाले लोग भी बड़ी रुचि से इन विधानों में भाग लेते हैं और भक्ति गंगा में आनंदमग्न हो डुबकी लगाते हैं।

इस त्रैलोक्य विधान के द्वारा आप समस्त भव्य जीवों का सर्वतोमुखी कल्याण होवे, यही मंगलकामना है।

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

विधान की रचयित्री परम पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

कुन्दकुन्दान्वयो जीयात्, जीयात् श्री शांतिसागरः।
जीयात् पट्टाधिपस्तस्य, सूरिः श्री वीरसागरः।।
श्री ब्राह्मी गणिनी जीयात्, जीयादन्तिमचन्दना।
जीयात् ज्ञानमती माता, गणिन्यां प्रमुखा कलौ।।

जैनशासन के वर्तमान व्योम पर छिटके नक्षत्रों में दैदीप्यमान सूर्य की भाँति अपनी प्रकाश-रश्मियों को प्रकीर्णित कर रहीं पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर उठी लेखनी की अपूर्णता यद्यपि अवश्यंभावी है, तथापि आत्मकल्याण की भावना से पूज्य माताजी के श्रीचरणों में उनके दीर्घकालीन त्यागमयी जीवन के प्रति विनम्र विनयांजलिरूप मेरा यह विनीत प्रयास है।

१. जन्म, वैराग्य और दीक्षा-२२ अक्टूबर सन् १९३४, शरदपूर्णिमा के दिन टिकैतनगर ग्राम (जि. बाराबंकी, उ.प्र.) के श्रेष्ठी श्री छोटेलाल जैन की धर्मपत्नी श्रीमती मोहिनी देवी के दांपत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में ''मैना'' का जन्म परिवार में नवीन खुशियाँ लेकर आया था। माँ को दहेज में प्राप्त 'पद्मनंदिपंचविंशतिका' ग्रन्थ के नियमित स्वाध्याय एवं पूर्वजन्म से प्राप्त दृढ़ वैराग्य संस्कारों के बल पर मात्र १८ वर्ष की अल्प आयु में ही शरद पूर्णिमा के दिन मैना ने आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से सन् १९५२ में आजन्म ब्रह्मचर्यव्रतरूप सप्तम प्रतिमा एवं गृहत्याग के नियमों को धारण कर लिया। उसी दिन से इस कन्या के जीवन में २४ घंटे में एक बार भोजन करने के नियम का भी प्रारंभीकरण हो गया।

नारी जीवन की चरमोत्कर्ष अवस्था आर्यिका दीक्षा की कामना को अपनी हर साँस में संजोये ब्र. मैना सन् १९५३ में आचार्य श्री देशभूषण जी से ही चैत्र कृष्णा एकम् को श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र में 'क्षुल्लिका वीरमती' के रूप में दीक्षित हो गईं। सन् १९५५ में चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की समाधि के समय कुंथलगिरी पर एक माह तक प्राप्त उनके सान्निध्य एवं आज्ञा द्वारा 'क्षुल्लिका वीरमती' ने आचार्य श्री के प्रथम पट्टाचार्य शिष्य-वीरसागर जी महाराज से सन् १९५६ में 'वैशाख कृष्णा दूज' को माधोराजपुरा (जयपुर-राज.) में आर्यिका दीक्षा धारण करके ''**आर्यिका ज्ञानमती**'' नाम प्राप्त किया।

२. अध्ययन और अध्यापन-ज्ञानप्राप्ति की पिपासा माता ज्ञानमती जी के रोम-रोम में प्रारंभ से ही कूट-कूट कर भरी थी। दीक्षा लेते ही स्वाध्याय-मनन-चिंतन की धारा में ही उन्होंने स्वयं को निबद्ध कर लिया। ज्ञान प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ स्रोत बना-संघस्थ मुनियों, आर्यिकाओं एवं संघस्थ शिष्य-शिष्याओं को जैनागम का तलस्पर्शी अध्यापन। 'कातंत्र रूपमाला' रूपी बीज से पूज्य माताजी की ज्ञानसाधना रूप वृक्ष प्रस्फुटित हुआ, जिस पर जो पत्ते, फूल-फल इत्यादि लगे, उन्होंने समस्त संसार को सुवासित कर दिया। गोम्मटसार, परीक्षामुख, न्यायदीपिका, प्रमेयकमलमार्तण्ड, अष्टसहस्री, तत्त्वार्थराजवार्तिक, सर्वार्थसिद्धि, अनगारधर्मामृत, मूलाचार, त्रिलोकसार आदि अनेक ग्रंथों को अपनी शिष्याओं और संघस्थ साधुओं को पढ़ा-पढ़ाकर आपने अल्प समय में ही विस्तृत ज्ञानार्जन कर लिया। हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी इत्यादि भाषाओं पर आपका पूर्ण अधिकार हो गया।

३. लेखनी का प्रारंभीकरण संस्कृत भाषा से-भगवान महावीर के पश्चात् २६०० वर्ष के जिस इतिहास में जैन साध्वियों के द्वारा शास्त्र लेखन की कोई मिसाल दृष्टिगोचर नहीं होती थी, वह इतिहास जागृत हो उठा जब क्षुल्लिका वीरमती जी ने सन् १९५४ में सहस्रनाम के १००८ मंत्रों से अपनी लेखनी का प्रारंभ किया। यही मंत्र सरस्वती माता का वरदहस्त बनकर पूज्य माताजी की लेखनी को ऊँचाइयों की सीमा तक ले गये। सन् १९६९-७० में न्याय के सर्वोच्च ग्रंथ 'अष्टसहस्री' के हिन्दी अनुवाद ने उनकी अद्वितीय विद्वत्ता को संसार के

सामने उजागर कर दिया। कितने ही ग्रंथों की संस्कृत टीका, कितनी ही टीकाओं के हिंदी अनुवाद, संस्कृत एवं हिन्दी में अनेक मौलिक ग्रंथों की रचना मिलकर आज लगभग २५० से भी अधिक संख्या हो चुकी है। पूज्य माताजी द्वारा लिखित समयसार, नियमसार इत्यादि की हिन्दी-संस्कृत टीकाएँ, जैनभारती, ज्ञानामृत, कातंत्र व्याकरण, त्रिलोक भास्कर, प्रवचन निर्देशिका इत्यादि स्वाध्याय ग्रंथ, प्रतिज्ञा, संस्कार, भक्ति, आदिब्रह्मा, आटे का मुर्गा, जीवनदान इत्यादि जैन उपन्यास, द्रव्यसंग्रह-रत्नकरण्डश्रावकाचार इत्यादि के हिन्दी पद्यानुवाद व अर्थ, बाल विकास, बालभारती, नारी आलोक आदि का अध्ययन किसी को भी वर्तमान में उपलब्ध जैन वाङ्मय की विविध विधाओं का विस्तृत ज्ञान कराने में सक्षम है।

अध्यात्म, व्याकरण, न्याय, सिद्धांत, बाल साहित्य, उपन्यास, चारों अनुयोगोंरूप विविध विधाओं के अतिरिक्त पूज्य माताजी की लेखनी से विपुल भक्ति साहित्य उद्भूत हुआ है। इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीन लोक, सिद्धचक्र, विश्वशांति महावीर विधान इत्यादि अनेकानेक भक्ति विधानों ने देश के कोने-कोने में जिनेन्द्र भक्ति की जो धारा प्रवाहित की है, वह अतुलनीय है। पूज्य माताजी का चिंतन एवं लेखन पूर्णतया जैन आगम से संबद्ध है, यह उनकी महान विशेषता है।

धन्य हैं ऐसी महान प्रतिभावान् सरस्वती माता!

४. सिद्धांत चक्रेश्वरी-पूज्य माताजी ने जैनशासन के सर्वप्रथम सिद्धांत ग्रंथ 'षट्खण्डागम' की सोलहों पुस्तकों के सूत्रों की संस्कृत टीका 'सिद्धांत चिंतामणि' का लेखन करके महान कीर्तिमान स्थापित किया है। क्रम-क्रम से हिन्दी टीका सहित इन पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य चल रहा है। आज से लगभग १००० वर्ष पूर्व आचार्य श्री नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती ने जिस प्रकार छह खण्डरूप द्वादशांगरूप जिनवाणी को परिपूर्ण आत्मसात करके साररूप में द्रव्य संग्रह, गोम्मटसार, लब्धिसार इत्यादि ग्रंथ अपनी लेखनी से प्रसवित किये थे, उसी प्रकार इस बीसवीं सदी की माता ज्ञानमती जी ने समस्त उपलब्ध जैनागम का गहन अध्ययन-मनन-चिंतन करके इस सिद्धांतचिंतामणिरूप संस्कृत टीका लेखन के महत्तम कार्य से 'सिद्धांत चक्रेश्वरी' के पद को साकार कर दिया है। आचार्य श्री वीरसेन स्वामी द्वारा १००० वर्ष पूर्व लिखित 'धवलाटीका' के पश्चात् इस महान ग्रंथ की सरल टीका लेखन का कार्य प्रथम बार हुआ है।

५. शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर-जैन सिद्धांतों का मर्म विद्वत् वर्ग समझ सके, इस भावना से कितने ही शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन पूज्य माताजी की प्रेरणास्वरूप किया गया। सन् १९६९ में जयपुर चातुर्मास के मध्य 'जैन ज्योतिर्लोक' पर प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य माताजी द्वारा 'जैन भूगोल एवं खगोल' का विशेष ज्ञान विद्वत्वर्ग को कराया गया। अक्टूबर सन् १९७८ में हस्तिनापुर में पं. मक्खनलाल जी शास्त्री, पं. मोतीचंद जी कोठारी, डा. लाल बहादुर शास्त्री सहित जैन समाज के उच्चकोटि के लगभग १०० विद्वानों का विद्वत् प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य माताजी ने विद्वत्समुदाय को यथेष्ट मार्गदर्शन प्रदान किया। समय-समय पर आज तक यह श्रृंखला चल रही है।

६. राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार-सन् १९८५ में 'जैन गणित एवं त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में सम्पन्न हुआ, पुनः अनेक संगोष्ठियाँ सम्पन्न होती रहीं और सन् १९९८ में 'भगवान ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन' के भव्य आयोजन द्वारा देशभर के विश्वविद्यालयों से पधारे कुलपतियों को भगवान ऋषभदेव को भारतीय संस्कृति एवं जैनधर्म के वर्तमानयुगीन प्रणेता पुरुष के रूप में जानने का अवसर प्राप्त हुआ। ११ जून २००० को 'जैनधर्म की प्राचीनता' विषय पर आयोजित इतिहासकारों के सम्मेलन द्वारा पाठ्य पुस्तकों में जैनधर्म संबंधी भ्रांतियों के सुधार के लिए विशेष दिशा-निर्देश 'राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद' (NCERT) तक पहुँचाये गये। इनके अतिरिक्त अनेक अन्य सेमिनार भी समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं, जिनके प्रतिफल में देश के समक्ष समय-समय पर साहित्यिक कृतियाँ (ङ्देमा्हे) प्रस्तुत हो चुकी हैं।

७. दिगम्बर समाज की साध्वी को प्रथम बार डी.लिट्. की उपाधि प्रदान कर विश्वविद्यालय भी गौरवान्वित हुआ-किसी महाविद्यालय, विश्वविद्यालय आदि में पारम्परिक डिग्रियों को प्राप्त किये बिना मात्र स्वयं

के धार्मिक अध्ययन के बल पर विदुषी माताजी ने अध्ययन, अध्यापन, साहित्य निर्माण की जिन ऊँचाइयों को स्पर्श किया, उस अगाध विद्वत्ता के सम्मान हेतु डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद द्वारा ५ फरवरी १९९५ को डी.लिट्. की मानद् उपाधि से पूज्य माताजी को सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया गया तथा दिगम्बर जैन साधु-साध्वी परम्परा में पूज्य माताजी यह उपाधि प्राप्त करने वाली प्रथम व्यक्तित्व बन गईं। पुनः इसके उपरांत ८ अप्रैल २०१२ को पूज्य माताजी के ५७वें आर्यिका दीक्षा दिवस के अवसर पर तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में विश्वविद्यालय का प्रथम विशेष दीक्षांत समारोह आयोजित करके विश्वविद्यालय द्वारा पूज्य माताजी के करकमलों डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

इसी प्रकार से समय-समय पर विभिन्न आचार्यों एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा पूज्य माताजी को न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, आर्यिकाशिरोमणि, गणिनीप्रमुख, वात्सल्यमूर्ति, तीर्थोद्धारिका, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, राष्ट्रगौरव, वाग्देवी इत्यादि अनेक उपाधियों से अलंकृत किया गया है, किन्तु पूज्य माताजी इन सभी उपाधियों से निस्पृह होकर अपनी आत्मसाधना को प्रमुखता देते हुए निर्दोष आर्यिका चर्या में निमग्न रहने का ही अपना मुख्य लक्ष्य रखती हैं।

८. पूज्य माताजी की प्रेरणा से त्याग में बढ़े कदम-त्यागमार्ग में अग्रसर सम्यग्दृष्टी जीव की यह विशेषता रहती है कि वह संसार परिभ्रमण से आक्रान्त अन्य भव्यजीवों को भी मोक्षमार्ग का पथिक बनाने हेतु विशेषरूप से प्रयासरत रहता है। इसी भावना की परिपुष्टी करते हुए पूज्य माताजी ने अनेकानेक शिष्य-शिष्याओं का सृजन किया।

संघस्थ साधुओं-मुनिजनों एवं आर्यिकाओं को अध्ययन कराते हुए सन् १९५६-५७ में ब्र. राजमल जी को राजवार्तिक आदि अनेक ग्रंथों का अध्ययन कराकर पूज्य माताजी ने उन्हें मुनिदीक्षा लेने की प्रेरणा प्रदान की। पुनश्च ब्र. राजमल जी कालांतर में आचार्य अजितसागर जी महाराज के रूप में चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में चतुर्थ पट्टाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

सन् १९६७ में सनावद चातुर्मास के मध्य पूज्य माताजी ने ब्र. मोतीचंद एवं युवक यशवंत कुमार को घर से निकाला, उन्हें खूब विद्याध्ययन कराया तथा यशवंत कुमार को मुनिदीक्षा दिलवायी, जो वर्तमान में आचार्यश्री वर्धमानसागर के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हैं। ब्र. मोतीचंद जी भी क्षुल्लक मोतीसागर बनकर जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के प्रथम पीठाधीश के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

वर्तमान पट्टाचार्यश्री अभिनंदनसागर जी महाराज ने भी पूज्य माताजी से राजवार्तिक, गोम्मटसार आदि ग्रंथों का अध्ययन किया था। मुनि श्री भव्यसागर जी महाराज, मुनि श्री संभवसागर जी महाराज इत्यादि ने भी पूज्य माताजी से विद्याध्ययन किया तथा उनकी प्रेरणा से ही मुनि दीक्षा प्राप्त की। वर्तमान में पूज्य माताजी के अनन्य शिष्य स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी अत्यंत कर्मठ व्यक्तित्व के रूप में समस्त समाज में प्रसिद्धि को प्राप्त हैं।

आर्यिका माताओं की शृँखला में आर्यिका श्री पद्मावती माताजी, आर्यिका श्री जिनमती माताजी, आर्यिका श्री आदिमती माताजी, आर्यिका श्री श्रेष्ठमती माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी, आर्यिका श्री श्रुतमती माताजी, मैं स्वयं (आर्यिका चन्दनामती) तथा आर्यिका श्री सम्मेदशिखरमती माताजी, आर्यिका श्री कैलाशमती माताजी आदि अन्य कई माताजी पूज्य माताजी से प्राप्त वैराग्यमयी संस्कारों एवं अध्यापन का ही प्रतिफल हैं। पूज्य माताजी से सर्वांगीण ग्रंथों का अध्ययन करके पूज्य जिनमती माताजी ने प्रमेयकमलमार्तण्ड, पूज्य आदिमती माताजी ने गोम्मटसार कर्मकाण्ड का हिन्दी अनुवाद किया है। मुझे भी षट्खण्डागम एवं अन्य महान ग्रंथों की हिन्दी टीका, महावीर स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं कतिपय संस्कृत रचनाएँ लिखने का सुअवसर पूज्य माताजी की अनुकम्पा से प्राप्त हुआ है।

६२ वर्षों की सुदीर्घ अवधि में कितने ही भव्य जीवों ने पूज्य माताजी से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत, पंच अणुव्रत, शक्ति अनुसार प्रतिमाएँ इत्यादि ग्रहण करके संयम के मार्ग को आत्मसात किया है। वर्तमान में पूज्य माताजी के साक्षात् सानिध्य में रहकर अनेक ब्रह्मचारिणी बहनें त्यागमार्ग में संलग्न हैं।

९. तीर्थ विकास की भावना–तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों एवं विशेष रूप से जन्मभूमियों के विकास की ओर पूज्य माताजी की विशेष आंतरिक रुचि सदा से रही है। पूज्य माताजी का कहना है कि हमारी संस्कृति का परिचय प्रदान करने वाली ये कल्याणक भूमियाँ हमारी संस्कृति की महान धरोहर हैं अत: इनका संरक्षण–संवर्धन–विकास अत्यंत आवश्यक है।

सर्वप्रथम **भगवान शांतिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ की जन्मभूमि 'हस्तिनापुर'** में पूज्य माताजी की प्रेरणा से निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय रचना 'जम्बूद्वीप' आज विश्व के मानस पटल पर अंकित हो गयी है, उ.प्र. सरकार के पर्यटन विभाग ने जम्बूद्वीप से हस्तिनापुर की पहचान बताते हुए उसे एक अतुलनीय 'मानव निर्मित स्वर्ग' (ँ ईंह ईं पैंनह द ळहर्ज्तित एल्र्जेर्तूनें ह्ूर्ल्लें दही) की संज्ञा प्रदान की है। सन् १९९३ से १९९५ तक शाश्वत जन्मभूमि 'अयोध्या' में 'समवसरण मंदिर' और 'त्रिकाल चौबीसी मंदिर' का निर्माण करवाकर उसका विश्वव्यापी प्रचार, अकलूज (महाराष्ट्र) में नवदेवता मंदिर निर्माण की प्रेरणा, सनावद (म.प्र.) में णमोकार धाम, प्रीत विहार–दिल्ली में कमलमंदिर, मांगीतुंगी (महाराष्ट्र) में सहस्रकूट कमल मंदिर, अहिच्छत्र में ग्यारह शिखर वाला तीस चौबीसी मंदिर और भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि–प्रयाग (इलाहाबाद) में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की ही प्रेरणा के प्रतिफल हैं।

कितने ही अन्य स्थानों पर भी जैसे–**खेरवाड़ा में** कैलाशपर्वत निर्माण की प्रेरणा, **पिड़ावा में** समवसरण रचना की प्रेरणा, **सोलापुर (महा.) में** भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा की स्थापना, **श्री महावीर जी के शांतिवीर नगर में** मंदारवृक्ष की स्थापना, **अतिशयक्षेत्र श्री त्रिलोकपुर में** पारिजातवृक्ष की स्थापना, **केकड़ी (राज.) में** सम्मेदशिखर की रचना आदि अनेकानेक निर्माण पूज्य माताजी के निर्देशन द्वारा सम्पन्न हुए और हो रहे हैं। भगवान महावीर स्वामी की **जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा–बिहार)** के विकास हेतु भगवान महावीर स्वामी कीर्तिस्तंभ, भगवान महावीर की विशाल खड्गासन प्रतिमा सहित विश्वशांति महावीर मंदिर, नवग्रह शांति जिनमंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर एवं नंद्यावर्त महल आदि अनेक निर्माण आपकी प्रेरणा से इस क्षेत्र पर हुए हैं तथा कुण्डलपुर तीर्थ विश्वभर के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गया है।

भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि **'राजगृही' में** 'मुनिसुव्रतनाथ जिनमंदिर' एवं विपुलाचल पर्वत की तलहटी में मानस्तंभ रचना, भगवान महावीर की निर्वाणस्थली **पावापुरी में** जलमंदिर के समक्ष पाण्डुकशिला परिसर में भगवान की खड्गासन प्रतिमा सहित 'भगवान महावीर जिनमंदिर', गौतम गणधर स्वामी की निर्वाणस्थली **गुणावां जी में** गौतम स्वामी की खड्गासन प्रतिमा सहित जिनमंदिर, **श्री सम्मेदशिखर जी में** भगवान ऋषभदेव मंदिर इत्यादि समस्त निर्माण भी पूज्य माताजी की संप्रेरणा से ही सम्पन्न हुए हैं।

तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की शृँखला में **भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी में** 'श्री पुष्पदंतनाथ जिनमंदिर' का निर्माणकार्य होकर उसमें भगवान पुष्पदंतनाथ की विशाल सवा ९ फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान हो चुकी हैं।

तीर्थंकरों की शाश्वत **जन्मभूमि अयोध्या में** वर्तमानकालीन वहाँ जन्में पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि की टोकों पर जिनमंदिर निर्माण की प्रेरणा प्रदान कर आपने संस्कृति को जीवन्त करने का अभूतपूर्व प्रयास किया है। उस शृँखला में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की टोंक पर सुन्दर कलात्मक मंदिर बनकर उसमें सवा चार फुट पद्मासन श्वेत प्रतिमा विराजमान हुई हैं तथा सरयू नदी के तट पर भगवान अनन्तनाथ के मंदिर का निर्माण होकर पंचकल्याणक सम्पन्न हो चुका है। इसी प्रकार क्रमश: भगवान अजितनाथ एवं अभिनंदननाथ की टोकों पर भी मंदिरों के सुन्दर निर्माण हो चुके हैं।

उल्लेखनीय है कि पूज्य माताजी के आर्यिका दीक्षास्थल–**माधोराजपुरा (राज.) में** भी 'गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ' के विकास का कार्य सम्पन्न किया जा चुका है। यहाँ सुन्दर कृत्रिम सम्मेदशिखर पर्वत का निर्माण करके १५ फुट उत्तुंग काले पाषाण वाली भगवान पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमा एवं चौबीसी विराजमान की गई हैं। इस तीर्थ की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा २१ नवम्बर से २६ नवम्बर २०१० तक पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज के सान्निध्य में एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन (वर्तमान पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी) के निर्देशन में विशेष महोत्सवपूर्वक सम्पन हुई है।

इसी शृँखला में अतिशय क्षेत्र **श्री महावीर जी (राज.) में** पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से महावीर धाम परिसर में **पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर** का भव्य निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ है। यहाँ पर पाँचों बालयति भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान करके पृथक् वेदियों में पद्मावती, क्षेत्रपाल की प्रतिमाएँ भी विराजमान की गई हैं। संस्थान द्वारा उक्त जिनमंदिर का पंचकल्याणक दिनाँक २९ जनवरी से २ फरवरी २०१२ तक सानंद सम्पन्न किया गया।

विशेष : तेरहद्वीप रचना, तीर्थंकरत्रय प्रतिमा एवं तीनलोक रचना–

जम्बूद्वीप–हस्तिनापुर तीर्थ के विकास की अद्वितीयता को अमरता प्रदान करने वाली इन रचनाओं का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से इतिहास में प्रथम बार हुआ। अप्रैल सन् २००७ में स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा हुई। विश्व में प्रथम बार निर्मित इस रचना में विराजमान २१२७ जिनप्रतिमाओं के दर्शन करके लोग इच्छित फल की प्राप्ति करते हैं। इसके अतिरिक्त हस्तिनापुर में जन्मे भगवान शांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरहनाथ की ३१–३१ फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमाओं एवं ५६ फुट उत्तुंग निर्मित तीनलोक रचना की जिनप्रतिमाओं की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फरवरी सन् २०१० में हुई जो हस्तिनापुर के अतिशय में चार चाँद लगा रही हैं।

ग्वालियर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र का निर्माण भी पूज्य माताजी की प्रेरणा से हुआ है।

१०. विश्व में अनोखी १०८ फुट मूर्ति निर्माण की प्रेरणा–विश्व के अप्रतिम आश्चर्य के रूप में १०८ फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा के निर्माण का कार्य मांगीतुंगी (महा.) के पर्वत पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से द्रुतगति से पूर्ण होकर अब ११ फरवरी २०१६ से पूज्य माताजी ससंघ के सानिध्य में इस मूर्ति का भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हो रहा है। युगों–युगों तक जिनशासन की महिमा को विकसित करने वाली यह प्रतिमा जैन संस्कृति के विशाल व्यक्तित्व का परिचय भी जनमानस को प्रदान करेगी।

११. शिरडी (महाराष्ट्र) में ज्ञानतीर्थ–शिरडी (महाराष्ट्र) को जैन संस्कृति केन्द्र के रूप में स्थापित करने हेतु वहाँ पर 'ज्ञानतीर्थ' का निर्माण हुआ है, जिसमें पूज्य माताजी के निर्देशानुसार भगवान पार्श्वनाथ की विशाल प्रतिमा विराजमान करके पंचकल्याणक महोत्सव (मई २०१३ में) सम्पन्न हो चुका है और अब वहाँ सुन्दर कमल मंदिर का निर्माण किया जा रहा है।

१२. जृम्भिका तीर्थ विकास की प्रेरणा–भगवान महावीर स्वामी की कैवल्य भूमि जृंभिका जो आज बिहार प्रान्त में जमुई के नाम से प्रसिद्ध है, वहाँ एक नूतन भूमि पर भगवान की प्रतिमा विराजमान हो चुकी है तथा इस जृम्भिका तीर्थ का विकास हो रहा है।

१३. धर्मप्रभावना के विविध आयाम–जम्बूद्वीप रचना के निर्माण का प्रमुख लक्ष्य लेकर 'दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान' नामक संस्था का राजधानी दिल्ली में पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् १९७२ में गठन किया गया। इसी संस्थान ने विविध धर्मप्रभावना के कार्यों का संचालन किया है। संस्थान स्थित 'वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला' द्वारा लाखों की संख्या में ग्रंथ प्रकाशन, चारों अनुयोगों के ज्ञान से समन्वित 'सम्यग्ज्ञान' मासिक पत्रिका का प्रकाशन, णमोकार महामंत्र बैंक इत्यादि कितनी ही कार्ययोजनाएँ जिनशासन की कीर्ति को निरंतर प्रसारित कर रही हैं।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् १९८२ में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा राजधानी दिल्ली से उद्घाटित 'जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति' ने तीन वर्ष तक सम्पूर्ण भारतवर्ष में जैनधर्म के सिद्धांतों का प्रचार–प्रसार किया और अंत में यह ज्योति अखण्डरूप से तत्कालीन केन्द्रीय रक्षामंत्री–श्री पी.वी. नरसिंहाराव द्वारा जम्बूद्वीप स्थल पर स्थापित कर दी गयी। इसी प्रकार अप्रैल सन् १९९८ में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार' का राजधानी दिल्ली से प्रवर्तन किया, जो समस्त प्रांतों में प्रवर्तन के पश्चात् भगवान ऋषभदेव की दीक्षास्थली–प्रयाग तीर्थ पर निर्मित 'समवसरण मंदिर' में स्थापित होकर युगों–युगों तक के लिए भगवान ऋषभदेव के वास्तविक समवसरण की याद दिला रहा है। भगवान महावीर जन्मभूमि–कुण्डलपुर (नालंदा) से सन् २००३ में 'भगवान महावीर ज्योति रथ' का विविध प्रांतों में सफल प्रवर्तन भी इसी शृँखला की विशिष्ट कड़ी है।

जैनधर्म की प्राचीनता तथा भगवान ऋषभदेव के नाम एवं सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए पूज्य माताजी ने सन् १९९७ में राजधानी दिल्ली में विशाल 'चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान' आयोजित कराया, जिसका झण्डारोहण पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने किया एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह तथा श्रीमती सुषमा स्वराज आदि अनेक कैबिनेट मंत्रियों ने उपस्थित होकर धर्मलाभ लिया। साथ ही 'भगवान ऋषभदेव जन्मजयंती वर्ष' (सन् १९९७-१९९८ में) तथा 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' (सन् २००० में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित) भी पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा विविध धर्मप्रभावना के कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुए। विभिन्न टी.वी. चैनलों द्वारा पूज्य माताजी के 'तीर्थंकर जीवन दर्शन (सचित्र)' एवं अन्य विषयों पर प्रभावक प्रवचन लम्बे समय तक प्रसारित हुए एवं हो रहे हैं। पूज्य माताजी की प्रेरणा से स्थापित 'अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला संगठन' अपनी सैकड़ों ईकाइयों द्वारा दिगम्बर जैन समाज की नारी शक्ति को सृजनात्मक कार्यों हेतु संगठित कर रहे है।

इसके अतिरिक्त कितने ही अन्य धर्मप्रभावना के कार्य पूज्य माताजी ने सम्पन्न किये हैं जिनका यहाँ लेखन तो संभव नहीं है, किन्तु आज पूरा समाज उनके कार्यकलापों से परिचित होकर उन्हें कर्मठता की मूर्ति के रूप में पहचानता है।

१४. संघर्ष विजेत्री-पूज्य माताजी ने प्रारंभ से अपना प्रमुख लक्ष्य बनाया- प्रत्येक कार्य आगमानुकूल ही करना। पुनः उन कार्यों के निष्पादन में जो भी विघ्न आते हैं, उन्हें बहुत ही शांतिपूर्वक झेलकर पूरी तन्मयता के साथ उस कार्य को परिपूर्ण करना उनकी विशेषता रही है। उनका पूरा जीवन आर्ष परम्परा का संरक्षण करते हुए अपने मूलगुणों में बाधा न आने देकर जिनधर्म की अधिकाधिक प्रभावना के साथ व्यतीत हुआ है।

१५. भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का आयोजन-२३वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी में ६ जनवरी २००५ को पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में 'भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' का उद्घाटन किया गया। भगवान की केवलज्ञान कल्याणक भूमि 'अहिच्छत्र', निर्वाणभूमि 'श्री सम्मेदशिखर जी' इत्यादि अनेकानेक तीर्थों पर विविध आयोजनों के साथ यह वर्ष मनाया गया। वर्ष २००६ को ''सम्मेदशिखर वर्ष'' के रूप में मनाने की प्रेरणा पूज्य माताजी ने प्रदान की, ताकि तन-मन-धन से दिगम्बर जैन समाज अपने महान तीर्थराज 'श्री सम्मेदशिखर जी' के प्रति समर्पित हो सके। पुनः दिसम्बर २००७ में अहिच्छत्र में आयोजित 'सहस्राब्दि महामस्तकाभिषेक' के साथ इस त्रिवर्षीय महोत्सव का समापन किया गया।

१६. शताब्दी का अभूतपूर्व अवसर : दीक्षा स्वर्ण जयंती -वैशाख कृष्णा दूज, वी.नि.सं. २५३२ अर्थात् १५ अप्रैल २००६ को अपनी आर्यिका दीक्षा के ५० वर्ष पूर्ण करने वाली प्रथम साध्वी पूज्य माताजी वर्तमान दिगम्बर जैन साधु परम्परा में सर्वाधिक प्राचीन दीक्षित होने के गौरव से युक्त होकर हम सभी के लिए अतिशयकारी प्राचीन प्रतिमा के सदृश बन गईं। जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में १४ से १६ अप्रैल २००६ तक **'गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव'** का भव्य आयोजन करके समस्त समाज ने पूज्य माताजी के श्रीचरणों में अपनी विनम्र विनयांजलि अर्पित की।

१७. विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन किया राष्ट्रपति जी ने-२१ दिसम्बर २००८ को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों से हुआ। पुनः सन् २००९ ''शांति वर्ष'' में पूरे देश में विश्व की शांति के लिए धार्मिक अनुष्ठान एवं संगोष्ठियों के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

१८. 'प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष' मनाने की प्रेरणा-बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के महान उपकारों से जन-जन को परिचित कराने के उद्देश्य से पूज्य माताजी ने वर्ष २०१० को ''प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष'' के रूप में मनाने की प्रेरणा समस्त समाज को प्रदान की। इस वर्ष का उद्घाटन ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, ११ जून २०१० को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में भगवान शांतिनाथ

जन्म-दीक्षा एवं निर्वाणकल्याणक के शुभ दिवस किया गया तथा ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, ३१ मई २०११ तक यह वर्ष पूरे देश के विभिन्न अंचलों में अनेक धर्मप्रभावनात्मक कार्यक्रमों के साथ विभिन्न आयोजनोंपूर्वक मनाया गया।

१९. प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष मनाने की प्रेरणा-शरदपूर्णिमा-२०११ के शुभ अवसर पर पूज्य माताजी द्वारा प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज, जो पूज्य माताजी के दीक्षा गुरु भी हैं, का वर्ष मनाने की घोषणा की अतः यह वर्ष समाज द्वारा विभिन्न आयोजन पूर्वक सानंद मनाया गया।

२०. चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष-जिनकी दीर्घकालिक तपस्या के वर्षों की गिनती जानकर अनेक आचार्य, मुनि, आर्यिकाएँ इत्यादि भी इस बात को कहते हुए गौरव का अनुभव करते हैं कि आज जितनी मेरी उम्र भी नहीं है उससे अधिक तो पूज्य माताजी की दीक्षा की आयु है, अर्थात् १८ वर्ष की उम्र से त्याग मार्ग पर जिन्होंने कदम रखा, उन्होंने अपनी जन्मतिथि-शरदपूर्णिमा को भी त्याग से सार्थक कर उस त्यागमयी जीवन के ६० वर्ष भी उन्होंने निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण किये। इसीलिए इनके ७९वें जन्मदिवस एवं ६१वें त्यागदिवस पर हमने अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन के आह्वान पर चारित्रवर्धनोत्सव वर्ष २०१२-२०१३ मनाने की घोषणा की। इस वर्ष में सभी को शक्ति अनुसार चारित्र ग्रहण करने का संदेश दिया गया।

२१. मंगलमय अमृत महोत्सव-पूज्य माताजी के ८१वें जन्मदिवस को सन् २०१३-१४ में को ''गणिनी ज्ञानमती अमृत महोत्सव'' के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर मनाया गया। इस अवसर पर ''सम्मेदशिखर विधान'' के ८१ मांडले बनाकर ८१ परिवारों के द्वारा उनकी पूजन करने का विहंगम दृश्य उपस्थित हुआ। ज्ञातव्य है कि पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार **शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर में ''आचार्य शांतिसागर धाम''** नामक स्मारक का निर्माण किया जा रहा है, जो आचार्य श्री की सम्मेदशिखर यात्रा (सन् १९२७-२८ में की गई) की ऐतिहासिकता का दिग्दर्शन कराएगा।

पंचमकाल का ऐतिहासिक महोत्सव अखण्ड पाषाण में विश्व की सबसे ऊँची दिगम्बर जैन प्रतिमा १०८ फीट विशालकाय भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव का पंचकल्याणक माघ शु. तृतीया से दशमी (११ से १७ फरवरी २०१६) तक भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव के प्रचार-प्रसार हेतु पूज्य माताजी की प्रेरणा से **भगवान ऋषभदेव विश्वशान्ति कलश यात्रा रथ मांगीतुंगी (२०१५) के दो रथों का भारत भ्रमण** कराया गया, जिसका समापन महोत्सव के अवसर पर किया गया।

वर्तमान में पूज्य माताजी की प्रेरणा से देशभर में ''गौतमगणधर वर्ष'' (२०१४-१५) मनाया गया। इस वर्ष के अन्तर्गत सैकड़ों-हजारों की संख्या में श्रद्धालु नर-नारियों ने गणधरवलय विधान सम्पन्न किया।

इसी के साथ पूज्य माताजी की जन्मदात्री माँ आर्यिका श्री रत्नमती माताजी का जन्मशताब्दी वर्ष २०१४-२०१५ मनाया गया। इस वर्ष के अन्तर्गत सन् १९१४ में जन्मी मोहिनी को सन् १९३२ में विवाह के समय माता-पिता से दहेज में प्राप्त पद्मनंदिपंचविंशतिका ग्रंथ की ऐतिहासिकता से जन-जन को परिचित कराने हेतु उस ग्रंथ के स्वाध्याय की प्रतियोगिता आयोजित की गई। आश्विन शु. पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) को सभी स्वाध्यायियों को सम्मानित किया गया।

इन चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के चरणों में कोटिशः नमन है तथा भगवान जिनेन्द्र से यही प्रार्थना है कि उनके इस पवित्र त्यागमयी जीवन का हमें शताब्दी महोत्सव भी मनाने का लाभ प्राप्त हो एवं आपके द्वारा नया-नया साहित्य जनता को प्राप्त होता रहे, यही मंगलकामना है।

एक अद्वितीय जैन केन्द्र

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

-स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी (अध्यक्ष)

राजधानी दिल्ली से ११० किमी. दूर उत्तरप्रदेश के जिला मेरठ स्थित पौराणिक तीर्थ **हस्तिनापुर** में सन् १९७४ से 'जम्बूद्वीप' नाम से एक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र अवस्थित है। २०० फुट के व्यास में निर्मित जैन भूगोल की अद्वितीय रचना **'जम्बूद्वीप'** के अन्दर हल्के गुलाबी संगमरमर से निर्मित १०१ फुट ऊँचे **सुमेरु पर्वत** की शोभा आज प्रत्येक व्यक्ति के मन को आकर्षित करती है।

प्राचीन जैन साहित्य एवं भूगोल के परिचायक, वैज्ञानिकों के लिए शोध केन्द्र, आध्यात्मिक उन्नयन के लिए पवित्र स्थान, मानसिक शांति एवं जिनेन्द्र भगवान की पूजन-भक्ति के सम्पूर्ण साधनों तथा समस्त आधुनिक सुविधाओं की उपलब्धता सहित इस अनुपम तीर्थ की जनक संस्था का नाम है-**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान (रजि.)**। जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से १९७२ में इस संस्थान की स्थापना हुई। दिगम्बर जैन इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्मोग्राफिक रिसर्च **(Digambar Jain Institute of Cosmographic Research)** के नाम से प्रसिद्ध इस संस्थान का आधारभूत लक्ष्य था-जम्बूद्वीप का निर्माण और यह जम्बूद्वीप ही अंततः संस्थान का मुख्य कार्यालय बन गया।

जंबूद्वीप की ३० एकड़ पवित्र भूमि पर संस्थान के द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं/रचनाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है-

१. जंबूद्वीप रचना-जिनेन्द्र भगवान की २०७ प्रतिमाओं से पावन भारतीय शिल्प और जैन भूगोल का अद्वितीय उदाहरण, आधुनिक आकर्षणों-बिजली के फौव्वारे, नौका-विहार इत्यादि सहित।

२. कमल मंदिर-भगवान महावीर की अतिशयकारी खड्गासन प्रतिमा इस मंदिर में विराजमान हैं।

३. ध्यान मंदिर-२४ तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाओं सहित **'ह्रीं'** रचना इस मंदिर में विराजमान हैं, जो कि 'ध्यान' (Meditation) करने हेतु उत्तमोत्तम माध्यम हैं।

४. त्रिमूर्ति मंदिर-भगवान आदिनाथ, भरत एवं बाहुबली की खड्गासन प्रतिमाओं से इस मंदिर का नाम सार्थक है। कमल पर विराजमान भगवान नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ से इस मंदिर की शोभा द्विगुणित हो गयी है।

५. वासुपूज्य मंदिर-इस मंदिर में १२वें तीर्थंकर-वासुपूज्य स्वामी की खड्गासन प्रतिमा विराजमान हैं।

६. शांतिनाथ मंदिर-जिन भगवन्तों के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान कल्याणकों से हस्तिनापुर की भूमि परम-पावन हुई है, उन शांति-कुंथु और अरहनाथ भगवंतों की खड्गासन प्रतिमाएँ इस मंदिर में विराजमान हैं।

७. ॐ मंदिर-अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु परमेष्ठियों की प्रतिमाओं सहित ॐ (ओम) रचना इस मंदिर में विराजित है।

८. विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर-इस मंदिर में विदेह क्षेत्र के विद्यमान २० तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ बीस कमलों पर विराजमान हैं।

९. सहस्त्रकूट मंदिर-जिनेन्द्र भगवान की १००८ प्रतिमाओं सहित।

१०. भगवान ऋषभदेव मंदिर-धातु निर्मित भगवान ऋषभदेव की मूलनायक प्रतिमा एवं अन्य जिन प्रतिमाओं सहित।

११. भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ-'भगवान ऋषभदेव अन्तर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव

वर्ष' में निर्मित, भगवान के जीवन चरित्र को प्रदर्शित करने वाला, ८ प्रतिमाओं से समन्वित ३१ फुट ऊँचा कीर्तिस्तंभ।

१२. तेरहद्वीप जिनालय-इस मंदिर के अंदर मध्यलोक के तेरहद्वीपों की अकृत्रिम रचना का अति सुन्दरता के साथ दिग्दर्शन कराया गया है, जिसमें पंचमेरु पर्वतों के साथ-साथ कुल २१२७ प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

१३. अष्टापद दिगम्बर जैन मंदिर-इस मंदिर के अंदर प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की निर्वाणभूमि अष्टापद-कैलाशपर्वत की आकर्षक प्रतिकृति विराजमान है। कैलाशपर्वत का ही दूसरा नाम अष्टापद है। ४ फरवरी २००० को लाल किला मैदान, दिल्ली में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा इस प्रतिकृति के समक्ष निर्वाणलाडू चढ़ाकर इसका उद्घाटन किया गया।

१४. नवग्रह शान्ति जिनमंदिर—पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से उत्तर भारत में प्रथम बार निर्मित इस नवग्रहशांति जिनमंदिर में नवग्रह अरिष्ट निवारक नव तीर्थंकरों की धातु निर्मित सुन्दर प्रतिमाएँ विराजमान हैं, जिनके दर्शन-पूजन करके भक्तगण अपने ग्रहों की शांति करते हुए देखे जाते हैं।

१५. तीर्थंकरत्रय की विशाल प्रतिमाएँ—हस्तिनापुर में जन्मे तीर्थंकर श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ भगवान की ३१-३१ फुट की खड्गासन प्रतिमाएँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप स्थल पर विराजमान हुई हैं, जिनका विशाल मंदिर भी प्रस्तावित है।

१६. तीनलोक की भव्य रचना—त्रिलोकसार, तिलोयपण्णत्ति आदि करणानुयोग ग्रंथों के अनुसार तीन लोक की सुन्दर रचना का निर्माण भी पूज्य माताजी की प्रेरणा का ही सुफल है। इसमें अत्याधुनिक सुविधा के लिए लिफ्ट लगाई गई है, जिससे सभी भक्तगण सिद्धशिला तक के दर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

१७. जम्बूद्वीप पुस्तकालय—प्राचीन हस्तलिखित एवं प्रकाशित लगभग १५००० ग्रंथों एवं पुस्तकों के संग्रह सहित।

१८. जम्बूद्वीप औषधालय

१९. ज्ञानमती कला मंदिरम्—हस्तिनापुर के पौराणिक इतिहास को प्रदर्शित करने वाली झांकियों सहित।

२०. ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस—विशेष कृत्रिम रेल, जिसमें चौबीसों तीर्थंकरों की १६ जन्मभूमियों का विविध झाँकियों एवं चित्रावली के माध्यम से मनमोहक प्रस्तुतीकरण किया गया है।

२१. वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला—१९७२ में संस्थापित इस ग्रंथमाला द्वारा अब तक लाखों की संख्या में लगभग ३०० ग्रंथों एवं पुस्तकों के संस्करणों का प्रकाशन हो चुका है।

२२. सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका—यह पत्रिका सन् १९७४ से लगातार प्रकाशित हो रही है, जिसमें जैन शास्त्रों के साररूप लेखों एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का संकलन एक स्थान पर प्राप्त होता है।

२३. राजा श्रेयांस भोजनशाला—आने वाले दर्शनार्थियों को प्रतिदिन शुद्ध (जैनचर्या के अनुरूप) भोजन उपलब्ध कराने वाला यह दिगम्बर जैन समाज का प्रथम भोजनालय है, जहाँ एक साथ ५०० लोग बैठकर भोजन कर सकते हैं।

२४. धर्मशालाएँ—२०० से अधिक फ्लैट, बंगले इत्यादि, जिनमें ठहरने संबंधी सभी आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

२५. मनोरंजन के साधन—तरह-तरह के झूले, बच्चों की रेल, हँसी के गोलगप्पे, नौका विहार, फौव्वारे, हरे-भरे लॉन, पूरे कैम्पस में घूमने के लिए ऐरावत हाथी (मोटर से संचालित), बिजली की आकर्षक व्यवस्था, सुन्दर प्राकृतिक दृश्य इत्यादि बरबस ही दर्शनार्थियों को इस भव्य रचना की तुलना 'स्वर्ग' से करने के लिए प्रेरित करते हैं।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा आयोजित सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम

अक्टूबर १९८१-जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर) स्थल पर **'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति सेमिनार'**।

३१ अक्टूबर १९८२-फिक्की ऑडिटोरियम-दिल्ली में **'जम्बूद्वीप सेमिनार'** जिसका उद्घाटन श्री राजीव गांधी, तत्कालीन संसद सदस्य द्वारा किया गया।

अप्रैल १९८५-जम्बूद्वीप (हस्तिनापुर) स्थल पर **'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान'** विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, जिसका उद्घाटन उ.प्र. के तत्कालीन मंत्री प्रोफेसर वासुदेव सिंह द्वारा किया गया।

जून १९८२ से अप्रैल १९८५-लालकिला मैदान, दिल्ली से तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी द्वारा ४ जून, १९८२ को पूरे देश में भ्रमण करने हेतु **'जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति'** रथ का उद्घाटन किया गया। जनसाधारण में अहिंसा, चारित्र-निर्माण तथा विश्व बन्धुत्व के संदेश का प्रचार-प्रसार करते हुए १०४५ दिन तक देश भर में भ्रमण करने के पश्चात् यह ज्ञान ज्योति तत्कालीन रक्षामंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव (भूतपूर्व प्रधानमंत्री) द्वारा जम्बूद्वीप के मुख्य द्वार के समक्ष सदैव के लिए स्थापित कर दी गई।

१९९२-**'अंतर्राज्यीय चरित्र निर्माण संगोष्ठी'** का जंबूद्वीप स्थल पर श्री नेमीचंद जैन, विधायक (मध्यप्रदेश) की अध्यक्षता में आयोजन किया गया।

'जैन गणित' एवं **'चारित्र निर्माण'** आदि विषयों पर हुई संगोष्ठियाँ **मेरठ विश्वविद्यालय एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में** आयोजित की गईं।

१९९३-अयोध्या में अवध विश्वविद्यालय-फैजाबाद के संयुक्त तत्वावधान में **'भारतीय संस्कृति के आद्य प्रणेता भगवान ऋषभदेव'** विषय पर संगोष्ठी।

अक्टूबर १९९५-मेरठ विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में पंचदिवसीय **'गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती साहित्य संगोष्ठी-९५'**।

मार्च-अप्रैल १९९८-तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा ९ अप्रैल १९९८ को तालकटोरा स्टेडियम, दिल्ली से देश भर में भ्रमण करने हेतु **'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ'** का उद्घाटन। ३ वर्ष तक देशभर में तीर्थंकर भगवन्तों के सर्वोदयी सिद्धांतों एवं जैनधर्म की प्राचीनता का प्रचार-प्रसार करने के पश्चात् यह समवसरण इलाहाबाद उच्च न्यायालय के तत्कालीन मुख्य न्यायाधीश द्वारा तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग तीर्थ (इलाहाबाद) में स्थापित कर दिया गया।

अक्टूबर १९९८-जम्बूद्वीप स्थल पर **'राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन'**, जिसका उद्घाटन किया गया-स्वर्गीय श्री राजेश पायलट (तत्कालीन संसद सदस्य द्वारा)।

फरवरी २०००-तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा ४ फरवरी २००० को लाल किला मैदान, दिल्ली में एक वर्ष तक चलने वाले **'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष'** का उद्घाटन किया गया।

इस युग में जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव पर १००८ संगोष्ठियों की शृंखला, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभों का निर्माण तथा अन्य अनेक सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रम राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस वर्ष के अंतर्गत आयोजित किये गये।

टोरण्टो, कनाडा, न्यूजर्सी आदि विदेश की भूमियों पर भी इन्हीं प्रेरणाओं के माध्यम से ४ फरवरी २००० को निर्वाण महामहोत्सव मनाया गया।

जून २०००-जम्बूद्वीप स्थल पर ११ जून २००० को **'जैनधर्म की प्राचीनता'** विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार आयोजित किया गया।

फरवरी २००१-भगवान ऋषभदेव की दीक्षाभूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में **'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ'** का नवनिर्माण। इस तीर्थ पर भगवान के दीक्षा कल्याणक के प्रतीकस्वरूप धातु के वटवृक्ष के नीचे ध्यान में लीन महायोगी ऋषभदेव की सवा पांच फुट उत्तुंग पिच्छी-कमण्डलु सहित खड्गासन प्रतिमा, केवलज्ञान कल्याणक के प्रतीकस्वरूप भगवान की चतुर्मुखी प्रतिमा सहित दिव्य समवसरण रचना तथा निर्वाण कल्याणक के प्रतीक स्वरूप ५१ फुट उत्तुंग 'कैलाशपर्वत' की भव्य रचना पर भगवान ऋषभदेव की १४ फुट उत्तुंग अत्यंत मनोहारी लालवर्णी पद्मासन प्रतिमा तथा तीन चौबीसी के प्रतीक स्वरूप ७२ जिन प्रतिमाएँ विराजमान हैं। 'ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ' भी स्थापित है। ४ से ८ फरवरी २००१ तक 'भगवान ऋषभदेव पंचकल्याणक प्रतिष्ठा' एवं १००८ महाकुंभों से कैलाशपर्वत पर प्रतिष्ठित भगवान ऋषभदेव का 'महाकुंभमस्तकाभिषेक' कार्यक्रम।

सन् २००३-२००४-भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में **'नंद्यावर्त महल तीर्थ'** का निर्माण। भगवान महावीर मंदिर, भगवान ऋषभदेव मंदिर, नवग्रहशांति जिनमंदिर, त्रिकाल चौबीसी मंदिर और नंद्यावर्त महल (भगवान महावीर का जन्म महल) एवं उसमें स्थापित भगवान शांतिनाथ जिनालय इस तीर्थ के मुख्य आकर्षण हैं। महावीर की जन्मभूमि के प्रचार-प्रसार हेतु **भगवान महावीर ज्योति रथ** सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रवर्तन कर चुका है।

सन् २००५-२००७-भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव-६ जनवरी २००५ को जन्मभूमि वाराणसी से इसका भव्य उद्घाटन होकर पूरे एक वर्ष तक (२७ दिसम्बर २००५ तक) इसे विभिन्न आयोजनों के साथ मनाया गया।

पुनः सन् २००६ में पूज्य माताजी ने भगवान पार्श्वनाथ निर्वाणभूमि ''सम्मेदशिखर वर्ष'' घोषित किया तथा दिसम्बर २००७ में केवलज्ञान भूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर भगवान पार्श्वनाथ सहस्राब्दि महोत्सव का राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित करके ४ जनवरी २००८ को भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव का समापन किया।

विशेषरूप से इस संस्थान द्वारा २१ दिसम्बर २००८ को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 'विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन' का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के सानिध्य में भारत गणतंत्र की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रपति जी अपने पति डॉ. देवीसिंह शेखावत के साथ सम्मेलन में पधारीं। कार्यक्रम में उत्तरप्रदेश के राज्यपाल श्री टी.वी. राजेश्वर तथा स्वास्थ्य मंत्री श्री अनंत कुमार मिश्रा भी पधारे। इसी अवसर पर पूज्य माताजी द्वारा वर्ष २००९ को ''शांति वर्ष'' के रूप में मनाने की घोषणा की गई। यह 'शांति वर्ष-२००९' वर्तमान में समस्त जैन समाज द्वारा भारत के विभिन्न प्रान्तों में अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से मनाया गया।

सन् २०१० में पूज्य माताजी की प्रेरणा से गठित ''अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी'' द्वारा भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकासकार्य सम्पन्न किया गया है। तीर्थ पर भगवान पुष्पदंतनाथ की सवा ९ फुट पद्मासन प्रतिमा सुन्दर जिनमंदिर में विराजमान होकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा से प्रतिष्ठित हो चुकी हैं तथा भगवान पुष्पदंतनाथ कीर्तिस्तंभ तीर्थ की कीर्ति को दिग् दिगन्तव्यापी ख्याति प्राप्त कराने में निमित्तभूत है।

सन् २०१२ में अतिशय क्षेत्र **श्री महावीर जी (राज.) में** पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से शांतिवीर नगर के निकट स्थित महावीर धाम परिसर में **पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर** का भव्य निर्माण कार्य सम्पन्न हुआ है। यहाँ पर पाँचों बालयति भगवान की प्रतिमाएँ विराजमान करके पृथक् वेदियों में पद्मावती, क्षेत्रपाल की प्रतिमाएँ भी विराजमान की गई हैं। संस्थान द्वारा उक्त जिनमंदिर का पंचकल्याणक दिनाँक २९ जनवरी से २ फरवरी २०१२ तक सानंद सम्पन्न किया गया

है तथा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत इस जैन मंदिर का संचालन सुचारू रूप से किया जा रहा है।

इस संस्थान के द्वारा समय-समय पर विविध पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं धार्मिक कार्यक्रम सम्पन्न होते रहते हैं। संस्थान के अद्भुत कार्यकलाप की श्रेणी में है-**णमोकार महामंत्र बैंक,** जहाँ प्रतिवर्ष श्रद्धालु भक्तों द्वारा लाखों की संख्या में णमोकार मंत्र लिखकर जमा कराए जाते हैं, तुमकूर (कर्नाटक) से एक करोड़ मंत्र एवं उदयपुर (राज.) से एक करोड़ मंत्र सन् २००६ में इस बैंक में जमा हुए अतः उन्हें विशेष रूप से सम्मानित किया गया। करोड़ों महामंत्र विश्वशांति की किरणें प्रसारित करने में अतिशय धरोहरस्वरूप हैं।

संस्थान द्वारा दिये जाने वाले पुरस्कार

गणिनी ज्ञानमती पुरस्कार-सन् १९९५ से प्रत्येक पाँच वर्ष में यह पुरस्कार जैन धर्म पर उच्चस्तरीय शोध तथा संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों में सहयोग हेतु किसी भी जैन विद्वान या समर्पित कार्यकर्ता को १,००,०००/-(एक लाख) रुपये की नगद राशि, प्रशस्ति-पत्र इत्यादि के साथ प्रदान किया जाता था। अप्रैल २००६ में "गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव" के अवसर पर संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष इस पुरस्कार को देने का निर्णय लिया गया अतः अब यह पुरस्कार प्रतिवर्ष किसी वरिष्ठ विद्वान अथवा विशिष्ट समाजसेवी को प्रदान किया जाता है।

आर्यिका रत्नमती पुरस्कार-सन् १९९९ में स्थापित ११,०००/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

जम्बूद्वीप पुरस्कार-सन् २००० में स्थापित २५,०००/- रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

श्री छोटेलाल जैन पुरस्कार-सन् २००३ में स्थापित ११,०००/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

नंद्यावर्त महल पुरस्कार-सन् २००४ से प्रारंभ २५०००/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

जम्बूद्वीप बाल प्रतिभा पुरस्कार-सन् २०१० से प्रारंभ ११०००/-रुपये की नगद राशि सहित प्रतिवर्ष प्रदान किया जाने वाला पुरस्कार।

उपरोक्त पुरस्कारों के अतिरिक्त 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महोत्सव वर्ष' के अवसर पर घोषित '**भगवान ऋषभदेव नेशनल अवार्ड**', '**ब्राह्मी पुरस्कार**', '**भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर पुरस्कार**', '**गणिनी ज्ञानमती दीक्षा स्वर्ण जयंती पुरस्कार**' एवं '**हीरक जयंती पुरस्कार**' भी संस्थान द्वारा प्रदान किये जा चुके हैं।

इस प्रकार यह संस्थान अपनी विभिन्न समर्पित कार्य योजनाओं द्वारा समाज की सेवा में प्रतिक्षण संलग्न है। मानसिक शांति, आध्यात्मिक विकास, प्राकृतिक सौन्दर्य एवं अन्य अनेक लाभ एक साथ प्राप्त करने हेतु यह संस्थान जंबूद्वीप दर्शन के लिए आपको सादर आमंत्रित करता है।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत "वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला" की स्थापना सन् १९७२ में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् १९९० से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

१. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-६।
२. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
३. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-१९, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
४. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
५. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
६. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
७. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-९२।
८. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)।
९. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.।
१०. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली।
११. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई।
१२. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली।
१३. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.।
१४. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
१५. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
१६. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
१७. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-४, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।
१८. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)

परम संरक्षक

१. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
२. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, ७९२ विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
३. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
४. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
५. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
६. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
७. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
८. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
९. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
१०. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
११. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
१२. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
१३. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।

१४. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
१५. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-७।
१६. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
१७. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली।
१८. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
१९. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., अमर चंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)
२०. श्रीमती शशि जैन ध.प. श्री दिनेशचंद जैन, शिवालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
२१. श्री देवेन्द्र कुमार जैन पुत्र स्व. श्री कुन्थलाल जैन (दरियाबाद निवासी) रमेश पार्क, लक्ष्मीनगर, दिल्ली।

संरक्षक

१. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन एवं स्व. श्रीमती आदर्श जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
२. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
३. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
४. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
५. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
६. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
७. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
८. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
९. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
१०. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
११. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
१२. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
१३. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
१४. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
१५. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
१६. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
१७. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
१८. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
१९. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
२०. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
२१. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
२२. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
२३. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
२४. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
२५. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
२६. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
२७. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्लका, देहरादून (उ.प्र.)।
२८. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
२९. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
३०. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।

३१. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
३२. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
३३. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
३४. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
३५. श्रीमती सुषमा देवी ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
३६. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
३७. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
३८. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
३९. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
४०. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
४१. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
४२. श्री प्रभा चन्द गोधा, ४५ भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-६ (राज.)।
४३. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
४४. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली, चौक बाजार, लखनऊ।
४५. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
४६. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) ३५ एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।
४७. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-१/२० मॉडल टाउन, दिल्ली।
४८. श्री कैलाश चंद जैन, ४५ भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
४९. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, ४०५ डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
५०. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
५१. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
५२. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
५३. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
५४. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी १/१२२, फेज-२, अशोक विहार, दिल्ली-११००५२।
५५. श्री चन्द्रमोहन बंसल, ११, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-५।
५६. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
५७. श्री सतीश चन्द जैन, ३१ सिविल लाइन, म.नं.-१०, सेक्टर-२, टाइप-५ झांसी।
५८. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
५९. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
६०. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन,सीतापुर (उ.प्र.)।
६१. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
६२. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
६३. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
६४. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन ३१, सिविल लाईन, सीतापुर।
६५. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
६६. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
६७. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
६८. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
६९. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
७०. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
७१. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
७२. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।

७३. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
७४. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
७५. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
७६. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
७७. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
७८. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
७९. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
८०. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
८१. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
८२. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
८३. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
८४. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
८५. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
८६. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
८७. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
८८. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
८९. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-९२।
९०. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
९१. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
९२. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
९३. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
९४. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
९५. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
९६. श्री सुचेंद्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
९७. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
९८. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
९९. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
१००. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
१०१. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
१०२. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
१०३. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
१०४. श्री राजेन्द्र कुमार पचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
१०५. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
१०६. डॉ. विमला जैन "विमल" ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन, फिरोजाबाद (उ.प्र.)
१०७. सौ. पुष्पा पवन कुमार कासलीवाल, खामगांव (बुलढाणा) महा.।

भजन

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-तुमसे लागी लगन.....।

कर लो जिनवर भजन, प्रभु के पद में नमन, अवसर आया
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया
आकर तेरी शरण, होकर आतम मगन, तुमको ध्याया
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया
तीनों लोकों में जितने जिनालय, सिद्ध प्रतिमा से संयुत जिनालय।
जो इन्हें पूजता, भक्ति में डूबा, शांत पाया
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया।।१।।

चार शत अष्ट पंचाशतम् हैं, मध्यलोक के जिनवर भवन ये।
इन्द्र वंदन करें, हम भी अर्चन करें, द्रव्य लाया।
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया।।२।।

ऊर्ध्वलोक अधोलोक में भी, जितनी प्रतिमा जिनालय कहे भी
सबको शत शत नमन, हो निजातम रमण, तुम पद ध्याया।
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया।।३।।

प्रभु मैं चक्री की पदवी न चाहूँ, मात्र तेरी शरण आना चाहूँ।
हर दम तुमको भजूँ, जग के सुख सब तजूँ, भाव आया।
नाथ त्रैलोक्य मंडल रचाया।।४।।

"चंदना" मैं भी शिवपद को पाऊँ, भक्ति का फल यही नाथ चाहूँ।
ना हो अब भव भ्रमण, छूटे जामन मरण, भाव आया।
नाथ त्रैलोक्य मण्डल रचाया।।५।।

* * * * * *

आरती

-आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-क्यों न ध्यान लगाए, वीर से बावरिया।

कर लो सकल नरनार, प्रभूजी की आरतिया।
करती है भव से पार, श्री जी की आरतिया।।
तीनों लोकों में तू घूमा, लेकिन जीवन प्रभू बिन सूना।
जीवन में लाती बहार, प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।१।।

आठ करोड़ लक्ष छप्पन हैं, सहस सतानवे चार शतक हैं।
इक्यासी जिनधाम, प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।२।।

सब कृत्रिम अकृत्रिम प्रतिमा, तीनलोक की जानो महिमा।
भरे सकल भंडार, प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।३।।

इस नरतन को तूने पाया, तीन लोक मंडल रचवाया।
कर दे सुखी संसार, प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।४।।

प्रभु की आरति भवदुखहारी, भव्यजनों को आनंदकारी।
वरण करे शिवनारि प्रभू जी की आरतिया।। कर लो.।।५।।

जय जयकार करो अतिभारी, गूँज उठे यह नगरी सारी।
बोलो सभी नर नार प्रभू जी की आरतिया।।कर लो.।।६।।

ज्ञानमती माताजी की महिमा, कहे ''चन्दना'' तव गुण गरिमा।
भरे ज्ञान भंडार, प्रभू जी की आरतिया।। कर लो.।।७।।

* * * * * *

तीन लोक विधान का नक्शा

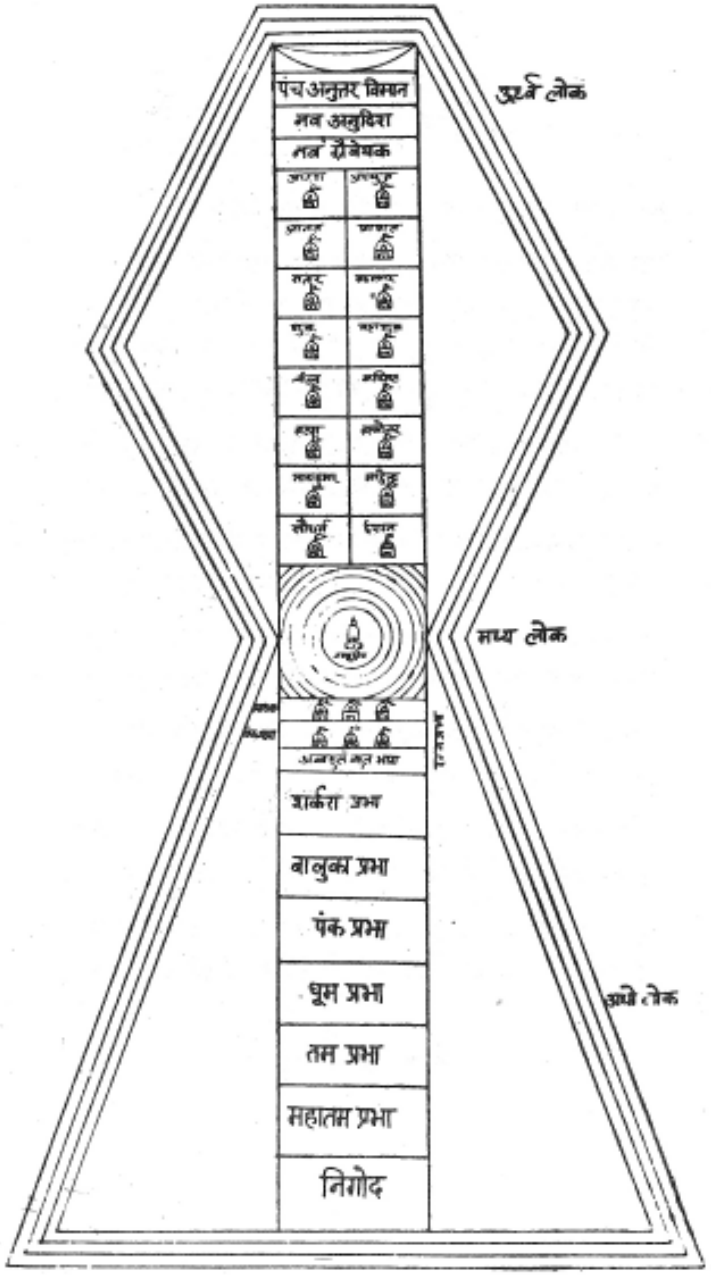

त्रैलोक्य विधान

मंगलाचरण

चाल-शेर

भगवान महावीर की मैं वंदना करूँ।
सन्मति प्रभू से सन्मती की याचना करूँ।।
जिनदेवदेव को नमूँ नित भक्ति भाव से।
संसार सिंधु को तिरूँ जिन नाम जाप से।।1।

कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को नित नमूँ।
जिनमूर्तियों को वंदते चिन्मूर्ति मैं बनूँ।।
मणिरत्न से बनी अनाद्यनंत मूर्तियां।
सुरनरपती निर्मित जिनेन्द्रचंद्रमूर्तियां।।2।।

जिनमूर्तियों की बार-बार वंदना करूँ।
निज जन्म मृत्यु दुःख की भि खंडना करूँ।।
चैतन्य चमत्कार ज्योति को प्रगट करूँ।
आनंद कंद निजानंद को निकट करूँ।।3।।

इति श्री त्रैलोक्यविधानजिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिः।

मंगलाष्टक स्तोत्रं

अर्हंतों मंगलं कुर्युः सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि साधवो मम मंगलम्।।1।।

मंगलं जिनधर्मः स्यात् जिनवाणी च मंगलम्।
जिनार्चा जिनगेहाश्च, कुर्वंतु मम मंगलम्।।2।।

सप्त कोट्यो जिनागारा लक्षाणि च द्विसप्ततिः।
भावनेषु स्थिताः सर्वे कुर्वंतु मम मंगलम्।।3।।

व्यंतराणां जिनागाराः संख्यातीता विभान्त्यपि।
स्वात्मसिद्धिविधातारः कुर्वतु मम मंगलम्।।4।।

ज्योतिष्काणां जिनागाराः असंख्याः संति सौख्यदाः।
स्वात्मज्योतिः प्रयच्छन्तु कुर्वंतु मम मंगलम्।।5।।

चतुरशीतिलक्षाः साहस्रं सप्तनवतिकः।
त्रयोविंशा जिनागारा वैमानिकाश्च मंगलम्।।6।।

चतुःशताष्टपंचाशत् मध्यलोके जिनालयाः।
भुक्तिमुक्तिप्रदातारः कुर्वतुं मम मंगलम्।।7।।

मंगलं स्यान्ममहावीरो बाहुबली च मंगलम्।
जिन शासनमाचंद्रं, स्थेयात् कुर्याच्च मंगलम्।।8।।

यो मंगलाष्टकस्तोत्रं, प्रत्यहं भक्तितः पठेत्।
पूर्णा ज्ञानमतिस्तस्य, भूयात् नित्यं सुमंगलम्।।9।।

इति मंडपान्तःपुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चैत्य भक्ति

(श्री गौतमस्वामीकृत) हरिणी छंद

जयति भगवान् हेमाम्भोजप्रचारविजृं भिता।
वमरमुकुटच्छायोद्गीर्णप्रभापरिचुम्बितौ ,
कलुषहृदया मानोद्भ्रान्ताः परस्परवैरिणः,
विगतकलुषाः पादौ यस्य प्रपद्य विशश्वसुः।।1।।

आर्या

अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायेभ्यस्तथा च साधुभ्यः।
सर्वजगद्वंद्येभ्यो नमोऽस्तु सर्वत्र सर्वभ्यः।।2।।

मोहारिसर्वदोषारिघातकेभ्यः सदाहतरजोभ्यः।
विरहितरहस्कृतेभ्यः पूजार्हेभ्यो नमोऽर्हद्भ्यः।।3।।

क्षान्त्यार्जवादिगुणगणसुसाधनं सकललोकहितहेतुम्।
शुभधामनि धातारं वंदे धर्म जिनेन्द्रोक्तम्।।4।।
मिथ्याज्ञानतमोवृतलोकैक-ज्योतिरमितगमयोगि।
सांगोपांगमजेयं जैनं वचनं सदा वंदे।।5।।
भवनविमानज्योतिर्व्यंतरनरलोकविश्वचैत्यानि।
त्रिजगदभिवंदितानां वंदे त्रेधा जिनेन्द्राणाम्।।6।।
भुवनत्रयेऽपि भुवनत्रयाधिपाभ्यर्च्यतीर्थकर्तृणाम्।
वंदे भवाग्निाशान्त्यै विभवानामालयालीस्ताः।।7।।
इति पंचमहापुरुषाः प्रणुता जिनधर्मवचनचैत्यानि।
चैत्यालयाश्च विमलां दिशंतु बोधिं बुधजनेष्टाम्।।8।।
अकृतानि कृतानि चाप्रमेयद्युतिमन्ति द्युतिमत्सु मंदिरेषु।
मनुजामरपूजितानि वंदे प्रतिबिंबानि जगत्त्रये जिनानाम्।।9।।

अचंलिका-इच्छामि भंत्ते! चेइयभत्तिकाओसग्गो कओ तस्सालोचेउं, अहलोयतिरियजलोयउड्ढलोयम्मि किट्टिमाकिट्टिमाणि जाणि जिणचेइयाणि ताणि सव्वाणि तीसुवि लोएसु भवणवासियवाणवितरजोइसियकप्पवासियत्ति चउव्विहा देवा सपरिवारा दिव्वेण गंधेण, दिव्वेण पुप्फेण, दिव्वेण धूवेण, दिव्वेण चुण्णेण, दिव्वेण वासेण, दिव्वेण ण्हाणेण, णिच्चकालं अंचंति, पुज्जंति, वंदति, णमंसंति, अहमवि इह संतो तत्थ संताइं णिच्चकालं अचेमि, पूजेमि,वंदामि, णमंसामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाहो, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

इति मंडपान्तः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चैत्य भक्ति-हिन्दी

जय हे भगवन्! चरणकमल तव कनककमल पर करें विहार।
इंद्रमुकुट की कांतिप्रभा से चुंबित शोभें अतिसुखकार।।
जातविरोधी कलुषमना क्रुध मान सहित जंतू गण भी।
ऐसे तब पद का आश्रय ले प्रेम भाव को धरें सभी।।1।।

अर्हंत् सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधुगण सुरवंदित।
त्रिभुवन वंदित पंचपरमगुरु नमोऽस्तु तुमको मम संतत।।2।।

मोहारी के घातक द्वयरज आवरणों से रहित जिनेश।
विघ्न रहस विरहित पूजा के योग्य अर्हत् को नमूँ हमेश।।3।।
क्षमादि उत्तम गुणगणसाधक सकल लोक हित हेतु महान्।
शुभ शिवधाम धरे ले जाकर जिनवर धर्म नमूँ सुखखान।।4।।
मिथ्याज्ञान तमोवृत जग में ज्योतिर्मय अनुपम भास्कर।
अंगपूर्वमय विजयशील जिनवचन नमूँ मैं शिरनतकर।।5।।
भवनवासि व्यंतर ज्योतिष वैमानिक में नरलोक में ये।
जिनभवनों की त्रिभुवन वंदित जिनप्रतिमा को वंदूँ मैं।।6।।
भुवनत्रय में जितने जिनगृह भवविरहित तीर्थंकर के।
भवाग्निशांती हेतु नमूँ मैं त्रिभुवनपति से अर्चित ये।।7।।
इसविध प्रणुत पंचपरमश्रेष्ठी श्रीजिनधर्म जिनागम को।
विमल चैत्य चैत्यालय वंदूँ बुधजन इष्ट बोधि मम दो।।8।।
द्युतिकर जिनगृह में अकृत्रिम कृत्रिम अप्रमेय द्युतिमान।
नरसुर पूजित भुवनत्रय के सब जिनबिंब नमूँ गुणखान।।9।।

अंचलिका

भगवन्! चैत्यभक्ति अरु कायोत्सर्ग किया उसमें जो दोष।
उनके आलोचन करने को इच्छुक हूँ धर मन संतोष।।1।।
अधो मध्य अरु ऊर्ध्वलोक में कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्य।
जितने भी हैं त्रिभुवन के चउविध सुर करें भक्ति से सेव।।2।।
भवनवासि व्यंतर ज्योतिष वैमानिक सुर परिवार सहित।
छिवय गंध सुम धूप चूर्ण से दिव्य न्हवन से अर्चें नित।।3।।
अर्चे पूजें वंदन करते नमस्कार वे करें सतत।
मैं भी उन्हें यहीं पर अर्चूं पूजूँ वंदूँ नमूँ सतत।।4।।
दुक्खों का क्षय कर्मों का क्षय होवे बोधिलाभ होवे।
सुगति गमन हो समाधिमरणं मम जिनगुणसंपत्ति होवे।।5।।

इति मंडपान्तः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजा नं.-1

नवदेवता पूजन

गीता छन्द

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नव सुचढ़ायके।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य* –ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम-जिनचैत्यचैत्यालयेयो नमः।**

(9, 27 या 108बार)

जयमाला

सोरठा

चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हों।
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकलजंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।

जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।

जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।

जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।

नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

दोहा

नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यालयेभ्यो जयमाला अर्घ्यं.....।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-2

भगवान महावीर पूजा

दोहा

स्वयंसिद्ध लक्ष्मीपति, महावीर भगवान्।
सर्वकर्म रिपु जीतकर, पाया पाद निर्वाण।।1।।
वर्धमान, अतिवरी, प्रभु सन्मति, वीर जिनेश।
आवो आवो सब यहाँ, पूरो आश महेश।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक -उपेन्द्रवज्रा –

गंगानदी नीर पवित्र लाया, पादाम्बुजों में प्रभु के चढ़ाया।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ में, निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर चंदन घिस के सुगंधी, श्री सन्मतिपाद जजूँ अनंदी।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ में, निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफलों सम सित धौत अक्षत, प्रभु को चढ़ाते पद होत शाश्वत।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ में, निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली अरविंद लाके, कामारिजेता प्रभु को चढ़ाके।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ में, निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

फेनी पुआ घेवर मोदकादी, क्षुधरोग नाशार्थ तुम्हें चढ़ादी।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ में, निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति तम को हरे है, तुम आरती ज्ञान उदे करे हैं।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ में, निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरू धूप सुगंध खेऊँ, कर्मारि कर भस्म निजात्म सेवूँ।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ में, निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूँ मैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर केला फल आम्र लाऊँ, शिव सौख्यहेतु प्रभु को चढ़ाऊँ।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ में, निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि संयुक्त सुअर्घ्य लाऊँ, मोक्षैकहेतु तुमको चढ़ाऊँ।
निर्वाण लक्ष्मीपति को जजूँ में, निर्वाण लक्ष्मी सुखको भजूँ मैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य शांती कर शांतिधारा, श्री सन्मती के पदकंज धारा।
निजस्वांत शांतीहित शांतिधारा, करते मिले है भवदधि किनारा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरकल्पतरु के वर पुष्प लाऊँ, पुष्पांजलि कर निज सौख्य पाऊँ।
संपूर्ण व्याधी भय को भगाऊँ, शोकादि हर के सब सिद्धि पाऊँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–गीता छंद –

सिद्धार्थ राजा कुण्डलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़ शुक्ला छठ तिथी, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सितचैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर वदी दशमी तिथी, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां श्रीमहावीरजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्य सूर्य उदित हुआ, प्रभु के अरी चउ नाशते।
बैशाखसित दशमीतिथी, प्रभु समवसृति में राजते।।
इंद्रादिगण कैवल्य की, पूजा महोत्सव विधि करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजज्ञानकलि विकसित करें।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीमहावीरजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण कल्याणक अर्घ्य

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठ विभो।।
निर्वाण लक्ष्मी वरणकर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां श्रीमहावीरजिननिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

–दोहा –

चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतित फलदातार।
तुम गुणमणिमाला कहूँ, सुखसंपति साकार।।1।।

(चाल-श्रीपति जिनवर करुणा.....)

जय जय श्री सन्मति रत्नाकर! महावीर! वीर! अतिवीर! प्रभो!
जय जय गुणसागर वर्धमान! जय त्रिशलानंदन! धीर प्रभो!।।
जय नाथवंश अवतंस नाथ! जय काश्यपगोत्र शिखामणि हो।
जय जय सिद्धार्थतनुज फिर भी, तुम त्रिभुवन के चूड़ामणि हो।।2।।

जिस वन में ध्यान धरा तुमने, उस वन की शोभा अति न्यारी।
सब ऋतु के फूल खिलें सुन्दर, सब फूल रहीं क्यारी क्यारी।।
जहँ शीतल मंद पवन चलती, जल भरे सरोवर लहरायें।
सब जात विरोधी जन्तूगण, आपस में मिलकर हरषायें।।3।।

चहुँ ओर सुभिक्ष सुखद शांती, दुर्भिक्ष रोग का नाम नहीं।
सब ऋतु के फल फल रहे मधुर, सब जन मन हर्ष अपार सही।।
कंचन छवि देह दिपे सुंदर, दर्शन से तृप्ति नहीं होती।
सुरपति भी नेत्र हजार करे, निरखे पर तृप्ति नहीं होती।।4।।

श्री इन्द्रभूति आदिक ग्यारह, गणधर सातों ऋद्धीयुत थे।
चौदह हजार मुनि अवधिज्ञानी, आदिक सब सात भेदयुत थे।।
चंदना प्रमुख छत्तीस सहस, संयतिकायें सुरनरनुत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकाएँ, त्रय लाख चतुःसंघ संख्या थी।।5।।

प्रभु सात हाथ, उत्तुंग आप, मृगपति लांछन से जग जाने।
आयू बाहत्तर वर्ष कही, तुम लोकालोक सकल जाने।।
भविजन खेती को धर्मामृत, वर्षा से सिंचित कर करके।
तुम मोक्षमार्ग अक्षुण्ण किया, यति श्रावक धर्म बता करके।।6।।

मैं भी अब आप शरण आया, करुणाकर जी करुणा कीजे।
निज आत्म सुधारस पान करा, सम्यक्त्व निधी पूर्णा कीजे।।
रत्नत्रयनिधि की पूर्ती कर, अपने ही पास बुला लीजे।
''सज्ज्ञानमती'' निर्वाणश्री, साम्राज्य मुझे दिलवा दीजे।।7।।

–घत्ता –

जय जय श्रीसन्मति, मुक्ति रमापति, जय जिनगुणसंपति दाता।
तुम पूजूँ ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, पाऊँ निजगुण विख्याता।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

पूजा नं.-3

त्रैलोक्य जिनालय पूजा

दोहा

त्रिभुवन के जिनमंदिर शाश्वत, आइ कोटि सुखराशी।
छप्पन लाख हजार सत्यानवे चार शतक इक्यासी।।
प्रति जिनगृह में मणिमय प्रतिमा इक सौ आठ विराजें।
आह्वानन कर जजूँ यहाँ मैं जन्म मरण दुःख भाजें।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक-स्त्रग्विणी छंद –

स्वर्ग गंगानदी नीर झारी भरूँ।
नाथ के पाद में तीन धारा करूँ।।
सर्व शाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े जाव से।।1।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध चंदन घिसाके कटोरी भरूँ।
नाथ पादाब्ज अर्चूं सभी दुःख हरूँ।।
सर्व शाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े जाव से।।2।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धौत तंदुल शशी रश्मि सम श्वेत हैं।
नाथ के अग्र में पुंज सुख हेतु हैं।।
सर्व शाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े जाव से।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद बेला सुगंधित कुसुम ले लिये।
नाथ पादाब्ज में आज अर्पण किये।।
सर्व शाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े जाव से।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर बरफी अंदरसा पुआ लायके।
नाथ के सामने चरु चढ़ाऊँ अबे।।
सर्व शाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े जाव से।।5।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप ज्योती लिये आरती मैं करूँ।
मोह हर ज्ञान की भारती मैं भरूँ।।
सर्व शाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े जाव से।।6।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ अबे धूपघट में जले।
कर्म निर्मूल हो देहकांती मिले।।
सर्व शाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े जाव से।।7।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम्र अंगूर केला चढ़ाऊँ भले।
मोक्ष की आश सह सर्व वाछित फले।।
सर्व शाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े जाव से।।8।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ में स्वर्ण चांदी कुसुम ले लिये।
नाथ को अर्पहूँ रत्नत्रय के लिये।।
सर्व शाश्वत जिनालय जजूँ भाव से।
स्वात्म पीयूष पीऊँ बड़े जाव से।।9।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधि अष्टकोटिषट्पंचाशल्लसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

श्रीजिनवर पादाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले स्वात्मसाम्राज्य, त्रिभुवन में सुख शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला हरसिंगार कुसुमांजलि अर्पण करूँ।
मिले सर्वसुखसार, त्रिभुवन की सुखसंपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

जय त्रिभुवन के जिनभवन, जिनप्रतिमा जिनसूर्य।
नमूँ अनंतों बार मैं भव्य कमलिनी सूर्य।।1।।

शंभु छंद

जय अधोलोक के जिनगृह सात करोड़ बहत्तर लाख नमूँ।
जय मध्यलोक के चार शतक अट्ठावन जिनगृह नित्य नमूँ।।
जय व्यंतरसुर ज्योतिष सुर के जिनगेह असंख्याते प्रणमूँ।
जय ऊरध के चौरासि लाख सत्यानवे सहस तेईस नमूँ।।1।।

कोट्यष्ट सुछप्पन लाख सत्यानवे सहस चार सौ इक्यासी।
जिनधाम अकृत्रिम नमूँ नमूँ ये कल्पवृक्षसम सुख राशी।।
नव सौ पचीस कोटी त्रेपन्न लाख सत्ताइस सहस तथा।
नवसौ अड़तालिस जिनप्रतिमा मैं नमूँ हरो भवव्याधि व्यथा।।2।।

जिनमंदिर लंबे सौ योजन पचहत्तर तुंग विस्तृत पचास।
उत्कृष्ट प्रमाण कहा श्रुत में मध्यम लंबे योजन पचास।।
चौड़े पचीस ऊँचे साढ़ेसैंतिस जघन्य लंबे पचीस।
चौड़े साढ़े बारह योजन ऊँचे योजन पौने उनीस।।3।।

मेरू में भद्रसाल नंदनवन के वर द्वीप नंदीश्वर के।
उत्कृष्ट जिनालय मुनि कहते मैं नमूँ नमूँ अंजलि करके।।
सौमनस रुचकगिरि कुंडलगिरि वक्षार कुलाचल के मंदिर।
मनुजोत्तर इष्वाकार अचल मध्यम प्रमाण के जिनमंदिर।।4।।

पांडुकवन के जिनगृह जघन्य मैं नमूँ नमूँ शिरनत करके।
रजताचल जंबू शाल्मलि तरू इनके मंदिर सबसे छोटे।।
ये एक कोस लंबे आधे चौड़े पोने कोस ऊँचे हैं।
सर्वत्र लघू जिनमंदिर का परिणाम यही मुनि गाते हैं।।5।।

जिनगृह को बेढ़े तीन कोट चहुँदिश में गोपुर द्वार कहें।
प्रतिवीथी मानस्तंभ बने प्रतिवीथी नव नव स्तूप कहें।।
मणिकोट प्रथम के अंतराल वन भूमि लतायें मनहरतीं।
परकोट द्वितिय के अंतराल दशविधी ध्वजायें फरहरतीं।।6।।

परकोट तृतिय के बीच चैत्यभूमी अतिशायि शोभती है।
सिद्धार्थवृक्ष अरु चैत्यवृक्ष्ज्ञ बिंबों के चित्त मोहती है।।
प्रतिमंदिर मध्य गर्भगृह इकसौ आठआठ अतिसुंदर हैं।
इन गर्भगृह में सिंहासन पर जिनवरबिंब मनोहर हैं।।7।।

ये बिंब पांचसौ धनुष तुंग पद्मासन राजें मणिमय हैं।
बत्तीस युगल यक्ष दोनों बाजू में चंवर ढुराते हैं।।
जिन प्रतिमा निकट श्रीदेवी श्रुतदेवी की मूर्ती शोभें।
सानत्कुमार सर्वाण्हयक्ष की मूर्ति भव्य जनमन लोभें।।8।।

प्रत्येक बिंब के पास सुमंगल द्रव्य एक सौ आठ आठ।
भृंगार कलश दर्पण चामर ध्वज छत्र व्यजन अरू सुप्रतिष्ठ।।
श्रीमंडप आगे स्वर्ण कलश शोभें बहु धूप घड़े सोहें।
मणिमय सुवर्णमय मालायें चारण ऋषि का भी मन मोहें।।9।।

मुखमंडप प्रेक्षामंडप अरू वंदन अभिषेक मंडपादी।
क्रीड़ा नर्तन संगीत गुणनगृह चित्रभवन विस्तृत अनादि।।
बहुविध रचना इन मंदिर में गणधर भी नहिं कह सकते हैं।
मां सरस्वती नित गुण गाये मुनिगण अतृप्त ही रहते हैं।।10।।

मैं नित्य जिनालय को वंदूँ नित शीश झुकांऊ गुण गाऊँ।
जिनप्रतिमा के पद कमलों में बहुबार नमूँ नित शिर नाऊँ।।
प्रत्यक्षदर्श मिल जाय प्रभो! इसलिये परोक्ष करूँ वंदन।
जिन ज्ञानमती ज्योति प्रगटे इस हेतु करूँ शत-शत वंदन।।11।।

दोहा

चिंतामणि जिनमूर्तियां, चिंतित फल दातार।
चिच्चैतन्य जिनेन्द्र को, नमूँ नमूँ शत बार।।12।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधिअष्टकोटिषट्पंचाशतलक्षसप्तनवतिसहस्रचतुःशतैकाशीति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-4

भवन वासी जिनालय पूजा

अथ स्थापना-अडिल्ल छंद

भवनवासि देवों के गृह में जानिये।
सात करोड़ बहत्तर लाख प्रमाणिये।।
ये शाश्वत जिनभवन बने हैं मणिमयी।
आह्वानन कर पूजूँ पाऊँ शिवमही।।1।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक-चामर छंद –

क्षीरसिंधु के समान स्वच्छ नीर लाइये।
श्रीजिनेन्द्रपाद में चढ़ाय ताप नाशिये।।
भवनवासि देव के जिनेन्द्र सद्म को जजूँ।
अनंत रिद्धि सिद्धिप्रद जिनेन्द्रबिंब को भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदनादि गंध लेय पात्र में भराइये।
श्रीजिनेन्द्रपाद में समर्च सौख्य पाइये।।
भवनवासि देव के जिनेन्द्र सद्म को जजूँ।
अनंत रिद्धि सिद्धिप्रद जिनेन्द्रबिंब को भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरफेन के समान श्वेत शालि लाइये।
श्रीजिनेन्द्रपाद अग्र पुंज को रचाइये।।
भवनवासि देव के जिनेन्द्र सद्म को जजूँ।
अनंत रिद्धि सिद्धिप्रद जिनेन्द्रबिंब को भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मोगरा गुलाब पुष्प केतकी मंगाइये।
श्रीजिनेन्द्रपाद के चढ़ाय सौख्य पाइये।।
भवनवासि देव के जिनेन्द्र सद्म को जजूँ।
अनंत रिद्धि सिद्धिप्रद जिनेन्द्रबिंब को भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपूप सेमई सुवर्ण पात्र में लिये।
श्रीजिनेन्द्र को चढ़ाऊं पूर्ण तृप्ति के लिये।।
भवनवासि देव के जिनेन्द्र सद्म को जजूँ।
अनंत रिद्धि सिद्धिप्रद जिनेन्द्रबिंब को भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णदीप में कपूर को जलाय लीजिये।
श्रीजिनेन्द्र के समक्ष आरती उतारिये।।
भवनवासि देव के जिनेन्द्र सद्म को जजूँ।
अनंत रिद्धि सिद्धिप्रद जिनेन्द्रबिंब को भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध से सुगंध धूप अग्निसंग खेइये।
कर्म को जलाय के अपूर्व सौख्य लेइये।।

भवनवासि देव के जिनेन्द्र सद्म को जजूँ।
अनंत रिद्धि सिद्धिप्रद जिनेन्द्रबिंब को भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम संतरा बदाम द्राक्ष थाल में भरें।
श्रीजिनेन्द्र को चढ़ाय आत्म सौख्य को भरें।।
भवनवासि देव के जिनेन्द्र सद्म को जजूँ।
अनंत रिद्धि सिद्धिप्रद जिनेन्द्रबिंब को भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध शालि पुष्प आदि अष्ट द्रव्य ले।
अर्घ को चढ़ाय के अपूर्व सौख्य हो भले।।
भवनवासि देव के जिनेन्द्र सद्म को जजूँ।
अनंत रिद्धि सिद्धिप्रद जिनेन्द्रबिंब को भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

हेम भृंग में स्वच्छ जल, जिन पद धार करंत।
तिहुंजग में हो शांतिसुख, परमानंद भरंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली मोगरा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले आत्म सुखसार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

जिनवर निलय अनूप, सौ इंद्रों से वंद्य हैं।
जजत मिले निजरूप, पुष्पांजलि से पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि मेरुपर्वतस्याधःस्थाने पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

भवनवासि के दश भेदों में, असुर कुमार प्रथम हैं।
इनमें प्रमुख इंद्र दो मानें, चमर व वैरोचन हैं।।
चौंतीस लाख भवन में उतने, जिनगृह चमर इंद्र के।
जिनगृह जिनप्रतिमा को पूजूँ अर्घ समर्पण करके।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवेषु चमरेन्द्रस्य चतुस्त्रिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असुर जाति में वैरोचन के तीन लाख भवनों में।
तीस लाख ही जिनमंदिर हैं मणिमय प्रतिमा उनमें।।
अर्घ चढ़ाकर मैं नित पूजूँ सर्व अरिष्ट नशाऊँ।
निजआत्म अनुभव रसपीकर मुक्तिवल्लभा पाऊं।।2।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवेषु द्वितीयवैरोचनेन्द्रस्य त्रिंशल्लक्षजिनालय जिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नागकुमार भवनवासी में दोय इंद्र माने हैं।
भूतानंद और धरणानंद विभव अधिक ठाने हैं।।
प्रथम इंद्र के लाख चवालिस भवन कहे शाश्वत हैं।
प्रतिगृह में जिनमंदिर प्रतिमा जजत स्वात्म भासत हैं।।3।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवेषु भूतानंदेन्द्रस्य चतुःचत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरणानंद इंद्र के चालिस लाख भवन सुंदर हैं।
प्रतिभवनों में जिनवर हैं शाश्वत क्षेमंकर हैं।।
सबमें इकसौ आठ सु इसकौ आठ जिनेश्वर प्रतिमा।
अर्घ चढ़ाकर मैं नित पूजूँ पाऊँ निधी अनुपमा।।4।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवेष धरणानंदेन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव सुपर्णकुमार भवनवासी में सुरपति दो हैं।
वेणु वेणु धारी नामक ये अनुशासन करते हैं।

वेणु इंद्र के भवन अकृत्रिम अड़तीस लाख बखाने।
उतने जिनगृह को मैं पूजूँ कर्म कुलाचल हाने।।5।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवेषु वेणुन्द्रस्य अष्टत्रिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र वेणुधार के चौंतिस लाख भवन सुंदर हैं।
चौंतिस लाख जिनालय उनमें जिनप्रतिमा मनहर हैं।।
मैं नित पूजूँ अर्घ चढ़ाकर सर्व दुःखों से छूटूँ।
परमानंद सुधारस पीकर जन्म मरण से छूटूँ।।6।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवेषु वेणुधारिन्द्रस्य चतुत्रिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीपकुमार भवनवासी में दोय इंद्र माने हैं।
पूर्ण वशिष्ठ नाम उनके हैं विभव अधिक ठाने हैं।।
पूर्ण इंद्र के चालिस लाख भवन उतने जिनमंदिर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नितप्रति वंदे उन्हें पुरंदर।।7।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवेषु पूर्णेन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तिस लाख वशिष्ठ इंद्र भवन बने अतिसुंदर।
एक एक जिनमंदिर उनमें, अर्चा करें पुरंदर।।
इनकी पूजा भक्ती करते, भव भवतापक नशते।
अर्घ चढ़ाकर पूजूँ मैं भी, ज्ञानदिवाकर प्रगटे।।8।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवेषु विशष्टेन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदधिकुमार भवनसुर के जलप्रीा जलकांत प्रमुख हैं।
चालिस लाख भवन जलप्रभ के, उतने ही जिनगृह हैं।।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर रुचि से, ज्ञान ज्योति प्रकटाऊँ।
रोग शोकदुख द्वंद नशाकर आत्मसुधारस पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवेषु जलप्रभइन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे भवन जलकांत इंद्र के छत्तिस लाख अकृत्रिम।
उन सबमें जिनमंदिर जिनवर प्रतिमा कही अकृत्रिम।।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर निप्रति कर्मकलंक नशाऊँ।
सप्तपरमस्थान प्राप्तकर परमधाम निजपाऊँ।।10।।

ॐ ह्रीं उदधिकुमारदेवेषु जलकांतइन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्षजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरविद्युत्कुमार के दो हैं इंद्र अतुल वैभवयुत।
घोष और महघोष नाम हैं जिनवर भक्ती संयुत।।
चालिस लाख भवन माने हैं घोष इंद्र से सुंदर।
इतने ही जिनमंदिर इनमें पूजूँ सदा रूचीधर।।11।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेषु घोषइन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छत्तिस लाख भवन शाश्वत हैं महाघोष सुरपति के।
उतने ही जिनमंदिर शाश्वत बने स्वर्ण मणियों के।।
उनमें जिनप्रतिमायें सुंदर मोक्ष सौख्य देती हैं।
इनमे पूजन करते ही ये भवदुख हर लेती हैं।।12।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारेषु महाघोषइन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर स्तनित कुमारों में दो इंद्र प्रमुख हैं माने।
हरिषेण हरिकांत नाम हैं जिनवर भक्त बखाने।।
हरिषेण के चालीस लाख भवन जिनगृह भी इतने।
इनको पूजूँ अर्घ चढ़ाकर फलें मनोरथ अपने।।13।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवेषु हरिषेइन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिकांत के छत्तिस लाख भवन हैं शाश्वत सुंदर।
छत्तिसलाख जिनालय मणिमय प्रतिमाओं से मनहार।।

अर्घ चढ़ाकर पूजूँ रुचि से भव भव भ्रमण मिटाऊँ।
आत्म ज्योति को प्रकटित करके फेर न भव में आऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवेषु हरिकांतेन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्कुमार देवों के अधिपति दो हैं सुकृतशीला।
अमितगति अरु अमितवाहना भवनों के प्रतिपाला।।
अमितगति के चालिसलाख भवन सबमें जिनमंदिर।
पूजूँ अर्घ चढ़ाकर नितप्रति ये हैं भव्य हितंकर।।15।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवेषु अमितगतिइन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र अमितवाहन के छत्तिस लाख भवन शाश्वत हैं।
सबमें जिनमंदिर सुअकृत्रिम स्वर्णमयी राजत हैं।।
जिनमंदिर की जिनप्रतिमा को वंदन करूँ सतत मैं।
कर्मकालिमा दूर हटाकर पाऊँ शांति हृदय में।।16।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवेषु अमितवाहनेन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि कुमार सुरों के अग्निशिखी व अग्निवाहन हैं।
अग्निशिखी के चालीस लाख भवन जनमनभावन हैं।।
सबमें जिनमंदिर अतिशायी जिनबिंबों को धारें।
उनकी पूजा भक्ती करके हम निजगुण विस्तारें।।17।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवेषु अग्निशिखिइन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र अग्निवाहन के छत्तिसलाख भवन शाश्वत हैं।
इन सबमें जिनमंदिर जिनवरप्रतिमा रवि लाजत हैं।।
इन सबको मैं नितप्रति पूजूँ मोहतिमिर को नाशूँ।
निजआत्मा अनुभव रस पीकर सम्यक् ज्योति प्रकाशूँ।।18।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवेषु अग्निवाहनेन्द्रस्य षट्त्रिंशल्लक्षजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकुमार सुरों में अधिपति दो हैं जिनवर भाक्तिक।
वो बेलंव प्रभंजन नामा सुखद पवन विस्तारक।।
भवनपचास लाख के अधिपति सुर बेलंब कहाये।
उतने ही जिनमंदिर सबको झुक झुक शीश नवायें।।19।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवेषु बेलंबइन्द्रस्य पंचाशल्लक्षजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्र प्रभंजन के हैं छयालिस लाख भवन मनहारी।
उतने ही जिन मंदिर उनसे जिन प्रतिमा सुखकारी।।
इन सबको मैं भक्ति भाव से पूजूँ अर्घ चढ़ाऊँ।
हे प्रभु! ऐसी शक्ती दीजे आतम ज्योत जगाऊँ।।20।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवेषु प्रभंजनेन्द्रस्य चत्वारिंशल्लक्षजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

भवनवासी देवों के सब मिल शाश्वत जिन गृहमाने।
सात करोड़ सुलाख बहत्तर मणिमय सुंदर जाने।।
इनकी भक्ति वंदना करते कर्म कुलाचल नाशूँ।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्रमय अभिनव ज्योति प्रकाशूँ।।21।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिजिनमंदिर इकसौ आठ हैं जिन प्रतिमायें रत्नमयी।
आठ अरब तैंतीस करोड़ छीयत्तर लाख प्रमाण कहीं।।
हाथ जोड़कर शीश झुकाकर करूँ वंदना भक्ती से।
क्षायिक सम्यक्रत्न प्राप्तकर, कर्म हनूँ निज शक्ती से।।22।।

ॐ ह्रीं भवनवासिभवनजिनालयस्थितअष्टार्बुदत्रयस्त्रिंशत्कोटिषट्सप्ततिलक्ष जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ

चौबोल छंद

असुरकुमार देव के कुल का, चिन्ह 'सुपीपल वृक्ष' रहे।
चैत्यवृक्ष इस मूलभाग में चारों दिश जिनबिंब कहें।।
पांच पाँच जिन प्रतिमा चउदिश पद्मासन से राजे हैं।
मानस्तंभ सबों के आगे पूजत ही अघ नाशे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारदेवअश्वत्थचैत्यवृक्षस्थितविंशतिजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाग कुमार देव में कुल तरु 'सप्तवर्ण' अतिशोभे है।
मूलभाग मैं पाँच पाँच जिन प्रतिमा जनमन लोभे हैं।।
मानस्तंभ सबों के आगे अग्र भाग में जिन प्रतिमा।
चहुँदिश सात सात जिन प्रतिमा पूजूँ उन्हें अतुल महिमा।।2।।

ॐ ह्रीं नागकुमारदेवसप्तपर्णचैत्यवृक्षस्थितविंशतिजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्णकुमार देव का कुलतरु, 'शाल्मति' चैत्यवृख माना।
उसमें बीस जिनेश्वर प्रतिमा पूजत सौख्य मिले नाना।।
पद्मासन से राज रहीं हैं प्रातिहार्य से संयुत हैं।
इनकी पूजा अर्चा करते, महापुण्य भी संचित हैं।।13।।

ॐ ह्रीं सुपर्णकुमारदेवशाल्मलिचैत्यवृक्षस्थितविंशतिजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीपकुमार सुरों में 'जामनु वृक्ष' चैत्यतरु मान्य हुआ।
चारों दिश में पाँच-पाँच जिनप्रतिमा से जग वंद्य हुआ।।
मानस्तंभ चारदिश में हैं बीस सभी को पूजूँ मैं।
अट्ठाइस अट्ठाइस प्रतिमा जजत दुखों से छूटूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं द्वीपकुमारदेवजम्बूचैत्यवृक्षस्थितविंशतिजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदधिकुमार सुरों का 'वेतस वृक्ष' चैत्यतरु कहलाता।
मूलभाग में जिन प्रतिमा को धारे सुरगण मन भाता।।
मुनिजन भी इन चैत्यवृक्ष की जिन प्रतिमा को नित वंदे।
मानस्तंभ सहित बिंबों को पूजत ही हम भव खंडे।।5।।

ॐ ह्रीं विद्युत्कुमारदेवकदम्बचैत्यवृक्षस्थितविंशतिजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव स्तनित कुमार कुलों में 'वृक्ष प्रियंगु' चैत्यतरु है।
बीस बिंब से पूज्य असुर सुर सुरपति वंद्य कल्पतरु है।।
मानस्तंभ जिनेश्वर प्रतिमा गणधर भी उनको वंदे।
हम भी पूजें अर्घं चढ़ाकर मन में अतिशय आनंदे।।7।।

ॐ ह्रीं स्तनितकुमारदेवप्रियंगुवृक्षस्थितविंशतिजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिक्कुमार का चैत्यवृक्ष तरुवर 'शिरीष' अतिशोभ रहा।
प्रतिदिश पाँच-पाँच जिनप्रतिमा से जनजनमन लोभ रहा।।
पद्मासन राजित जिन प्रतिमा प्रातिहार्य से मंडित हैं।
इनकी पूजा वंदन भक्ती करते ही दुख खंडित हैं।।8।।

ॐ ह्रीं दिक्कुमारदेवशिरीषचैत्यवृक्षस्थितविंशतिजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निकुमार देव का वृक्ष 'पलाश' चैत्यतरु सुंदर है।
उनकी जिन प्रतिमा की कीर्ति नित गाते सुर किन्नर हैं।।
मानस्तंभ बीस की प्रतिमा कहीं पाँच सौ साठ वहाँ।
इन सबकी पूजा करते ही मिले सुपद सब सौख्य जहाँ।।9।।

ॐ ह्रीं अग्निकुमारदेवपलाशचैत्यवृक्षस्थितविंशतिजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकुमार देव का चैत्यवृक्ष शुभनाम 'राजद्रुम'[1] है।
मूलभाग में पाँच पाँच जिन प्रतिमा धारे अनुपम है।।

1. चारोली का वृक्ष।

इन प्रतिमाओं की पूजा से रोग शोक दुख टलते हैं।
भूत प्रेत बाधा नहिं होती सर्व मनोरथ फलते हैं।।10।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारदेवराजमद्रुमचैत्यवृक्षस्थितविंशतिजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

भवनवासि के दश भेदों में, दशविध चैत्यवृक्ष मानें।
सब में चालिस-चालिस प्रतिमा सब मिल दो सौ सरधानें।।
पद्मासन सुत वीतराग छवि प्रातिहार्य से शोभित हैं।
रत्नमयी जिन प्रतिमा वंदूँ वांछित फलदायी शुभ हैं।।11।।

ॐ ह्रीं भवनवासिदेवसंबंधिदशचैत्यवृक्षस्थितद्विशतजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक एक जिन प्रतिमा आगे एक एक मानस्तंभ हैं।
प्रतिदिश में प्रतिमा सता सात सब इक में अट्ठाइस हैं।।
इन दो सौ मानस्तंभों में छप्पन सौ जिन प्रतिमायें हैं।
इन सबको पूजूँ अर्घ चढ़ा, ये समकित रत्न दिलाये हैं।।12।।

ॐ ह्रीं भवनवासिदेवसंबंधिचैत्यवृक्षजिनप्रतिमासन्मुखद्विशतमानस्तम्भस्थित पंच सहस्रषट्शतजिनबिम्बेभ्य पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

शाश्वत श्रीजिनवर भवन, श्रीजिनबिंब महान्।
गाऊँ गुणमणिमालिका, मिले धर्म शुचि ध्यान।।1।।

(चाल-हे दीनबंधु....)

जैवंत भवनवासि के शाश्वत जिनालय।
जैवंत सातकोटि बाहत्तर जिनालय।।

चौंसठ सुलाख भवन असुर कुमरदेव के।
चौरासि लाख भवन कहे नागकुमार के।।2।।

सुपर्णसुर के लाख बाहत्तर भवन कहे।
सुर द्वीपकुमर के छियत्र[1] लाख गृह रहें।।
उदधी स्तनित विद्युत[2] दिक् अग्निकुमर के।
बस लाख छियत्तर भवन हैं इन प्रत्येक के।।3।।

वायुकुमार के भवन हैं लाख छयानवे।
सब सातकोटि बाहत्तर सुलक्ष जानवे।।
दशभेद भवनवासि के प्रत्येक भवन में।
जय जय जिनेन्द्र गेह राजते सुमध्य में।।4।।

इस रत्नप्रभा भूमि के सुतीन भाग हैं।
खरभाग पंकभाग में भावन के भवन हैं।।
सुर नागकुमारादि नव प्रकार प्रथम में।
रहते असुरकुमार देव पंकभाग में।।5।।

इनके भवन भवनपुरा आवास त्रय कहे।
किनही सुरों के त्रयप्रकार के स्थल रहें।।
ये असुरकुमार मात्र भवन में हि रहे हैं।
इन सबके भवन समसुचतुष्कोण कहे हैं।।6।।

ऊँचाई तीनशतक योजनों सुभवन की।
संख्यात व असंख्य योजनों कि विस्तृती।।
येाजन सुएक शतक तुंग महाकूट हैं।
ये रत्नमयी कूट वेदियों के बीच है।।7।।

इनकूट उपरि श्रीजिनेन्द्रभवन रत्न के।
सब तीन कोट चार गोपुरों से युक्त ये।।

---

1. छियत्तर। 2. उदधिकुमार, स्तनितकुमार, विद्युत्कुमार, दिक्कुमार, अग्निकुमार इन सबके 76-76 लाख भवन हैं।

प्रत्येक वीथियों में मानतंभ शोभते।
नौ नौ स्तूप 'बिंबसहित चित्त मोहते।।8।।

परकोट अंतराल में त्रय भूमियां कहीं।
वन भूमि ध्वजाभूमि चैत्यभूमि सुखमही।
मंदिर में वंदनाभवन अभिषेकमंडपा।
नर्तन भवन संगीतभवन प्रेक्षमंडपा।।9।।

स्वाध्याय भवन चित्र मंडपादि बने हैं।
जिनमंदिरों में देवछंद रम्य घने हैं।।
प्रत्येक जिनालय में इकसौ आठ बिंब हैं।
पद्मासनों से राहते जिनेश बिंब हैं।।10।।

प्रतिमा के उभय श्रीदेवि श्रुतदेवि मूर्ति हैं।
सर्वाण्ह यक्ष सनत्कुमार यक्ष मूर्ति हैं।।
भृंगार कलश चामरादि अष्ट मंगली।
प्रत्येक इकसौ आठ-आठ शोभते भली।।11।।

प्रत्येक बिंब दोय तरफ ढोरते चंवर।
हैं नागयक्ष मूर्तियां जो सर्व चित्तहार।।
सद्दृष्टि देव भक्ति भरें पूजते सदा।
मिथ्यादृशी कुलदेव मान वंदते मुदा।।12।।

वीणा मृदंग दुंदुभी बहुवाद्य बजाके।
स्तोत्र पढ़ें नृत्य करें भक्ति बढ़ाके।।
जल गंध अष्ट द्रव्य लिये अर्चना करें।
जीवन सफल करें जिनेन्द्र वंदना करें।।13।।

जय जय जिनेन्द्र बिंब की मैं वंदना करूँ।
संपूर्ण कर्म शत्रु की मैं खंडना करूँ।।
जिनभक्ति के प्रसाद से संसार से तिरूँ।।
जिन ज्ञानमती पूर्ण हो भव वन में ना फिरूँ।।14।।

घत्ता

जय जय जिनप्रतिमा, अद्भुत महिमा,
भवनवासि के जिनगेहा।
जय मुक्तिरमा घर वंदत सुरनर,
मैं पूजूं नित धर नेहा ।।15।।

ॐ ह्रा भवनवासिदेवभवनस्थितसप्तकोटिद्वासप्ततिलक्षजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-5

मध्यलोक जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

श्री स्वयंसिद्ध जिनमंदिर यहाँ पर चार शतक अट्ठावन हैं।
मणिमय अकृत्रिम जिन प्रतिमा ऋषि मुनिगण के मन भावन हैं।।
सौ इंद्रों से वंदित जिनगृह मैं इनकी पूजा नित्य करूँ।
आह्वानन संस्थापन करके निजके सन्निध नित्य करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिपंचमेर्वादिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्ब-समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिपंचमेर्वादिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्ब-समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिपंचमेर्वादिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्ब-समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक शंभुछंद –

ये जन्म जरा मृति तीन रोग, भव भव से दुख देते आये।
त्रयधारा जल की देकर के मैं पूजूँ ये त्रय नश जायें।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं जिन मंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।1।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना ब्याधी रोग शोक, तन में मन में संताप करें।
चंदन से तुम पद चर्चूं मैं, यह पूजा भवभव ताप हरे।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं जिन मंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में इंद्रिय सुख खंड-खंड नहिं इनसे तृप्ती ही सकती।
अक्षत के पुंज चढ़ाऊँ मैं, अक्षत सुख देगी तुम भक्ती।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं जिन मंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।3।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

इस कामदेव ने भ्रांत किया निज आत्मिक सुख से भुला दिया।
ये सुरभित सुमन चढ़ाऊँ मैं, निज मन कलिका को खिला लिया।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं जिन मंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।4।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उदराग्नी प्रशमन हेतु नाथ त्रिभुवन के भक्ष्य सभी खाये।
नहिं मिली तृप्ति इसलिये प्रभो! चरु से पूजत हम हर्षाये।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं जिन मंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।5।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा निज घट में नहिं ज्ञान ज्योति खिल पाती है।
दीपक से आरति करते ही अघ रात्रि शीघ्र भग जाती है।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं जिन मंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप घटों में धूप खेय, चहुँदिश में सुरभि महकती है।
सब पाप कर्म जल जाते हैं, गुणरत्न राशि चमकती है।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं जिन मंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।7।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविध फल की आश लिये, बहुते कुदेव के चरण नमें।
अब सरस मधुर फल से पूजें बस एक मोक्षफल आश हमें।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं जिन मंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।8।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदि में चांदी के सोने के पुष्प मिला करके।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ हे जिनवर! रत्नत्रयनिधि दीजे तुरते।।
ये चार शतक अट्ठावन हैं जिन मंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
इनकी पूजा से जग जाती निज आतम ज्योती सौख्यमयी।।9।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शीत सुगंधित नीर से, प्रभुपद धार करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, आतम सुख विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून ले, पुष्पांजलि विकिरंत।
मिले सर्वसुख संपदा, परमानंद तुरंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय जय मध्यलोक के सब, शाश्वत जिनमंदिर मुनि वंदे।
जय जय जिन प्रतिमा रत्नमयी, भविजन वंदत ही अघ खंडें।।
जय जय जिनमूर्ति अचेतन भी चेतन को वांछित फल देतीं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें उनकी आतम निधि भर देतीं।।1।।

जय पाँच मेरु के अस्सी हैं, जंबू आदिक तरु के दश हैं।
कुल पर्वत के तीसों जिनगृह, गजदंत गिरी के बीसहिं हैं।।
वक्षार गिरी के अस्सी हैं, इक सौ सत्तर रजताचल के।
दो इष्टवाकर जिनालय हैं, चारहिं मंदिर मनुजोत्तर के।।2।।

नंदीश्वर के बावन, कुंडलगिरि रुचगिरी के चउ चउ हैं।
ये चार शतक अट्ठावन इन जिनगृह की मेरा वंदन हैं।।
प्रति जिनगृह में जिन प्रतिमायें सब इकसौ आठ-आठ राजें।
उनचास हजार चारसौ चौंसठ प्रतिमा वंदत अघ भाजें।।3।।

स्वात्माकनंदैक परम अमृत झरने से झरते समरस को।
जो पीते रहते ध्यानी मुनि, वे भी उत्कंठित दर्शन को।।
ये ध्यान धुरंधर ध्यान मूर्ति, यतियों को ध्यान सिखाती हैं।
भव्यों को अतिशय पुण्यमयी, अनवधि पीयूष पिलाती हैं।।4।।

ढाई द्वीपों के मंदिर तक मानव विद्याधर जाते हैं।
आकाश गमन ऋद्धीधारी, ऋषिगण भी दर्शन पाते हैं।।
आवो आवो हम भी पूजें, ध्यावें वंदे गुणगान करें।
भव भव के संचित कर्मनाश, पूर्णैक ज्ञानमति उदित करें।।5।।

घत्ता

जय जय श्री जिनवर, धर्मकल्पतरु, जय जिन मंदिर सिद्धमही।
जय जय जिन प्रतिमा, सिद्धन उपमा, अनुपम महिमा सौख्यमही।।6।।

ॐ ह्रीं मध्यलोकसंबंधिचतुःशतअष्टपंचाशत्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-6

सूदर्शन मेरु पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

त्रिभुवन भवन के मध्य सर्वोत्तम सुदर्शन मेरू है।
यह प्रथम जम्बूद्वीप में सर्वोच्च मेरू सुमेरू है।।
सोलह जिनालय में जिनेश्वर मूर्तियाँ हैं सासती।
थापूँ यहाँ उनको जजूँ, वे सर्व दुख संहारती।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक आडिल्ल छंद –

गंगानदि को प्रासुक जल घट में भरूँ।
जल से पूजा करते सब कलिमल हरूँ।।
मेरू सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडश्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध सुगंधित अष्ट गंध कर में लिया।
जिन पद चर्चत चाह दाह का क्षय किया।।
मेरू सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडश्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता फलसम तंदुल धवल अखंड हैं।
पुंज धरत जिन आगे होत अनंद है।।
मेरू सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडश्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरपादप के सुरभित सुमन मंगायके।
कामजयी जिनपाद जजूँ शिर नाय के।।
मेरू सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडश्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक बरफी पुआ सरस चरू ले लिया।
क्षुधाब्याधि हर तुम पद में अर्पण किया।।
मेरू सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।5।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडश्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत भर दीपक ज्योति सहित आरति करूँ।
मोह ध्वांत हर जिन अर्चूं भ्रम तम हरूँ।।
मेरू सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।6।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडश्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरू वर धूप अग्नि में खेवते।
दुष्ट कर्म अरि दग्ध हुये तुम सेवते।।

मेरू सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।7।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडश्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता काजू द्राक्ष फलों को लाय के।
सरस मोक्ष फल हेतु जजूँ हरषाय के।।
मेरू सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडश्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग गंधादिक अष्ट द्रव्य भर थाल में।
पूजूं अर्घ चढ़ाऊँ नाऊं भाल मैं।।
मेरू सुदर्शन के सोलह जिनगेह को।
पूजूँ जिनवर बिंब सभी धर नेह को।।9।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपस्थसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडश्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम शांति के हेतु, शांतिधारा मैं करूँ।
सकल जगत में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हर सिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

सर्वश्रेष्ठ गिरिराज हैं, मेरु सुदर्शन नाम।
चारों वन के जिनभवन, नितप्रति करूँ प्रणाम।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

मेरू सुदर्शन के पृथ्वी पर, भद्रसाल वन रम्य महान।
पूर्व दिशा में जिन मंदिर हैं, त्रिभुवन तिलक अतुल सुखदान।।
जल फल आदिक अर्घ सजाकर, पूजूँ जिनप्रतिमा गुणखान।
रोग शोक भय संकट हर कर, पाऊँ अविचल सौख्य निधान।।1।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम सुराचल भ्रदसाल में, दक्षिण दिश जिन मंदिर जान।
सुर नर किन्नर यक्ष यक्षिणी, विधाधर गण पूजें आन।।
जल फल आदिक अर्घ सजाकर, पूजूँ जिनप्रतिमा गुणखान।
रोग शोक भय संकट हर कर, पाऊँ अविचल सौख्य निधान।।2।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम देवगिरि भद्रसाल में पश्चिमदिश जिन भवन अनूप।
रत्नत्रय निधि के इच्छुक जन, पूजन करत लहें सुखरूप।।
जल फल आदिक अर्घ सजाकर, पूजूँ जिनप्रतिमा गुणखान।
रोग शोक भय संकट हर कर, पाऊँ अविचल सौख्य निधान।।3।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम मेरु के भद्रसाल में, उत्तर दिश जिनराज निकेत।
भव भय दुःख हरण हेतू भवि, नित प्रति पूजें भक्ति समेत।।
जल फल आदिक अर्घ सजाकर, पूजूँ जिनप्रतिमा गुणखान।
रोग शोक भय संकट हर कर, पाऊँ अविचल सौख्य निधान।।4।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोला छंद

मेरु सुदर्शन विषैं, सुभग नंदन वन जानो।
सुरनरगण से पूज्य, पूर्व दिक् जिनगृह मानो।।

जल गंधादि मिलाय, अर्घ्य ले पूजों भाई।
रोग शोक मिट जाये मिले निज संपति आई।।5।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदन वन के मांहि जिनालय दक्षिण दिश हैं।
नित्य महोत्सव साज, देवगण पूजन रत हैं।।
जल गंधादि मिलाय, अर्घ्य ले पूजों भाई।
रोग शोक मिट जाये मिले निज संपति आई।।6।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश जिननिलय, मनोहर नंदनवन में।
सुर विद्याधर रहें, सतत भक्तीरत जिन में।।
जल गंधादि मिलाय, अर्घ्य ले पूजों भाई।
रोग शोक मिट जाये मिले निज संपति आई।।7।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदनवन के उत्तर जिन मंदिर सुखकारी।
उसमें जिनवर बिंब, दुरितहर मंगलकारी।।
जल गंधादि मिलाय, अर्घ्य ले पूजों भाई।
रोग शोक मिट जाये मिले निज संपति आई।।8।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

वन सौमनस महान हैं, मेरू सुदर्शन माहिं।
पूरब दिश में जिन भवन, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाहिं।।9।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन सौमनस जिनेश गृह, दक्षिण दिशा मंझार।
वसु विधि अर्घ्य संजोय के, पूजों हो भव पार।।10।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश सौमनस के स्वर्णमयी जिनधाम।
भक्तिभाव से अर्घ्य ले, पूजों जिनवर धाम।।11।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरदिश सौमनस में, श्री जिनभवन महान्।
त्रिभुवनतिलक प्रसिद्ध है जजूँ अर्घ्य ले आन।।12।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

मेरु पर चौथ पांडुकवन, उसके पूनब दिश सुंदर हैं।
रत्नों की मूर्ति से संयुत मणिकनकमयी जिनमंदिर हैं।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जन भक्ती नौका प्राप्त करूँ।।13।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन में दक्षिण दिश का, जिन भवन अनूपम कहलाता।
जो दर्शन वंदन करते हैं, उनको यह अनुपम फलदाता।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जन भक्ती नौका प्राप्त करूँ।।14।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन के पश्चिम दिश में, जिन चैत्याल महिमाशाली।
सुरनर विद्याधर से पूजित, सब ताप हरे गुणमणिमाली।।

जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जन भक्ती नौका प्राप्त करूँ।।15।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुकवन के उत्तर दिश में, शुभ त्रिभुवनतिलक जिनालय हैं।
नामोच्चारण से पाप दहे, भक्तों के लिये सुखालय है।।
जल गंधादिक वसु द्रव्य लिये, नित पूजा करके अर्घ्य करूँ।
संसार जलधि से तिरने को, जन भक्ती नौका प्राप्त करूँ।।16।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-अडिल्ल छंद

प्रथम मेरु के सोलह जिनगृह नित जजूँ।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय पूर्ण सुख को भजूँ।।
काम विजेता जिनवरबिंब मनोज्ञ हैं।
पूजत ही निष्काम बनूँ अतियोग्य मैं।।1।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह जिनगृह में जिनप्रतिमा जानिये।
सत्रह सौ अट्ठाइस संख्य बखानिये।।
प्रतिजिनगृह में इक सौ आठ प्रमाण हैं।
पूजूँ मैं रूचिधार मुझे सुखखान है।।2।।

ॐ ह्रीं सुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्तशत-अष्टा विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाण्डुकवन के विदिक् में शिला चार अभिराम।
पूजूँ अर्घं चढ़ायके मिले स्वात्म विश्राम।।3।।

ॐ ह्रीं पाण्डुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

सर्वोत्तम सर्वोच्च हैं, प्रथम मेरु गिरिराज।
उसकी यह जयमालिका, हर्षित गाऊं आज।।1।।

शंभु छंद

जय मेरु सुदर्शन है अनुपम, सोलह चैत्यालय से सोहे।
अध्यातम शिरोमणि योगीजन, उनका भी अतिशय मन मोहे।।
उपवन वापी के कूटों से परकोटों से सुर भवनों से।
मंडित रमणीक महासुन्दर, कांचन मणिमय शुभरतनों से।।2।।

पृथ्वी पर भद्रसाल वन है, चंपक तरु आदिक से भाता।
है पांचशतक योजन ऊपर, नन्दनवन अतिशय सुखदाता।।
इससे साढ़ें बासठ हजार, योजन ऊपर सौमनस बनी।
छत्तीस हजार महायोजन, ऊपर पांडुकवन सौख्यघनी।।3।।

चारों वन के चारों दिश में, अकृत्रिम चैत्यालय मानो।
प्रति मंदिर इक सौ आठ कही, जिनप्रतिमा अतिशययुत जानो।।
इनके दर्शन से घोर महा, मिथ्यात्व तिमिर भी नश जाता।
सम्यग्दर्शन की ज्योति जगे, आत्मा आत्मा को लख पाता।।4।।

भव भव से संचित राशि, इक क्षण में भस्म हुआ करती।
जिनराज चरण की भक्ति ही, भवि के भव भव दुःख को हरती।।
पांडुकवन की विदिशाओं में, पांडुक आदिक हैं चार शिला।
तीर्थंकर के अभिषव जल से, वे पूज्य हुई सुरवंध इला।।5।।

जय भद्रसाल के जिनमंदिर, जय नंदनवन के जिनगेहा।
जय सौमनसं पांडुकवन के, जिनभवन जजूँ मैं धरनेहा।।
ये मूर्ति अचेतन होकर भी चेतन को वांछित फल देतीं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, उनके सब संकट हर लेतीं।।6।।

दोहा

मेरूसुदर्शन की भविक, पूजा करो पुनीत।
मेरु सदृश उत्तुंग फल, लाहो शीघ्र ही मीत।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिषोडशजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-7

जंबूद्वीपस्थ जंबूवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

गिरि मेरु के उत्तर दिशी उत्तरकुरु शोभे अहा।
उसमें सुदिक् ईशान के जंबूतरु राजे महा।।
दक्षिण दिशा में देवकुरु नैऋत्य कोण सुहावनी।
तरु शाल्मली शुभरत्नमय, सुन्दर दिखे शाखाघनी।।1।।

दोहा

दोनों तरु की शाख पर, दो श्री जिनवर गेह।
आह्वानन कर मैं जजूँ, सदा हृदय धर नेह।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षसंबंधिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षसंबंधिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षसंबंधिजिनालयजिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक आडिल्ल छंद –

सुरगंगा को नीर सुरभि प्रासुक किया।
जिनपद धारा देय, सकल मल क्षय किया।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष तने जिनधाम को।
जो पूछें धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि घनसार सुकुंकुम गंध ले।
सिद्धनि के प्रतिबिंब, चरण को चर्च ले।।

जंबू शाल्मलि वृक्ष तने जिनधाम को।
जो पूछें धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जल से धौत सुअक्षत मुक्ताफल समा।
पुंज धरूँ जिनसन्मुख भक्ती अनुपमा।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष तने जिनधाम को।
जो पूछें धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही चमेली कमल केबड़ा फूल ले।
प्रभु के चरण चढ़ाऊँ भव के दुख टले।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष तने जिनधाम को।
जो पूछें धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सद्यजात[1] घेवर बावर मोदक घने।
चरु की पूजा नित्य क्षुधा ब्याधी हने।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष तने जिनधाम को।
जो पूछें धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नदीप की ज्योति दशों दिश तम हरे।
अंतर भेद विज्ञान प्रगट हो भ्रम टरे।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष तने जिनधाम को।
जो पूछें धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धून अगनि में खेय धूम दशदिश उड़े।
कर्म पुंज प्रज्वले सतत आनंद बढ़े।।

---

1. ताजे।

जंबू शाल्मलि वृक्ष तने जिनधाम को।
जो पूछें धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के परिपक्व सरस फल लाय के।
प्रभु की पूजा करूँ हरष गण गाय के।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष तने जिनधाम को।
जो पूछें धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वारि सुचंदन अक्षत फल चरू मिले।
दीप धूप शुचि उत्तम फल युत अर्घ्य ले।।
जंबू शाल्मलि वृक्ष तने जिनधाम को।
जो पूछें धर प्रीति, लहे शिव धाम को।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूशाल्मलिवृक्षजिनालयसर्वजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

यमुना सरित नीर, कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देत, शांति करो बस लोक में।।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

जंबू शाल्मलि वृक्ष, तिनके जिनगृह को जजूँ।
पुष्पांजलि कर नित्य, जो पूजें सो शिव लहें।।1।।

इति जम्बूवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

'जंबूतरु' की उत्तरी शाखा विषे जिनधाम है।
सब देव देवी करें अर्चा, मैं जजूं इह थान है।।

वर नीर चंदन आदि वसुविध द्रव्य थाली में लिया।
संसार रोग निवार स्वामी अर्घ्य से पूजन किया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिजम्बूवृक्षस्य उत्तरशाखायां जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'द्रुम शाल्मलि' की दक्षिणी, शाखा उपरि जिनगेह है।
योगी सदा ध्याते उन्हें, हम भी जजें धर नेह है।।
वर नीर चंदन आदि वसुविध द्रव्य थाली में लिया।
संसार रोग निवार स्वामी अर्घ्य से पूजन किया।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिशाल्मलिवृक्षस्य दक्षिणशाखायां जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य दोहा

जंबू शाल्मलि वृक्ष पर, दो जिनमंदिर सिद्ध।
पूर्ण अर्घ्य ले मैं जजूँ, पाऊँ सौख्य समृद्ध।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीसुदर्शनमेरुसंबंधिजम्बूशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालयसर्व जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो सौ सोलह जानिये, जिनप्रतिमा अभिराम।
नित प्रति अर्घ चढ़ायके, शत शत करूं प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूवृक्षशाल्मलिवृक्षजिनालयमध्यविजराजमानद्विशतषोडशजिन बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य**-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।*

जयमाला

सोरठा

तरु की शाखा मांहि, रत्नमयी जिनबिंब हैं।
तिन की यह जयमाला, भक्ति भाव से मैं पढ़ूँ।।1।।

नरेन्द्र छंद

जंबूतरु का स्वर्णिम स्थल, पांच शतक योजन है।
इस थल का परकोटा कांचन-मयी मनो मोहन है।।
पीठ आठ योजन का ऊँचा, मध्य माहिं चांदी का।
इस पर जंबूवृक्ष अकृत्रिम, पृथ्वीमय रत्नों का।।2।।

यह तरु तुंग आठ योजन है, वज्रमयी जड़ जानो।
मणिमय तना हरित मोटाई, एक कोश परमानो।।
तरु की चार दिशाओं में हैं, चार महाशाखायें।
छह योजन की लंबी इतने, अंतर से लहरायें।।3।।

मरकत कर्केतन मूँगा, कांचन के पत्ते उत्तम।
पाँच वर्ण रत्नों के अंकुर, फल अरु पुष्प अनूपम।।
इसमें फल जामुन सदृश हैं, कोमल चिकने दिखते।
रत्नमयी हैं फिर भी अद्भुत पवन लगत ही हिलते।।4।।

उत्तर शाखा पर जिन मंदिर, सुरगृह त्रय शाखा पे।
सम्यक्त्वी आदर व अनादर, व्यंतर रहते उनपे।।
तरु को चारों तरफ घेर कर, बारह पद्म वेदियाँ।
उनके अंतराल में तरु की, परिकर वृक्ष पंक्तियाँ।।5।।

एक लाख चालिस हजार इक सौ उन्नीस कहाएं।
इन जंबू परिवार वृक्ष पर, सुर परिवार रहायें।।
मेरु की ईशान दिशा में नीलाचल के दाएँ।
माल्यवन्त के पश्चिम में, सीता के पूर्व कहाएँ।।6।।

तरु स्थल के चारों तरफे, त्रय वन खंड कहाते।
फल फूलों युत सुरमहलों युत, जल वापी युत भाते।।
इस द्रुम के जिन गृह में इक सौ आठ जिनेश्वर प्रतिमा।
इसी तरह शाल्मली वृक्ष की, जानो सारी रचना।।7।।

शाल्मलि तरु के अधिपति व्यतंर, वेणु वेणुधारी हैं।
ये सुर सम्यक्त्वी जिन मत के, प्रेमी गुण धारी हैं।।

जितने जंबू शाल्मलि तरु हैं, उतने जिनमंदिर हैं।
क्योंकि सभी पर सुर रहते हैं, सबमें जिनमंदिर हैं।।8।।

दो चैत्यालय मुख्य अकृत्रिम हैं, स्वतंत्र दो तरु के।
उनकी अरु सब जिन प्रतिमा की, करूँ वंदना रुचि से।।
सुर किन्नरियाँ नित गुण गातीं वीणा की लहरों से।
दर्शन करते नर्तन कीर्तन करतीं भक्ति स्वरों से।।9।।

जय जय जिनप्रतिमा अद्भुत महिमा पढ़े सुने जो जयमाला।
जय 'ज्ञानमती' श्रीसिद्धिवधू प्रिय सो नर पावे खुशहाला।।10।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिजम्बूशाल्मलिवृक्षसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-8

जंबूद्वीप पर्वत जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

इस जंबुद्वीप में कुल पर्वत छह हैं, गजदंत गिरी चउ हैं।
वक्षारचल सोलह सुंदर, विजयार्ध गिरी सित चौंतिस हैं।।
इन सब पर शाश्वत जिन मंदिर मणिमय शाश्वत जिन प्रतिमायें।
आह्वानन विधिकर मैं, पूजूं, ये स्वात्म गुणों को दिलवायें।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि-जिनालय जिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि-जिनालय जिनबिम्बसमूह!अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि-जिनालय जिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक स्त्रग्विणी छंद –

पद्मद्रह नीर शीतल सुगंधित लिया।
नाथ के पाद में तीन धारा किया।।
शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरुं भक्ति की नाव से।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि जिनालय जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध से नाथ पादाब्ज को चर्चते।
देह की दाह मेटूँ प्रभू अर्चंते।।
शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरुं भक्ति की नाव से।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि जिनालय जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतियों के सदृश शालि के पुंज से।
पूजहूँ आप को सौख्य पूरो अबे।।
शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरुं भक्ति की नाव से।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लिका पारिजातादि चुन के लिये।
पुष्प अर्पण करत कीर्ति सौरभ किये।।
शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरुं भक्ति की नाव से।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि जिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरियाँ मोदकादी भरे थाल में।
पूजते आत्म तृप्ती सु तत्काल में।।
शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरुं भक्ति की नाव से।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि जिनालय जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप कूर्पर ज्योती तमो वारती।
आरती से भरे ज्ञान की भारती।।
शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरुं भक्ति की नाव से।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि जिनालय जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ सुगंधी उठे अभ्र में।
कर्म भस्मी हुये सौख्य हो स्वात्म में।।

शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरुं भक्ति की नाव से।।7।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि जिनालय जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव अंगूर फल को चढ़ाऊँ तुम्हें।
मोक्ष की आश पूरो प्रभो शीघ्र में।।
शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरुं भक्ति की नाव से।।8।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि जिनालय जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ में रत्न धरके चढ़ाऊँ प्रभो।
रत्नत्रय दीजिये शीघ्र ही हे विभो।।
शाश्वते जैन मंदिर जजूँ भाव से।
जन्मवार्धी तिरुं भक्ति की नाव से।।9।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितपष्टि जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांतीधारा मैं करूँ, जिनवरपद अरविंद।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजलि करंत।
सुख संतति संपति बढ़े निजनिधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

जंबूद्वीप में साठ, पर्वत पर जिनगेह हैं।
नमूँ नमाकर माथ, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

'हिममान' पर्वतकनकद्युतिमय द्वय तरफ बहुवर्ण का।
वर कूट ग्यारह में कहा इक सिद्धकूट जिनेन्द्र का।।
उस पर जिनेश्वर धाम है, पूजा करूँ अति चाव से।
संसार खार अपार सागर तिरुं भक्ती नाव से।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिहिमवत्पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत 'महाहिमवान' चांदी वर्ण का सुंदर दिखे।
इस उपरि आठ सुकूट पूरब सिद्धकूट परम दिखे।।
उस पर जिनेश्वर धाम है, पूजा करूँ अति चाव से।
संसार खार अपार सागर तिरुं भक्ती नाव से।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिमहाहिमवत्पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत 'निषध' है तप्त स्वर्णिम वर्णबहु द्व पार्श्व है।
ह्रद वेदिका वन कूट नव में सिद्धकूट विख्यात है।।
उस पर जिनेश्वर धाम है, पूजा करूँ अति चाव से।
संसार खार अपार सागर तिरुं भक्ती नाव से।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिनिषधपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'नीलगिरि' वैडूर्यवर्णी द्वयतरफ पंचरंगिमा।
नव कूट में इक सिद्धकूट जजें सदा रवि चन्द्रमा।।
उस पर जिनेश्वर धाम है, पूजा करूँ अति चाव से।
संसार खार अपार सागर तिरुं भक्ती नाव से।।4।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिनीलपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रुक्मी' अचल रूपामयी वर कूट आठ सुशोभते।
पूरब दिशा में 'सिद्धकूट' सुरेन्द्र का मन मोहते।।

उस पर जिनेश्वर धाम है, पूजा करूँ अति चाव से।
संसार खार अपार सागर तिरुं भक्ती नाव से।।5।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिरुक्मिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शिखरी' अचल सोने सदृश शुभ कूट ग्यारह नित्य हैं।
पूरब दिशा में सिद्धकूट सुपूजतें सब भव्य हैं।।
उस पर जिनेश्वर धाम है, पूजा करूँ अति चाव से।
संसार खार अपार सागर तिरुं भक्ती नाव से।।6।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिशिखरिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार गजदंत अर्घ

दोहा

'माल्यवंत' गजदंत हैं, मेरु के ईशान।
वर्ण रुचिर वैडूर्यमणि नवकूटों युत मान।।
मेरु निकट जिनराजगृह, सिद्धकूट पर सिद्धि।
मन वच तन से पूज कर पाऊँ नव निधि रिद्धि।।7।।

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वतईशानदिक्माल्यवान्गजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु के आग्नेय दिश, 'महासौमनस' नाम।
रजतमयी गजदंत यह, सातकूटयुत जान।।
मेरु निकट जिनराजगृह, सिद्धकूट पर सिद्धि।
मन वच तन से पूज कर पाऊँ नव निधि रिद्धि।।8।।

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वतआग्नेयदिक्महासौमनसगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु के नैऋत्यदिश, 'विद्युत्प्रभ' गजदंत।
वर्ण तपाये स्वर्णसम, नव कूटहिं शोभंत।।

मेरु निकट जिनराजगृह, सिद्धकूट पर सिद्धि।
मन वच तन से पूज कर पाऊँ नव निधि रिद्धि।।9।।

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वतनैऋत्यदिक्विद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधमादनाचल' कहा, मेरु के वायव्य।
सातकूट युत स्वर्णसम, पूजें सुर नर भव्य।।
मेरु निकट जिनराजगृह, सिद्धकूट पर सिद्धि।
मन वच तन से पूज कर पाऊँ नव निधि रिद्धि।।10।।

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वतवायव्यदिक्गंधमादनगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार पर्वत अर्घ-कुसुमलता

सीतानदी के उत्तर तट पर भद्रसाल वेदी के पास।
'चित्रकूट' वक्षार स्वर्णमय, चार कूट से मंडित खास।।
नदी तरफ के सिद्धकूट पर जिनमंदिर बना विशल।
जल फल आदिक अर्घ बनाकर, पूजन करूँ मिटे जगजाल।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे चित्रकूटवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के उत्तर तट पर, क्रम से 'नलिनकूट' वक्षार।
स्वर्णमयी पर चार कूट हैं, देव देवियाँ करें बिहार।।
नदी तरफ के सिद्धकूट पर जिनमंदिर बना विशल।
जल फल आदिक अर्घ बनाकर, पूजन करूँ मिटे जगजाल।।11।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे नलिनकूटवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार अचलपर, विद्याधर गण करें विहार।
पर्वत महिमा निरख निरख कर, तृप्त हुये मन हर्ष अपार।।

नदी तरफ के सिद्धकूट पर जिनमंदिर बना विशल।
जल फल आदिक अर्घ बनाकर, पूजन करूँ मिटे जगजाल।।13।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे पद्मकूटवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार मनोहर, सुर वनितायें करें विनोद।
चारण मुनिगण विहरण करते, समरसमय मन भरें प्रमोद।।
नदी तरफ के सिद्धकूट पर जिनमंदिर बना विशल।
जल फल आदिक अर्घ बनाकर, पूजन करूँ मिटे जगजाल।।14।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीउत्तरतटे एकशैलवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदी के दक्षिण तट पर, देवारण्य वेदिका पास।
अचल 'त्रिकूट' चार कूटों युत जिनगृह युत वक्षार सनाथ।।
नदी तरफ के सिद्धकूट पर जिनमंदिर बना विशल।
जल फल आदिक अर्घ बनाकर, पूजन करूँ मिटे जगजाल।।15।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे त्रिकूटवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रम से फिर 'वैश्रवण' कूट है, देव देवियों से भरपूर।
वापी वन उद्यान मनोहर, मुनिगण करें पाप को दूर।।
नदी तरफ के सिद्धकूट पर जिनमंदिर बना विशल।
जल फल आदिक अर्घ बनाकर, पूजन करूँ मिटे जगजाल।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे वैश्रवणवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजनगिरि' वक्षार मनोहर, स्वर्णवर्णमय अतिसुखकार।
सुर विद्याधर गगन गगनचर, ऋषिगण को भी है सुखकार।।
नदी तरफ के सिद्धकूट पर जिनमंदिर बना विशल।
जल फल आदिक अर्घ बनाकर, पूजन करूँ मिटे जगजाल।।16।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटे अंजनगिरिवक्षार पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आत्मांजन' वक्षार आठवां, योगीजन करते नित ध्यान।
नित आतम परमानंदामृत अनुभव कर हो रहे महान्।।
नदी तरफ के सिद्धकूट पर जिनमंदिर बना विशल।
जल फल आदिक अर्घ बनाकर, पूजन करूँ मिटे जगजाल।।18।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थसीतानदीदक्षिणतटेअंजनात्मा वक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

पश्चिमविदेह सीतोदा के, दक्षिण में भद्रसाल वेदी।
उस सन्निध 'श्रद्धावान' कहा, वक्षार कनकमय पर्वत ही।।
नदि के सन्निध है सिद्धकूट, उसमें शाश्वत चैत्यालय है।
जल गंधादिक से पूजूँ मैं, मेरे हित सौख्य सुधालय है।।19।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे श्रद्धावानवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के दक्षिण तट पर, गिरि 'विजटावान' कहाता है।
वक्षार सदा चउकूटों युत, सुरनर सब के मन भाता है।।
नदि के सन्निध है सिद्धकूट, उसमें शाश्वत चैत्यालय है।
जल गंधादिक से पूजूँ मैं, मेरे हित सौख्य सुधालय है।।20।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे विजटावानवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आशीविष' है वक्षार कहा, इस पर रत्नों की वेदी है।
परकोटे वापी उपवन से, जिनगृह से कर्मन भेदी हैं।।
नदि के सन्निध है सिद्धकूट, उसमें शाश्वत चैत्यालय है।
जल गंधादिक से पूजूँ मैं, मेरे हित सौख्य सुधालय है।।21।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे आशीविषवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार 'सुखावह' अतिसुन्दर, सुर ललना की क्रीड़ा भूमी।
यतिगण के विहरण से पावन, सबको आनंदकारी भूमी।।

नदि के सन्निध है सिद्धकूट, उसमें शाश्वत चैत्यालय है।
जल गंधादिक से पूजूँ मैं, मेरे हित सौख्य सुधालय है।।22।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदीदक्षिणतटे सुखावहवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पर शुभ, भूतारण्य बनी वेदी।
उस सन्निध 'चंद्रमाल' पर्वत, जन मन का मोह तिमिर भेदी।।
नदि के सन्निध है सिद्धकूट, उसमें शाश्वत चैत्यालय है।
जल गंधादिक से पूजूँ मैं, मेरे हित सौख्य सुधालय है।।23।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदाउत्तरतटे चंद्रमालवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार मनोहर 'सूर्यमाल' सोने के भवन सुहाते हैं।
सुरललनाओं की बीणा के तारों से जिनगुण गाते हैं।।
नदि के सन्निध है सिद्धकूट, उसमें शाश्वत चैत्यालय है।
जल गंधादिक से पूजूँ मैं, मेरे हित सौख्य सुधालय है।।24।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदाउत्तरतटे सूर्यमालवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'नागमाल' वक्षार अचल, अनुपम कांती छिटकाता है।
जिनवर के दर्शन करते ही, सबके अघपुंज नशाता है।।
नदि के सन्निध है सिद्धकूट, उसमें शाश्वत चैत्यालय है।
जल गंधादिक से पूजूँ मैं, मेरे हित सौख्य सुधालय है।।25।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदाउत्तरतटे नागमालवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार सोलवां 'देवमाल' रत्नों की कांति लजाता है।
जिनदेव देव के गृह में नित देवों का नृत्य कराता है।।
नदि के सन्निध है सिद्धकूट, उसमें शाश्वत चैत्यालय है।
जल गंधादिक से पूजूँ मैं, मेरे हित सौख्य सुधालय है।।26।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थसीतोदानदाउत्तरतटे देवमालवक्षार पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंतीस विजयार्ध अर्घ-नरेन्द्र छंद

सीतानदि के उत्तरतट में, भद्रसाल बन पासे।
कच्छादेश विदेह बीच में, विजयारध गिरि भासे।।
नव कूटों के सिद्धकूट पर, जिनवर भवन महाना।
ऋषिगण वंदन करते जाते, मैं पूजूँ इह थाना।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसीतानदी उत्तरतटे कच्छादेशमध्यविजयार्धपर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू के पश्चिम उस तट पर, देश सुकच्छा सोहे।
तामध रजताचल अतिसुंदर सुर किन्नर मन मोहे।।
नव कूटों के सिद्धकूट पर, जिनवर भवन महाना।
ऋषिगण वंदन करते जाते, मैं पूजूँ इह थाना।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदी उत्तरतटे सुकच्छादेशमध्यविजयार्ध-पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महाकच्छा कहलाता, रूपाचल ता मध्ये।
विद्याधर ललना किन्नररियाँ, जिनगुण गाती तथ्ये।।
नव कूटों के सिद्धकूट पर, जिनवर भवन महाना।
ऋषिगण वंदन करते जाते, मैं पूजूँ इह थाना।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदी उत्तरतटे महाकच्छादेशमध्यविजयार्ध पर्वतस्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश कच्छकावती सुमध्ये रूपाचल सुखकारी।
सुरललना के वीणा स्वर, से जनजन का मनहारी।।
नव कूटों के सिद्धकूट पर, जिनवर भवन महाना।
ऋषिगण वंदन करते जाते, मैं पूजूँ इह थाना।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदी उत्तरतटे महाकच्छादेशमध्यविजयार्ध-पर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश कहा आवर्ता सुंदर, रूपाचल तसु बीचे।
रक्ता-रक्तोदा नदियों से, छहखंड होते नीके।।

नव कूटों के सिद्धकूट पर, जिनवर भवन महाना।
ऋषिगण वंदन करते जाते, मैं पूजूँ इह थाना।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदी उत्तरतटे आवर्तदेशमध्यविजयार्धपर्वत-स्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश कहा 'लांगत' आवर्ता', तामध रूपाचल है।
तीनों कटनी पर वनवेदी, वापी जल निर्मल है।।
नव कूटों के सिद्धकूट पर, जिनवर भवन महाना।
ऋषिगण वंदन करते जाते, मैं पूजूँ इह थाना।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदी उत्तरतटे लांगलावर्तदेशमध्यविजयार्ध-पर्वत स्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर देश पुष्कला के मधि रूपाचल मन भावे।
उभय तरफ पचपन-पचपन, खगनगरी मन ललचायें।।
नव कूटों के सिद्धकूट पर, जिनवर भवन महाना।
ऋषिगण वंदन करते जाते, मैं पूजूँ इह थाना।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदी उत्तरतटे पुष्कलादेशमध्यविजयार्धपर्वत-स्थित सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश पुष्कलावती सुहाता, उसमें रजतगिरी हैं।
विद्याधर की कर्मभूमिकयाँ, मुक्तीमार्ग पुरी हैं।।
नव कूटों के सिद्धकूट पर, जिनवर भवन महाना।
ऋषिगण वंदन करते जाते, मैं पूजूँ इह थाना।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदी उत्तरतटे पुष्कलावतीदेशमध्यविजयार्ध-पर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

पूर्वविदेह विषे सीता के, दक्षिणतट में माना।
देवारण्य वेदिकासन्निध, वत्सादेश बखाना।।

मध्य रजतगिरि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
जिनवर चरण कमल हम पूजें, मिले सर्वसुख धामा।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे वत्सादेशस्थितरजताचल सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदी के दक्षिणतट पर, देश सुवत्सा सोहें।
तीर्थंकर चक्री प्रतिचक्री हलधर वहं नित होवें।।
मध्य रजतगिरि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
जिनवर चरण कमल हम पूजें, मिले सर्वसुख धामा।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे सुवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वत स्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्र से देश महावत्सा में रजताचल है जानो।
गंगा सिन्धू नदियों से भी छह खंड होते मानों।।
मध्य रजतगिरि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
जिनवर चरण कमल हम पूजें, मिले सर्वसुख धामा।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे वत्साकावतीदेशमध्यस्थित विजयार्धपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश वत्सकावती वहाँ नित, कर्मभूमि मन भावे।
भव्य जीव गण कर्म अरी हन, मुक्तिरमा सुख पावें।।
मध्य रजतगिरि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
जिनवर चरण कमल हम पूजें, मिले सर्वसुख धामा।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे वत्साकावतीदेशमध्यस्थित विजयार्धपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्यादेशे आर्यखंड में असि मषि आदि क्रिया हैं।
क्षत्रिय वैश्य शूद्र त्रयवर्णी, होते सदा जहाँ हैं।।
मध्य रजतगिरि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
जिनवर चरण कमल हम पूजें, मिले सर्वसुख धामा।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे रम्यादेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुरम्या शुभ विदेह में, देश नाश कर प्राणी।
हो जाते हैं वे विदेह इस, हेतू सार्थक नामी।।
मध्य रजतगिरि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
जिनवर चरण कमल हम पूजें, मिले सर्वसुख धामा।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे सुरम्यादेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया शुभ देश वहाँ पर, तीर्थंकर नित होते।
समवसरण में भव्यजीवगण, जिनधुनि सुनमल धोते।।
मध्य रजतगिरि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
जिनवर चरण कमल हम पूजें, मिले सर्वसुख धामा।।41।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे रमणीयादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश मंगलावती जहाँ पर, मुनिगण नित्य विचरते।
चिच्चैतन्य चमत्कारी निज, शुद्धतातम में रमते।।
मध्य रजतगिरि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अभिरामा।
जिनवर चरण कमल हम पूजें, मिले सर्वसुख धामा।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वविदेहस्थसंबंधिसीतानदीदक्षिणतटे मंगलावतीदेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आडिल्ल छंद

अपर विदेह नदी सीतोदहिं इधर में।
भद्रसाल वनपास, जु पदमा नगरि में।।
मध्य रजतगिरि उसपर श्री जिनगेह है।
जिनगुण संपति हेतु जजों धर नेह है।।43।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे पद्मादेशमध्यरजताचल स्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरविदेह सुमाहिं नदी के अवर में।
देश सुपद्मा मध्ये आरजखंड में।।

मध्य रजतगिरि उसपर श्री जिनगेह है।
जिनगुण संपति हेतु जजों धर नेह है।।44।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे सुषमादेशमध्यरजताचलस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महापद्मा छह खंडों युत सही।
असि मषि आदिक किरिया वहाँ नित कहीं।।
मध्य रजतगिरि उसपर श्री जिनगेह है।
जिनगुण संपति हेतु जजों धर नेह है।।45।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे महापद्मादेशमध्यरजताचलस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश पद्माकावती मनोहर जानिये।
जिन चैत्यालय ठौर ठौर पर मानिये।।
मध्य रजतगिरि उसपर श्री जिनगेह है।
जिनगुण संपति हेतु जजों धर नेह है।।46।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे पद्माकावतीदेशमध्य रजताचल स्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंखा देशविषें जिनधर्महि एक हैं
अन्य धर्म का नाम जहाँ नहिं लेश है।।
मध्य रजतगिरि उसपर श्री जिनगेह है।
जिनगुण संपति हेतु जजों धर नेह है।।47।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे शंखादेशमध्यरजताचल स्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नलिनी देश विदेह कर्मभूमी सदा।
मुनिवर आतम ध्याय कर्म से हों जुदा।।
मध्य रजतगिरि उसपर श्री जिनगेह है।
जिनगुण संपति हेतु जजों धर नेह है।।48।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे नलिनदेशमध्यरजताचल स्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुमुद देश के माहिं जिनेश्वर नित रहें।
समवसरण में भविक, धर्म अमृत लहें।।
मध्य रजतगिरि उसपर श्री जिनगेह है।
जिनगुण संपति हेतु जजों धर नेह है।।49।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे कुमुददेशमध्यरजताचल स्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरित देश में सदा मुमुक्षु जन बसें।
मोक्ष प्राप्ति की आश धरें तन को कसें।।
मध्य रजतगिरि उसपर श्री जिनगेह है।
जिनगुण संपति हेतु जजों धर नेह है।।50।।

ॐ ह्रीं पश्चिमविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीदक्षिणतटे सरितदेशमध्यरजताचल स्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोल तरोल छंद

सीतोदा के उत्तरदिक् में, देवारण्य निकट वप्रा में।
बीचों बीच रूप्यागिरि सोहे, तापर निजगृह मुनि मन मोहें।।51।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे वप्रादेशस्थितरजताचल जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुवप्रा आरज खंड में, ईति भीति दुर्भिश न उनमें।
बीचों बीच रूप्यगिरि सोहे, तापर जिनगृह मुनि मन मोहे।।52।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे सुवप्रादेशस्थितरजताचल जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश महावप्रा सुखदाता, स्वर्ण मोक्ष का सही विधाता।
बीचों बीच रूप्यागिरि सोहे, तापर निजगृह मुनि मन मोहें।।53।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे वप्रावतीदेशस्थितरजताचल जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश वप्रकावती सुहाता, सुरनर किन्नर के मनभाता।
बीचों बीच रूप्यागिरि सोहे, तापर निजगृह मुनि मन मोहें।।54।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे वप्रकावतीदेशस्थित रजताचल जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधा देश विषें जिनगेहा, उन्हें जजें सुरनर धर नेहा।
बीचों बीच रूप्यागिरि सोहे, तापर निजगृह मुनि मन मोहें।।55।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे गंधादेशस्थितरजताचल जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश सुगंधा मुक्ति प्रदानी, मुनि तप करें वरें शिवरानी।
बीचों बीच रूप्यागिरि सोहे, तापर निजगृह मुनि मन मोहें।।56।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे सुगंधादेशस्थितरजताचल जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश गंधिला में जो जन्में, पूर्वकोटि आयुवर उनमें।
बीचों बीच रूप्यागिरि सोहे, तापर निजगृह मुनि मन मोहें।।57।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे गंधिलादेशस्थितरजताचल जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधमालिनी में होते जो, तनु ऊँचे वर धनुष पाँचसौ।
बीचों बीच रूप्यागिरि सोहे, तापर निजगृह मुनि मन मोहें।।58।।

ॐ ह्रीं अपरविदेहस्थसंबंधिसीतोदानदीउत्तरतटे गंधमालिनीदेशस्थित रजताचल जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छंद

भरतक्षेत्र में हैं छहखंड, विजयादि इस आरज खंड।
सिद्धकूट वर श्री जिनधाम, जिनपद पूजूँ करूँ प्रणाम।।59।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ऐरावत' अधिरजत गिरीश, तापर सिद्धकूट जिनईश।
जल गंधादिक मिलाय, पूजन करूं मुदित गणगाय।।60।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थविजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ शंभुछंद

इस जंबूद्वीप में हिमवन आदिक नग पर छह जिनमंदिर हैं।
गजदंतों पर चउजिनमंदिर सोलह वक्षाराचल पर हैं।।
चौंतिस विजयार्ध अचल पर हैं, जिनमंदिर साठ अकृत्रिम है।
इन पूजूँ नित प्रति अर्घ चढ़ा, ये निज सुखदाता अनुपम हैं।।1।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुःगजदंतषोडशवक्षारचतुस्त्रिंशत्विजयार्ध पर्वतस्थितषष्टिजिनबिम्बेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जिनगृह में जिनप्रतिमायें, इकसौ अठ इकसौ आठ कहीं।
ये चौंसठ सो अस्सी मूर्ति जिनवर समपुण्य प्रदायक हीं।।
इनकी पूजा भक्ती करते संपूर्ण अमंगल दूर भगें।
निज आतम अनुभव आते ही निज में निज आतम ज्योति जगे।।2।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिस्थितषष्टिजिनालयमध्यविराजमानषट् सहस्रचतुशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जंबूद्वीप में मेरू सुदर्शन पर सोलह जिनमंदिर हैं।
जंबू तरु शाल्मलि तरु के दो बाकी पर्वत पर साठ कहे।।
ये सब अठत्तर जिनमंदिर शाश्वत रत्नों के शोभे हैं।
इन सबको अर्घ चढ़ाकर के पूजत ही अनुपम सुख हो हैं।।3।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिसुदर्शनमेरुजंबूतरुशाल्मलितरुकुलाचलादिस्थितअष्ट सप्तति जिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन अठत्तर जिनमंदिर में जिन प्रतिमायें शाश्वत राजें।
ये आठ हजार चार सौ चौबिस जिनमूर्ति सब सुख साजें।।

गणधर मुनिगण सुरगण नरपति खगपति भी वंदनप करते हैं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें वे यम का बंधन हरते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिअष्टसप्ततिजिनालयमध्यविराजमानअष्ट सहस्रचतुःशत चतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय तीर्थंकर सुखआकार, जय जय तुम नाम मंत्र माना।
जय जय तुम मूर्ति अचेतन भी, सब कुछ फल देतीं जग जाना।।
जय जय कुल पवर्त के जिनगृह, जय निजगृह गजदंताचल के।
जय जय वक्षारां क जिनगृह, जय जय जिनगृह रजताचल के।।1।।

त्रय कुल पर्वत क्रम से दो सौ चउ सौ योजन ऊँचे हैं।
आगे त्रय क्रम से चउ सौ दो सौ सौ योजन ही ऊँचे हैं।।
हिमवन दस सौ बावन योजन कुछ अधिक सुविस्तृत विख्याता।
आगे चौगुने कहे फिर आधे-आधे हैं यह श्रुत ख्याता।।2।।

ये क्षेत्र बराबर लंबे है इन मध्य सरों में कमल खिले।
उन पर श्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मीदेवी हैं निज महले।।
गंगा सिंधु आदित चौदह नदियां इन सरवर से निकलीं।
भरतादि सात क्षेत्रों में नित बहतीं फिर लवणोदधि में मिलीं।।3।।

गजदंत मेरु के निकट पांस सौ योजन ऊँचे माने हैं।
निषधाचल नील निकट चउसौ योजन ऊॅचे मुनि जाने हैं।।
पण शत योजन विस्तृत ये तीस सहस दो दौ नव लंबे हैं।
विदिशा में मेरु से नग तक गजदंत सदृश ये लंबे हैं।।4।।

वक्षार पाँच सौ योजन विस्तृत नग से नदि तक लंबे हैं।
नग निकट चार सौ योजन के नदि निकट पाँच सौ तुंग रहें।।

ये सौलह सहस पाँच सौ बारह योजन क्षेत्र बराबर हैं।
इनके जिनगृह को वंदूँ ये मुक्ति श्री ललना घर हैं।।5।।

सब रजातचल पच्चिस योजन ऊँचे पचास ही विस्तृत हैं।
ये क्षेत्र बराबर लंबे त्रय कटनीयुत खगनगरी युत हैं।।
नग पर कूटों में देव भवन वर सिद्धकूट पर जिनगृह हैं।
चारण ऋद्धि मुनिगण विहरें वंदन करतें स्तुति में रत हैं।।6।।

शाश्वत जिनमंदिर वंदन से सब पाप समूह विनश जाते।
सब इष्ट वियोग अनिष्ट योग टलते रोगादि विनश जाते।।
व्यंतर डाकिनि शाकिन बाधा संपूर्ण उपद्रव टलते हैं।
अतिशायि पुण्य रवी उगता धन धान्य सुयश सुख मिलते हैं।।7।।

हे नाथ! आपकी भक्ती से मुझ घट में ज्ञान प्रभात खिले।
मुरझाया समकित कमल खिले रत्नत्रय निधियाँ शीघ्र मिले।।
मोहांधकार रात्री विनशे मुझको समरस पीयूष मिले।
शुभ ज्ञानमति प्रगटित होकर जग में चमके सुप्रकाश मिले।।8।।

ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-9

विजयमेरु पूजा

अथ स्थापना-दोहा

पूर्व धातकी खंड में विजयमेरु अभिराम।
तिसमें सोलह जिनभवन हैं शाश्वतगुणधाम।।1।।

जिनवर प्रतिमा मणिमयी शिवसुखफल दातार।
आह्वानन विधि से यहाँ पूजूँ अष्ट प्रकार।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक चामर छंद –

क्षीरसिंधुनीर लाय स्वर्णभृंग में भरूँ।
श्रीजिनेन्द्र पाद में चढ़ाय कर्ममल हरूँ।।
मेरुविजय के जिनेंद्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगंध अतिसुगंध हेमपात्र में लिये।
नाथ पाद अर्च के समस्त दाह नाशिये।।
मेरुविजय के जिनेंद्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रकांति के समान श्वेत शालि लाइया।
नाथ पाद के समीप पुंज को चढ़ाइया।।
मेरुविजय के जिनेंद्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात मोगरा जुही गुलाब लाइया।
कामनाश हेतु आप पाद में चढ़ाइया।।
मेरुविजय के जिनेंद्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपूप खज्जिकादि शर्करा विमिश्र ले।
भूख व्याधि नाशहेतु आपको समर्पि ले।।
मेरुविजय के जिनेंद्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णपात्र में संजोय दीप आरती करूँ।
भेदज्ञान को प्रकाश ज्ञान भारती वरूँ।।
मेरुविजय के जिनेंद्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निपात्र में सदा सुगंध धूप खेवते।
पापपुंज को जलाय स्वात्मसौख्य सेवते।।

मेरुविजय के जिनेंद्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम औ अनार लाय थाल में भरे।
मोक्षफल निमित्त आज आप अर्चना करें।।
मेरुविजय के जिनेंद्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरगंध अक्षतादि लेय अर्घ्य थाल में।
तीनरत्न प्राप्ति हेतु पूजहूँ त्रिकाल में।।
मेरुविजय के जिनेंद्रगेह को यहाँ जजूँ।
स्वात्मसिद्धिहेतु मैं जिनेन्द्र बिंब को भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

परमशांति के हेतु शांतीधारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति सकलसंघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार पुष्प सुगंधित अर्पते।
होवे सुख अमलान दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध, जिनवर प्रतिमा मैं जजूँ।
निज आतम कर शुद्ध, पाऊँ परमानंद मैं।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

विजय मेरु के पृथ्वी तल पर, भद्रशाल वन सोहे।
उसमें पूरबदिशि जिनमंदिर सुरनरगण मन मोहे।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर अर्चूं जिनगुण गाके।
नरसुर के सुख भोग अंत में बसूं मोक्षपुर जाके।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु के भद्रशाल में दक्षिणदिश जिनधामा।
शाश्वत जिनवर बिंब मनोहर अतुल अमल अभिरामा।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर अर्चूं जिनगुण गाके।
नरसुर के सुख भोग अंत में बसूं मोक्षपुर जाके।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुतिय मेरु के भद्रशाल में पश्चिमदिश जिनगेहा।
जिनप्रतिमा को सुरपतिनरपति वंदे भक्ति सनेहा।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर अर्चूं जिनगुण गाके।
नरसुर के सुख भोग अंत में बसूं मोक्षपुर जाके।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजय सुराचन भद्रशाल में उत्तरदिश जिनधमा।
भवविजयी की प्रतिमा उनमें जजत लहें शिवधामा।।
जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर अर्चूं जिनगुण गाके।
नरसुर के सुख भोग अंत में बसूं मोक्षपुर जाके।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद-नंदीश्वर पूजा

श्री विजय मेरुवर शैल, जजतें अघ नाशें।
नंदनवन पूरब जैन, मंदिर अति भासे।।
यतिगण जिन ध्यान लगाय आतम शुद्ध करें।
मैं जजूँ सर्व जिनबिंब, कर्म कलंक हरें।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु दक्षिण माहिं, नंदन वन प्यारा।
जिन भवन अनूपम ताहिं, सब जग में न्यारा।।
यतिगण जिन ध्यान लगाय आतम शुद्ध करें।
मैं जजूँ सर्व जिनबिंब, कर्म कलंक हरें।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदनवन पश्चिम मॉहिं, जिनमंदिर भावे।
इस ही मेरु पर इंद्र, परिकर स हआवें।।
यतिगण जिन ध्यान लगाय आतम शुद्ध करें।
मैं जजूँ सर्व जिनबिंब, कर्म कलंक हरें।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश नंदन रम्य, जिनवर आलय है।
इस विजय मेरु के मध्य, धर्म सुधालय है।।
यतिगण जिन ध्यान लगाय आतम शुद्ध करें।
मैं जजूँ सर्व जिनबिंब, कर्म कलंक हरें।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुमलता छंद

विजयमेरु नंदनवन ऊपर, वन सौमनस कहा सुखकार।
अकृत्रिम जिनभवन पूर्वदिश, सुरकिन्नर मन हरत अपार।।
मैं पूजूँ जिनबिंब मनोहर, मन वच तन कर अर्घ्य बढ़ाय।
रोग शोक भय आधि उपाधी, सब भव व्याधी शीघ्र पलाय।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिसौमनशवनस्थितपूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु सौमनस वनी के, दक्षिण दिश जिन भवनविशाल।
गर्भालय में मणिमय प्रतिमा, भविजन पूजन कर त्रिकाल।।
मैं पूजूँ जिनबिंब मनोहर, मन वच तन कर अर्घ्य बढ़ाय।
रोग शोक भय आधि उपाधी, सब भव व्याधी शीघ्र पलाय।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिसौमनशवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम दिश सौमनस वनी में जिनवर सदन मदन मद हार।
[1]मृत्युंजयि की प्रतिमा उनमें, मुनिगण वंदत मुद मनधार।।
मैं पूजूँ जिनबिंब मनोहर, मन वच तन कर अर्घ्य बढ़ाय।
रोग शोक भय आधि उपाधी, सब भव व्याधी शीघ्र पलाय।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिसौमनशवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु सौमनस रम्यवन, उसमें उत्तर दिश मंझार।
श्रीजिनमंदिर में जिन प्रतिमा, नितप्रति बंदूँ बारम्बार।।
मैं पूजूँ जिनबिंब मनोहर, मन वच तन कर अर्घ्य बढ़ाय।
रोग शोक भय आधि उपाधी, सब भव व्याधी शीघ्र पलाय।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिसौमनशवनस्थितउत्तरदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. आयु कर्म से रहित जिनेश्वर।

चौपाई छंद

विजयमेरु पांडुकवन जानो, पूरब दिश जिनभवन बखानो।
सुरपति खगपति नित्य जजें हैं, हम भी अर्घ्य चढ़ाय भजे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितपूर्वदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पांडुकवन दक्षिण जानो, शाश्वत भी जिनभवन महानो।
सुरललना जिनवर गुण गावें, हम भी पूजें जिनपद ध्यावें।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस वन में पश्चिम दिश माहीं, जिनगृह सम उत्तम कुछ नाही।
किन्नरियां वीणा स्वर साजें, हम भी पूजें सब अघ भाजें।।3।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु पांडुकवन सोहे, जिनवर भवन सबन मन मोहें।
देव देवियां जिनपद पूजें, हम भी यहाँ तुम्हें नित पूजें।।4।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिपाण्डुकवनस्थितउत्तरदिक्जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-पूर्णार्घ्यं

सोलह जिनवर भवन हैं, विजय मेरु के नित्य।
अर्चूं पूरण अर्घ्य ले, पूर्ण सौख्य हो नित्य।।1।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनगृह के जिनबिंब को, नमूँ भक्ति मन लाय।
सत्रह सौ अठबीस हैं, पूजूँ अर्घं चढ़ाय।।2।।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्त-शताष्टा-विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु पांडुकवन विदिक् पांडुकशिलादि चार।
नमूँ नमूँ जिनवर न्हवन पूत शिला सुखकार।।3।

ॐ ह्रीं विजयमेरुसंबंधिपाण्डुकवनविदिक्पांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

यह विजयमेरु चौरासि सहस, योजन उत्तुंग कहाता है।
वन भद्रसाल के पंचशतक, योजन पर नंदन आता है।।
योजन साढ़े पचपन हजार, ऊपर सौमनस सुहाता है।
योजन अट्ठाइस सहस जाय, पांडुकवन सबको भाता है।।1।।

दोहा

इसमें सोलह जिनभवन, त्रिभुवन तिलक महान।
उनमें जिनप्रतिमा विमल, नमूँ नमूँ गुण खान।।2।।

चाल-हे दीनबंधु

देवाधिदेव श्री जिनेन्द्रदेव हो तुम्हीं।
अनादि औ अनंत स्वयंसिद्ध हो तुम्हीं।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।3।।

रस गंध फरस रूप से मैं शून्य ही कहा।
इस मोह से भी मेरा संबंध ना रहा।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।4।।

ये द्रव्यकर्म आत्मा से बद्ध नहीं हैं।
ये भावकर्म तो मुझे झूते भी नहीं हैं।।

हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।5।।

मैं एकला हूँ शुद्ध, ज्ञान दरश स्वरूपी।
चैतन्य चमत्कार, ज्योति पुंज अरूपी।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।6।।

मैं नित्य हूँ अखंड हूँ, आनंद धाम हूँ।
शुद्धात्म हूँ परमात्म हूँ, त्रिभुवन ललाम हूँ।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।7।।

मैं पूर्ण विमल ज्ञान, दर्श वीर्य स्वभावी।
निज आत्मा से जन्य, परम सौख्य प्रभावी।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।8।।

परमार्थ नय से मैं तो सदा शुद्ध कहाता।
ये भावना ही एक सर्वसिद्धि प्रदाता।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।9।।

व्यवहारनय से यद्यपी, अशुद्ध हो रहा।
संसार पारावार में ही, डूबता रहा।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।4।।

फिर भी तो मुझे आज मिले आप खिवैया।
निज हाथ का अवलम्ब दे, भव पार करैया।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।11।।

मैं आश यही लेके नाथ पास में आया।
अब वेग हरो जन्म व्याधि, खूब सताया।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।12।।

हे दीन बंधु शीघ्र ही निज पास लीजिये।
भव सिंधु से निकाल, मुक्तिवास दीजिये।।
हे नाथ! तुम्हें पाय मैं महान हो गया।
सम्यक्त्व निधी पाय, मैं धनवान हो गया।।13।।

जय जय सुखकंदा, अमल अखंडा, त्रिभुवन कंदा तुमहि नमूँ।
जय 'ज्ञानमतिय' मम, शिवतिय अनुपम,तुरत मिलावो नित प्रणमूँ।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्व धातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिषोडशजिनालयसर्वजिन-बिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-10

पूर्वधातकीखंड धातकी वृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

विजय मेरु के उत्तरकुरु में, वृक्ष धातकी सोहे।
इसी मेरु के देवकुरु में, शाल्मलि तहँ मन मोहे।।
इनकी एक एक शाखा पर, जिनमंदिर सुखकारी।
इन दो मंदिर की जिनप्रतिमा, पूजों अघतम हारी।।1।।

दोहा

तरु के सब जिनराज की, आह्वानन विधि ठान।
आवो आवो नाथ! अब, करो सकल दुःख हान।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधिद्वयजिनालय जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधिद्वयजिनालय जिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षसंबंधिद्वयजिनालय जिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक नाराच छंद –

हिमाद्रि गंग नीर लाय, स्वर्ण भृंग में भरूँ।
जिनेश पादपद्म धार, देत ही तृषा हरूँ।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध अष्टगंध लेय, हर्ष भाव ठानिये।
जिनेश पादपद्म चर्च, मोह ताप हानिये।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कमोद जीरिका अखंड, शालि धान्य लाइये।
सुपुंज आप पास दे, अखंड सौख्य पाइये।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुलाब कुंद पारिजात पुष्प अंजली लिये।
जिनेश पाद पूज कामदेव को हनीजिये।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमिष्ट फेनि लाडु व्यंजनादि भांति भांति कै।
जिनेशपाद पूजते, भगे क्षुधा पिशाचिके।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखंड ज्योतिवान दीप स्वर्ण पात्र में जले।
जिनेन्द्र पाद पूजते हि, मोहध्वांत भी टले।।

तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांग धूप लेय अग्नि पात्र में सुखेइये।
जिनेश सन्निधी तुरंत कर्म भस्म देखिये।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इलायची लवंग दाख औ बदाम लाइये।
जिनेश को चढ़ाय मुक्ति बल्लभा को पाइये।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादि अष्ट द्रव्य लेय अर्घ्य को बनाइये।
अनर्घ्य सौख्य हेतु नित्य नाथ को चढ़ाइये।।
तरू तने जिनेन्द्र को, सुरेन्द्र पूजते वहाँ।
महान भक्ति भाव धार, मैं जजूँ उन्हें यहाँ।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

यमुना सरिता नीर कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देय, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्घ्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

वृक्ष धातकी शाल्मली, पूर्वधातकी माहिं।
उनके जिनगृह नित जजूँ, पुष्पांजलि चढ़ाहिं।।1।।

इति धातकीशाल्मलिवृक्षस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

विजयमेरु ईशान कोण में, वृक्ष आंवले जैसा।
तरु की उत्तर गत शाखा पर, जिनगृह अनुपम वैसा।।
यतिपति वंदित जिनवरप्रतिमा, कलिमल नाश करें हैं।
पूजन करते भविजन मिलकर, यम का पाश हरे हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु नैऋत्य कोण में, शाल्मली द्रुम भारी।
इसकी दक्षिणगत शाखा पे, जिन मंदिर भवहारी।।
गणधर भी नित ध्याते रहते, मन में उन प्रतिमा को।
जनम जनम अघ नाशन हेतु, हम भी पूजें उनको।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

पूर्वधातकी खंड में, धातकि शाल्मलि वृक्ष।
इनके श्रीजिनभवन को, पूजूँ कर मन स्वच्छ।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोनों तरु के जिनभवन, उनमें जिनवर बिंब।
दो सौ सोलह जानिये, जंजत हरूँ जगडिंभ।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडसंबंधिधातकीवृक्षशाल्मलिवृक्षजिनालयमध्यविराजमान द्विशतषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

नरेन्द्र छंद

विजयमेरु ईशान दिशा में वृक्ष धातकी सोहे।
नैऋत दिश में वृक्ष शाल्मलि सुरगण का मन मोहे।।
इक इक के परिवार तरू दो, लाख सहस अस्सी हैं।
दो सौ अड़तीस इतने सबमें, प्रतिमा शाश्वतकी हैं।।1।।

नाराच छंद

जिनेश बिंब एक सौ सुआठ सर्व वृक्ष में।
प्रमुख्याता धरे महान एक ही तरू इमें।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।2।।

अनादि हो अनंत हो प्रसिद्ध सिद्धरूप हो।
दयाल धर्मपाल तीन काल एक रूप हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।3।।

अलोक लोक में प्रधान तीन लोक नाथ हो।
अनेक रिद्धि के धनी सुभक्ति के सनाथ हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।2।।

महान दीप्तिमान मोहशत्रु को कृपान हो।
प्रसन्न सौम्य आस्य[1] हो पवित्र हो पुमान हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।5।।

दिनेश[2] ते विशेष तेज की महान राशि हो।
कुमोदनी भवीक हेतु तें [3]सुधानिवास हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।6।।

भवाब्धि डूबते तिन्हें तुम्हीं सुकर्णधार हो।
गुघणौ[1] रत्न के समुद्र सार में सु सार हो।।
नमो नमो जिनेश तोहि धर्म के स्वरूप हो।
कलंक पंक क्षालने सदा सुतीर्थ रूप हो।।7।।

दोहा

तुम गुण गण मणि अगम हैं, कीगण पाव पार।
जो गुण लव कंठहिं धरे, सो उतरे भव पार।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थश्रीविजयमेरूसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

1. मुख, 2. सूर्य, 3. चंद्र।

पूजा नं.-11

पूर्वधातकीखंड पर्वत जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

पूर्व धातकी खंड द्वीप में छह कुल पर्वत सोहें।
गजदंताचल वक्षाराचल, चउ सोलह मन मोहें।।
रजताचल चौंतिस इन सबके जिनगृह साठ कहाये।
आह्वानन कर पूजूँ रूचि से, परमानंद बढ़ाये।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टि जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टि जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टि जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक बसंततिलका छंद –

गंगा नदि जल पवित्र सुभंग में हैं।
धारा करूँ त्रय प्रभो! चरणांबुजों में।।
पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभावसुख चिन्मयज्ञानरूपी।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टि जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर चंदन घिसी घनसार जो हैं।
पादाब्ज में चरचते निजकीर्ति पाऊँ।।
पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभावसुख चिन्मयज्ञानरूपी।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान अति उज्ज्वल शालि लाऊँ।
पूजूं सुपुंज धरके निज सौख्य हेतू।।
पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभावसुख चिन्मयज्ञानरूपी।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब कुसुमावलि मैं चढ़ाऊँ।
दीजे निजात्म सुख संपद शीघ्र मेरी।।
पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभावसुख चिन्मयज्ञानरूपी।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पेड़ा पुआ अंदरसा भर थाल लाऊँ।
तृष्णादि व्याधिहर नाथ! तुम्हें चढ़ाऊँ।।
पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभावसुख चिन्मयज्ञानरूपी।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति कर आरति मैं उतारूँ।
मोहांधकार हर भारति ज्ञान भर दो।।
पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभावसुख चिन्मयज्ञानरूपी।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

खेऊँ सुगंधवर धूप धुआं उड़े है।
संपूर्ण पाप अरि भस्म करो हमारे।।

पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभावसुख चिन्मयज्ञानरूपी।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम फल सेव अनार लाऊँ।
हे नाथ! मोक्षफल हेतु तुम्हें चढ़ाऊँ।।
पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभावसुख चिन्मयज्ञानरूपी।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ रजतादिक पुष्प लेके।
दीजे त्रिरत्न प्रभु अर्घ तुम्हें चढ़ाऊँ।।
पूजूँ जिनालय अकृत्रिम भक्ति से मैं।
पाऊँ स्वभावसुख चिन्मयज्ञानरूपी।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांतीधारा मैं करूं, जिनवर पद अरविन्द।
त्रिभुवन में सुख शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति संपति बढ़े निज निधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

पूर्व धातकी खंड, साठ नगों पर जिननिलय।
करूँ कर्मशतखंड, पुष्पांजलि कर पूजते।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

छह कुलाचल अर्घ-नरेन्द छंद

द्वीपधातकी में हिमवन गिरि, कांचन कांती धारे।
बीच सरोवर पद्म तास में, कमल मणीमय सारे।।
मध्य कमल पर 'श्रीदेवी' हैं, नग पर कूट सुग्यारें।
सिद्धकूटगत जिनमंदिर में जिनपद पूजों सारे।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थहिमवत्कुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु दक्षिण महहिमवन, रजतवर्ण तामें हैं।
महापद्मद्रह मध्य कमल में, 'ह्रीदेवी' माने हैं।।
नग पर आठ कूट में इकपर, चैत्यालय सुखकारी।
अर्घ्यं चढ़ाकर जिनपद पूजें, गुण गावे नर नारी।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थमहाहिमवत्कुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालय-जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु दक्षिण निषधाचल, तप्तस्वर्ण छवि मोहे।
द्रह तिगिंछ तामध्य कमल मैं, 'धृतिदेवी' अति सोहे।।
गिरि पर हैं नवकूट एक के सिद्धकूटमंदिर में।
मृत्यजयी श्रीजिनप्रतिमा को, पूजत ही सुख क्षण में।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थनिषधकुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु उत्तर नीलाचल, छवि वैडूर्यमणी है।
बीच केसरी द्रह कमलों पे मध्य 'कीर्तिदेवी' है।।
नव कूटों में सिद्धकूट पर, जिनगृह में जिनप्रतिमा।
अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ निरंतर, भव विजयी जिनप्रतिमा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थनीलकुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु उत्तर रूक्मीगिरि, रजतवर्णछवि राजें।
पुंडरीकद्रह मध्य कमल में, 'बुद्धीदेवी' राजे।।

कूट आठ में सिद्धकूट पर, जिनमंदिर मन भावे।
कामजयी जिनप्रतिमा पूजें, इंद्र देवगण आवें।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थरूक्मिकुलाचलसंबंधिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु के उत्तर शिखरी, पर्वत कांचन छवि है।
महापुंडरीकहिं, ह्रद, कमलों में लक्ष्मी निवसत हैं।।
ग्यारह कूट उन्हों में इक पर, जिनवरनिलय बखानो।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, पूजूँ मैं दुख हानों।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थशिखरीपर्वतसंबंधिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजदंत के अर्घ

नरेन्द्र छंद

विजयमेरु ईशान कोण में, माल्वान गजदंता।
नवकूटों युत सिद्धकूटधर, नीलम छवि छलकंता।।
जिनमंदिर में श्री जिनप्रतिमा, भानु समान विभासे।
अर्घ्य लेय मैं जजूँ मुदित मन ज्ञान भानु परकासे।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिमाल्यवानगजदंतसिद्धकूट जिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु आग्नेय कोण में, सौमनस्य गजदंता।
रौप्यमयी वह सातकूट में, सिद्धकूट अघहंता।।
जिनमंदिर में श्री जिनप्रतिमा, भानु समान विभासे।
अर्घ्य लेय मैं जजूँ मुदित मन ज्ञान भानु परकासे।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिसौमनस्यगजदंतसिद्धकूट जिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु नैऋत्य कोण में, विद्युतप्रभ गजदंता।
तप्तकनक छवि नवकूटों में, सिद्धकूट चमकंता।।

जिनमंदिर में श्री जिनप्रतिमा, भानु समान विभासे।
अर्घ्य लेय मैं जजूँ मुदित मन ज्ञान भानु परकासे।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिविद्युत्प्रभगजदंतसिद्धकूट जिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयमेरु वायव्य कोण में, गंधमादनी सोहें।
कांचन सम द्युति, सात कूटयुत सिद्धकूट मन मोहैं।।
जिनमंदिर में श्री जिनप्रतिमा, भानु समान विभासे।
अर्घ्य लेय मैं जजूँ मुदित मन ज्ञान भानु परकासे।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थविजयमेरुसंबंधिमाल्यवानगजदंतसिद्धकूट जिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार पर्वत जिनालय अर्घ

जोगीरासा

पूर्व विदेह नदी सीता के, उत्तरतट वक्षारा।
भद्रसाल वेदी सन्निध में, 'चित्रकूट' सुखकारा।।
उस पर जिनमंदिर के सुंदर, जजत पुरंदर देवा।
मैं भी जिनप्रतिमा को पूजूँ होवे भव दुःख छेवा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिचित्रकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रम से 'नलिन कूट' नामक हैं, गिरि वक्षार सुहाना।
मुनिगण उस पर ध्यान धरत हैं, पावत सौख्य महाना।।
उस पर जिनमंदिर के सुंदर, जजत पुरंदर देवा।
मैं भी जिनप्रतिमा को पूजूँ होवे भव दुःख छेवा।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिचित्रकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार तीसरा, सब जन मन को प्यारा।
इस पर चार कूट उनमें से, सिद्धकूट अघ हारा।।

उस पर जिनमंदिर के सुंदर, जजत पुरंदर देवा।
मैं भी जिनप्रतिमा को पूजूँ होवे भव दुःख छेवा।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिपद्मवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार बगीचे, बावड़ियों में सोहे।
देव देवियाँ खेचरखेचरनी किन्नर मन मोहे।।
उस पर जिनमंदिर के सुंदर, जजत पुरंदर देवा।
मैं भी जिनप्रतिमा को पूजूँ होवे भव दुःख छेवा।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिएकशैलवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

सीता नदि कदख्खिण ताश, देवारण्य वेदिउका पास।
नाम 'त्रकूट' का वक्षार, तापर जिनगृह पूजूँ सार।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधित्रिकूटवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है 'वैश्रवण' दुतिय वक्षार, तापर सिद्धकूट मनहार।
तामें जिनगृह में जिनबिंब, अर्घ्य चढ़ाय जजूँ तज डिंभ।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिवैश्रवणवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजन' है तीजा वक्षार, वन वेदी सुर महल अपार।
तापर जिनगृह में जिनराज, अर्घ्य चढ़ाय लहूँ शिवराज।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिअंजनवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजनआत्मा' है वक्षार, तापर मुनिगण करत विहार।
इस पर जिनमंदिर अभिराम, जिनमूरति को करूँ प्रणाम।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिअंजनात्मावक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जोगी रासा

द्वीपधातकी अपर विदेहा, सीतोदा तट दायें।
भद्रसाल सन्निध वक्षारा, 'श्रद्धावान्' कहाये।।
उस पर सिद्धकूट में जिनगृह, जिनप्रतिमा मनहारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर मैं नित, रोग शोक भय हारी।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थअपरविदेहसंबंधिश्रद्धावान्वक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजटावान्' दुतिय वक्षारा, सुरकिन्नर चितहारी।
ऋषिगण विचरण करते रहते, परमानंद विहारी।।
उस पर सिद्धकूट में जिनगृह, जिनप्रतिमा मनहारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर मैं नित, रोग शोक भय हारी।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिविजटावान्वक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आशीविष' वक्षार तीसरा, तापर उपवन वेदी।
सुरगण के प्रसाद मनोहर, मधुर पवन श्रमछेदी।।
उस पर सिद्धकूट में जिनगृह, जिनप्रतिमा मनहारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर मैं नित, रोग शोक भय हारी।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिआशीविषवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ वक्षार 'सुखावह' चौथा, अतिरमणीय सुहाता।
चार कूट हैं मन को भाते, त्रय सुरगृह सुख दाता।।
उस पर सिद्धकूट में जिनगृह, जिनप्रतिमा मनहारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर मैं नित, रोग शोक भय हारी।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुखावहवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई

द्वीप धातकी अपर विदेह, सीतोदा उत्तर तट येह।
देवारण्य निकट वक्षार, 'चंद्रमाल' पर जिनगृह सार।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिचंद्रमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमाल' दूजा वक्षार, तापर जिनवर गृह सुखकार।
तामें सुरनर नत जिनबिंब, मैं पूजूं सिद्धन प्रतिबिंब।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसूर्यमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नागमाल' तीजा वक्षार, सुर खग मुनिगण करत विहार।
भवविजयी श्रीजिनवर धाम, पूजन करूँ लहूँ शिवधाम।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिनागमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवमाल' चौथा वक्षार, दर्शनीय उत्तम गिरि सार।
तापर मदनजयी जिनगेह, जिनप्रतिमा को जजूँ सनेह।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिदेवमालवक्षारपर्वतस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयार्धजिनालय अर्घ

चौबोल छंद

'कच्छादेश' विदेह कहाता, उसके मधि रूपाद्रि रहें।
रक्ता रक्तोदा नदियों से, कच्छा के छहखंड कहे।।
आर्यखंड मधि क्षेमानगरी, जिसमें तीर्थंकर रहते।
रजतगिरी के जिनमंदिर को, अर्घं चढ़ाकर हम यजते।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधि कच्छादेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' आर्यखंड में, क्षेमपुरी है श्रेष्ठ मही।
तीर्थंकर चक्री आदी से, जिनमंदिर से शोभ रही।।
देश मध्य के रजतगिरी पर, जिन चैत्यालय धर्ममही।
उसकी सब प्रतिमा को पूजूँ, अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति सही।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिसुकच्छादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महाकच्छा' में रूपाचल नवकूटों सहित कहा।
उसके सिद्धकूट में जिनगृह प्रतिमा यजते पाप दहा।।
इस विदेह के आर्यखंड के मध्य अरिष्टापुरी महा।
नितप्रति केवलि श्रुतकेवलि मुनि, ऋषिगण विचरण करें वहां।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिमहाकच्छादेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती' मध्य में, विजयारधगिरि रजतसमा।
तीन कटनियों से खगनगरी, इकसौदश से श्रेष्ठतमा।।
इस विदेह के आर्यखंड में, कही अरिष्टपुरी सुखदा।
विजयारध के सिद्धकूट को, पूजत नहिं हो दुःख कदा।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिकच्छाकावतीदेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश रम्य 'आवर्ता' उसमें, रजतगिरि अतिशय महिमा।
उसके सिद्धकूट पर जिनगृह, इक सौ आठ जैनप्रतिमा।।
आर्यखंड खड्ग नगरी के, मुनिगण भी वहाँ दर्श करें।
हम भी अर्घ्य चढ़ाकर पूजूं, गर्भवास के दुःख हरें।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधि आवर्तादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता' उसमें, रजताचल शुभ राज रहा।
इस पर सिद्धकूअ मंदिर हैं, सुर असुरों से पूज्य कहा।।

आर्यखंड मंजूषा नगरी, ताके नर नारी रूची से।
अकृत्रिम जिनप्रतिमा पूजें, जिनवर गुण गाते मुद से।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधि लांगलावर्तादेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' में रूपाचल, उस पर शुभ नव कूट कहें।
सिद्धकूट पर जिनमंदिर में अनुपम प्रतिमा शुद्ध रहें।
आर्यखंड औषधि नगरी के, सब जन भक्ति सहित भतजे।
हम सब अर्घ्य चढ़ाकर जिनपद, पूजकर कर सब दुःख तजते।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधि पुष्कलादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' मध्य में, रजतगिरी जन मन हरती।
उसके सिद्धकूट जिनगृह की, सुर ललना कीर्तन करती।।
पुंडरीकिणी नगरी के जन, विद्याबल से गमन करें।
हम भी यहीं अर्घ्य अर्पण कर, श्रद्धा से नित गमन करें।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिपुष्कलावतीदेशमध्यस्थित विजयार्धपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जोगीरासा छंद

'वत्सादेश' विदेह कहाता, तामद्यि विजयारध है।
उसपे सिद्धकूट चैत्यालय, जिनवरबिंब अनघ है।।
इस विदेह में पुरी सुसीमा, आर्यखंड मधि मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानों।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिवत्सादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' के मधि सुंदर, रजतगिरी शाश्वत है।
सिद्धकूट जिनमंदिर उस पर, मुनिगण नित ध्यावत हैं।।

इस विदेह में पुरी कुंडला आर्यखंड मधि मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानो।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिसुवत्सादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वत सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' मधि संदर, रूपाचल नव कूटा।
सिद्धकूट में श्रीजिनमंदिर, पूजत ही अघ छूटा।।
इस विदेह में अपराजितपुरि, आर्यखंड में मानों।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानो।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिमहावत्सादेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वत्साकावती' मध्य में, रजताचल मन भावे।
सिद्धकूट में जिन चैत्यालय, पूजन कर सुख पावे।।
इस विदेह में प्रभंकरापुरि आर्यखंड में मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानो।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिवत्सकावतीदेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्या' देश विदेह तास मधि, रजतगिरी अति सोहे।
सिद्धकूट में जिनप्रतिमा को पूजत ही सुख हो हैं।।
अंकावति नगरी विदेह में, आर्यखंड में मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानो।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिरम्यादेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' तामधि उज्जवल, रूपाचल मन माना।
सिद्धकूट में जिन बिंबों को जजतें पातक हाना।।
पद्मावतिपुरी विदेह में, आर्यखंड मधि मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानो।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिसुरम्यादेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश कहा 'रमणीया' सुंदर, तामधि रजतगिरी है।
सिद्धकूट की जिनवर प्रतिमा, जजतें दुःख हरी हैं।।
इस विदेह में शुभापुरी है, आर्यखंड में मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानो।।41।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिरमणीयीदेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'मंगलावती' अनुपम, रजताचल तामें है।
सिद्धकूट जिनदेव सदा ही, दुःख दरिद्र हाने हैं।।
इस विदेह पुरि रत्नसंचया, आर्यखंड में मानो।
वहं के जन पूजें जिनवर को, मैं भी पूजन ठानो।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसंबंधिमंगलावतीदेशमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोला छंद

'पद्मादेश' विदेह, तामधि रजतगिरी है।
उस पर श्रीजिनगेह,पूजत पाप हरी है।।
पद्मा आरजखंड, अश्वपुरी नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।43।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिपद्मादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' माहिं, रजताचल मन माना।
उस पर जिनवर धाम, पूजत पाप पलाना।।
आरजखंड सुमध्य, सिंहपुरी नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।44।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुपद्मादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महापद्मा' है देश, रूपाचल ता माहीं।
उसके श्रीजिनबिंब, जजतें पाप नशाहीं।।

आरज खंड सुमध्य, महापुरी नगरी हैं।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।45।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिमहापद्मादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पद्मकावति', रूपाचल अभिरामा।
सिद्धकूट के माहिं, पूजत हूँ जिनधामा।।
आरज खंड सुमध्य, विजयापुरि नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।46।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिपद्मकावतीदेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंखादेश' विदेह, विजयारध गिरि माना।
सिद्धकूट जिनगेह, पूजत ही सुख दाना।।
आरजखंड सुमध्य, शुभ अरजा नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।47।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिशंखादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिनादेश' विदेह, रूपाचल मन भावे।
तापर जिनवरगेह, पूजत शोक नशावे।।
आरजखंड सुमध्य, शुभ विरजा नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।48।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिनलिनादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुमुदादेश' महान, रूपाचल अति सोहे।
तापर श्रीजिनधामा, पूजत ही सुख होहै।।
आरजखंड सुमध्य, कही अशोक पुरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।49।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिकुमुदादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सरिता' देश महान, रूपाचल वर जानो।
ताके जिनगृह माहिं, जिनपद पूजन ठानो।।
आरज खंड सुमध्य, वीतशोक नगरी है।
ताके जन से वंद्य, जिनपद पूज करी है।।50।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसरितादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

'वप्रा' विदेह सुमाहिं सुंदर, रजतगिरि मन भावना।
नवकूट में इककूट पर है, जिनभवन अति पावना।।
इस देश आरज खंड में, विजयापुरी अति सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।51।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिवप्रादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीदेह 'सुवप्रा' मधी है, रजतगिरि उत्तम कहा।
तापे जिनालय में रतनमय, बिंब का अतिशय महा।।
इस देश आरजखंड में, पुरि वैजयंती सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।52।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुवप्रादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश 'महवप्रा' सुहाता, तास में विजयार्ध है।
उसपे जिनेश्वर मूर्तियों को महामुनिगण ध्यात हैं।।
इस देश आरज खंड में नगरी जयंती सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।53।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिमहावप्रादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश 'वप्रीकावती' में, रूप्यगिरि सुंदर कहा।
ऋषिगण विचरते हैं, सदा, जिनवर सदन मन हर रहा।।

इस देश आरज खंड में, अपराजिता पुरि सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।54।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिवप्राकावतीदेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर देश 'गंधा' बीच में, विजयार्ध अनुपम शासता।
किन्नर गणों के गीत से, जिनवर भवन नित भासता।।
इस देश आरज खंड में चक्रापुरी अति सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।55।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिगंधादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश 'सुगंधा' मधी हैं रजतगिरि रूपामयी।
विद्याधरों की पंक्तियाँ, जिनवर भवन पूजें सही।।
इस देश आरज खंड में खड्गापुरी हैं सोजनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।56।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुगंधादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ देश 'गंधीला' मधी है, रजतगिरि अति सोहना।
गंधर्व सुरगण पूजते हैं, जिनभवन मन मोहना।।
इस देश आरज खंड में, नगरी अयोध्या सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।57।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिसुगंधिलादेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ 'गंधमालिनि' देश में, विजयार्ध गिरि सुंदर कहा।
उस पर जिनेश्वर बिंब को, नित जजें सुर किन्नर अहा।।
इस देश आरज खंड में, नगरी अवध्या सोहनी।
ताके जनों से पूज्य जिनवर, मूर्ति पूजूँ मोहनी।।58।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसंबंधिगंधमालिनीदेशस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

भरतक्षेत्र में हिमगिरि से गंधा सिंधू उद्गमती।
रूपाचल की गुफा तले से बाहर होके बहतीं।।
आर्यखंड के मध्य अयोध्या, तीर्थंकर जन होते।
रजताचल के जिनगृह जिनवर, बिंब जजत सुख होते।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थभरतक्षेत्रसंबंधिविजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरी से रक्ता रक्तोदा, नदियाँ निकलें जानों।
विजयारध की गुफा तले से, बाहर आती मानों।।
आर्यखंड के मध्य अयोध्या, पुरूष शलाका होते।
विजयारध के जिनमंदिर को पूजत ही मल धोते।।60।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थऐरावतक्षेत्रसंबंधिविजयार्धपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभुछंद

द्वीप धातकी खंड पूर्व में, कुल पर्वत छह मन सोहे हैं।
मेरू विदिश में चार कहे गजदंत साधु मन मोहे हैं।।
सोलह गिरि वक्षार व चौंतिस रजताचल अति मनहारी।
इनके साठ जिनालय पूजूं वरूँ मोक्ष रमणी प्यारी।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित-षष्टि जिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिजिनगृह में जिन प्रतिमायें इक सौ आठ विराजे हैं।
छह हजार चार सौ अस्सी पद्मासन से राजे हैं।
पाँच शतक धनु तुंग रत्नमय जिनवर प्रतिमा शाश्वत है।
इनकी पूजा भक्ती करते मिलता निज पद शाश्वत है।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिजिनालयमध्यविराजामनषट् सहस्रचतुःशतअशीतिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी में इक मेरु 'विजय' नाम से सुरगिरि है।
इसके सोलह जिनमंदिर हैं, धातकि तरु शाल्मलि तरु है।।
कुलपर्वत आदिक सब शाश्वत जिनमंदिर अट्ठहत्तर हैं।
इनको पूजूँ अर्घ चढ़ाकर वंदन करें मुनीश्वर हैं।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततितिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन अट्ठहत्तर मंदिर में जिन प्रतिमा मणिमय राजे हैं।
आठ हजार चार सौ चौबीस संख्या है गुण साजे हैं।।
गणधर मुनिगण चक्रवर्ति नर इनकी स्तुति करते हैं।
मैं भी पूजूँ भक्ति भाव से, इनसे मनरथ फलते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडसंबंधिमेर्वादिअष्टसप्तीतिजिनलायमध्यविराजमानअष्ट सहस्रचतुः शतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

पूर्वधातकी खंड के जिनमंदिर अभिराम।
गाऊँ गुणमणिमालिका, शतशत करूँ प्रणाम।।1।।

स्रग्विणी छंद

नाथ! मुक्तीयती मुक्तिदाता तुम्हीं।
मैं नमूँ मैं नमूँ हो विधाता तुम्हीं।।
पूरिये नाथ! मेरी यही कामना।
स्वात्म की सिद्धि हो अन्य की चाल ना।।2।।

छै कुलाचल सरों में कमल खिल रहे।
श्री हिरी आदि देवी उन्हों में रहें।।
तीर्थंकर मातु सेवा करें भक्ति से।
पुण्य संचय करें भक्ति की युक्ति से।।3।।

छै जिनागार को सर्व साधू नमें।
चार गजदंत मंदिर मुनीगण नमें।।
सोलहों शैल वक्षार स्वर्णाभ हैं।
सोलहों जैनमंदिर हरें ताप हैं।।4।।

रूप्यगिरि चौंतिसों पर जिनालय दिपें।
वंदते ही अशुभ कर्म क्षण में खिपें।।
ये सभी साठ भूभृत मुनी मान्य हैं।
जैनमंदिर इन्हों के जगत् मान्य हैं।।5।।

आप की भक्ति से ज्ञानज्योति भरूँ।
आत्म निधि पायके सिद्धिकांता वरूँ।।
छोड़ बहिरात्मा अंतरात्मा बनूँ।
रत्नत्रय युक्ति से परम आत्मा बनूँ।।6।।

नाथ! ऐसी कृपा कीजिये भक्त पे।
मुक्ति पर्यंत तब पाद मन में दिपे।।
आर्त रौद्रादि दुर्ध्यान की हानि हो।
धर्म शुक्लैक सद्ध्यान की प्राप्ति हो।।7।।

स्वात्म में लीन हो चित्त एकाग्र हो।
स्वात्म पीयूष का पान गुणकार हो।।
ज्ञानमती पूर्ण हो सौख्य भंडार हो।
भक्त तेरा भवांभौधि से पार हो।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपस्थसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित षष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-12

अचलमेरु पूजा

अथ स्थापना-गीताछंद

श्री अचलमेरु राजता है, अपर धातकि द्वीप में।
सोलह जिनालय तास में, जिनबिंब हैं उन बीच में।।
प्रत्यक्ष दर्शन हो नहीं, अतएव पूजूँ मैं यहाँ।
आह्वानन विधि करके प्रभो, थापूँ तुम्हें आवो यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक गीताछंद –

गंगानदी का स्वच्छ प्रासुक नीर झारी में भरूँ।
संसार के त्रयताप शांति हेतु त्रयधारा करूँ।।
श्री अचल मेरु के जिनालय औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से नाशूँ सकल जगद्वंद्व को।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिन बिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर चंदन पंक शीतल भर कटोरी में लिया।
जिनपाद पंकज पूजते भवतप्त मन शीतल किया।।
श्री अचल मेरु के जिनालय औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से नाशूँ सकल जगद्वंद्व को।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्धाब्धि फेन समान उज्जवल धौत तंदुल थाल में।
जिनचरण वारिज के निकट धर पुंज नाऊँ भाल मैं।।
श्री अचल मेरु के जिनालय औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से नाशूँ सकल जगद्वंद्व को।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चमेली मौलसिरि सुरभित सुमन भर लाइया।
कंदर्प दर्प विनाशने को नाथ चरण चढ़ाइया।।
श्री अचल मेरु के जिनालय औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से नाशूँ सकल जगद्वंद्व को।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान फेनी मोदकादिक सरस थाली में भरें।
क्षुध रोग हर तुम पद कमल पूजत क्षुधा डाकिनि हरें।।
श्री अचल मेरु के जिनालय औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से नाशूँ सकल जगद्वंद्व को।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे अंधेर सब जग का हरे।
तुम चरण पूजा दीप से मन ध्वांत को क्षण में हरे।।
श्री अचल मेरु के जिनालय औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से नाशूँ सकल जगद्वंद्व को।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुरभित धूप अग्नी पात्र में खेऊँ सदा।
अंतर कलुष बाहर भगे नहिं स्वप्न में ही भ्रम कदा।।

श्री अचल मेरु के जिनालय औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से नाशूँ सकल जगद्बंद्व को।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम अनार फल अखरोट आदिक लाइया।
अक्षय सुखद फल हेतु जिनपद पद्म निकट चढ़ाइया।।
श्री अचल मेरु के जिनालय औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से नाशूँ सकल जगद्बंद्व को।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज दीप धूपरु फल लिया।
निज संपदा हे हेतु भगवन्! अर्घ तब अर्पण किया।।
श्री अचल मेरु के जिनालय औ जिनेश्वर बिंब को।
मैं पूजहूँ नितभक्ति से नाशूँ सकल जगद्बंद्व को।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

परम शांति सुख हेतु, शांतीधारा मैं करूँ।
सकल जगत में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हर सिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुःख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

अजलच मेरु के जिनभवन, पूजूँ भक्ति सकते।
पुष्पांजलिकर पूजते, जिनमंदिर भवसेतु।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अडिल्ल छंद

अचलमेरु में भद्रशाल वन जानिये।
तामें पूरब दिश जिनमंदिर मानिये।।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं पूजूं नित भाव से।
निजगुण संपतित हेतु भजूँ अति चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपूर्वदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय मेरु के भद्रशाल में राजता।
दक्षिण दिश जिनभवन अनूपम शासता।।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं पूजूं नित भाव से।
निजगुण संपतित हेतु भजूँ अति चाव से।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितदक्षिणदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के भद्रशाल में रम्य है।
पश्चिमदिश जिनसदन सकल सुखसद्म हैं।।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं पूजूं नित भाव से।
निजगुण संपतित हेतु भजूँ अति चाव से।।3।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितपश्चिमदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के भद्रशाल उत्तर दिशी।
जिनमंदिर में जिनप्रतिमा अनुपमकृती।।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं पूजूं नित भाव से।
निजगुण संपतित हेतु भजूँ अति चाव से।।4।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिभद्रशालवनस्थितउत्तरदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

अचलमेरु के नंदनवन में, पूर्व दिशी जिन गेहा।
निज आतम अनुभव रसस्वादी, मुनिगण नमत सनेहा।।

नीरादिक वसुद्रव्य मिलाकर, अर्घ चढ़ाऊँ आके।
निज आतम समरस जल पीकर, बसूँ मोक्षपुर जाके।।1।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु नंदनवन दक्षिण, सुरवंदित जिनधाम।
इंद्रिया सुख त्यागी वैरागी, यति वंदे निष्कामा[1]।।
नीरादिक वसुद्रव्य मिलाकर, अर्घ चढ़ाऊँ आके।
निज आतम समरस जल पीकर, बसूँ मोक्षपुर जाके।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धातम ध्यानी मुनि ज्ञानी, जिन का ध्यान धरे हैं।
अचलमेरु नंदन पश्चिम दिश, जिनगृह पाप हरे हैं।।
नीरादिक वसुद्रव्य मिलाकर, अर्घ चढ़ाऊँ आके।
निज आतम समरस जल पीकर, बसूँ मोक्षपुर जाके।।3।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के नंदनवन में, उत्तर दिश जिनगृह हैं।
समरस निर्झर जल अवगाही, गणधर गण वंदत हैं।।
नीरादिक वसुद्रव्य मिलाकर, अर्घ चढ़ाऊँ आके।
निज आतम समरस जल पीकर, बसूँ मोक्षपुर जाके।।4।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तरदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अचलमेरु वन सौमनस, पूरब दिश जिनधाम।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, सिद्ध करो सब काम।।1।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. इच्छारहित।

अचलमेरु सौमनस के दक्षिण दिश जिनगेह।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजहूँ, करो हमें गतदेह[1]।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु सौमनस के, पश्चिम जिनगृह सिद्ध।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं जजूँ, करूँ मोह अरि बिद्ध।।3।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु सौमनस के, उत्तर जिनगृह सार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजहूँ, होऊँ भवदधि पार।।4।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौपाई छंद

अचलमेरु पांडुकवन जान, पूरब दिश जिननिलय[2] महान।
अकृतिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपूर्वदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु पांडुकवन नाम, दक्षिण दिशि अनुपम जिनधाम।
अकृतिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितदक्षिणदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु पांडुकवन कहा, पश्चिम दिश जिनमंदिर रहा।
अकृतिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपश्चिमदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अशरीरी सिद्ध पद। 2. जिनमंदिर।

अचलमेरु पांडुकवन सही, उत्तर दिशि जिनगृह सुख मही।
अकृतिम जिनबिंब महान, अर्घ्य चढ़ाय करूँ गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितउत्तरदिक्चैत्यालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं-दोहा

अचलमेरु चउवन विषैं, चार चार जिनधाम।
पूरण अर्घ्य संजोय के, जजूँ नित्य निष्काम।।1।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह जिनगृह में अतुल, जिनवर बिंब महान।
सत्रहसौ अठबीस है, झुक झुक करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्तशत-अष्टा विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के विदिश में पांडुकशिलादि वंद्य।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, नमूँ नमूँ सुखकंद।।3।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिपांडुकवनविदिक्स्थितपांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

कल्पवृक्ष चिंतामणी, चिच्चेतन भगवान।
चिन्मूरति जिनमूर्ति को, नमूँ नमूँ धर ध्यान।।

रोला छंद

जय जय अचल सुमेरु, शाश्वत सिद्ध महाना।
जय जय पुण्य निकेत अतिशय सौख्य खजाना।।

जय जय श्री जिनगेह सोलह स्वर्णमयी हैं।
जय जय री जिनबिंब नाना रत्नमयी हैं।।1।।

मानस्तंभ ध्वजादि तोरण मणिमालायें।
तीन कोट सिद्धार्थ चैत्य तरु बहु गायें।।
वैभव अतुल असंख्य सहजिक रहें वहाँ पे।
सुरपति नरपति नित्य पूजन करें तहाँ पे।।2।।

चारण ऋषिगण आय आतम ध्यान धरे हैं।
कर्मकलंक नशाय उत्तम सौख्य भरे हैं।।
सम्यग्दर्शन पाय भविजन तृप्त सु होते।
आत्म स्वरूप विचार भव भव का भय खोते।।3।।

मैं नारक तिर्यंक देव मनुष्य नहीं हूँ।
पुरुष नपुंसक रूप स्त्रीरूप नहीं हैं।।
सब पुद्गल पर्याय उपज उपज कर विनशे।
कर्मउदय से जीव इनहीं में नित विलसे।।4।।

निश्चय नय से नित्य परमानंद स्वभावी।
मैं अनंतगुण पुंज केवलज्ञान प्रभावी।।
मैं मुझमें थिर होय निज में ही निज पाऊँ।
प्रभु वह दिन कब होय जब मैं ध्यान लगाऊँ।।5।।

तुम भक्ति से नाथ शक्ति प्रगट हो मेरी।
करूँ कर्म का नाश छूटे भव भव फेरी।।
जब तक मुक्ति न होय तब तक भक्ति हृदय में।
रहे आपकी देव! ''ज्ञानमती' रुचि मन में।।6।।

दोहा

जो पूजें जिनवर भवन, भक्ति भाव से नित्य।
सो जिनगुण संपति लहें, अनुक्रम से भवभिद्य।।7।।

ॐ ह्रीं अचलमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-13

पश्चिमधातकी खंडस्थ धातकी वृक्ष शाल्मली वृक्ष जिनालय पूजा

अथ स्थापना-हरिगीतिका छंद (चाल-सम्मेदगढ़ गिरिनार)

वदद्वीप धातकि में अपरदिश, बीच सुरगिरि अचल है।
ताके विदिश ईशान में, शुभ धातकी द्रुम अतुल है।।
सुरगिरि के नैऋत्य शाश्वत, शाल्मली द्रुम सोहना।
द्वय वृक्ष शाखा पर जिनालय, पूजहूँ मन मोहना।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक –

जल अमल ले जिनपद पूजूँ, कर्म मल धुल जायेगा।
आत्मीक समता रस विमल, आनंद अनुभव आयेगा।।
पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुगंधित ले जिनेश्वर, पद जजूँ आनंद से।
स्वात्मानुभव आल्हाद पाकर, छूटहूँ जग द्वंद्व से।।
पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदाकिरण सम धवल तंदुल, पुंज जिन आगे धरूँ।
वर धर्म शुक्लसुध्यान निर्मल, पाय आतम निधि वरूँ।।
पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार चंपक पुष्प सुरभित, लाय जिनपद पूजते।
निज आत्मगुण कलिका खिले, जन भ्रमर तापे गूँजते।।
पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक पुआ बरफी इमरती, लाय जिन सन्मुख धरें।
आत्मैकरस पीयूष मिश्रित, अतुल आनंद भव हरें।।
पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक शिखा उद्योतकारी, जिन चरण में वरना।
अज्ञान तिमिर हटाय अंतर, ज्ञान ज्योती धरना।।
पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध धूप गंगाय स्वाहा[1] नाथ को अर्पण किया।
वसु कर्म स्वाहा हेतु ही, निज आत्म को तर्पण किया।।

1. अग्नि।

पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम अनार गन्ना, लाय जिनपूजा करूँ।
वर मोक्ष फलं की आश लेकर, कर्म कंटक परिहरूँ।।
पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप फलादि ले।
जिन कल्पतरू पूजत मनोवांछित सकल फल झट मिलें।।
पृथ्वीमयी दो वृक्ष के, जिनगेह मणिमय मूर्तियाँ।
जयवंत होवें नित्य ही, चिंतामणी जिनमूर्तियाँ।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडसंबंधिधातकीशाल्मलीद्वयवृक्षस्थितजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

यमुना सरिता नीर कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देय, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्घ्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

अचलमेरु ईशान, वृक्ष आंवले सम कहा।
नैऋत शाल्मलि ज्ञान, जिनगृह पूजूँ पुष्प ले।।1।।

इति धातकीशाल्मलिवृक्षस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

हरिगीतिका

इस धातकी तरु उत्तरी, शाखा विषे जिनगृह महा।
देवाधिदेव जिनेन्द्र की, प्रतिमा रतनमयि है वहाँ।।
सुरभित पवन प्रेरित जिनालय, मणि ध्वजा नित फरहरें।
वर अर्घ्य लेकर पूजते ही, कर्म शत्रू थर हरें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरीरीशानकोणेधातकीवृक्षजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

अचलमेरु के द्वय तरु, धातकि शाल्मलि जान।
दोनों के जिनगेह की, अर्घ्य चढ़ाऊँ आन।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधीधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

हरिगीतिका

जय जय अकृत्रिम जिन भवन, अघहरण जग चूड़ामणी।
जय जय अकृत्रिम जिनप्रतिम, सब मूर्तियाँ चिंतामणी।।
जय जय अनादि अनंत अनुपम, त्रिभुवनैक शिखामणी।
जय मोह अहि के विष प्रहारण, नाथ! तुम गारुत्मणीं।।1।।

सुरगिरि अचल उत्तर दिशी, उत्तर कुरु है भोगभू।
तहं धातकी तरु थल वृहत्, पे वेदिका अर पीठ जू।।
रजत उतुङ्ग महा मनोहर, मणिमयी ये तरु हरे।
उनपे अकृत्रिम जिनसदन, मेरे सकल कलिमल हरें।।2।।

तरु चार दिश की चार शाखा, मुख्य हैं उन एक में।
जिनगृह अकृत्रिम शोभता, सुरगृह बने हैं तीन में।।

1. सर्प के विष को दूर करने वाली गरुड़मणी।

इनमें सदा व्यंतर रहें, सम्यक्त्व रत्नों युत भने।
परिवार तरु अगणित कहे परिवार सुर उनपे धने।।3।।

फल मणिमयी हैं आंवले-सम पत्तियाँ मरकतमणी।
कोंपल पदममणिके बने, बहु फूल नाना वर्णनी।।
सब देवगृह में भी सदा, जिनधाम अनुपम राजते।
उनकी करें जो वंदना, सब पाप क्षण में नाशते।।4।।

जिनराज सिंहासन रतन-मणियों जड़ित अति सोहना।
त्रय छत्र में मोती लटकते, शशिकिरण सम मोहना।।
चौंसठ युगल सुर हाथ में, चामर लिये हैं भाव से।
वर आठ मंगल द्रव्य सब, जिनराज सन्निध भासते।।5।।

बहु देव देवी अप्सरायें, इंद्र गण भी आवते।
जिनवंदना गुणगाान पूजत, करत शीश नवावते।।
संगीत बाजे विविध बजते, किंकणी घंटा खने।
वीणा बजाते नृत्य करते, ताल दे देकर घने।।6।।

खेचर युगलिया भक्ति से, जिनवंदना करते वहाँ।
नर नारियाँ भूचर सदा, विद्या के बल फिरते वहाँ।।
आकाशगामी ऋद्धि से, ऋषिगण वहाँ विचरण करें।
जिनवंदना के बहु जनम के, पाप तत्क्षण परिहरें।।7।।

गणधर सुव्रतधर चक्रधर, हलधर गदाधर सर्वदा।
श्रुतधर अशनिधर कुलधर, जिन भक्ति करते शर्मदा।।
अध्यात्म योगी वीतरागी, शुद्ध आतम ध्यावते।
वर निर्विकल्प समाधिरत, हो परम आनंद पावते।।8।।

मैं भक्ति श्रद्धा भाव से, हे नाथ! तुम शरणा लिया।
बस मृत्यु मल्ल पछाड़ने को, तुम निकट धरना दिया।।
हे भक्त वत्सल! दीनबंधु! कृपा मुझ पर कीजिये।
हे नाथ! अब तो मुझे, केवल 'ज्ञानमती'श्री दीजिये।।9।।

दोहा

शाश्वत श्री जिनगेह के, स्वयं सिद्ध जिनबिंब।
मन वच तन से पूजहूँ, झड़े कर्म कटु निंब।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीअचलमेरुसंबंधिधातकीशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-14

पश्चिमधातकी खंड पर्वत जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

अपर धातकी खंड द्वीप में षट् कुल पर्वत सोहें।
विदिशा में गजदंत चार हैं सुर नर का मन मोहें।।
सोलह गिरि वक्षार सुहाने चौंतिस रजताचल हैं।
इनके साठ जिनालय पूजूँ पद मिलता अविचल है।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक नरेन्द्र छंद –

जन्म जरा मृत्यु ये तीनों, भव भव में दुख देते।
प्रभो! निवारो इनको तुम पद में त्रय धारा देते।।
शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ तुम पद प्रीति बढ़ाके।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मानस तनु आगंतुक पीड़ा भव भव में दुख देवें।
प्रभो! निवारो इनको तुम पद पंकज गंध चढ़ावें।।
शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ तुम पद प्रीति बढ़ाके।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

इंद्रिय सुख क्षणभंगुर इनसे सदा क्लेश होता है।
अक्षत के बहु पुंज चढ़ाते अक्षय सुख होता है।।
शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ तुम पद प्रीति बढ़ाके।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

भूख पिशाची बहुदुख देती तुमने इसे नशाया।
नाना विध नैवेद्य चढ़ाते व्याधि रहित हो काया।।
शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ तुम पद प्रीति बढ़ाके।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भूख पिशाची बहुदुख देती तुमने इसे नशाया।
नाना विध नैवेद्य चढ़ाते व्याधि रहित हो काया।।
शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ तुम पद प्रीति बढ़ाके।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में मोह अंधेरा छाया, ज्ञान नेत्र नहिं खुलते।
दीपक से मोह आरति करते आत्म सरोरुह खितते।।
शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ तुम पद प्रीति बढ़ाके।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी अग्नि पात्र में खेऊं सुरभि उठे हैं।
अशुभ कर्म क्षण में जल जाते सुयश सुगंधि बढ़े है।।

शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ तुम पद प्रीति बढ़ाके।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर ताजे फल लेकर शिवफल हेतु चढ़ाऊँ।
मनो भावना पूरी कीजे हाथ जोड़ शिर नाऊँ।।
शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ तुम पद प्रीति बढ़ाके।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ सजाकर चांदी पुष्प मिलाऊँ।
अर्घ चढ़ाकर करूँ प्रार्थना रत्नत्रय निधि पाऊँ।।
शाश्वत जिनमंदिर प्रतिमा को पूजूँ हर्ष बढ़ाके।
परमानंद सुखामृत पाऊँ तुम पद प्रीति बढ़ाके।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थित जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांतीधारा मैं करूं, जिनवरपद अरविंद।
त्रिभुवन में भी शांति हो, मिले निजात्म आनंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निजनिधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

अपर धातकी द्वीप, साठ अचल के जिनगृहा।
जजूँ हृदय धर प्रीत, पुष्पांजलि कर भक्ति से।।

इति मण्डलस्योपरि दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

षट्कुलाचल अर्घ-नरेन्द्र छंद

अचल मेरु के दक्षिण दिश में, हिमवन रजतमयी है।
ग्यारह कूट सहित पर्वत मधि, पद्म सरोवर भी है।।
द्रव बिच कमल, कमल बिच देवी, श्री को भवन बखाना है।
पूर्व दिशा में सिद्धकूट जिन गेह जजूँ अघ हाना।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिहिमवन् पर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुतिया महाहिमवन कुलनग है, रजतमयी नवकूटा।
महापद्मद्रह के कमलों बिच, ह्री सुरि गेह अनूठा।।
पूर्वदिशा गत सिद्धकूट पर श्रीजिनभवन सुहावे।
ऋषिगण नित वंदन करते हैं, हम भी अर्घ चढ़ावें।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिमहाहिमवन्पर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निषधगिरी वर तप्त कनक छवि नवकूटन सुर सेवी।
मध्यतिगिंछ सरोवर के बिच कमल मध्य धृतिदेवी।।
पूर्वदिशा गत सिद्धकूट पर श्रीजिनभवन सुहावे।
ऋषिगण नित वंदन करते हैं, हम भी अर्घ चढ़ावें।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिनिषधपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीलाचल वैडूर्य मणिद्युति नवकूटों से मनहर।
केसरिद्रह में कमल बीच कीर्तिदेवी अति सुन्दर।।
पूर्वदिशा गत सिद्धकूट पर श्रीजिनभवन सुहावे।
ऋषिगण नित वंदन करते हैं, हम भी अर्घ चढ़ावें।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिनीलपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्मीनग रूपाछवि कूटों आठ सहित मन मोहे।
पुंडरीक द्रह मध्य कमल में, बुद्धिदेवी सोहे।।

पूर्वदिशा गत सिद्धकूट पर श्रीजिनभवन सुहावे।
ऋषिगण नित वंदन करते हैं, हम भी अर्घ चढ़ावें।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिरुक्मिपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरीनग स्वर्णाभि बीच मह पुंडरीक सरवर है।
मध्य कमल बिच लक्ष्मी देवी गयारह कूट उपरि है।।
पूर्वदिशा गत सिद्धकूट पर श्रीजिनभवन सुहावे।
ऋषिगण नित वंदन करते हैं, हम भी अर्घ चढ़ावें।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिशिखरीपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार गजदंत अर्घ-नरेन्द्र छंद

अचलमेरु ईशान दिशा में, माल्यवान गजदंता।
नीलमणी सम छवि अतिसुंदर, नवकूटों में संता।।
मेरु निकट के सिद्धकूट पर जिनमंदिर अभिरामा।
मैं नित पूजूँ अर्घ चढ़ाकर पाऊँ निज विश्रामा।।7।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिमाल्यवानगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू की आग्नेय दिशा में, सौमनस्य गजदंता।
चांदी सम अति कांत चमकता सात कूट विलसंता।।
मेरु निकट के सिद्धकूट पर जिनमंदिर अभिरामा।
मैं नित पूजूँ अर्घ चढ़ाकर पाऊँ निज विश्रामा।।8।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिसौमनसगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरू के नैऋत्य कोण में विद्युत्प्रभ गजदंता।
तप्तकनक छवि शाश्वत सुंदर नवकूटों युत संता।।

मेरु निकट के सिद्धकूट पर जिनमंदिर अभिरामा।
मैं नित पूजूँ अर्घ चढ़ाकर पाऊँ निज विश्रामा।।9।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिविद्युत्प्रभगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु के वायव्य दिशा में गंधमादनाचल है।
कनककांति से दिपे मनोहर, सात कूट अविचल है।।
मेरु निकट के सिद्धकूट पर जिनमंदिर अभिरामा।
मैं नित पूजूँ अर्घ चढ़ाकर पाऊँ निज विश्रामा।।10।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिगंधमादनगजदंतपर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार पर्वत अर्घ-राग भरतरी

मैं जिनपद पूजूँ सदा, मन वच काय लगाय।
वंदत नवनिधि संपदा, अतिशय मंगल थाय।।टेंक।।

सीतानदि उत्तर तटे, 'चित्रकूट' वक्षार।
ता गिरि पे इक जिनभवन, अविनाशी अबिकार।।
मैं जिनपद पूजूँ सदा, मन वच काय लगाय।
वंदत नवनिधि संपदा, अतिशय मंगल थाय।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानदीउत्तरतटेचित्रकूटवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिनकूट' वक्षार है, कांचन की द्युति जान।
ताके जिनमंदिर विषें, जिनवर बिंब महान।।
मैं जिनपद पूजूँ सदा, मन वच काय लगाय।
वंदत नवनिधि संपदा, अतिशय मंगल थाय।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानद्यत्तरतटे नलिनकूटवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मकूट' वक्षार है, ता गिरि पे चउ कूट।
सिद्धकूट में जिनसदन, पूजत पुण्य अटूट।।

मैं जिनपद पूजूँ सदा, मन वच काय लगाय।
वंदत नवनिधि संपदा, अतिशय मंगल थाय।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानद्यत्तरतटेपद्मकूटवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार है, भूभृत अविचल मान।
ताके जिनमंदिर विषें, अकृत्रिम भगवान।।
मैं जिनपद पूजूँ सदा, मन वच काय लगाय।
वंदत नवनिधि संपदा, अतिशय मंगल थाय।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानद्यत्तरतटे एकशैलवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग भरतरी

मैं पूजूँ जिनबिंब को, भक्तिभाव उर धार।
जे नर वंदे भाव से, ते उतरें भव पार।।मैं.।।1।।

देवारण्य समीप से, हैं 'त्रिकूट' वक्षार।
ताके श्री जिनवेश्म को, पूजें इंद्र अपार।।
मैं पूजूँ जिनबिंब को, भक्तिभाव उर धार।
जे नर वंदे भाव से, ते उतरें भव पार।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटे त्रिकूटवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षाराचल 'वैश्रवण', अनुपम रत्न भंडार।
ताका जिनमंदिर कहा, मोक्ष महल का द्वार।।
मैं पूजूँ जिनबिंब को, भक्तिभाव उर धार।
जे नर वंदे भाव से, ते उतरें भव पार।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटेवैश्रवणवक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आत्मांजन' वक्षार पे, खेचर गण आवंत।
ताके श्री जिनगेह को, मुनिगण नित्य नमंत।।

मैं पूजूँ जिनबिंब को, भक्तिभाव उर धार।
जे नर वंदे भाव से, ते उतरें भव पार।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतानदीदक्षिणतटेआत्मांजनवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अंजन' नग वक्षार है, पूरे सुरगण आश।
ताके जिनगृह पूजते, होते कर्म विनाश।।
मैं पूजूँ जिनबिंब को, भक्तिभाव उर धार।
जे नर वंदे भाव से, ते उतरें भव पार।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थअंजनवक्षारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

'श्रद्धावान' वक्षार, कनकमय मानिये।
भद्रसाल वन वेदी, निकट बखानिये।।
तापे श्री जिनभवन विषें, जिनबिंब का।
पूजूँ अर्घ्यं चढ़ाय हरूं, जग द्वंद्व को।।19।।

ॐ ह्रीं सीतोदानदीदक्षिणतटे श्रद्धावान्वक्षारपर्वतस्थित सिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजटावान' कहा, वक्षार गिरीश पे।
कूट कहे हैं चार, रहे सुर तीन पे।।
इक में श्री जिनभवन, विषें जिनबिम्ब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय हरूँ जग द्वंद्व को।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेविजटावानवक्षारपर्वत स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आशीविष' वक्षार, गिरी अनुपम जहाँ।
सुरकिन्नरगण जिनवर यश गाते वहाँ।।

तापे श्री जिनभवन विषे जिनबिंब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय हरूँ जग द्वंद्व को।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेआशीविषवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नग वक्षार 'सुखावह', सुखदातार है।
ताके जिनगृह जजत, भविक भव पार हैं।।
तापे श्री जिनभवन, विषे जिनबिम्ब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय हरूँ जग द्वंद्व को।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेसुखावहवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'चन्द्रमाल' वक्षार, गिरी सुखकार है।
भूतारण्य समीप, कनकमयि सार है।।
तापे श्री जिनगेह, जिनेश्वर बिम्ब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय हरूँ जग द्वंद्व को।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेचंद्रमाल वक्षार पर्वतस्थितसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमाल' वक्षार, जिनेश्वर गेह से।
भविजन मन तम हरें, छुड़ा तन नेह से।।
जिनवर गृह के सभी, जिनेश्वर बिम्ब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय हरूँ जग द्वंद्व को।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेसूर्यमालवक्षारपर्वत-स्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नागमल' वक्षार, अतुल जिनगृह तहाँ।
नागेन्द्रादिक देव करें, पूजन वहाँ।।
जिनवरगृह के सभी, जिनेश्वर बिंब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय हरूँ जग द्वंद्व को।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेनागमलवक्षारपर्वत-स्थित सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवमाल' वक्षार, मनोहर जानिये।
देव पूज्य जिनगेह, वहाँ पर मानिये।।
सुर नर पूजित, सर्वजिनेश्वर बिंब को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय हरूँ जग द्वंद्व को।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थसीतोदानदीदक्षिणतटेदेवमालवक्षारपर्वत-स्थित सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयार्ध जिनालय अर्घ-अडिल्ल छंद

अचलमेरु के पूर्व, विदेह बखानिये।
सीताउत्तर 'कच्छा', देश सुमानिये।।
ताके मधि रूपाचल पे, जिन धाम को।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, तजूँ दुखथान को।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेह कच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्ध-कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' अपर धातकी माहिं है।
अचल मेरु के पूर्व, विदेहन माहिं हैं।।
मध्य रजतगिरि के जिनगृह को जजूँ।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन, प्रतिमा को नित भजूँ।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेह सुकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरधातकी मध्य, अचल सुरगिरि कहा।
ताके पूरब देश, 'महाकच्छा' लहा।।
ताके मधि रजताचल, पर जिनगृह सदा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भजूँ सुख संपदा।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेह महाकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वत-सिद्ध कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावती', मध्य विजयार्ध है।
ताके जिनगृह को नित पूजें भव्य हैं।।

तिनके श्री जिनबिंब, अकृत्रिम सोहते।
अर्घ्य चढ़ाय जजूँ, सुरनर मन मोहते।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहकच्छाकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्ध कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आवर्ता' है देश, मध्य विजयार्ध है।
तापे नव कूटों में, इक विख्यात है।।
सिद्धकूट में जिन प्रतिमा को पूजते।
अर्घ्य चढ़ाय जजें, नर दुःख से छूटते।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेह आवर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्ध कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्ता', मधि रूपाद्रि है।
तापे सिद्धायतन, माहि जिननाथ हैं।।
मुनिपति से नित, पूज्य अकृत्रिम चैत्य हैं।
अर्घ्य चढ़ाय जजूँ मैं, भवरूज वैद्य है।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहलांगलावर्ता देशेमध्यस्थितविजयार्ध पर्वतसिद्ध कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' मध्य, रजतगिरि सोहना।
सिद्धकूट जिनगृह से, जन मन मोहना।।
तिनकी जिन प्रतिमा, को पूजूँ भाव से।
अर्घ्य चढ़ाय जजूँ मैं, अतिशय चाव से।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपुष्कलादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्ध कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' मध्य, विजयार्ध है।
तापे जिनगृह पूजत, भव्य कृतार्थ हैं।।
तिनकी मणिमय जिन, प्रतिमा को मैं जजूँ।
अर्घ्य चढ़ाय सदा मन वच तन से भजूँ।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहपुष्कलावतीदेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोला छंद

अपरधातकी द्वीप अचल सुरगिरि पूरब में।
देवारण्य समीप, देश 'वत्सा' के मधि में।।
रजतगिरी पर सिद्धकूट में मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय उन्हों की अतिशय महिमा।।35।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहवत्सादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु के पूर्व 'सुवत्सा' देश विदेहा।
तिसके बीचों बीच, रजतगिरि रमत सुदेहा।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्यं चढ़ाय उन्हों की अतिशय महिमा।।36।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसुवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के पूर्व 'नहावत्सा' धर देशा।
तिसके मधि विजयार्ध वसे नित तास खगेशा।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय उन्होंकी अतिशय महिमा।।37।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहमहावत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वत्सकावती' अचल सुरगिरि के पूर्वा।
रूपाचल तामध्य, रमे तापे गंधर्वा।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय उन्होंकी अतिशय महिमा।।38।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहवत्सकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु के पूरब 'रम्या' देश कहाता।
ताके बीचों बीच रजतगिरि शोभा पाता।।

नवकूटों में सिद्धकूट पर मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय उन्होंकी अतिशय महिमा।।39।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' कहा सुपूर्व अचल मेरु के।
ताके मध्य रजतगिरि पे नवकूट सू नीके।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय उन्होंकी अतिशय महिमा।।40।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहसुरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश कहा 'रमणीया' अपर धातकी खंड में।
तिनके बीच रजतनाग, त्रयकटनी है उसमें।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय उन्होंकी अतिशय महिमा।।41।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहरमणीयादेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'मंगलावती' अचल मेरु पूरब में।
तिसके मधि रूप्वाद्रि तथा छहखंड उसी में।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर मणिमय प्रतिमा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय उन्होंकी अतिशय महिमा।।42।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपूर्वविदेहमंगलावतीदेशमध्यस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबोल छंद

अपरधातकी मेरु अचल के पश्चिम सीतोदा दायें।
भद्रसालवन वेदी सन्निध, पद्मा देश कहा जाये।।

तामध रूपाचल मनहारी, सिद्धकूट में जिनगेहा।
रोग शोक दुःख दारिद्र नाशे, जो जन पूजें धर नेहा।।43।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडसंबंधिश्चिमविदेहपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु की अपर दिशा में, सीतोदा नदि के दायें।
देश 'सुपद्मा' शोभा पाता, उसमें छहों खंड गायें।।
तामध रूपाचल मनहारी, सिद्धकूट में जिनगेहा।
रोग शोक दुःख दारिद्र नाशे, जो जन पूजें धर नेहा।।44।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसुपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी खंड द्वीप में, सीतोदा के दक्षिण में।
देश 'महापद्मा' आरज खंड कर्म भूमि शाश्वत उसमें।।
तामध रूपाचल मनहारी, सिद्धकूट में जिनगेहा।
रोग शोक दुःख दारिद्र नाशे, जो जन पूजें धर नेहा।।45।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहमहापद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचलमेरु के पश्चिम दिश में, देश पद्मकावती कहा।
तीर्थंकर श्रुत केवलि गणपति, मुनिगण से नित पूज्य रहा।।
तामध रूपाचल मनहारी, सिद्धकूट में जिनगेहा।
रोग शोक दुःख दारिद्र नाशे, जो जन पूजें धर नेहा।।46।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहपद्मकावतीदेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु के पश्चिम दिश में, 'शंखा' देश विदेह कहा।
रूपाचल है मध्य उसी के, तीन कटनियों सहित रहा।।
नव कूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पर जिनगेहा।
रोग शोक दुख दारिद नाशें जो जन पूजें धर नेहा।।47।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहशंखादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु की पश्चिम दिश में, 'नलिना' देश कहा जाता।
ताके बीच रूप्यगिरि सुंदर, विद्याधर के मन भाता।।
नव कूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पर जिनगेहा।
रोग शोक दुख दारिद नाशें, जो जन पूजें धर नेहा।।48।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहनलिनादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मेरु की पश्चिम दिश में, 'कुमुद' देश अतिरम्य कहा।
ताके मध्य रजतगिरि सुंदर, ऋषिगण विचरें नित्य वहाँ।।
नव कूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पर जिनगेहा।
रोग शोक दुख दारिद नाशें, जो जन पूजें धर नेहा।।49।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहकुमुदादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर धातकी सीतोदा के दायें 'सरिता' देश कहा।
ताके मध्य रूप्यगिरि है नित, इंद्रादिक गण रमें वहाँ।।
नव कूटों में नदि के सन्निध, सिद्धकूट पर जिनगेहा।
रोग शोक दुख दारिद नाशें, जो जन पूजें धर नेहा।।50।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसरितादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोलाछंद

'वप्रा' देश विदेह, अपर धातकी माहीं।
तामधि रजत गिरीन्द्र सीतोदा तट ताहीं।।
सिद्धकूट जिनवेश्म, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाई।
इक सौ अठ जिनबिंब, सब विध मंगल दाई।।51।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' रम्य, अचल मेरु पश्चिम में।
रूप्याचल है मध्य, नदि के निकट सु उसमें।।

सिद्धकूट जिनवेश्म, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाई।
इक सौ अठ जिनबिंब, सब विध मंगल दाई।।52।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसुवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावप्रा' सुविदेह, अपर धातकी तामें।
रजताचल ता मध्य, तीन कटनियां तामें।।
सिद्धकूट जिनवेश्म, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाई।
इक सौ अठ जिनबिंब, सब विध मंगल दाई।।53।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहमहावप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वप्रकावती' विदेह, तामधि रजतगिरी है।
नवकूटों में एक कूट सुसौख्य भरी है।।
सिद्धकूट जिनवेश्म, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाई।
इक सौ अठ जिनबिंब, सब विध मंगल दाई।।54।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहवप्रकावतीदेशस्थितविजयार्ध-पर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधा' देश विदेह, अपर धातकी द्वीपे।
विजयारध तामध्य, नवकूटों से दीपे।।
सिद्धकूट जिनवेश्म, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाई।
इक सौ अठ जिनबिंब, सब विध मंगल दाई।।55।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' माहिं, रजतगिरि अमलाना।
मुकुट सदृश नवकूट, सुरनर रमत महाना।।
सिद्धकूट जिनवेश्म, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाई।
इक सौ अठ जिनबिंब, सब विध मंगल दाई।।56।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहसुगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'गंधिला' मध्य, रूपाचल अति सोहे।
तापे यतिगण नित्य, आतम समरस जोहे।।
सिद्धकूट जिनवेश्म, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाई।
इक सौ अठ जिनबिंब, सब विध मंगल दाई।।57।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहगंधिलादेशस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधमालिनी' देश विजयारध ता बीचे।
तापे सुरगण आय क्रीड़ा करत सुनीके।।
सिद्धकूट जिनवेश्म, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाई।
इक सौ अठ जिनबिंब, सब विध मंगल दाई।।58।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थपश्चिमविदेहगंधमालिनीदेशस्थितविजयार्ध-पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

शुभ अपरधातकी दक्षिण में इक 'भरत' सुक्षेत्र कहाता है।
गंगा सिंधु नदि विजयाधर इनसे छह खंड धराता है।।
रूपाचल की पूरब दिश में, श्री सिद्धकूट मन भरता है।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर के, वह आतम सिद्धि कराता है।।59।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणदिशि भरतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अपरधातकी उत्तर में, 'ऐरावत' क्षेत्र सुहाना है।
रक्ता रक्तोदा रजतगिरी, इनसे छह खंड युत माना है।।
रजताचल की पूरब दिश में, श्री सिद्धकूट मन भरता है।
मैं पूजूं अर्घ्य चढ़ा करके, वह आतमसिद्धि कराता है।।60।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपस्थउत्तरदिशि ऐरावतक्षेत्रस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

पश्चिम धातकी में छह कुलगिरि, चउ गजदंता चलशोभ रहे।
सोलह वक्षार गिरी स्वर्णिम, चौंतिस रजताचल शोभ रहे।।
इन नग पर एक एक जिनगृह, इन साठ जिनालय को पूजूँ।
चउघाति कर्म का नाश करूँ, भव भव की व्याधी से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुर्गजदंताचलषोडशवक्षारचतुस्त्रिंशत् विजयार्धपर्वत सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ सौ सस्सी जिनप्रतिमा इन जिनमंदिर में राजे हैं।
नासाग्रदृष्टि पद्मासन हैं छवि वीतराग अति भासे हैं।।
इन जिनमूर्ती का ध्यान किये निजचिन्मय मूर्ति प्रगट होती।
मिथ्यात्व पिंडि फट जाती हैं, निज आतम ज्योति प्रगट होती।।2।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिजिनलायमध्यविराजमान षट्सहस्रचतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस अपरधातकी में मेरु शुभ अचल नाम से अचलित है।
धातकि तरु शाल्मलि तरु सोहें, कुलपर्वत आदि साठ नग है।।
इन सबके जिनगृह अट्ठत्तर शाश्वत मणि स्वर्णमयी सोहें।
इनकी पूजा करते सुरगण, गणधर मुनिगण का मन मोहें।।3।।

ॐ ह्रीं अपरधातकीखंडद्वीपसंबंधिमेर्वादिसप्ततिजिनालयमध्यविराजमानअष्ट सहस्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

जय जय जिनवर मूर्तियाँ, जय जय जिनवर धाम।
गाऊँ गुणमणि मालिका, शत शत करूँ प्रणाम।।1।।

चाल-शेर

जय धातकी सुद्वीप के शाश्वत जिनालया।
जय हिमवदादि पर्वतों के छह जिनालया।।
जय जय चउ गजदंत के चारों जिनालया।
वक्षार पर्वतों के भी सोलह जिनालय।।2।।

जय जय रजतगिरी के चौंतिस जिनालया।
जय जय जिनेन्द्रआलय भविजन सुखालया।।
जो भक्तिभाव से सदैव वंदना करें।
वे कर्म पर्वतों की भि खंडना करें।।3।।

हिमवन है दो हजार इक सौ पाँच कुछ अधिक।
योजन प्रमाण दो हजार कोस का ये नित।।
इससे चतुर्गणा महाहिमवन विशाल है।
इससे चतुर्गुणा निषध पर्वत विशाल है।।4।।

आगे के नील रुक्मि और शिखरि पर्वता।
निषधादि सदृश विस्तृते इन छै में छह ह्रदा।।
इन ह्रद के मध्य नीर में सरोज खिले है।
श्री आदि देवियों के वहाँ महल भले हैं।।5।।

चारणमुनी इन पर्वतों पर नित्य विचरते।
जिनगेह का वंदन करें शुभ ध्यान को धरते।।
सब इंद्र इंद्राणी मिले भक्ती को आवते।
सुरवृंद देवियाँ मिले जिन कीर्ति गावते।।6।।

विद्याधरों की टोलियाँ जिन वंदना करें।
संगीत गीत नृत्य से जिन अर्चन करें।।
जिनभक्ति से असंख्य कर्म निर्जरा करें।
सम्यक्त्वनिधी पायके निजात्म सुख भरें।।7।।

मैं भी यहीं परोक्ष में उन मूर्ति को नमूँ।
निज ज्ञानमती सौख्य पा मिथ्यात्व को वमूँ।।
नहिं बार बार जनमरण दुःख को भरूँ।
जिन को हृदय में धार के संसार से तिरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-15

धातकी खण्डद्वीप इष्वाकार जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

वर द्वीप धातकी के दक्षिण, उत्तर में इष्वाकार कहे।
ये द्वीप धातकी को पूरब, पश्चिम दो खंड में बांट रहे।।
इन पर्वत पर दो जिनमंदिर, जिनप्रतिमा का आह्वान करूँ।
सुरपति खगति चक्री पूजित, जिनप्रतिमा का गुणगान करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालय जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालय जिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालय जिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक शंभु छंद –

क्षीरोदधि का पयसम जलले, कंचन कलशा भर लाया हूँ।
निजआत्म करकमल धोने को, प्रभु धारा देने आया हूँ।।
इष्वाकाराचल के दो हैं, जिनमंदिर अतिशय गुणधारी।
इनको पूजत ही परमानंद, आतम अनुभव हो सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयजचंदन केशर घिस के, तुमचरण चढ़ाने आया हूँ।
आत्यंतिक शांतिहेतु मैं, भवज्वाल बुझाने आया हूँ।।
इष्वाकाराचल के दो हैं, जिनमंदिर अतिशय गुणधारी।
इनको पूजत ही परमानंद, आतम अनुभव हो सुखकारी।।2।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

कामोद श्यामगीरी तंदुल कमलों को धोकर लाया हूँ।
अक्षय सुखमय शुद्धात्महेतु, प्रभु पुंज चढ़ाने आया हूँ।।
इष्वाकाराचल के दो हैं, जिनमंदिर अतिशय गुणधारी।
इनको पूजत ही परमानंद, आतम अनुभव हो सुखकारी।।3।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के सुरभित विविध सुमन, सुमनस मनहर मैं लाया हूं।
प्रभु काम वाण विध्वंस हेतू, तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।।
इष्वाकाराचल के दो हैं, जिनमंदिर अतिशय गुणधारी।
इनको पूजत ही परमानंद, आतम अनुभव हो सुखकारी।।4।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरण पोली पूरी खाजे नुकती लड्डू मैं लाता हूँ।
निज क्षुधा व्याधि के नाश हेतु, तुम चरणों निकट चढ़ाता हूँ।।
इष्वाकाराचल के दो हैं, जिनमंदिर अतिशय गुणधारी।
इनको पूजत ही परमानंद, आतम अनुभव हो सुखकारी।।5।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोघृत भर कंचनदीप शिखा, दशदिश अंधेर भगा देती।
दीपक ज्योति प्रभु जजते ही, अज्ञान अंधेर मिटा देती।।
इष्वाकाराचल के दो हैं, जिनमंदिर अतिशय गुणधारी।
इनको पूजत ही परमानंद, आतम अनुभव हो सुखकारी।।6।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप सुगंधित ले, अग्नि में खेने आया हूँ।
कर्मों को जला जला करके, दशदिश में धूम उड़ाया हूँ।।

इष्वाकाराचल के दो हैं, जिनमंदिर अतिशय गुणधारी।
इनको पूजत ही परमानंद, आतम अनुभव हो सुखकारी।।7।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला अंगूर आम, पिस्ता किसमिस बादाम लिया।
शिवफल की आशा से जिनवर, तुम सन्मुख मैंने चढ़ा दिया।।
इष्वाकाराचल के दो हैं, जिनमंदिर अतिशय गुणधारी।
इनको पूजत ही परमानंद, आतम अनुभव हो सुखकारी।।8।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाया हूँ।
वर हेमपात्र में अर्घ्य सजा, प्रभु निकट चढ़ाने आया हूँ।।
इष्वाकाराचल के दो हैं, जिनमंदिर अतिशय गुणधारी।
इनको पूजत ही परमानंद, आतम अनुभव हो सुखकारी।।9।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वयइष्वाकारपर्वतस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कनक भृंग में मिष्टजल, सुरगंगा सम श्वते।
जिनपद धारा देत ही, भव भव को जल देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल सरोरुह मालती, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूं, सुख संपत्ति अधिकाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

दुतिय धातकी द्वीप, दक्षिण उत्तरदिश विषें।
इष्वाकृति नग दोय, ताके जिनगृह पूजहूँ।।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

वर द्वीप धातकी के दक्षिण, लवणोदधि कालोदधि छूता।
नग इष्वाकार सहस योजन, विस्तृत अरु चारशतक ऊँचा।।
यह लंबा चार लाख योजन, कनकाभ कूट चउ इसपे हैं।
इक सिद्धकूट में जिनमंदिर, हम अर्घ्य चढ़ाकर जजते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणदिशायां इष्वाकारनगस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर द्वीप धातकी उत्तर में, लवणोदधि कालोदधि छूता।
गिरि इष्वाकृति योजन हजार, विस्तृत अरुचारशतक ऊँचा।।
यह चार लाख योजन लंबा, स्वर्णाभ चार कूटों युत है।
इक सिद्धकूट में जिनमंदिर, हम अर्घ्य चढ़ाकर पूजत हैं।।2।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडस्योत्तरदिशि इष्वाकारनगस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

द्वीप धातकी खंड में, दक्षिण उत्तर माहिं।
इष्वाकृतिगिरि के उभय, जिनगृह पूज रचाहिं।।1।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणोत्तरदिशा इष्वाकारपर्वतस्थितद्वयसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इष्वाकृति के जिनभवन, उनमें जिनवर बिंब।
दो सौ सोलह नित जजूँ, मिटे सर्वदुख द्वंद।।2।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थद्वय इष्वाकारपर्वतस्थितद्वयजिनालयमध्यविराजमान द्विशतषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

सोरठा

इष्वाकार गिरीन्द्र, इनपे जिनगृह शाश्वते।
तिनमें श्री जिनबिंब, मैं गाऊँ गुणमालिका।।1।।

शंभुछंद

जय जय श्री जिनसिद्धायतनं, भविजन को सिद्धि प्रतादा हो।
जय स्वयं सिद्ध शाश्वत भगवन! मुनिजनक मुक्ति विधाता हो।।
जय जय गुणरत्नाकर स्वामी, जो तुमको नित प्रति ध्याते हैं।
वे तुम भक्ति नौका चढ़कर, भववारिधि से तिर जाते हैं।।2।।

इष्वाकृति नग पर सिद्धकूट, उनमें जिनप्रतिमा राजे हैं।
जो उनकी पूजा भक्ति करें, वे भव बल्ली को कोटे हैं।।
पर्वत के दोनों भागों में तटवेदी वनपंक्ति शोभे।
धनुपांचशतक विस्तृत स्वर्णिम, ऊँची दोकोस बहुत शोभे।।3।।

इन भित्ति सदृश वेदी के, द्वय भागों में वनखंड शोभ रहे।
जो तोरण पुष्करिणी वापी, युत जिनभवनों में रम्य कहे।।
वन खंडों सुरमहल वने, तोरण रत्नों से शोभित हैं।
ऐसे ही पर्वत के ऊपर तटवेदी औ वन पंक्ती हैं।।4।।

ये पर्वत अतिशय रम्य कहे, सुवरण कांति से चमके हैं।
इन पर जो चार कूट माने, त्रय में व्यंतर सुर बसते हैं।।
इक सिद्धकूट में जिनमंदिर, जो अकृत्रिम कहलाता है।
कांचन मणिरत्नों से निर्मित, ध्वज पंक्ती को लहराता है।।5।।

जिनगृह को घेरे पर कोटे, हैं तीन कनकमम रत्न जड़े।
उनके अंतर में दशविध ध्वज, अरु कल्पतरु रमणीय बड़े।।
वर मानस्तंभ रतन निर्मित, सिद्धों की प्रतिमा वंद्य वहाँ।
मानस्तंभों के दर्शन से सच, मानगलित हो जाय वहाँ।।6।।

ये जिन मंदिर शिवललना के, शृंगार विलाससदन माने।
भविजन हेतू कल्याण भवन, पुण्यांकर सिंचन वन माने।।
इनमें हैं इक सौ आठ कहीं, जिनप्रतिमा रतनमयी जानो।
मुझ ज्ञानमती को रत्नत्रय, संपति देवें यह सरधानो।।7।।

घत्ता

जय जय जिनचंदा, सुख के कंदा, शिवतियकंता नाथ तुम्हीं।
जय तुम गुण गाऊँ, दुरितनशाऊँ फेर न आऊँ चहूँगति ही।।8।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपस्थदक्षिणोत्तरदिक् संबंधिइष्वाकारगिरिस्थितसिद्ध कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-16

मंदर मेरु पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

पुष्करार्ध वर द्वीप पूर्व में मंदर मेरु सोहे।
उसके सोलह जिनमंदिर में जिनप्रतिमा मन मोहे।।
भक्ति भाव से आह्वानन कर पूजा पाठ रचाऊँ।
भव भव के संताप नाश कर स्वातम सुख को पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक भुजंगप्रयात छंद –

पयोराशि को नीर झारी भराऊँ।
प्रभो के पदाम्भोज धारा कराऊँ।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलय चंद नादि सुवासीत लाऊँ।
प्रभो आपके पाद में नित चढ़ाऊँ।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल शालि तंदुल लिया थाल भरके।
चढ़ाऊँ तुम्हें पुंज सद्भाव धर के।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही केतकी पुष्पमाला बनाऊँ।
महा काम शत्रुंजयी को चढ़ाऊँ।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद लाडू इमरती बनाके।
खुधा व्याधि नाशूँ प्रभू को चढ़ाके।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की लोक उद्योतकारी।
तुम्हें पूजते ज्ञान प्रद्योत भारी।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगनि पात्र में धूप खेऊँ सदा मैं।
कर्म की भसम को उड़ाऊँ मुदा मैं।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास अमरूद अमृत फलों से।
जजूँ मैं वचूँ कर्म अरि के छलों से।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादी वसू द्रव्य से अर्घ करके।
चढ़ाऊँ तुम्हें सर्वदा प्रीति धर के।।
जजूँ मेरु मंदर जिनालय अभी मैं।
न पाऊँ पुनर्जन्म को फिर कभी मैं।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपस्थमंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

परम शांति के हेतु, शांती धारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति, सकल संघ मे हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हरसिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे निज सुखसार, दुख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

मंदरमेरु जिनभवन, सर्वसौख्य भंडार।
पुष्पांजलि चढ़ाय के, जजूँ नित्य चित्तधार।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

दोहा

पुष्करार्धवर पूर्व में, मंदर मेरु महान।
भद्रसाल पूरबदिशी, जजूँ जिनालय आन।।1।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रसाल दक्षिण दिशा, जिनगृह शाश्वत सिद्ध।
तिन में जिनवर बिंब को, जजूँ मिले सब सिद्ध।।2।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भद्रसाल में अपरदिश, जिन मंदिर सुखकार।
जिन प्रतिमा को पूजहूँ, मिले भवोदधि पार।।3।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरु भूमि में, भद्रसाल वन जान।
उत्तर दिश जिन भवन को, जजूँ मोक्ष हित मान।।4।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

वर द्वीप पुष्कर अर्ध में, मंदिरगिरी कनकाम है।
जिनवर न्हवन से पूज्य उत्तम, सुरगिरी विख्यात है।।
नंदन विपिन[1] पूरब दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।
पूजूं सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।1।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज और पर का करे अंतर, जो निरंतर मुनिवरा।
विचरण करें जिनवंदना हित, वे सदैव दिगम्बरा।।
नंदन विपिन दक्षिण दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।।
पूजूं सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।2।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. वन।

यमराज का भय नाशते, सब कामना पूरी करे।
शुद्धात्म रस प्यासे मुनी की, भावना पूरी करें।।
नंदन विपिन पश्चिमी दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।
पूजूं सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।3।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाव राग आग बुझावने, तुम भक्ति गंगा नीर है।
स्नान जो इसमें करें, उनको हरे सब पीर हैं।।
नंदन विपिन उत्तर दिशी, जिनगेह अनुपम मणिमयी।
पूजूं सकल जिनबिंब को, जो वीतरागी छविमयी।।4।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोला छंद

मंदरमेरु माहिं, वन सोमनस सुहावे।
पूरब दिश जिनगेह, पूजत सौख्य उपाये।।
राग द्वेष अर मोह, शत्रु महा दुःख देते।
तुम भक्ती परसाद, तुरत नशें त्रय एते।।1।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु चतुर्थ महान, वन सौमनस बखाना।
दक्षिण दिश जिनधाम, मृत्युंजय परधाना।।
राग द्वेष अर मोह, शत्रु महा दुःख देते।
तुम भक्ती परसाद, तुरत नशें त्रय एते।।2।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरु अनूप, वन सौमनस विशाला।
पश्चिम दिश जिनवेश्म, देत्ता सौख्य रसाला।।

राग द्वेष अर मोह, शत्रु महा दुःख देते।
तुम भक्ती परसाद, तुरत नशें त्रय एते।।3।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरु माहिं, वन सौमनस कहा है।
उत्तर दिश जिनधाम, शाश्वत शोभ रहा है।।
राग द्वेष अर मोह, शत्रु महा दुःख देते।
तुम भक्ती परसाद, तुरत नशें त्रय एते।।4।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाराच छंद (चाल-पार्श्वनाथ देव सेव.....)

पुष्करार्ध पूर्व खंड द्वीप में सुमेरु है।
तास पांडुक वनी, सुपूर्व दिक्क में रहे।।
जैन वैश्म शासता जिनेश बिंब सोहने।
पूजहूँ पढ़ाय अर्घ्य कर्म कीच धोवने।।1।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदाराद्रि पांडुकेसु दक्षिण दिशा तहाँ।
साधु वृंद वंदना जिनेश की करे वहाँ।।
जैन वैश्म शासता जिनेश बिंब सोहने।
पूजहूँ पढ़ाय अर्घ्य कर्म कीच धोवने।।2।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु जो चतुर्थ है चतुर्थ रम्य जो वनी।
पश्चिमी दिशी सुकल्प वृक्ष पंक्तिया घनी।।
जैन वैश्म शासता जिनेश बिंब सोहने।
पूजहूँ पढ़ाय अर्घ्य कर्म कीच धोवने।।3।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरा चले चतुर्थ, जो वनी प्रसिद्ध।
उत्तरी दिशा तहां, मनोज्ञता विशिष्ट है।।
जैन वैश्म शासता जिनेश बिंब सोहने।
पूजहूँ पढ़ाय अर्घ्य कर्म कीच धोवने।।4।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-सोरठा

सोलह श्री जिनधाम, मंदर मेरु में कहे।
जिनवर बिंब महान, अर्चूं पूरण अर्घ्य ले।।1।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्रह सौ अठबीस, जिनवर प्रतिमा नित नमूँ।
नित्य नमाऊँ शीश, पूरण अर्घ चढ़ाय के।।2।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएकसहस्रसप्तशतअष्टाविंशतिजिनप्रतिमाभ्य पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदर मेरु विदिक्क, पांडुक आदि शिलाकहीं।
नमूँ नमूँ प्रत्येक, जिन अभिषेक पवित्र है।।3।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुपांडुकवनविदिक्स्थितपांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

जय जय मंदिर मेरु नित, जय जय श्री जिनदेव।
गाऊँ तुम जय मलिका, करो विघन घन छेय।।1।।

शेर छंद-चाल हे दीन बंधु

जैवंत मूर्तिमंत मेरु मंदराचला।
जैवंत कीर्तिमंत जैन बिंब अविचला।।
जैवंत ये अनंतकाल तक भि रहेंगे।
जैवंत मुझ अनंत सुख निमित्त बनेंगे।।1।।

जै भद्रसाल आदि चार वन के आलया।
जै जै जिनेन्द्र मूर्तियों से वे शिवालया।।
जै नाममंत्र भी उन्हों का सारभूत हैं।
जो नित्य जपे वो लखे आतम स्वरूप हैं।।2।।

भव भव में दुःख सहे अनंत काल तक यहाँ।
ना जाने कितने काल में निगोद में रहा।।
तिर्यंचगती में असंख्य वेदना सही।
नरकों के दुःख को कहें तो पार ही नहीं।।3।।

मानुष गति के आयके भी सौख्य न पाया।
नाना प्रकार व्याधियों ने खूब सताया।।
अनिष्ट योग इष्ट का वियोग तब हुआ।
तब आर्त रौद्र ध्यान बार बान कर मुआ।।4।।

संक्लेश से मर बार बार जन्म को धरा।
आनंतय बार गींबास दुःख का भरा।।
मैं देव भी हुआ यदि सम्यक्त्व बिन रहा।
संक्लेश से मरा पुनः एकेन्द्रि हो गया।।5।।

हे नाथ सभी दुःख से मैं ऊब चुका हूँ।
अब आपकी शरणागती में आके रुका हूँ।।
करके कृपा स्वहाथ का अवलंब दीजिये।
मुझ 'ज्ञानमती' को प्रभो! अनंत[1] कीजिये।।6।।

1. अंत रहित।

घत्ता छंद

गुण गण मणिमाला, परम रसाला, जो भविजन निज कंठ धरें।
वे भव दावानल शीघ्र शमन कर, मुक्ति रमा को स्वयं वरें।।7।।

ॐ ह्रीं मंदरमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-17

पूर्वपुष्करार्धद्वीप पुष्करवृक्ष शाल्मलिवृक्ष जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

पुष्कर तरु से अंकित पुष्कर, द्वीप जु सार्थक नामा।
सुरगिरि के दक्षिण उत्तर में, भोगभूमि अभिरामा।।
उत्तर कुरु ईशान कोण में, पदमवृक्ष मन मोहे।
देवकुरु नैऋत में शाल्मलि, तरु पे सुरगण सोहें।।1।।

दोहा

दोनों तरु पे जिन भवन, स्वयं सिद्ध गुण खान।
जिनवर पूजन हेतु मैं, करूँ यहाँ आह्वान ।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक लक्ष्मीधरा छंद –

तीर्थवारि महास्वच्छ झारी भरी।
तीर्थ कर्तार के पादधारा करी।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण द्रव के सदृश कुंकुमादि लिये।
राग की दाह को मेटने पूजिये।।

दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सोमरश्मिसदृश श्वेत अक्षत लिये।
आत्म निधि पावने पुंज रचना किये।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद मंदार मल्ली सुमन ले लिये।
मारहर नाथ पादाब्ज में अर्पिये।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

गूझिया औ तिकोने भरे थाल में।
भूख व्याधि हरो नाथ पूजूँ तुम्हें।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्वलित दीप लेके करूँ आरती।
चित्त में प्रगटती ज्ञान की भारती।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध ले अग्नि में खेवते।
मोह शत्रु जले आपपद सेवते।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम नींबू नरंगी सु अंगूर हैं।
पूज तें आत्म पीयूष को पूर है।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि ले स्वर्ण थाली भरूँ।
नाथ पद पूजते सर्वसिद्धी वरूँ।।
दो तरू शाख पे दोय जिन मंदिरा।
पूजते जो उन्हें लेय शिव इंदिरा।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितद्वयसिद्धकूट-जिनालय जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

यमुना सरिता नीर कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देय, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्प्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

पृथ्वीकायिक वृक्ष, सर्वरत्नमय सोहने।
ताके श्री जिनसद्म, मनवचतन से पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

मंदर मेरु के ईशान में, पद्म वृक्ष रत्नों का।
उसकी उत्तर शाखा पर है, जिनमंदिर भवनों का।।
जल गंधादिक अर्घ्य सजाकर, नितप्रति पूज रचाऊँ।
परम अतीन्द्रिय ज्ञान सौख्यमय, अविचलपद को पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरि के नैऋत्य कोण में, शाल्मलीतरु जानो।
उसकी दक्षिण शाखा पर, जिनगेह अकृत्रिम मानो।।
जल गंधादिक अर्घ्य सजाकर, नितप्रति पूज रचाऊँ।
परम अतीन्द्रिय ज्ञान सौख्यमय, अविचलपद को पाऊँ।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

पुष्कर शाल्मलिवृक्ष के, अमितवृक्ष परिवार।
तिन सबके जिनगेह को, पूजूँ भवदधिपार।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो जिनगृह की जिनकृती, दो सौ सोलह जान।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, मिले निजातम ध्यान।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयमध्य विराजमानद्विशतषोडशजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

सोरठा

स्वयं सिद्ध जिनराज, अकृत्रिम जिनगेह में।
पूर्ण करो मम आश, गाऊँ अब जयमालिका।।1।।

तोटक छंद

जय पुष्कर वृक्ष महाफलदं, जय शाल्मलिवृक्ष महासुखदं।
जय वृक्ष तने जिन मंदिर को, जय सिद्धिवधू प्रियजिनवर को।।2।।

तरु में मरकतमणि नीलम के, कर्केतन स्वर्णमयी पत्ते।
बहुवर्ण रतनमय अंकुर हैं, रतनों के फलऔ पुष्प कहें।।3।।

तरु सिद्ध अनादि अनंत कहें, तहं चामर किंकणि आदि रहें।
अति तुंग सघन द्रुम शोभ रहें, शुभ वायु चले हिलते तरु हैं।।4।।

इन शाख विषे जिनमंदिर जी, महिमा वरणंत पुरंदर जी।
सुर इंद्र नरेन्द्र फणीन्द्र सदा, गुणगावत भक्ति भरे जु मुदा।।5।।

जिननाथ त्रिलोकपिता तुम हो, तुमही भववारिधि तारक हो।
बिन कारण बंधु तुम्हीं प्रभु हो, तिहुँलोक तने तुमही गुरु हो।।6।।

तुम शंकर विष्णु विधि तुमही, तुम बुद्ध हितंकर ब्रह्म तुम्हीं।
भुवनैक शिरोमणि देव तुम्हीं, शरणागत रक्षक देव तुम्हीं।।7।।

तुम ज्योति चिदंबर मुक्तिपती, तूम पूर्ण दिगम्बर विश्वपती।
सर्वारथसिद्धि विधायक हो, समता परमामृत दायक हो।।8।।

तुम भकत मनोरथ पूर्ण करें, क्षण में निजसंपति पूर्ण भरें।
यमराज महाभट चूर्ण करें, वर 'ज्ञानमती' सुख तूर्ण वरें।।9।।

घत्ता

तुम जिनवर भास्कर, कर्मभरम हर, शिवसंपतिकर शरण लहीं।
जो तुम गुण माला, पढ़े रसाला, सो पावहिं शिव सौख्य मही।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्करवृक्षशाल्मलिवृक्षस्थितसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-18

पूर्वपुष्करार्ध पर्वत जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

पूरब पुष्कर अर्धद्वीप में, छह कुल पर्वत सोहें।
चार कहे गजदंत अकृत्रिम सुरकिन्नर मन मोहें।।
सोलह गिरि वक्षार सुवर्णिम, चौंतिस रजताचल हैं।
इन पर्वत के साठ जिनालय, पूजत सुख अविचल हैं।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक दोहा –

पद्म सरोवर नीर शुचि, जिनपद धार करंत।
जन्मजरामृति नाश हो, आतमसुख विलसंत।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चवंदन सुरभि जिनपद में चर्चंत।
मिले आत्मसुख संपदा, निज गुण कीर्ति लसंत।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम तंदुल धवल, पुंज चढ़ाऊँ नित्य।
नवनिधि अक्षय संपदा, मिले आत्मसुख नित्य।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हरसिंगार प्रसून की, माल चढ़ाऊँ आज।
सर्वसौख्य आनंद हो, मिल स्वात्म साम्राज।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरण पोली इमरती, चरू चढ़ाऊँ भक्ति।
मिले आत्मपीयूष रस, मोक्ष प्राप्ति की भक्ति।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक से आरती करूँ, तिमिर परिहार।
जगे ज्ञान की भारती, भरे सुगुण भंडार।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेवते हो सुरभि, आतम गुण विलसंत।
कर्म जलें शक्ति बढ़े, मिले निजात्म अनंत।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सेव आम अंगूर ले, फल से पूजूँ आज।
मिले मोक्ष फल आश यह, सफल करो मम काज।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ ले, रजत पुष्प विलसंत।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति से, मिले सुगुण सुखकंद।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षारविजयार्धपर्वतस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांतीधारा मैं करूं, जिनवर पद अरविन्द।
त्रिभुवन में सुख शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति संपति बढ़े निज निधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

पुष्करार्ध में साठ, पर्वत पर जिनगेह हैं।
नमूँ नमाकर माथ, पुष्पांजलि कर पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

षट्कुलाचल अर्घ-शंभुछंद

पूरब पुष्कर में हिमवन गिरि, स्वर्णिम अतुल अभिरामा है।
ग्यारह कूटों में पूरब दिश, जिन सिद्धकूट धाना है।।
ता मध्य पदम द्रह बीच कमल, श्रीदेवी परिकर सह राजे।
शाश्वत जिनगृह जिनबिंब जजूँ, सब मोहकरम अरिदल भाजे।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिहिमवनपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजताभ महाहिमवन गिरि पे, हैं आठ कूट जन मन हारी।
पूरब के सिद्धायतन मध्य, जिनगेह अकृत्रिम सुखकारी।।
द्रह महापदम मधि कमल बीच, ह्रींदेवी परिकर सह राजें।
शाश्वत जिनगृह जिनबिंब जजूँ, सब मोहकरम अरिदल भाजे।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिमहाहिमवनपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन-बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निषधाचल तप्त कनक कांती, द्रह कहा तिगिंछ कमल बीचे।
धुतिदेवी रहती परिकर सह, नवकूटों से अद्भुत दीखें।।

सुर सिद्धकूट वंदे नत हों, मणि मुकुटों से जिनपद चूमें।
हम अर्घ्य चढ़ाकर नित पूजें, फिर भव वन में न कभी घूमें।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिनिषधपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नीलाचल छवि वैडूर्यमणी, द्रह केसरि मध्य कमल तामें।
कीर्तिदेवी रहती उसमें, इक सिद्धकूट नव कूटों में।।
मुनि वीतराग भी जा करके, जिनगृह को वंदन करते हैं।
जो पूर्ण उनको भक्ति सहित, वे भव वारिधि से तरते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिनीलपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्मी पर्वत चांदी सम है, द्रह पुंडरीक में कमल खिले।
बुद्धिदेवी परिवारसहित उसमें रहती मन कमल खिले।।
नित आठ कूट में सिद्धकूट, जिनभवन अनूपम तामें हैं।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ाकर के, निरुपम सुखसंपति तामें।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिरुक्मिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखरी कुलगिरि कंचन छविमय, ग्यारह कूटों युत शोभे हैं।
महपुंडरीक द्रह के भीतर, पंकजपर लक्ष्मी शोभे हैं।।
पूरब दिश में इक सिद्धकूट, उसमें जिनमंदिर रतनों का।
जिनबिंब जजें हम अर्घ्य लिये, जिनभक्ति है भवदधि नौका।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिशिखरिपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

माल्यवंत गजदंत विदिश ईशान में।
नीलमणी समकांति कूट नव तास में।।
मीनकेतु जिननाथ जिनालय मणिमयी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय लहूँ, गुण शिवमही।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपस्थमाल्यवंतगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरु महान विदिश आग्नेय है।
हस्तिदंत सौमनस रजत छवि देय हैं।।
मीनकेतु जिननाथ जिनालय मणिमयी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय लहूँ, गुण शिवमही।।8।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिसौमनसगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरि चौथे भूमि विदिश नैऋत्य हैं।
विद्युत्प्रभ गजदंत कनक छवि देय हैं।।
मीनकेतु जिननाथ जिनालय मणिमयी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय लहूँ, गुण शिवमही।।9।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिविद्युत्प्रभगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधमादनाचल वायव्य विदिश कहा।
कनक कांतिमय अकृत्रिम अनुपम रहा।।
मीनकेतु जिननाथ जिनालय मणिमयी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय लहूँ, गुण शिवमही।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिगंधमादनगजदंतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

मंदर मेरु सीतानदि के, उत्तर में वक्षारा।
भ्रदसाल वेदी के सन्निध, चित्रकूटा अति प्यारा।
तापर चार कूट नदि सन्निध, सिद्धकूअ मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितचित्रकूटवक्षारसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नलिनकूट वक्षार दूसरा, वन उपवन से सोहे।
सुर किन्नर गंधर्व खगेश्वर, जिनगुण गाते सोहें।।

मृत्युंजयि की प्रतिमा राजें, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिविदेहस्थितनलिनकूटवक्षारसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मकूट वक्षार अचल हैं, अनुपम निधि को धारे।
देव देवियाँ भक्ति भाव से, आ जिन सुयश उचारें।।
कर्मविजयि की प्रतिमा उसमें, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।13।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितपद्मकूटवक्षारसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकशैल वक्षार अचल में, अगणित भविजन आते।
सम्यक्रत्न हाथ में लेते, जिनवर के गुण गाते।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।14।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितएकशैलवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता नदि के उत्तर में, जो देवारण्य समीपे।
गिरि वक्षार त्रिकूट नाम का, कनक वर्णमय दीपे।।
तापर चारकूट नदि पासे, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।15।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितत्रिकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षाराचल नाम 'वैश्रवण' शोभे सुरभवनों में।
इन्द्र चक्रवर्ती धरणीपति, पूजें नित रतनों में।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।16।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितवैश्रवणवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजननग वक्षार मनोहर, शाश्वत सिद्ध कहा है।
सुर ललनायें क्रीड़ा करतीं, अद्भुत ऋद्धि जहाँ हैं।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।17।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितअजंनवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मांजन वक्षार आठवां, सुर किन्नर मिल आवें।
जिनमहिमा को समझ समझकर, समकित ज्योति जगावें।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।18।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहस्थितआत्मांजनवक्षारगिरिसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर विदेह नदी सीतोदा, दक्षिण दिश में जानो।
भद्रसाल ढिग वक्षाराचल, श्रद्धावान बखानों।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।19।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितश्रद्धावन्वक्षारगिरिसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजटावान अचल सुंदर है, वेदी उपवन तापे।
इंद्र नमन करते मणियों से, विलसत मुकुट झुकाके।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।20।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहस्थितविजटावानवक्षारगिरिसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशीविष वक्षार अकृत्रिम, द्रुम पंक्ती वन सोहें।
विद्याबल से श्रावकगण, पूजन कर मन मोहें।।

मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।21।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहआशीविषस्थितवक्षारगिरिसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल सुखावह सुख को देता, जो जिनगुण आलापें।
गगन गमनचारी ऋषियों के, पावन युगल वहाँ पे।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।22।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसुखावहस्थितवक्षारगिरिसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट पे, भूतारण्य समीपे।
ताके सन्निध चंद्रमालगिरि, रचना अद्भुत दीपे।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।23।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहचन्द्रमालस्थितवक्षारगिरिसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्यमाल वक्षार सूर्यसम, सुवरण आभा धारे।
सुर वनितायें नित आ आकर, जिनवर कीर्ति उचारें।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।24।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहसूर्यमालस्थितवक्षारगिरिसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नागमल वक्षार अनूपम, विद्याधरगण आवे।
जन्म जन्म दुःख नाशन कारण, जिनवर के गुण गावें।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।25।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहनागमालस्थितवक्षारगिरिसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवमाल वक्षार गिरी पे, देव देवियाँ आके।
वीणा ताल मृदंग बजारक, नृत्य करें हर्षा के।।
मृत्युंजयि की प्रतिमा सुंदर, सिद्धकूट मनहारी।
श्री कैवल्यरमा वरने को, नित पूजूँ सुखकारी।।26।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करद्वीपसंबंधिपश्चिमविदेहदेवमालस्थितवक्षारगिरिसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयार्ध जिनालय अर्घ-गीता छंद

मंदरसुमेरु पूर्व में सीता नदी के उत्तरे।
वन भद्रसाल समीप 'कच्छा' देश अति सुंदर खरे।।
ता मध्य रूपाचल अतुल नवकूट से मन को हरे।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।27।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छास्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुपम 'सुकच्छा' देश में, षट् खंड रचना जानिये।
ता मध्य विजयारध अतुल बहुभांति महिमा मानिये।।
विद्याधरी वीणा बजाकर, भक्ति भर पूजा करें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।28।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहसुकच्छास्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर महाकच्छा कहा, तामध्य रूपाचल सही।
वन वेदिका वापी सुरों के, गेह की अनुपम मही।।
मुनिवृंद करते वंदना, निज कर्म कलिमल को हरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।29।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिमहाकच्छादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कच्छकवती सुविदेह में, रचना अकृत्रिम जानिये।
तामध्य रूपाचल अतुल, नवकूट संयुत मानिये।।

आकाशगामी ऋषि मुनी, श्रावक सदा भक्ती करें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।30।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिकच्छकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर देश आवर्ता सरस, तामध्य विजयारध गिरी।
गाते जिनेश्वर का सुयश, नित यक्ष किन्नर किन्नरी।।
शाश्वत जिनालय वंदना, करते भविक भक्ती भरे।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।31।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिआवर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षेत्र लांगलिवर्तिका, भविजन सदा जन्में वहां।
भव बल्लियों को काटकर शिव प्राप्त कर सकते वहाँ।।
इस मध्य रजताचल सुखद बहुभव्य के कल्मष हरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।32।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिलांगलावर्तादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन धान्य पूरित संपदा, यह पुष्कला वर देश है।
जिस मध्य रूपाचल कहा, हरता भविक मन क्लेश है।।
देवांगनायें नित मधुर, संगीत जहाँ पर उच्चरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।33।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिपुष्पकलादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'पुष्कलावति' देश में, विजयार्ध बीचों बीच है।
नवकूट में इक जिनसदन, नाशें भविक भव कीच है।।
स्वात्मैक परमानंद अमृत के, रसिक गुण विस्तरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।34।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिपुष्कलादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वत्सा' विदेह अतुल्यता मधि, आर्यखंड निरापदा।
इस देश के बस बीच में है, रूप्यगिरि वर शर्मदा।।
त्रैलोक्य नायक के गुणों की, कीर्ति बुधजन विस्तरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।35।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर 'सुवत्सा' देश में शाश्वत रजतगिरि सोहना।
नवकूट रत्नों के बने, सुर वृंद से मन मोहता।।
सुर अप्सरा मर्दल सुवीणा, को बजा नर्तन करें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।36।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिसुवत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनहर 'महावत्सा' विषें, विजयार्ध पर्वत सोहता।
गंधर्व देवों के मधुर, संगीत से मन मोहता।।
मुनिवीतरागी के वहाँ, ध्यानाग्नि से भववन जरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।37।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिमहावत्सादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर 'वत्सकावति' देश में, रूपाद्रि अनुपम मानिये।
विद्याधरों की पंक्तियों से, भीड़ तहं पर जानिये।।
इंद्रादिगण आके वहां, मणिमौलि नत वंदन करें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।38।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिवत्सकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर देश 'रम्या' मध्य में, रजताद्रि रत्नों की खनी।
भव के विजेता नाथ की, महिमा जहाँ अतिशय घनी।।

सौ इंद्र मिलकर पूजने को, आ रहे भक्ती भरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।39।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुंदर 'सुरम्या' देश में, विजयार्ध पर्वत सोहना।
किन्नर गणों की बांसुरी ध्वनि से मुधर मन मोहना।।
वर ऋद्धिधारी मुनि तहाँ, बहुभक्ति से विचरण करें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।40।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिसुरम्यादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभदेश 'रमणीया' विषे, विजयार्ध गिरि रजताभ है।
विद्याधरों की श्रेणियाँ, जिनमंदिरों से सार्थ हैं।।
नग तीन कटनी से सहित, बहु भांति की रचना धरें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।41।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिरमणीयादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंगलावती' वर देश में, रजताद्रि बीचों बीच हैं।
जो जन नहीं श्रद्धा करें, रुलते सदा भवबीच हैं।।
खगपति सदा परिवारयुत जिनवर सुयश वर्णन करें।
श्रीसिद्धकूट जिनेन्द्रमंदिर, पूज शिव लक्ष्मी वरें।।42।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिमंगलावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोला छंद

मंदरमेरु अपर नदी के दक्षिण जानों।
भद्रसाल के पास 'पद्मादेश' बखानों।।

मध्य अचल विजयार्ध जिनगृह से सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।43।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' जान, मधि रजताद्रि बखाना।
अनुपम सुख कही खान, खेचरपति से माना।।
सिद्धकूटा ता माहिं जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।44।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिसुपद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महापद्मा' सुविदेह, रजताचल अभिरामा।
नवकूटों युत श्रेष्ठ सुर गावें जिन नामा।।
सिद्धकूट तामहिं जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।45।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिमहापद्मादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पद्मकावती', तामधि रजतगिरी है।
कनक रतन से पूर्ण अविचल सौख्यश्री है।।
सिद्धकूट तामाहिं जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।46।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधि देशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंखा' देश विदेह देव असंख्य वहाँ पे।
आते रहते नित्य प्रमुदित चित्त तहाँ पे।।
ताके मधि विजयार्ध, जिनगृह से सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।47।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिशंखादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिना' देश विदेह, भव्य नयन मन मोहे।
ताके मधि विजयार्ध नव कूटों युत सोहे।।
सिद्धकूट ता माहिं जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।48।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिनलिनादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुमुदा' देश विदेह, मध्य रजत गिरि सोहे।
भविमन कुमुद विकास, चंद्रकिरण सम सोहे।।
सिद्धकूटता मांहि जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।49।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिकुमुदादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरिता देश सुमध्य, अनुपम रजतगिरी है।
जिनवच सरिता तत्र, भविमन पंक हरी है।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।50।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिसरितादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा नदि जान ताके उत्तर भागे।
वप्रा देश महान, रूपाचल मधि भागे।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।51।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' रम्य, तामधि रजतगिरी है।
सुर ललनायें नित्य, आवें भक्ति भरी है।।

सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।52।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिसुवप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावप्रा' देश तामें रजत नशेगा।
जिनगुण गाते नित्य, ब्रह्म विष्णु महेशा।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।53।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिमहावप्रादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'वप्रकावती' रजताचल मधिधारे।
मुनिगण जिनवर दर्श, करते सुयश उचारें।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।54।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिवप्राकावतीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधा' देश विदेह, रूपाचल से सोहे।
स्वातमरस पीयूष, पीके मुनि शिव जोहें।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।55।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' रम्य, जिनवच सुरभि वहाँ है।
जन मन होत सुंगध, नग विजयार्ध वहाँ हैं।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।56।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिसुगंधादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'गंधिला' जान, जन मन कमल खिलावे।
मध्य रजत नग सिद्ध, जिनवच सुधा पिलावे।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।57।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिगंधिलादेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधमालिनी' देश मधि रजताद्रि तहाँ है।
श्रद्धावंत महंत का सम्यक्त्व वहाँ है।।
सिद्धकूट ता माहिं, जिनमंदिर सुखकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, भव भव दुःख परिहारी।।58।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिगंधमालिनीदेशस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदअवलिप्त कपोल छंद

पूरब पुष्कर द्वीप अर्ध में, 'भरतक्षेत्र' दक्षिण दिश जान।
बीचों बीच कहा विजयारध तिस ऊपर नव कूट महान।।
पूर्वदिशा से सिद्धकूट पर, जिनमंदिर अविचल अभिराम।
गर्भवास दुखनाशन कारण, अर्घ्य चढ़ाय करूँ परणाम।।59।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थितस्थितसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदरमेरु के उत्तर दिश, शुभ ऐरावत क्षेत्र महान।
मध्य रजतगिरि चांदी सम, है, त्रयकटनी युत अतुलनिधान।।
तिस पर पूर्वदिशा में जिनगृह, अकृत्रिम अनुपम सुखकार।
पुनर्जनम दुख नाशन हेतु अर्घ्य चढ़ाय जजूँ रुचि धार।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थितस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

वर पुष्करार्ध पूरब में है दह कुलपर्वत चउ गजदंजता।
सोलह वक्षार रूप्यगिरि हैं चौंतिस ये नग अतिशय कांता।
इन पर जिनमंदिर अकृत्रिम, चारणऋषि वंदन करते हैं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें वे यम का खंडन करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिकुलाचलगजदंतवक्षाररूप्याचलस्थितषष्टि सिद्धकूटजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन सब मंदिर में जिन प्रतिमा चौंसठ सौ अस्सी राजे हैं।
पद्मासन नासा दृष्टि धरें छवि वीतराग अति भासे हैं।।
जो इनका ध्यान धरें नित प्रति वे चिन्मय मूर्ति प्रगट करते।
अठ कर्मपिंड शतखंड करें मृत्युंजय मूर्ति प्रगट करते।।2।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिजिनालयमध्यविराजमानषट्-सहस्र चतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पुष्करार्ध में मंदरगिरि चौथे मेरु पर जिनमंदिर।
पुष्करतरु शाल्मलितरु सोहें कुलअद्रि आदि पर जिनमंदिर।।
कुल अट्ठत्तर शाश्वत जिनगृह, मैं नित परोक्ष वंदना करूँ।
सब रोग शोक दारिद्र नशा, मृत्यु की भी खंडना करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनालयेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन जिनगृह में जिनप्रतिमायें चौरासी सौ चौबिस सोहें।
सुरपति जाकर वंदन करते गणधर का भी ये मन मोहें।।
इनकी भक्ति भवदधि तरणी, निज आत्म सुधारस निर्झरणी।
जो इसमें अवगाहन करते वे पा लेते मुक्ती सरणी[1]।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्द्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनलायमध्यविराजमान अष्टसहस्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

त्रिभंगी छंद

जय जय जिनमंदिर जजत पुरंदर
अतिशय सुंदर पुण्य भरें।
जय पाप निकंदन सबसुख कंदन
मुनिगण वंदन नित्य करें।।
पाऊँ मैं साता, मेट असाता
शिवसुख दात, तुमहिं नमूँ।
जय जय निज प्रतिमा गुणमणि गरिमा
अतिशय महिमा, नित प्रणमूँ।।1।।

स्रग्विणी छंद

मैंन नमूँ मैं नमूँ हे जिनंदा तुम्हें।
नाथ! त्रैलोक्य के पूर्ण चंदा तुम्हें।।
मोहतम नाशने हेतु भास्वान हो।
साधु चिताब्ज विकसावने भानु हो।।2।।

भव्य जन के पिता पालते प्यार से।
भक्त जन मातु हो पोषते लाड़ से।।
मुक्ति के मार्ग के विघ्न को टारते।
भक्त की सर्व आपत्ति संहारते।।3।।

जो तुम्हें ध्यावते सर्व के ध्येय हों।
कीर्ति जो गावते वे स्वयं गेयह हों।।
जो तुम्हें पूजते सर्वजन पूज्य हों।
जो तुम्हें वंदते वे जगत् वंद्य हों।।4।।

धन्य मेरा जनम धन्य है ये घड़ी।
धन्य हैं नेत्र मेरे सफल है घड़ी।।
धन्य है शीश ये आज वंदन किया।
धन्य है हाथ से आज अर्चन किया।।5।।

एक ही प्रर्थना नाथ! सुन लीजिये।
जन्म वाराशि से पार कर दीजिये।।
पास अपने प्रभो! अब बुला लीजिये।
ज्ञानमति वंद कलिका खिला दीजिये।।6।।

दोहा

जिनप्रतिमा जिनसारखी, नमूँ नमूँ नत भाल।
करुणासागर! दयाकर, करो भक्त प्रतिपाल।।7।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिषष्टिपर्वतस्थितसिद्धककूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-19

विद्युन्माली मेरु पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

श्री मेरु विद्युन्मालि पंचम, द्वीप पुष्कर अपर में।
तीर्थंकरों का न्हवन होता है, सदा तिस उपरि में।।
सोलह जिनालय हैं वहाँ, सुरवंद्य जिन प्रतिमा तहाँ।
आह्वान कर पूजूँ सदा, मैं भक्ति श्रद्धा से यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक शंभुछंद –

क्षीरोदधि का शुचि जल लेकर तुम चरण चढ़ाने आया हूँ।
भव-भव का कलिमल धोने को श्रद्धा से अति हरषाया हूँ।।
विद्युन्माली मेरु पंचम उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा पूजत ही मिले सुखालय है।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हरि चंदन कुंकुम गंध लिये जिन चरण चढ़ाने आया हूँ।
मोहारिताप संतप्त हृदय प्रभु शीतल करने आया हूँ।।
विद्युन्माली मेरु पंचम उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा पूजत ही मिले सुखालय है।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरांबुधि फेन सदृश उज्जवल अक्षत धोकर के लाया हूँ।
क्षय विरहित अक्षय सुख हेतू प्रभु पुंज चढ़ाने आया हूँ।।
विद्युन्माली मेरु पंचम उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा पूजत ही मिले सुखालय है।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चंपक अरविंद कुमुद सुरभित पुष्पों को लाया हूँ।
मदनारिजयी तब चरणों में मैं अर्पण करने आया हूँ।।
विद्युन्माली मेरु पंचम उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा पूजत ही मिले सुखालय है।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पूरणपोली खाजा गूझा मोदक आदिक बहु लाया हूँ।
निज आतम अनुभव अमृत हित नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
विद्युन्माली मेरु पंचम उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा पूजत ही मिले सुखालय है।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीपक में ज्योति जले तब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही सज्ज्ञान ज्योति निज में भासे।।
विद्युन्माली मेरु पंचम उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा पूजत ही मिले सुखालय है।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध विमिश्रित धूर सुरिभ धूपायन में खेते क्षण ही।
कटुकर्म दहन हो जाते हैं मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।

विद्युन्माली मेरु पंचम उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा पूजत ही मिले सुखालय है।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला अंगूरों के गुच्छे अति सरस मधुर लाया।
परमानंदामृत चखने हित फल से पूजन कर सुख पाया।।
विद्युन्माली मेरु पंचम उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा पूजत ही मिले सुखालय है।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु वर दीप धूप फल लाया हूँ।
निज गुण अनंत की प्राप्ति हेतु तुम अर्घ्य चढ़ाने आया हूँ।।
विद्युन्माली मेरु पंचम उसमें सोलह जिन आलय हैं।
उन सबमें भवविजयी प्रतिमा पूजत ही मिले सुखालय है।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपस्थविद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

परम शांति के हेतु शांतीधारा मैं करूँ।
सकल विश्व में शांति, सकल संघ में हो सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंपक हर सिंगार, पुष्प सुगंधित अर्पिते।
होवे सुख अमलान, दुःख दारिद्र पलायते।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

पंचममेरू जिन भवन, शाश्वत नित शोभंत।
पुष्पांजलि कर पूजते, मिले स्वात्म आनंद।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

श्री मेरु पंचम की धरा पर भद्रसाल सुवन कहा।
ता पूर्व दिश जिनधाम शाश्वत मूर्ति से शोभित अहा।।
जल गंध आदिक अर्घ्य लेकर मैं करूँ नित अर्चना।
स्वातंत्रय सुख साम्राज्य हेतू मैं करूँ नित वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु विद्युन्मालि में वन भद्रशाल जु सोहता।
दक्षिण दिशा में जिनभवन, निज विभव से मन मोहता।।
जल गंध आदिक अर्घ्य लेकर मैं करूँ नित अर्चना।
स्वातंत्रय सुख साम्राज्य हेतू मैं करूँ नित वंदना।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु प्रथमहि 'वनविषे' पश्चिम दिशा में जिनभवन।
उसमें जिनेश्वर बिंब शाश्वत, राजते भव भय मथन।।
जल गंध आदिक अर्घ्य लेकर मैं करूँ नित अर्चना।
स्वातंत्रय सुख साम्राज्य हेतू मैं करूँ नित वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मेरु के भूवन विषैं उत्तरदिशी जिन सद्म हैं।
उसमें महामहनीय जिनवर, बिंब के पदपद्म हैं।।
जल गंध आदिक अर्घ्य लेकर मैं करूँ नित अर्चना।
स्वातंत्रय सुख साम्राज्य हेतू मैं करूँ नित वंदना।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिभद्रसालवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

वर द्वीप पुष्कर अर्ध मे हैं, पाँचवाँ सुरगिरि कहा।
नंदन विपिन में पूर्वदिक, जिनगृह अनूपम छवि लहा।।
चंचल मनोमर्कटविजेता[1] साधुगण वंदन करें।
हम पूजते नित अर्घ्य ले, भवसंतती खंडन करें।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरशैल पंचम में सदा, नंदन सुवन विख्यात है।
दक्षिण दिशा में जिनभवन, पूजें भविक हरषात हैं।।
चंचल मनोमर्कटविजेता साधुगण वंदन करें।
हम पूजते नित अर्घ्य ले, भवसंतती खंडन करें।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम सुराचल[2] में विपिन[3], नंदन अतुल महिमा धरे।
पश्चिम दिशा में जैनगृह, अतिशयभरी प्रतिमा धरे।।
चंचल मनोमर्कटविजेता साधुगण वंदन करें।
हम पूजते नित अर्घ्य ले, भवसंतती खंडन करें।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरशैल विद्युन्माल में, नंदनवनी तरु पंक्ति से।
जन मन हरे उत्तरदिशी के, मणिमयी जिनसद्म[4] से।।
चंचल मनोमर्कटविजेता साधुगण वंदन करें।
हम पूजते नित अर्घ्य ले, भवसंतती खंडन करें।।4।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिनंदनवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. मनरूपी बंदर को वश करने वाले। 2. मेरू। 3. वन। 4. जिनमंदिर

दोहा

कनकाचल[1] पंचम विषे, वन सौमनस रसाल।
पूरबदिश में जिनभवन, अर्च हरूँ जंलाल।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरि वन सौमनस में, दक्षिण दिश जिनधाम।
तिनकी जिनप्रतिमा जजूँ, पूर्ण होय सब काम।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिन-बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णाचल[2] वन सौमनस, पश्चिम दिश जिनगेह।
इंद्रवंद्य जिनबिंब को, पूजूँ धर मन नेह।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युन्माली मेरु में, वन सौमनस अनूप।
उत्तर दिश जिनवेश्म को, जजत मिले निजरूप।।4।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिसौमनसवनस्थितउत्तरदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीदाम छंद

सुराचल पंचम में अभिराम, वनी पांडुक अतिरम्य ललाम।
जिनालय पूरबदिश में जान, जजूँ कर जोड़ करो शिवथान।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपूर्वदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुराद्री[3] विद्युन्माली नाम, सरस वन पांडुक मुनि विश्राम।
जिनालय दक्षिणदिश में सार, जजूँ कर जोड़ करो भव पार।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितदक्षिणदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. मेरू। 2. मेरू। 3. मेरू।

कनकपर्वत[1] पंच शिवकार, सुवन पांडुक में सुर परिवार।
जिनालय पश्चिमदिश रत्नाभ, जजूँ जिननाथ करो शिवलाभ।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिपांडुकवनस्थितपश्चिमदिक्जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

विद्युन्माली मेरु में सोलह जिनवर धाम।
पूरण अर्घ्यं संजोय के, जजूँ लहूँ शिवधाम।।1।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्रह सौ अठबीस हैं, जिनवर बिंब महान।
पूरण अर्घ चढ़ाय के, नमूँ नमूँ गुणखान।।2।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुसंबंधिषोडशजिनालयमध्यविराजमानएक सहस्रसप्तअष्टा विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांडुक वन के विदिक् में, पांडुशिलादि प्रसिद्ध।
नमूँ नमूँ नित भाव से, लहूँ आत्मसुख सिद्ध।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालिमेरुविदिक्पांडुकादिशिलाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय विद्युन्माली मेरु, जय जय सुवरनमय जिनगेहा।
जय जय मृत्युंजयि जिनप्रतिमा, जय जय सुर पूजें धर नेहा।।
जय जय कृषि गगन गमनचारी, श्रद्धा से वंदन करते हैं।
जय जय मुनि समरस आस्वादी स्वात्मा का चिंतन करते हैं।।1।।

मैं शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध एक, चिर्त्पिड अखंड अरूपी हूँ।
स्वाभाविक दर्शन ज्ञान वीर्य, सुखरूप अचिन्त्य स्वरूपी हूँ।।
मैं हूँ अनंत गुण रत्नराशि मैं परम ज्योतिमय परमात्मा।
मैं सकल विमल औ अकल अमल हूँ परमानंदमयी आत्मा।।2।।

1. मेरू।

यद्यपि व्यवहारनयापेक्षा मैं दीन दुखी संसारी हूँ।
इन कर्मों का कर्ता भोक्ता नाना प्रकार तनुधारी हूँ।।
भ पंच परावर्तन करकर चहुँगति में घूमा करता हूँ।
बस जन्म मरण के चक्कर में निशदिन ही झूमा करता हूँ।।3।।

फिर भी निश्चयनय से मैं ही नित शुद्ध सिद्ध परमात्मा हूँ।
रस गंध वर्ण स्पर्श रहित चिन्मूरति चैतन्यात्मा हूँ।।
ये रोग रु द्वेष विभाव भाव सब कर्मोदय से आते हैं।
जब कर्म बंध संबंध नहीं तब कैसे ये रह पाते हैं।।4।।

निश्चय व्यवहार उभयनय से मैं तत्त्वों को ज्ञाता होऊँ।
फिर नय का आश्रय छोड़ सभी इक निर्विकल्प में रत होऊँ।।
मैं ध्याता हूँ तुम ध्येय ध्यान फल आदिक भेद समाप्त करूँ।
बस एकांकी एकत्व लिये निज में ही निज को प्राप्त करूँ।।5।।

प्रभु ऐसी स्थिति आने तक तुम चरण कमल का ध्यान करूँ।
पूर्णैक ज्ञानमति पाने तक पूजूँ बंदूँ गुणगान करूँ।।
हे नाथ! तुम्हारी भक्ती का मुझको फल केवल यही मिले।
बस पास तुम्हारे आ जाऊँ ऐसा मेरा सौभाग्य खिले।।6।।

दोहा

पश्चिम पुष्कर द्वीप में विद्युन्माली मेरु।
पूजत ही निज सुख मिले मिटे जगत का फेर।।7।।

ॐ ह्रीं विद्युन्मालीमेरुसंबंधिषोडशजिनालयजिनबिम्बेभ्योजयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-20

पश्चिमपुष्करार्ध पुष्कर वृक्ष शाल्मलि वृक्ष जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद (चाल-इह विध राज्य करें....)

पश्चिम पुष्कर अर्ध द्वीप में, मध्य कनक गिरि सोहे।
तोके दक्षिण उत्तर दिश में, भोगधरा[1] मन मोहें।।
उत्तर कुरु ईशान कोण में, पुष्करवृक्ष सुहावे।
दक्षिण[2] देवकुरु अग्नि दिश, शाल्मलि तरु मन भावे।।1।।

दोहा

दोनों तरु की शाख पर, भूकायिक[3] जिनगेह।
जिनमूर्ती की थापना, करूँ भक्ति भर नेह।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोः ईशाननैऋत्यकोणसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थित जिनालयस्थजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोः ईशाननैऋत्यकोणसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थित जिनालयस्थजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरोः ईशाननैऋत्यकोणसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थित जिनालयस्थजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टकं (चाल-मेरी भावना.....) –

पद्माकर को जल अतिशीतल, पद्म पराग सुवास मिला।
रागभाव मल धोवन कारण, धार करूँ मन कंज[4] खिला।।
पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. भोगभूमि। 2. पूर्व दक्षिण के मध्य की दिशा। 3. पृथ्वीकायिक। 4. कमल।

केशर घिस कूर्पर मिलाया, भ्रमर पंक्तियाँ आन पड़ें।
जिनपद पूजन से नश जाते, कर्म शत्रु भी बड़े बड़े।।
पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन बिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र चंद्रिका सम सित तंदुल, पुंज चढ़ाऊँ भक्ति भरे।
अमृत कण सम जिन समिकित गुण, पाऊँ अतिशय शुद्ध खरे।।
पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन बिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्पवृक्ष के सुमन सुगंधित, पारिजात वकुलादि खिले।
कामवाणविजयी जिनवल्लभ, चरण जजत नवलब्धिं मिले।।
पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन बिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसगुल्ला रसपूर्ण अंदरसा, कलाकंद पयसार[2] लिये।
अमृतपिंड सदृश नेवज से, जिनपद पंकज पूज किये।।
पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन बिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेमपात्र में घृत भर बत्ती, ज्योति जले तमनाश करे।
दीपक से करते जिन पूजन, हृदय पटल की भ्रांति हरे।।

1. क्षायिक दर्शन आदि नव क्षायिक भाव। 2. मलाई।

पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन बिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि पात्र में धूप जलाकर, अष्ट कर्म को दग्ध करें।
निज आतम के भावकर्म मल, द्रव्य कर्म भी भस्म करें।।
पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन बिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल अंगूर, अंननासादिक, सरस मधुर ले थाल भरें।
नव क्षायिकलब्धी फल इच्छुक, पूजूँ तुम पादाब्ज[1] खरे।।
पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन बिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत माला चरू, दीप धूप फल अर्घ्य लिया।
त्रिभुवन पूजित पद के हेतु, तुम पदवारिज[2] अर्घ्य किया।।
पृथ्वीकायिक तरु शाखा पे, जिनमंदिर जग पूज्य कहें।
जो जन पूजें भक्ति भाव से, वे पद त्रिभुवन पूज्य लहें।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

यमुना सरिता नीर कंचन झारी में भरा।
जिनपद धारा देय, शांति करो सब लोक में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

1. चरण कमल। 2 चरणकमल।

वकुल कमल अरविंद, सुरभित फूलों को चुने।
जिनपद पंकज अर्घ्य, यश सौरभ चहुँदिश भ्रमें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

मुक्तिवधू भरतार, श्रीजिनवर के बिंब हैं।
पूजूँ शिव करतार, पुष्पांजली चढ़ाय के।।1।।

इति धातकीशाल्मलिमेरुसंबंधिद्वयवृक्षस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

रोला छंद

पश्चिम पुष्कर द्वीप, सुरगिरि के ईशाने।
पदम वृक्ष की शाख, उत्तर दिश परधाने।।
तापे श्रीजिनगेह, नाना रत्नमयी है।
मृत्युंजयि जिनबिंब, पूजूँ सौख्य मही है।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकाचल नैऋत्य शाल्मलि द्रुम मन भावे।
दक्षिण शाखा उपरि, जिनवर भवन सुहावे।।
उनके श्री जिनबिंब अकृत्रिम अविकारी।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, पाऊँ शिवतिय प्यारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

इन तरु के परिवार, अगणित शास्त्र बखाने।
उन सब में सुरवृंद, वैभव संयुत मानें।।

प्रतिवेदन[1] गृह माहिं, जिनगृह शाश्वत जानों
पूरण अर्घ्य बनाय, पूजत ही शिव थानो।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपरिवारपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयस्थजिन बिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

वीतराग विज्ञान घन, सर्वसार में सार।
वंदूँ श्री जिनदेव को, जिनप्रतिमा अविकार।।1।।

चाल-हे दीन बंधु.....

जय रत्नमयी वृक्ष ये अनादि अनंता।
जय पंचरत्न वर्ण सिद्धकूट धरता।।
जय जय जिनेन्द्र देव के, जो भवन कहे हैं।
जय जिनेन्द्र मूर्तियों, जो पाप दहे हैं।।1।।

जिनमंदिरों में घंटिका औ किंकिणी बजे।
वीणा मृदंग बांसुरी, संगीत हैं सजे।।
मंगल कलश औ धूप घट अनेक धरे हैं।
जो देव देवियाँ के सदा चित्त हरे हैं।।2।।

रत्नों की स्वर्ण मोतियाँ की मालिकायें हैं।
कौशेय[2] वस्त्र सदृश रत्नकी ध्वजायें हैं।।
उनमें बने हैं सिंह, हस्ति हंस बैल जो।
मयूर, चक्र, गरुड़, चंद्र सूर्य कमल जो।।3।।

इन दश प्रकार चिन्ह से चिन्हित हैं ध्वजायें।
जो भक्त गणों को सदा ही पास बुलायें।।

1. प्रत्येक देवों के। 2. रेशमी।

ये रत्नमयी होय के भी वायु से हिलें।
अद्भुत असंख्य रत्न हैं इस रूप में मिलें।।4।।

प्रत्येक जैनगेह में रचना अनंत है।
प्रत्येक में ही इक सौ आठ जैनबिंब है।।
प्रत्येक के तीरण दुवार[1] रत्न के बने।
जिनदेव मानतंभ[2] वहाँ मान को हनें।।5।।

ये जैनभवन हैं सदा सन्मार्ग के दाता।
निज आश्रितों के सत्य में हैं मुक्ति प्रदाता।।
इन नाम के जपे से नशे भूत की बाधा।
व्यंतर पिशाच प्रेत क्रूर, ग्रहों की बाधा।।6।।

इनके करें जो दर्श वे भवसिंधु तरे हैं।
जो भक्ति से पूजन करें वे सौख्य भरे हैं।।
इस लोक में धन धान्य पुत्र पौत्र को पाते।
चक्रेश की सी संपदा पा मौज उड़ाते।।7।।

जिनधर्म के अतिगाढ़ प्रेम धारते सदा।
पर लोक में इन्द्रादि विभव पावते मुदा।।
पश्चात यहाँ तीर्थ की पदवी को धरा के।
तीर्थंकरों का धर्म चक्र जग में चलाके।।8।।

आर्हन्त्य विभव पाय केभगवंत बनेंगे।
वे मुक्ति वल्लभा के भी तो कंत बनेंगे।।
इस विधि से नाथ आपकी कीर्ति को मैं सुनी।
अतएव शरण आपकी ली सुन के तुम धनी।।9।।

बस एक आश आज मेरी पूरिये प्रभो।
माहादि कर्म वैरियों को चूरिये प्रभो।।

1. द्वार। 2. मानस्तंभ।

बस मैं स्वयं निज आत्मा को शुद्ध करूँगा।
सम्यक्त्व शुद्ध 'ज्ञानमती' सिद्धि वरूँगा।।10।।

दोहा

प्रभु तूम महिमा आगम हैं, तुम गुणरत्न अनंत।
इस गुण लव कभी पाय मैं, तरूँ भवाब्धि अनंत।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीविद्युन्मालीमेरुसंबंधिपुष्करशाल्मलिवृक्षस्थितजिनालयजिन-बिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-21

पश्चिमपुष्करार्ध पर्वत जिनालय पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

पश्चिम सुपुष्करद्वीप में छह कुलगिरी पर जिनगृहा।
गजदंत चउ वक्षार सोलह के जिनालय अघदहा।।
चौंतीस रजताचल जिनालय सर्व की पूजा करूँ।
आह्वान कर मैं थापहूँ मन में अतुल श्रद्धा धरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुःगजदंतषोडशवक्षारचतुस्त्रिंशत् रूप्यगिरिस्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुःगजदंतषोडशवक्षारचतुस्त्रिंशत् रूप्यगिरिस्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलचतुःगजदंतषोडशवक्षारचतुस्त्रिंशत् रूप्यगिरिस्थितषष्टिजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टकं शेर –

गंगा नदी सुनीर सुवर्ण भृंग में भरूँ।
प्रभुपाद में त्रय धार दे भव रोग को हरूँ।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव वार्धि से तिरूँ।
अब दीजिये वो शक्ती भव वन में ना फिरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरी चंदन सुगंध चर्ण चर्चते।
भवताप दाह दूर हो प्रभु आप अर्चते।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव वार्धि से तिरूँ।
अब दीजिये वो शक्ती भव वन में ना फिरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती समान श्वेत शालि पुंज चढ़ाऊँ।
अक्षय अखंड को प्रभु अर्चते पाऊँ।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव वार्धि से तिरूँ।
अब दीजिये वो शक्ती भव वन में ना फिरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब पुष्प वर्ण वर्ण के लिये।
प्रभु चर्ण में चढ़ाय सर्व संपदा किये।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव वार्धि से तिरूँ।
अब दीजिये वो शक्ती भव वन में ना फिरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस व बालूसाही हलुआ चढ़ायके।
उदराग्नि को प्रशमित करूँ प्रभु को रिझायके।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव वार्धि से तिरूँ।
अब दीजिये वो शक्ती भव वन में ना फिरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे मैं आरती करूँ।
अज्ञान अंधकार नाश भारती भरूँ।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव वार्धि से तिरूँ।
अब दीजिये वो शक्ती भव वन में ना फिरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप खेय धूपघट में धूम्र उड़ाऊँ।
जो दुःख दे रहे हैं ऐसे कर्म जलाऊँ।।

हे नाथ! आप भक्ति से भव वार्धि से तिरूँ।
अब दीजिये वो शक्ती भव वन में ना फिरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिसता बदाम काजू अखरोट चढ़ाऊँ।
बस एक मोक्ष फल की ही आश लगाऊँ।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव वार्धि से तिरूँ।
अब दीजिये वो शक्ती भव वन में ना फिरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अर्घ लेय रजत पुष्प मिलाऊँ।
निज आत्मनिधि हेतु आप अर्घ चढ़ाऊँ।।
हे नाथ! आप भक्ति से भव वार्धि से तिरूँ।
अब दीजिये वो शक्ती भव वन में ना फिरूँ।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिषट्कुलाचलादिषष्टिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शांतीधारा मैं करूं, जिनवर पद अरविन्द।
त्रिभुवन में सुख शांति हो, मिले निजात्म अनिंद।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार ले, पुष्पांजली करंत।
सुख संतति संपति बढ़े निज निधि मिले अनंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

पश्चिम पुष्कर द्वीप, साठ जिनालय सोहते।
नमूँ नमूँ धर प्रीत, पुष्पांजलि कर भक्ति से।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

चौबोल छंद

विद्युन्माली दक्षिण दिश में, 'हिमवन' कलधौत समान।
ग्यारह कूटों में अनुपम इक सिद्धकूट जिनमंदिर जान।।
बीचों बीच पद्म सरवर में, कमल बीच श्रीदेवी थान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिहिमवत्पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम सुरगिरि दक्षिण दिश में, चांदी सदृश महाहिमवान।
बीच सरोरव महापद्म के, कमल मध्य ह्रीं देवी मान।।
आठ कूट में पूर्वदिशा पर, सिद्धकूट अविचल गुणखान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहाहिमवत्पर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकाचंल पंचम दक्षिणदिश, निषध तप्त सुवरण छवि मान।
बीच तिगिंछ सरोवर मध्ये, कमल बीच घृति देवी जान।।
नवकूटों में पूर्वदिशा का, सिद्धकूट शिव मारग मान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनिषधपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युन्माली मेरू उत्तर, नीलाचल वैडूर्य समान।
मध्य केशरी द्रह में पंकज, बीच कीर्ति देवी द्युतिमान।।
नवकूटों में सिद्धकूट पर, मणि रत्नों से खचित वखान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनीलपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम सुरनग के उत्तर में, रजतवर्ण रुक्मीगिरि जान।
मध्य सरोवर पुंडरीक में, कमल बीच बुद्धिसुरि मान।।
आठ कूट में पूर्व दिशागत, सिद्धकूट शिवपंथ महान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।5।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरुक्मीपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णाचल पंचम के उत्तर, शिखरी पर्वत स्वर्ण समान।
मध्य महापुंडरीक सरोवर, जलज, बीच लक्ष्मी सुरिमान।।
ग्यारह कूटों में पूरब गत, सिद्धकूट शाश्वत सुखखान।
जिनमंदिर जिनप्रतिमा पूजूँ, चिच्चैतन्य सुधारस दान।।6।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिशिखरीपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गजदंत जिनालय अर्घ-चौबोल छंद

मेरू के ईशान कोण में, माल्यवंत गजदंत रहे।
छवि वैडूर्य मणीसम अनुपम, नवकूटों युत संत कहें।।
सुरगिरि सन्निध सिद्धकूट पर, जिनगृहशाश्वत सिद्ध कहीं।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरण यहीं।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमाल्यवानगजदंतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरगिरि के आग्नेय विदिश में, सौमनस गजदंत कहा।
रतनमयी यह पर्वत सुंदर, सात कूट से शोभ रहा।।
मेरू निकट श्री सिद्धकूट पर, जिनमंदिर छवि रतनमयी।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरण यहीं।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसौमनसगजदंतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णाचल नैऋत्य विदिश में, विद्युत्प्रम गजदंत दिपे।
नवकूटों युत तप्त कनकछवि, दिनकर लज्जित संत छिपे।।

सुरगिरि सन्निधि सिद्धकूट पर, जिनमंदिर शिव गमन मही।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरण यहीं।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिविद्युत्प्रमगजदंतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम सुरगिरि के वायव्ये, गंधमादनाचल सोहे।
स्वर्णवर्णमय सात कूटयुत, सुनर किन्नर मन मोहे।।
सुरगिरि सन्निध सिद्धकूट पर, जिनगृह अनुपम अचल मही।
वहाँ शक्ति नहिं गमन करन की, अतः जजूँ तुम चरण यहीं।।10।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधमादनगजदंतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वक्षार के अर्घ्य-नरेन्द्र छंद

पश्चिम पुष्करअर्ध द्वीप में, सुरगिरि पूर्व दिशा में।
सीता नदि के उत्तर तट पे, भद्रसाल ढिग तामे।।
'चित्रकूट' वक्षार अचल पर, जिनमंदिर सुखकारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।11।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिचित्रकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नलिन कूट वक्षार दूसरा, पुष्करार्ध में जानो।
उसके चार कूट में अनुपम, सिद्धकूट इक मानो।।
जिन चैत्यालय शाश्व अविचल, पूजूँ कर्म विडारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।12।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनलिनकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मकूटा वक्षार अतुल है, पाप पंक मल धोवें।
जो जन इसके सिद्धकूट को पूजें सब दुःख खोवें।।

जिनगृह की छवि अतिशय प्यारी, भविजन मन सुखकारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपद्मकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकशैल' वक्षार अनूपम, सुर किन्नर मन भावे।
सुवरण छवि से सूर्य तेजहर, जिनमंदिर मन भावे।।
विद्याधर विद्याधरियां भी, गुण गावें चित हारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिएकशैलकूटवक्षारसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतानदि के दक्षिण तट पर, देवारण्य समीपे।
नग 'त्रिकूट' वक्षार सुवर्णिम, चार कूट से दीपे।
सिद्धकूट जिनमंदिर अद्भुत, मुनिमन सम अविकारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधित्रिकूटकूटवक्षारसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरि 'वैश्रवण' कहा वक्षारा, मधुर मुकुट मणी हैं।
सिद्धकूट का श्रीजिनमंदिर, चिंतारत्नमणी हैं।।
वंदन करने वाले भवि के, भव मय संकटहारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।16।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवैश्रवणकूटवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन नग वक्षार अकृत्रिम, अमर गणों से सोहे।
इस ऊपर परमात्मनिरंजन, का जिनमंदिर सोहे।।
वन वेदी वापी तोरण से, सुरगृह से चित हारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।17।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिआत्मांजनवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मांजन वक्षार आठवां, अतुल निधि को धारे।
इस पे सिद्धकूट को जो जन, पूजे मोक्ष सिधारें।।
मृत्युंजयि जिनवर का मंदिर, अखिल अमल गुणधारी।
सुरनर वंदित जिनप्रतिमा को, नित प्रति धोक हमारी।।18।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिआत्मांजनवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरु के पश्चिम दिश में हैं, अपर विदेह कहाता।
सीतोदा सरिता बहने से, उभय भाग बँट जाता।।
सरिता दक्षिण भद्रसाल के, ढिग वक्षार गिरी है।
श्रद्धावान उपरि जिनमंदिर, पूजूँ पाप हरी है।।19।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिश्रद्धावत्वक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजआवान्' अचल वक्षारा, चार कूट युत सोहें।
कनककांति से सिद्धकूट से, अतुल अपूरव सोहें।।
जिनमंदिर में मृत्युंजयि की, प्रतिमा सौख्यकारी है।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं नित पूजूँ, भव भय ताप हरी है।।20।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिविजटावानवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आशीविष' वक्षार स्वर्णसम, विविध गृहों को धारे।
सिद्धकूट पे श्रीजिनमंदिर, कर्म कलिमा टारे।।
पद्मासन जिनप्रतिमा सुंदर, सिंहासन पे राजे।
जो जन पूजन वंदन करते, कर्म अरीदल भाजे।।21।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिआशीविषवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल 'सुखावह' बहु सुखदाता, चार कूट से सोहे।
जो जन सिद्धकूट को वंदे, त्रिभुवन के पति हो हैं।।

साधूजन आकाश मार्ग से, जिनवंदन को आते।
जो जन पूजें श्रद्धा धर मन, वे अनुपम सुख पाते।।22।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुखावहवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीतोदा के उत्तर तट में, भूतारण्य निकट में।
'चंद्रमाल' वक्षार मनोहर, देव रमें उस तट में।।
चार कूट में सिद्धकूट इक, जिनमंदिर अभिरामा।
मैं इत अर्घ्य चढ़ाकर पूजूँ, पाऊँ शिव विश्रामा।।23।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिचंद्रमालवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सूर्यमाल' वक्षार अनोखा, सूरजतैज लजावे।
सिद्धकूट में जिनवर मंदिर, मुनिमन कुमुद खिलावें।।
भव विजयी की प्रतिमा मणिमय, पूजत पाप हरे हैं।
नित प्रति ध्यान धरे जो उनका, वे यमपाश हरे हैं।।24।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसूर्यमालवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नागमाल' वक्षार भूमिधर, नवनिधि वैभव शाली।
सिद्धकूट में जिन चैत्यालय, अनुपमछवि मणिमाली।।
भवविजयी की प्रतिमा मणिसम, पूजत पाप हरे हैं।
नित प्रति ध्यान धरे जो उनका, वे यमपाश हरे हैं।।25।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनागमालवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'देवमाल' वक्षार सोलवां, स्वर्गपुरी सम शोभा।
चार कूट में एक कूटपर, जिनगृह अतुल अनोखा।।
भवविजयी की प्रतिमा मणिसम, पूजत पाप हरे हैं।
नित प्रति ध्यान धरे जो उनका, वे यमपाश हरे हैं।।26।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिदेवमालवक्षारगिरिसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

सीतानदि उत्तर तरफ, भद्रसाल वनपास।
कच्छादेश रजतगिरि, जिनगृह जजूँ हुलास।।27।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वविदेहकच्छामध्यस्थितविजयार्धगिरिसिद्धकूट जिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुकच्छा' मध्य में, रूपाचल मनहार।
सिद्धकूट में जिनभवन, जजूँ सदा सुखकार।।28।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुकच्छादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महाकच्छा' मधी, रूपाचल अभिराम।
सिद्धकूट का जिनभवन, पूजूँ करूँ प्रणाम।।29।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहाकच्छादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'कच्छकावति' विषें, विजयारध सुखकार।
भवविजयी के जिनभवन, पूजूं भव दुःखटार।।30।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकच्छकावतीदेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्ध कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'आवर्ता' सुविदेह में, रूपाचल रजताभ।
ताके श्री जिनगेह को, पूजूँ करो कृतार्थ।।31।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिआवर्तादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'लांगलावर्त' में, रजताचल सुखकार।
सिद्धकूट पर जिनभवन, पूजूँ सुयश उचार।।32।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिलांगलावर्तादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कला' में अचल, विजयारध मनहार।
ताके श्रीजिनगेह को, पूजूँ शिव सुखकार।।33।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्कलादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पुष्कलावती' मधि, रूपाचल सुखधाम।
जिनगृह के बिंब को, पूजूँ नित शिवधाम।।34।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपुष्कलावतीदेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सीता के दक्षिण तरफ, देवारण्य समीप।
'वत्सा' के विजयार्ध का, जिनगृह जजूँ पुनीत।।35।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवत्सादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवत्सा' मध्य में, विजयारध गुणधाम।
उसपे जिनमंदिर जजूँ, परमानंद प्रदाम्।।36।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुवत्सादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'महावत्सा' मधी, रूपाचल मनहार।
जिनमंदिर के बिंब को, पूजूँ शिव करतार।।37।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहावत्सादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वत्सकावति' देश में, रूपाचल सुखधाम।
तापे जिनगृह जिनछवि, पूजूँ भुवन ललाम।।38।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवत्सकावतीदेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'रम्या' देश विदेह में, रजताचल गुणमाल।
जिनगृह के जिनबिंब को, पूजूँ जगत प्रतिपाल।।39।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरम्यादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुरम्या' मध्य में, रूपाचल अभिराम।
जिन चैत्यालय को जजूँ, पाऊँ मोक्ष निकाम।।40।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुरम्यादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया सुविदेह में रूप्यागिरि रूपाभ।
जिनगृह की जिनमूर्ति को, जजूँ नमाऊँ माथ।।41।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिरमणीयादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंगलावती' देश में, खग पर्वत सुखपाल।
जिनमंदिर में मूर्ति की, पूजा करूँ त्रिकाल।।42।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमंगलावतीदेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोला छंद

भद्रसाल वन पास, सीतोदा नदि दायें।
'पद्मादेश' विदेह, मधि रूपाद्रि कहाये।।
तापे श्रीजिनगेह, सब भवचक्र विनाशे।
जो पूजें धर नेह, केवलज्ञान प्रकाशें।।43।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपद्मादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुपद्मा' माहिं, रजताचल मन मोहें।
तापे श्री जिनधाम, सुर किन्नर मन मोहे।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।44।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुपद्मादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महपद्मा' सुविदेह, तामे रजतगिरी है।
उसपे श्री जिनवेश्म, अद्भुत सौख्यसिरी है।।

जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।45।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहापद्मादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'पद्मकावति', मधि में रूप्यगिरी है।
त्रयकटनी युत रम्य, जिनगृह अतुलश्री है।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।46।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपद्मावतीदेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंखा' देश विदेह, शंख ध्वनी जहं गूंजे।
बीच रजतगिरि एक, जिनमंदिर सुर पूजें।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।47।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिशंखादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नलिनादेश' अपूर्व, शाश्वत सिद्ध कहा है।
बीच रजतगिरि शीश, जिनगृह नित्य कहा है।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।48।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिनलिनादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कुमुदा' देश अनूप, शिव का मार्ग प्रकासे।
बीच रजतगिरी श्रेष्ठ, जिनगृह अनुपम भासे।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।49।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुमुदादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरिता देश विदेह, छह खंडों युत सोहे।
बीच कहा विजयार्ध जिनगृह से मन मोहे।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।50।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसरितादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नदि के उत्तर माहिं, भूतारण्य समीपे।
वप्रादेश विदेह, बीच रजतगिरि दीपे।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।51।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुवप्रादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुवप्रा' मध्य, रूपाचल अविकारी।
नव कूटों में एक, जिनमंदिर सुखकारी।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।52।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुवप्रादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावप्रादेश', अगणित विभव धरे हैं।
बीच रजतगिरि श्वेत, जिनवर सद्म धरे हैं।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।53।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहावप्रादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वप्राकावतिदेश', बीच रजतगिरि धारे।
नवकूटों में एक, जिनगृह भवदधि तारे।।

जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।54।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिवप्राकावतिदेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्ध कूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गंधादेश' विदेह, रौप्य अचल से सोहें।
त्रयकटनीयुत रम्य, ऊपर जिनगृह सोहै।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।55।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'सुगंधा' मध्य, खगपर्वत मन मोहें।
इंद्रादिक से वंद्य, जिनमंदिर इक सोहें।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।56।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिसुगंधादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देश 'गंधिला' बीच, रजतगिरी रजताभा।
नवकूटों में एक, जिनमंदिर मणि आभा।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।57।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधिलादेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधमालिनी देश, रूप्यगिरी मधि धारे।
रत्नमयी, इक कूट जिनमंदिर को धारे।।
जाके श्री जिनबिंब, भवि भवचक्र विनाशें।
जो पूजें, धर प्रीति, केवलज्ञान प्रकाशें।।58।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिगंधमालिनीदेशमध्यस्थितविजयार्धपर्वत सिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

पश्चिम पुष्कर अर्ध द्वीप में, सुरगिरि दक्षिण जानो।
भरत क्षेत्र मे मध्य रूप्यगिरि, नवकूटों युत मानो।।
सिद्धकूट के जिनमंदिर में रतनमयी प्रतिमा है।
जो जन अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, लहैं अतुल महिमा है।।59।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युन्माली के उत्तर में, ऐरावत शुभ जानो।
मध्य रजतगिरि पे, इकसौ दश खग नगरी सरधानो।।
सिद्धकूट के जिनमंदिर में रतनमयी प्रतिमा है।
जो जन अर्घ्य चढ़ाकर पूजें, लहैं अतुल महिमा है।।60।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रमध्यविजयार्धपर्वतसिद्धकूट जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-गीताछंद

पश्चिम सु पुष्कर द्वीप में कुलगिरि व गजदंताद्रि हैं।
वक्षार रूप्याचल इन्हों पर साठ जिनवर गेह हैं।।
ये मोह अहि के विष उतारन हेतु गारुत्मणि कहें।
इनको जजूँ ये भक्त लोहा हेतु पारसमणि कहें।।1।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिस्थितषष्टिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इन धाम के चौंसठ शतक अस्सी जिनेश्वर मूर्तियाँ।
इनको जजें वे बन सकें चैतन्य धातु मूर्तियाँ।।
मृत्युंजयी इन मूर्तियों को कोटि कोटी वंदना।
मैं जजूँ नित प्रति भाव से हो जाय यम की वंचना।।2।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिस्थितषष्टिसिद्धकूटजिनालयमध्य विराजमानषट्सहस्रचतुःशतअशीतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम सुपुष्कर द्वीप में वरमेरु विद्युन्मालि है।
पुष्करतरु शाल्मलितरु कुलपर्वतादि विशाल हैं।।
इन पर अकृत्रिम अठत्तर जिनधाम पुण्य निधान हैं।
इनको जजूँ वर भक्ति से ये मोक्ष सुख की खान हैं।।3।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनालयेभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इन मेरु तरुवर पर्वतों पर जैन मंदिर सोहते।
प्रत्येक में जिनबिंब इक सौ आठ मुनिमन मोहते।।
चौरासि सौ चौबिस जिनेश्वर को यहाँ मैं नित जजूँ।
निज सौख्य परमानंद हेतु आपको अतिशय भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिस्थितअष्टसप्ततिजिनालयमध्य विराजमानअष्टसहस्रचतुःशतचतुर्विंशतिजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

पश्चिम पुष्कर द्वीप के जिनमंदिर अभिराम।
गाऊँ गुणमणिमालिका, शत शत करूँ प्रणाम।।1।।

शंभु छंद

जय जय कुलगिरि के जिनमंदिर जय गजदंताचल के मंदिर।
जय वक्षाराचल के मंदिर, जय रूप्याचल के जिनमंदिर।।
जय जय जय जिनवर प्रतिमायें, अज्ञान अंधरा हरती हैं।
वे भक्तों के मन मंदिर में सज्ज्ञान ज्योति को भरती हैं।।2।।

हिमवन पर्वत वर चार सहस, दो सौ दस योजन विस्तृत है।
महाहिमवन सोलह सहस आठ सौ ब्यालिस योजन विस्तृत है।।
नग निषध सु सड़सठ सहस तीन सौ अड़सठ योजन विस्तृत है।
नग नील निषध सम फिर आधे आधे होते दोनों नग हैं।।3।।

ये पर्वत सौ दो सौ चउसौ योजन तक ऊँचे माने हैं।
इन पर पद्मादि सरोवर में भूकायिक कमल वखाने हैं।।
उन कमलों में श्री ह्री धृति अरु कीर्ति बुद्धी लक्ष्मी रहतीं।
जिनमाता की सेवा करने, आतीं अति गूढ़ प्रश्न करतीं।।4।।

गजदंत वहाँ पर मेरु की विदिशा में नग को छूते हैं।
पूर्वापर उभय विदेहों में वक्षारचल अति लंबे हैं।।
इनसे व विभंगानदियों से, बत्तिस विदेह हो जाते हैं।
वहाँ पर तीर्थकर प्रभु विहरें, नित धर्मामृत बरसाते हैं।।5।।

इन बत्तीसो हि विदेहों में, भरतैरावत मे रजताचल।
विद्याधर की शुभनगरी से, त्रय कटनी से सोहें अविचल।।
ये क्षेत्र बराबर लंबे हैं, योजन पचीस ही ऊँचे हैं।
योजन पचास चौड़े सुंदर, चांदी के बने अनोखे हैं।।6।।

इन पर्वत के जिनमंदिर को, हम भी परोक्ष वंदन करते।
इनकी जिनवर प्रतिमाओं का, वंदन कर दुख खंडन करते।।
निज अल्प ज्ञानमति बुद्धी से, जिनवर का गुण कीर्तिन करते।।
बस पूर्ण ज्ञानमति होने तक प्रभु का पूजन अर्चन करते।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिकुलाचलादिस्थितषष्टिसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-22

पुष्करार्धद्वीप इष्वाकार जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

पुष्करार्ध में दक्षिण-उत्तर, इष्वाकार गिरी हैं।
कनकवर्णमय शाश्वत अनुपम, धारें अतुलसिरी हैं।।
इन दोनों पे दो जिनमंदिर, पूजत पाप पलानो।
आह्वानन कर जिनप्रतिमा का, विधिवत् पूजन ठानो।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरसंबंधिइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टकं नरेन्द्र छंद –

तीन लोक भर जाय प्रभो मैं, इतना नीर पिया है।
फिर भी प्यास बुझी नहिं किंचित्, यातें शरण लिया है।।
हृदय ताप उपशांती हेतू, शीतल जल से आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह राग की दावानल में, चिर से झुलस रहा हूँ।
किंचित् मन की दाह मिटी नहिं, अब तुम पास खड़ा हूँ।।
रागदाह हर शीतल हेतू हरि चंदन घिस लाया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म मरणके दुःखो से, अब मैं शांत हुआ हूँ।
अन्य नहीं निवारण समरथ, यातें पूज रहा हूँ।।
अक्षय अव्यय निजपद हेतू, उज्ज्वल अक्षत लाया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।3।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मकरध्वज[1] ने चिर भव भव में, मुझको अधिक छला है।
मारविजेता[2] तुमको सुनके, ली अब शरण भला है।।
काममोहयमत्रिपुरार[3] हर[4]! विविध कुसुम मैं लाया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।4।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संख्यातीते तीन लोक सम, अन्न प्रभो! खाया मैं।
फिर भी भूख अगनि नहिं बुझती, इससे अकुलाया मैं।।
स्वातम अमृत स्वाद हेतु मैं, बहुविध व्यंजन लाया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।5।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध दीपक विद्युत आदी, तम हरने हित लाया।
फिर भी अंतर अंधकार को, दूर नहीं कर पाया।।
स्वपरभेद विज्ञान हेतु मैं, मणिदीपक ले आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।6।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म दुःख देते जग में, इनको शीघ्र जलाऊँ।
धूप सुगंधित अग्निपात्र में, श्रद्धासहित जराऊँ।।

---

1. कामदेव। 2. कामदेव विजयी। 3. कामदेव, मोह और मृत्यु ये तीन पुर सदृश हैं इनको जीतने वाले। 4. महादेव

आतम शुद्धी करने हेतू, पूजन करने आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।7।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुविध सरस मधुर फल खाये, फिर भी तृप्ति न पाई।
आत्मसुधारस अनुभव पाने, प्रभु तुम पूज रचाई।।
ज्ञानानंद स्वभावी को तुम, यह सुन शरणे आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।8।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत आदी ले, अर्घ्य सजाकर लाया।
नित्य निरंजन चिच्चिन्तामणि, रत्न कमाने आया।।
तुमसे हे प्रभु अखिल ज्ञान निधि, प्राप्त हेतु मैं आया।
इष्वाकार अचल जिनमंदिर, पूजत मन हरषाया।।9।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

कनक भृंग में मिष्ट जल, सुरगंगा समश्वेत।
जिनपद धारा देत ही, भव भव को जल देत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल सरोरुह मालती, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, सुख संपति अधिकाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

शाश्वत जिन आगार[1], मणिरत्नों से परिणमें।
प्रभु करिये भवपार, नित प्रति अर्चूं भाव से।।।1।।

इति पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारगिरिस्थाने मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

1. भवन।

रोला छंद

पुष्करार्ध वर द्वीप ताके दक्षिण माहीं।
इष्वाकार गिरीश, अद्भुत अतुल कहाहीं।।
तापे सिद्ध सुकूट, जिन प्रतिमा अविकारी।
पूजूं अर्घ्य बनाय, जल फल से भर थारी।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणदिशिइष्वाकारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय द्वीप के माहिं, उत्तर दिश में जानों।
इष्वाकार नगेश, अनुपम रूप बखानो।।
तापे जिनवरगेह, सिद्धकूट मनहारी।
पूजूँ अर्घ्य बनाय, जल फल से भर थारी।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थउत्तरदिशिइष्वाकारपर्वतस्थितसिद्धकूटजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

कंचनदेह सुकांति, दो पर्वत मन मोहे।
चार चार हैं कूट, सुर किन्नर गृह सोहें।।
उनमें इक इक सिद्ध-कूट जिनालय दो हैं।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय, पूजूँ शिवसुख हो हैं।।1।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थदक्षिणोत्तरदिशायांसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो नग के जिनगेह, तिनमें जिनवर प्रतिमा।
दो सौ सोलह मान्य, नमूँ नमूँ गुण महिमा।।
मुनिवरगण शिरनाय, वंदें नित सुखकारी।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय, शीघ्र वरूँ शिवनारी।।2।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतस्थितद्वयजिनालयमध्यविराजमानद्विशत षोडशजिनप्रतिमाभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

अशरण के प्रभु तुम शरण, निराधार आधार।
तुम गुण गण मणि मालिका, लेऊँ कंठ में धार।।1।।

तोटल छंद

जय इष्वाकार जिनेश गृहं, जय मुक्ति वधू परमेश गृहं।
जय नाथ त्रिलोकपती तुम हो, जय नाथ अनंत गुणांबुधि हो।।1।।

जय साधु मनोम्बुज भानु समं, जय भव्य कुमोदनि चंद्र समं।
जय भक्त मनोरथ पूरक हो, जय सर्व दुखांकुर चूरक हो।।2।।

जय कल्पतरु सम सौख्य भरो, जय वांछित वस्तु प्रदान करो।
जय संसृति रोग महौषधि हो, जय तारक भव्य भवोदधि हौ।।3।।

जय तुंग चतुःशत योजन है, जय विस्तृत सहज सुयोजन है।
जय लंबे आठ सु लाख कहे, द्वय शैल सुवर्णिम कांति लहे।।4।।

मुनिवृंद वहां नित भक्ति करें, निज आतमबोध विकास करें।
खगवृंद वहाँ नित आवत हैं, जिनपद सरोरुह ध्यावत हैं।।5।।

सुर अप्सरियाँ बहु नृत्य करें, गुण गावत चित्त उमंग भरे।
करताल मृदंग बजाबत हैं, निज कर्म कलंक नशावत हैं।।6।।

द्वय पे जिनमंदिर स्वर्णमयी, जिनबिंब मणीमय रत्नमयी।
छवि सौम्य विराग विदोषकही, द्युति से रवि रश्मि लजें सबहीं।।7।।

जिनपाद सरोरुह शर्ण लिया, प्रभु अर्ज सुनो हमरी कृपया।
यशपाश विपाश हरो प्रभुजी, सब भाव विभाव हरो प्रभुजी।।8।।

हम आश धरें तुम पाद प्रभो, अब वेग उबार भवोदधि सो।
मुझ 'ज्ञानमती' सुख शांति करो, जिनदेव! सभी गुण पूर्ण करो।।9।।

घत्ता

जय इष्वाकार, पर्वत सारा, जय जिनमंदिर नित्य नमूँ।
जय जिनगुण गाके, कर्म नशाके, नित्य निरंजन सिद्ध बनूँ।।10।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपस्थइष्वाकारपर्वतसिद्धकूटजिनालयस्थजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-23

मानुषोत्तर जिनालय पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

वरद्वीप सोलह लाख योजन नाम पुष्कर जानिये।
इस मध्य चूड़ी के सदृश नग मानुषोत्तर मानिये।।
इस पर चतुर्दिश चार अनुपम शाश्वते जिनगेह हैं।
उनके जिनेश्वर बिंब पूजूँ, धार मन अति नेह हैं।।1

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टकं चाल-नंदीश्वर पूजा –

भव भव में शीतल नीर, जी भर खूब पिया।
पर बुझी न मन की प्यास, आखिर ऊब गया।।
इस हेतू से जल लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह अग्नि की दाह, मुझको दहन करे।
हिमकण चंदन बर्फादि, नहिं भव ताप हरे।।
इस हेतु चंदन लाय तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।2।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धन धान्य विभव को पाय, नहिं व्यय को चाहूँ।
पर अब तक इनकी नाथ, रक्षा नहिं पाऊँ।।
इसलिये धवल से शालि, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।3।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मन नयन घ्राणहर पुष्प, सुरभी खूब लिया।
पर भगवन्! तुम गुण गंध, अब तक नाहिं लिया।।
इसलिये विविध सुम पाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।4।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भव में बहु पकवान, खाके तृप्ति नहीं।
तुमने प्रभु क्षुध की व्याधि नाशी तृप्ति लही।।
इसलिये मधुर चरु लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।5।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं चाहूँ दीपक सूर्य, मन का तपन हरे।
पर झूठ हुई सब आश, समकित पाय खरे।।
निज द्युति हित दीपक लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।6।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख दूर करन हित नाथ! बहुले यत्न करे।
पर दुःख हरन में अन्य, कोई नाहिं अरे।।

इस हेतु धूप जलाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।7।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भव के सुख फल हेतु, बहुते देव यजे।
पर अब तक कोई नाहिं, शिवफल देय सके।।
इसलिये सरसफल लाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।8।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु मूल्य अतुल फल हेत, सब जग घूम चुका।
पर मिली न अब तक तृप्ति, बहु पद चूम चुका।।
शिव फलहित अर्घं चढ़ाय, तुम पद यजन करूँ।
निज आतम निधि को पाय, भव भव तपन हरूँ।।9।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

स्वच्छ बावड़ी नीर, धार देय जिनपद कमल।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा शम करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल मालती फूल, सुरभित करते दश दिशा।
माल मल्लहर देव, तुम पद अर्पूं मैं सदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

मनुजोत्तर नग चार दिश, जिन चैत्यालय सार।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, करो सकल सुखसार।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

नग मानुषोत्तर से परे नहिं मनुज जा सकते कभी।
इस हेतु सार्थक नाम पर्वत शास्त्र हैं कहते सभी।।
इस अद्रिपर पूरब जिनालय मूर्तियाँ जिनराज की।
पूजूं चढ़ाकर अर्घ ले, पदवी मिले जिनराज की।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरअद्रि पर दक्षिण दिशी, जिनधाम शाश्वत सोहता।
आकाशऋद्धीधर मुनीश्वर विहरते मन मोहता।।
जिन मूर्तियों की वंदना से शांति हो आत्यंतिकी।
पूजूं चढ़ाकर अर्घ ले, पदवी मिले जिनराज की।।2।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर्वत नरोत्तर पर अपरदिश रत्नमय जिनगेह हैं।
संसार सागर पार हेतू मैं जजूं धर नेह है।।
षट्क्रिया आवश्यक प्रपूरण हेतु पूजा आपकी।
पूजूं चढ़ाकर अर्घ ले, पदवी मिले जिनराज की।।3।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नर अद्रि पर उत्तर दिशी जिनधाम स्वर्णिम मन हरे।
इसमें जिनेश्वर मूर्तियां नर नारियाँ वदंन करें।।
वर सप्तपरम स्थान देतीं हैं सुभक्ती आपकी।
पूजूं चढ़ाकर अर्घ ले, पदवी मिले जिनराज की।।4।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतउत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

इस मानुषोत्तर के जिनालय चार शाश्वत मणिमयी।
चारणऋषी वंदन करें निजध्याय पाते निजमही।।
विद्याधरों की टोलियाँ आकर प्रभू वंदन करें।
सौ इंद्र पूजित मंदिरों की हम सदा अर्चन करें।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुसिद्धकूटजिनालबेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन चार जिनवर धाम में जिनमूर्तियाँ वर रत्न की।
ये चार सौ बत्तीस हैं पद्मासनों के राजतीं।।
इन वीतरागी नग्न जिनवर मूर्तियों की वंदना।
जो भव्य भक्ती से करें वे करें यम की तर्जना।।2।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयमध्यविराजमान चतुःशतद्वात्रिंशत् जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

समयसार शुद्धात्मा, चिच्चैतन्य प्रधान।
जिन प्रतिमा अमलात्मा, नमूँ नमूँ गुण खान।।1।।

शंभु छंद

जय जय मनुजोत्तर नग जग में, जय जय जिनगृह की अति महिमा।
जय जय जय जिनवर की प्रतिमा, जय जय जय जिनवर गुण गरिमा।।
यह नग सत्रह सौ इक्किस ही योजन उत्तुंग कहा श्रुत में।
इक हजार बाइस योजन ही नीचे विस्तृत घटता क्रम में।।2।।

यह मध्य भाग में सात शतक तेईस मात्र योजन जानो।
ऊपर में चार शतक चौबिस योजन स्वर्णिम है सरधानो।।

भीतर टंकोत्कीर्ण सदृश बाहिर तरफी घटता दीखे।
इस पर हैं बाइस कूट कहें चहुँदिश जिनगृह ऊँचे दीखे।।3।।

इस जंबूद्वीप में मेरु सुदर्शन एक लाख चालिस योजन।
ऊँचा है उस पर पाण्डुक वन तक जाने नर खग अरु ऋषिगण।।
यह मनुजोत्तर ना कुछ ऊँचा इससे आगे नर नहिं जाते।
यह मात्र नियोग समझ लीजे जो इसको लांघ नहीं पाते।।4।।

इस पर्वत तक पैंतालिस लाख सुयोजन मानव लोक कहा।
इस तक ही मनुष्य जन्मते हैं आगे नहिं मानव जन्म कहा।।
नग मनुजोत्तर के जिनमंदिर श्री सिद्धकूट पर माने हैं।
जो दर्शन वंदन करते हैं उनके सब पातक हाने हैं।।5।।

रत्नों से बनी ध्वजायें हैं पवन झकोरे हिलती हैं।
मणि कनक कुसुम की मालायें वे चारों तरफ लटकती हैं।।
मंगलघट पूर्ण कलश शोभें धूपों के घट महकाते हैं।
वसु मंगलद्रव्य प्रत्येक शोभें एक सौ आठ-आठ चमकाते हैं।।6।।

वसु प्रातिहार्य शोभें अनुपम भामंडल रत्नमयी कोरे।
त्रय छह फिरें चौंसठ चमरों को यक्ष युगल मिलकर ढोरें।।
रत्नों के सिंहासन ऊपर पद्मासन जिनप्रतिमा राजें।
जिनके दर्शन वंदन करते भव भव के पाप तुरत भाजें।।7।।

तुम पूजन करते नाथ! अभी मेरे मन एक हुई वांछा।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय हो बोधी लाभ यही यांचा।।
नित सुगति गमन होवे मेरा, सन्यास विधी से मरना हो।
जिनगुण संपत्ति मिल जाय मुझे, फिर कभी न यांचा करना हो।।8।।

दोहा

अकृत्रिम जिनरूप को, प्रणमूँ बारंबार।
ज्ञानमती निजरूप को, तुरतहिं लेऊँ निहार।।9।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तर पर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-24

नंदीश्वरद्वीप जिनालय पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

वर द्वीप नंदीश्वर सुअष्टम, तीन जग में मान्य है।
बावन जिनालय देवगण से, वंद्य अतिशयवान हैं।।
प्रत्येक दिश तेरह सु तेरह, जिनगृहों की वंदना।
थापूँ यहाँ जिनबिंब को, नितप्रति करूँ जिन अर्चना।।1।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टकं चामर –

स्वर्णभृंग में सुशीत गंगनीर लाइये।
शाश्वते जिनेन्द्र बिंब पाद में चढ़ाइये।।
आठवें सुद्वीप में जिनेन्द्र आलया।
पूजते जिनेन्द्रबिंब सत्यबोध पा लिया।।1।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतरंग ताप ज्वर विनाश हेतु गंध है।
नाथ पाद पूजते मिले निजात्म गंध है।।
आठवें सुद्वीप में जिनेन्द्र आलया।
पूजते जिनेन्द्रबिंब सत्यबोध पा लिया।।2।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतियों के हारवत् सफेद धौत शालि हैं।
आप को चढ़ावते निजात्म सौख्यमालि है।।
आठवें सुद्वीप में जिनेन्द्र आलया।
पूजते जिनेन्द्रबिंब सत्यबोध पा लिया।।3।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मालती गुलाब कुंद मोगरा चुनाइये।
आप पाद पूजते सुकीर्ति को बढ़ाइये।।
आठवें सुद्वीप में जिनेन्द्र आलया।
पूजते जिनेन्द्रबिंब सत्यबोध पा लिया।।4।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपूप खज्जाकादि पूरियाँ चढ़ाइये।
भूख व्याधि जिष्णु को अनंतशक्ति पाइये।।
आठवें सुद्वीप में जिनेन्द्र आलया।
पूजते जिनेन्द्रबिंब सत्यबोध पा लिया।।5।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नादि काल से लगे अनंत मोहध्वांत को।
दीप से जिनेश पूज नाशिये कुध्वांत को।।
आठवें सुद्वीप में जिनेन्द्र आलया।
पूजते जिनेन्द्रबिंब सत्यबोध पा लिया।।6।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप लाल चंदनादि मिश्र अग्नि में जले।
आतमा विशुद्ध होत कर्म भस्म हो चलें।।

आठवें सुद्वीप में जिनेन्द्र आलया।
पूजते जिनेन्द्रबिंब सत्यबोध पा लिया।।7।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्षुदंड सेव दाडिमादि थाल में भरें।
मोक्ष संपदा मिले जिनेश अर्चना करें।।
आठवें सुद्वीप में जिनेन्द्र आलया।
पूजते जिनेन्द्रबिंब सत्यबोध पा लिया।।8।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य ले अनर्घ्य मूर्तियों को पूजिये।
अष्ट कर्म नाश के त्रिलोकनाथ हूजिये।।
आठवें सुद्वीप में जिनेन्द्र आलया।
पूजते जिनेन्द्रबिंब सत्यबोध पा लिया।।9।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपसंबंधिचतुर्दिक्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

अमल बावड़ी नीर, धार देय जिनपद कमल।
मिले भवोदधि तीर, शांतीधारा शम करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी पुष्प हर्षित मन से लाइके।
जिनवर चरण समर्प्य, सर्व सौख्य संपति बढ़े।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

बावन जिनगृह चार दिश, पूजूँ चित्त लगाय।
श्रावक की त्रेपन क्रिया, पूर्ण करो जिनराय।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

रोला छंद

नंदीश्वर वर द्वीप, चारों दिश मधि जानो।
अंजनगिरि गुण नाम, अतिशय रम्य बखानो।।
ईश निरंजन सिद्ध, प्रभू का निलय कहा है।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, मन संताप दहा है।।1।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपूर्वदिक्अंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि की चार, दिश में चउ द्रह जानो।
नीर भरे कमलादि, कुमुदों से पहचानों।।
पूरब नंदा वापि, दधिमुख नग जिनगेहा।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय, मेटूँ मन संदेहा।।2।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नंदावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदवती द्रह माहिं दधिमुख दधिसम सोहैं।
तापे जिनवर धाम, सुर किन्नर मन मोहैं।।
तिन में श्रीजिनबिंब, सुवरण रतनमयी हैं।
पूजूँ अर्घ्यं चढ़ाय पाऊँ मोक्ष मही हैं।।3।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नंदवतीवापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदोतरा सुवापि, मधि दधिमुख नग भारी।
पश्चिम दिश में जान, लखय योजन द्रह भारी।।
तापे श्रीजिनधाम, शाश्वत सिद्ध सही है।
पूजूँ अर्घ्यं चढ़ाय पाऊँ मोक्ष मही हैं।।4।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नंदोत्तरावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीघोषा वापि, उत्तर दिश में जानो।
तामधि दधिमुख आदि, उसपे निजगृह मानो।।

त्रिभवुनपति जिनबिंब, अनुमपम रत्नमयी हैं।
पूजूँ अर्घ्यं चढ़ाय पाऊँ मोक्ष मही हैं।।5।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नंदीघोषावापिकामध्यस्थितदधिमुखपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छंद

नंदा द्रह ईशान कोण में, रतिकर नग स्वर्णाभा।
ताके ऊपर सिद्धकूट है, जिनमंदिर रत्नाभा।।
रतिपति विजयी जिनप्रतिमा है, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँजग त्राता।।6।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नंदावापीईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंद्रा द्रह आग्नेय दिश में, रतिकर दुतिय कहा है।
तापे सिद्धकूट जिनमंदिर, अतिशय रम्य कहा है।।
रतिपति विजयी जिनप्रतिमा है, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँजग त्राता।।7।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नंदावापीआग्नेयकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंद्रवती द्रह अग्निकोण में, रतिकर तृतिय सुहाता।
तापे सिद्धकूट जिनमंदिर, इंद्रादिक मन भाता।।
रतिपति विजयी जिनप्रतिमा है, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँजग त्राता।।8।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नंदवतीवापीआग्नेयकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदवती वापी नैऋत्य में, रतिकर नग अतिसोहै।
सिद्धकूट जिनआलय तापे, सुर वनिता मन मोहै।।

रतिपति विजयी जिनप्रतिमा है, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँजग त्राता।।9।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नंदवतीनैऋत्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिमवापी नंदोत्तर है, नैऋत्यकोण सुहावे।
रतिकरनग पर सिद्धकूट में, जिनमंदिर मन भावे।।
रतिपति विजयी जिनप्रतिमा है, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँजग त्राता।।10।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नंदोत्तरवापीनैऋत्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी नंदोत्तरा अपरदिश, ता वायव्यदिशा में।
रतिकर, स्वर्ण अचल के ऊपर, सिद्धकूट अभिरामें।।
रतिपति विजयी जिनप्रतिमा है, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँजग त्राता।।11।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नंदोत्तरावापिकावायव्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीघोषा वापी विदिशा, वायु कोण में जानो।
रतिकर पर्वत सिद्धकूट में, जिनमंदिर मन भानो।।
रतिपति विजयी जिनप्रतिमा है, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँजग त्राता।।12।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दिघोषावापीवायव्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह नंदीघोषा ईशाने, रतिकर, पीत सुहाता।
तोप सिद्धकूट चैत्यालय, पूजत मन हरषाता।।
रतिपति विजयी जिनप्रतिमा है, अकृत्रिम सुखदाता।
परमातम परकाशन हेतू, पूजूँ तिहुँजग त्राता।।13।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे नन्दिघोषावापीईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुसुमलता छंद

नंदीश्वर के दक्षिण दिश में, मधि 'अंजनगिरि' तुंग महान।
इंद्रनीलमणि सम छवि ऊपर, नित्य निरंजन का गृह मान।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।14।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिअंजनगिरिसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि के पूरब 'अजा', वापी सजल कमल की खान।
ताके मधि दधिमुख पर्वत पर, जिनमंदिर अविचल सुखदान।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।15।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिअरजवापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन नग दक्षिण दिश वापी, विरजा कही अमल जल खान।
मध्य अचल दधिमुख के ऊपर, जिन चैत्यालय पावन जान।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।16।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिविरजावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन नग पश्चिम दिश वापी, नाम अशोका शुच उपहार।
बीच अचल दधिमुख के ऊपर, शोक रहित जिनगृहसुखकार।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।17।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिअशोकावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तर दिश में अंजनगिरि के, वापि वीतशोका अमलान।
दधिमुख पर्वत सिद्धकूट पर, वीतशोक जिनमंदिर जान।।

जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।18।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिवीतशोकावापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरजाद्रह ईशान कोण पर, रतिकर पर्वत सुंदर जान।
सिद्धकूट जिन चैत्यालय में, रतनमयी जिनबिम्ब महान।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।19।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिअरजावापिकाईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरजा वापी अग्निकोण में, रतिकर दुतिय स्वर्ण द्युतिमान।
सिद्धकूट जिनमंदिर सुंदर, जिनप्रतिमा सब सौख्य निधान।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।20।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिअरजावापिकाआग्नेयकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विरजावापी आग्नेय पर, रतिकर नग अद्भुत मणिमान।
सिद्धकूट जिननिलय अकृत्रिम, मणिमय जिन आकृति शिवदान।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।21।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिविरजावापिकाआग्नेयकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विरजावापी नैऋत दिश में, रतिकर पर्वत पीत सुहाय।
सिद्धकूट जिनभवन अकृत्रिम, जिनवर छवि वरणी नहिं जाय।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।22।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिविरजावापिकानैऋत्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम अशोकाद्रह नैऋत में, रतिकर पर्वत अतुल निधीश।
सिद्धकूट जिनमहल अनूपम, जिनवर प्रतिमा त्रिभुवन ईश।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।23।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिअशोकावापिकावायव्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि अशोका वायुविदिश में, रतिकर नग शोभे स्वर्णाभ।
सिद्धकूट जिनवेश्म अमल हैं, श्रीजिनबिंब अतुल रत्नाभ।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।24।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिअशोकावापिकावायव्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापी सजल वीतशोका के, वायु कोण रतिकर रतिनाथ।
रतिपतिविजयी जिनमंदिर में, रुचिकर जिनछवि त्रिभुवननाथ।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।25।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिवीतशोकावापिकावायव्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीतशोकद्रह में ईशान पर, रतिकर तप्तस्वर्ण सम कांत।
सिद्धकूट जिनआलय दुखहर, जिनवरबिंब सौम्यछवि शांत।।
जलफल आदिक अर्घ्य सजाकर, नित प्रति पूज करूँ गुणगान।
प्रभू आपकी कृपा दृष्टि से, पाऊँ सप्तपरम स्थान।।26।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेदक्षिणदिशिवीतशोकावापिकाईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छंद

द्वीप आठवें पश्चिम दिश, अंजनगिरी।
तापे जिनगृह अतुल सौख्य संपति भरी।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।27।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिअंजनगिरिसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयावापी मध्य, दधीमुख जानिये।
सिद्धकूट पर शाश्वत जिनगृह मानिये।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।28।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिविजयावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन दक्षिण वैजयंति वापी कही।
बीच अचल दधिमुख पे जिनगृह सुखमही।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।29।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिवैजयन्तीवापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन पश्चिम वापि जयंती सोहती।
मधि दधिमुख पे जिनगृह से मन मोहती।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।30।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिजयतीवापिकामध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजनगिरि उत्तर, वापी अपराजिता।
मधि दधिमुख पर्वत पे जिनगृह शासता।।

स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।31।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिअपराजितावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयावापी रुद्रकोण पे रतिकरा।
तापे सिद्धकूट जिनगृह भवि मनहारा।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।32।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिविजयावापीईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विजयाद्रह आग्नेय कोण रतिकरगिरी।
सिद्धकूट जिनमंदिर से अनुपम सिरी।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।33।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिविजयावापीआग्नेयकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैजयंतिवापी के अग्निकोण में।
रतिकर गिरि पर श्रीजिनवर के वेश्म में।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।34।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिवैजयंतीवापीआग्नेयकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैजयंतिद्रह के नैऋत में जानिये।
रतिकर नग में अकृत्रिम गृह मानिये।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।35।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिवैजयंतीवापीनैऋत्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि जयंती नैऋत में रतिकर कहा।
सिद्धकूट जिनमंदिर निज सुखकर कहो।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।36।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिजयंतीवापीनैऋत्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि जयंती वायु, विदिश रतिकर महा।
सिद्धकूट अकृत्रिम जिनगृह दुःख दहो।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।37।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिजयंतीवापीवायव्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपराजिता सुवापी वायवकोणे में।
रतिकर पर्वत पे जिनगृह अतिरम्य में।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।38।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिअपराजितावापीवायव्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह अपराजित की विदिशा ईशान है।
तापे रतिकर चामीकर छवि शान है।।
स्वयंसिद्ध जिनमूर्ति जजूँ नित चाव से।
भवसागर को तिरुं भक्ति की नाव से।।40।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेपश्चिमदिशिअपराजितावापीईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

उत्तरदिश इस द्वीप में, अंजनगिरि नीलाभ।
सिद्धकूट जिनसद्म को, पूज मिले शिवलाभ।।40।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिअंजनगिरिसिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजननग पूरबदिशो, रम्यावापी स्वच्छ।
मधि दधिमुख गिरि जिनभवन, पूजत कर्म विपक्ष।।41।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिरम्यावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन के दक्षिण दिशी, रमणीया द्रह जान।
दधिमुख नग पर जिननिलय, पूजत हो निजथान।।42।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिरमणीयावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजन के पश्चिम दिशी, द्रह सुप्रभा अनूप।
दधिमुख ऊपर जिनभवन, पूजत हो शिवभूप।।43।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिसुप्रभावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंजननग उत्तर दिशी, सर्वतोभद्रा वापि।
मधि दधिमुख पे जिनसदन, जजत न जन्म कदापि।।44।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिसर्वतोभद्रावापीमध्यदधिमुखपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्याद्रह ईशान में रतिकरनग स्वर्णाभ।
सिद्धकूट जिनगेह को, पूजत हो निष्पाप।।45।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिरम्यावापीईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूटजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रम्याह्रद आग्नेयदिशि, रतिकर गिरि अमलान।
जिनमंदिर शाश्वत जजूँ, मिले नवों निधिआन।।46।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिरम्यावापीआग्नेयकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया द्रह अग्नि दिश, रतिकर नग सिरताज।
सिद्धकूट पर जिनगृह, जजत मोक्ष साम्राज।।47।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिरमणीयावापीआग्नेयकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रमणीया द्रह नैऋते, रतिकरनग सुखदान।
शाश्वत जिनमंदिर जजूँ, मिले स्वपर विज्ञान।।48।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिरमणीयावापीनैऋत्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापिसुप्रभा नैऋते, रतिकर पर्वत सिद्ध।
मणिमय जिनमंदिर जजूँ, पाऊँऋद्धि समृद्ध।।49।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिसुप्रभानैऋत्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रह सुप्रभा सुवायु दिशि, रतिकरनग रतिकर।
तापे जिनगृह नित जजूँ, मिले स्वपद अविकार।।50।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिसुप्रभावापीवायव्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि सर्वतोभद्रिका, रतिकर वायव कोण।
जिनमंदिर शाश्वत जजूँ, मिले भवोदधि कोण।।51।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिसर्वतोभद्रावापीवायव्यकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वापि सर्वतोभद्रिका, रतिकर दिशि ईशान।
तापे जिनगृह पूजते, हो अनत श्रीमान्।।52।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपेउत्तरदिशिसर्वतोभद्रावापीईशानकोणेरतिकरपर्वतसिद्धकूट जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

नंदीश्वर में चार दिश, बावन जिनगृह सिद्ध।
नमूँ नमूँ नित भक्ति से, पाऊँ सौख्य समृद्ध।।1।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्संबंधिद्वापंचाशत्जिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छप्पन सौ सोलह कहीं, जिनप्रतिमा अभिराम।
पूजूँ अर्घ चढ़ाय के, शत शत करूँ प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे द्वापंचाशत्जिनालयमध्यविराजमानपंचसहस्रषट्शतषोडश जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

चिन्मूरति परमात्मा, चिदानंद चिद्रूप।
गाऊँ गुणमाला अबे, स्वल्पज्ञान अनुरूप।।1।।

चाल-शेर

जय आठवां जो द्वीप नाम नंदिश्वरा है।
जय बावनों जिनालयों से पुण्यधरा है।।
इक सौ तिरेसठे करड़ो लाख चुरासी।
विस्तार इतने याजनों से द्वीप विभासी।।2।।

चारों दिश में बीच में अंजनगिरी कहे।
जो इंद्रनील मणिमयी रत्नों से बन रहे।।
चौरासी सहस योजनों विस्तृत व तुंग हैं।
जो सब जगत समान गोध अधिक रम्य हैं।।3।।

इस गिरि के चार दिश में चार-चार वापियां।
जो एक लाख योजन जलपूर्ण वापियां।।

पूर्वादिक्रम दिशा से नंदा नंदवती हैं।
नंदोत्तरा व नंदिघोषा नाम प्रभृति हैं।।4।।

प्रत्येक वापियों में कमलफूल रहे हैं।
प्रत्येक के चउदिश में भी उद्यान घने हैं।।
अशोक सप्तपत्र पंच आम्र वन कहे।
पूर्वादि दिशा क्रम से अधिक रम्य दिख रहे।।5।।

दधिमुख अचल इन वापियों के बीच में बने।
योजन हजार दश उत्तुंग, विस्तृते इतने।।
प्रत्येक वापियों के दोनों बाह्य कोण में।
रतिकर गिरी हैं शोभते जो आठ आठ हैं।।6।।

योजन हजार एक चौड़े तुंग भी इतने।
सब स्वर्ण वर्ण के कहे रतिकर गिरी जितने।।
दधिमुख दधी समान श्वेत वर्ण धरे है।।
ये बावनों की अद्रदि सिद्धकूट धरे हैं।।7।।

इनमें जिनेन्द्र भवन आदि अंत शून्य हैं।
जो सर्व रत्न से बने जिनबिंब पूर्ण हैं।।
उन मंदिरों में देव इंद्रवृंद जा सकें।
वे नित्य ही जिनेन्द्र की पूजादि कर सकें।।8।।

आकाशगामी साधु मनुज खग न जा सकें।
वे सर्वदा परोक्ष में ही भक्ति कर सकें।।
मैं भी यहाँ परोक्ष में ही अर्चना करूँ।
जिनमूर्तियों की बारबार वंदना करूँ।।9।।

प्रभु आपके प्रसाद से भवसिंधु को तिरूँ।
मोहारि जीत शीघ्र ही जिनसंपदा वरूँ।।
हे नाथ! बार मेरी अब न देर कीजिये।
अज्ञानमती विज्ञ में अब फेर दीजिये।।10।।

दोहा

नंदीश्वर के चार दिश, जिनमंदिर जिनदेव।
उनको पूजूँ भाव से, ''ज्ञानमती'' हित एव।।11।।

ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिग्द्वापंचाशत्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-25

कुण्डलगिरि जिनालय पूजा

अथ स्थापना-अडिल्ल छंद

द्वीप ग्यारहवाँ कुंडल नाम प्रमानिये।
ताके मधि में कुंडल पर्वत जानिये।।
वलयाकृति गिरि पे चउ दिश जिनधाम हैं।
इनके जिनवर बिंब जजूँ इह ठाम हैं।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक चाल-मराठी पूजा –

सिंधु स्रोतस्विनी का जल है। जो स्वातम का हरता मल है।
पूजते ही मिले मोक्ष फल है। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा। जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय प्राक्मा। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध कर्पूर केशर मेला। सौगंधित सुमिश्रित एला।
तापसंताप हरत अकेला। जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा। जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय प्राक्मा। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।2।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हार मोती सदृश तंदुल है। पूंज धारे हृदय निर्मल है।
लाभ होता सुगुण उज्जल है। जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा। जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय प्राक्मा। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।3।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद मंदार सुमनस माला। काम मल्ल निमूल कर डाला।
आत्म संपद गुणों की माला। जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा। जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय प्राक्मा। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।4।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग लाडू इमरती भरके। पूजते भूख रोगादि हरके।
आत्म पीयूष अनुभव करके।जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा। जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय प्राक्मा। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।5।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हेम दीपक शिखा उज्जवल है। आरती ये हरे मोह मल्ल है।
होय आत्मा अपूर्व विमल हैं। जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा। जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय प्राक्मा। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।6।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ सुरभि दशगंधी। धूप फैले दशों दिश गंधी।
होय कर्म अरी शतखंडी। जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।

आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा। जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय प्राक्मा। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।7।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम्र अंगूर दाडिम फल हैं। जो उत्तम फल दे सुफल हैं।
तीन रत्नों की संपत्ति फल हैं।जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा। जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय प्राक्मा। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।8।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरगंधादि द्रव्य मिलाके। पूर्ण सौख्यादि होवे चढ़ाके।
अष्ट कर्मारि बंधन हटाके। जिनेन्द्रपाद वंदन करूँ मैं नित ही।।
आवो पूजें जिनेश्वरप्रतिमा। जाकी अद्भुत अकथ है महिमा।
कुंडलाचल जिनालय प्राक्मा। जिनेन्द्रदेव वंदन करूँ मैं नित ही।।9।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतसंबंधिचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

शाश्वत श्रीजिनबिंब, जलधारा से पूजते।
मिटे सकल दुखद्वंद, शांतिधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार प्रसून, सुरभित करते सर्वदिक।
मिले आत्मसुखपूर्ण, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

स्वयंसिद्ध जिनबिंब, सर्वसिद्धि में हैं निमित।
नमूँ नमूँ हर द्वंद, कुसुमांजलि कर भक्ति से।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

कुण्डलगिरि पर पूर्वदिशा में पाँच कूट मनहारी।
अभ्यंतर से सिद्धकूट पर जिनमंदिर सुखकारी।।
जल गंधादिक अर्घ्य मिलाकर, नित प्रति यजन करूँ मैं।
ग्यारह प्रतिमा धर ऊपर चढ़, संयम पूर्ण करूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुंग पचहत्तर सहस सुयोजन कुंडलनग वलयाकृति।
दक्षिण दिश में पंचकूट हैं अभ्यंतर जिनगृह नित।।
जल गंधादिक अर्घ्यं मिलाकर, नित प्रति यजन करूँ मैं।
ग्यारह प्रतिमा धर ऊपर चढ़, संयम पूर्ण करूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम कुंडल भूधर पर, पश्चिम दिश जिनगेहा।
पांच कूट में अभ्यंतर पर, सिद्धकूट जिनगेहा।।
जल गंधादिक अर्घ्यं मिलाकर, नित प्रति यजन करूँ मैं।
ग्यारह प्रतिमा धर ऊपर चढ़, संयम पूर्ण करूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमावंत अचल कुंडल पर, उत्तरदिश अभिरामा।
स्वयंसिद्ध जिनधाम अनूपम, जजत मिले निजधामा।।
जल गंधादिक अर्घ्यं मिलाकर, नित प्रति यजन करूँ मैं।
ग्यारह प्रतिमा धर ऊपर चढ़, संयम पूर्ण करूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं कुण्डलगिरिस्थितउत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-दोहा

कुंडलगिरि के जिनभवन, वांछित फल दातार।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, मिले भवोदधि पार।।1।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतस्थितचतुर्दिक्चतुःसिद्धकूटजिनालयेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंडलगिरि जिनगेह में, जिनप्रतिमायें सिद्ध।
चार शतक बत्तीस हैं, जजत कार्य सब सिद्ध।।2।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतस्थितचतुर्जिनालयमध्यविराजमानचतुःशतद्वात्रिंशतजिन प्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

चिन्मय चिंतामणि प्रभो वांछित फल दातार।
गाऊँ गुणमणिमालिका, मिले सौख्य भंडार।।1।।

नरेन्द्र छंद

कुंडलद्वीप कहा ग्यारहवां, कुंडलनग मधि राखे।
एक खरब अठ अरब, पचासी कोटि छियत्तर लाखे।।
इनते योजन विस्तृत द्वीपे, बीचों बीच गिरि है।
वलयाकार हजार पचत्तर, योजन तुंग गिरी है।।1।।

तल में विस्तृत दश हजार दो, सौ बिस योजन गाया।
मध्य सुव्यास बहत्तर सौ अरु तीस प्रमाण बताया।।
ऊपर चौड़ा ब्यालिस सौ चालिस योजन तुम जानो।
पर्वत ऊपर चारों दिश में, बीस कूट सरधानों।।2।।

दिशा दिशा में पाँच कूट हैं, चउ चउ पर सुर गेहा।
अभ्यंतर के सिद्ध कूट पर, अकृत्रिम जिनगेहा।।
कुंडल पर्वत हेम वर्णमय, शाश्वत तीर्थ कहाता।
देवदेवियां अप्सरियों में, इंद्रों के मन भाता।।3।।

चारदिशा के सिद्धकूट के, जिनवर बिंब विराजें।
मैं परोक्ष ही वंदन करता, कर्मअरी डर भाजें।।
जिनवंदन से आत्म विशुद्धि हो परमात्म प्रकासे।
जिनवर प्रवचन हृदय महल में, समयसारमय भासे।।4।।

प्रभू यही अब मेरी इच्छा, रत्नत्रय निधि पाऊँ।
नित व्यवहार रतनत्रय बल से, निश्चय शिवपथ पाऊँ।।
वीतराग निश्चयरत्नत्रय, निर्विकल्प निज आत्मा।
परमसमाधि में तन्मय हो, बनूँ सिद्ध परमात्मा।।5।।

यही कामना पूरी करिये, कल्पवृक्ष सम दाता।
त्रिभुवन की संपत देने में, तुम हो जग विख्याता।।
प्रभु अज्ञानमती हर मेरी सम्यग्ज्ञान प्रकासो।
पुनरपि केवल ''ज्ञानमती'' कर ज्ञानभानु घट भासो।6।

दोहा

गणपति नरपति सुरपती, खगपति रुचि मन धार।
त्रिभुवनपति गुणगणमणी, तुम गुण गावत सार।।7।।

ॐ ह्रीं कुण्डलपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-26

रुचकगिरि जिनालय पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

वर द्वीप तेरहवां रुचकवर, बहुरुचिक विख्यात है।
इस मध्य वलयाकार सुंदर, रुचकवर नग ख्यात है।।
योजन चुरासी सहस विस्तृत, तुंग भी इतना कहा।
चारों दिशा के जिनभवन को, भक्ति वश पूजूँ यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थिततुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थिततुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थिततुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक राग टप्पा-मोहिराखो हो शरना.... –

सुरसरिता का मुधर सलिल ले, कनक कलश में भरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आवो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज केशर गंध सुगंधित, कनक कटोरी भरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आवो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।2।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

उज्जवल तंदुल धोय अखंडित, पुंज चरण डिग धरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आवो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।3।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद कमल मचकुंद चमेली, ले आयो तुम चरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आवो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।4।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर आदिक, कनक थाल में भरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आवो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।5।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक में कूर्पर जलाकर, अंतरंग तम हरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आवो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।6।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित अग्निपात्र में, खेवत ही अघ हरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आवो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।7।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल सेव कपित्थ सुपारी, पूर्ण थाल फल भरना।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आवो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।8।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सलिल गंध अक्षत आदिक ले, अर्घ्य करूँ जिन चरणा।
रुचकवराचल चारों दिश में, जिनगृह पूजन करना।।
मैं आवो तुम शरणा, श्री स्वयंसिद्ध जिनराजजी।।9।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

जिनपद सरसिज मांहि, मैं जल से धारा करूँ।
भव जल को जल देय, परम शांति पाऊँ सदा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार सुलेय, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
आतम गुण की सुरभि, फैले चारों दिश विषें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

चिच्चेतन चिंतामणी, अनुपम सुख दातार।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, मिले सर्व सुखसार।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

गीता छंद

जो मुक्तिकन्या परिणयन हित, अतुल मंडप सम दिखे।
जिनवर जिनालय सासता, मुनिगण जहाँ निजरस चखें।।

जल गंध आदिक अर्घं लेकर, पूजते सब सुख मिले।
मन कामना सब पूर्ण हों, भविजन हृदय सरसिज खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितपूर्वदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्न कंचन से जड़ित, शाश्वत जिनालय सोहता।
पर्वत रुचकवर के उपरि, दक्षिणदिशी मन मोहता।।
जल गंध आदिक अर्घ लेकर, पूजते निधियाँ मिलें।
मन कामना सब पूर्ण होकर, हृदय की कलियां खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितदक्षिणदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस रुचकपर्वत के उपरि पश्चिम दिशा में जानिये।
वर सिद्धकूट सुवर्णमय पर, जैन मंदिर मानिये।।
जल गंध आदिक लेकर, पूजते निधियां मिलें।
मन कामना सबपूर्ण होकर हृदय की कलियां खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितपश्चिमदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौ इंद्र से पूजित चरण पंकज जिनेश्वर देव हैं।
ईप्सित पदारथ हेतु भविजन, करें तुमपद सेव हैं।।
नगरुचकगिरि उत्तरदिशीजिनगृह जजत निधियाँ मिलें।
मनकामना सब पूर्ण होकर हृदय की कलियाँ खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितउत्तरदिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

इस तेरवें पर्वत उपरि चारों दिशी जिनधाम हैं।
ये विघ्न पर्वत चूर्ण हेतू, वज्रसम सुखधाम हैं।।

जल गंध आदिक लेकर, पूजते निधियां मिलें।
मन कामना सबपूर्ण होकर हृदय की कलियां खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन चार जिनवर धाम में, जिनमूर्तियाँ मणिरत्न की।
सब चार सौ बत्तीस हैं, सुर अप्सरायें वंदतीं।।
जल गंध आदिक लेकर, पूजते निधियां मिलें।
मन कामना सबपूर्ण होकर हृदय की कलियां खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

रुचकवराद्रि स्वर्णमय, महातीर्थ महनीय।
गाऊँ जयमाला सुखद, महाताप हरणीय।।1।।

शंभु छंद

वर द्वीप तेरहवें के मधि में, स्वणभि रुचकवर अद्री है।
योजन चौरासी सहस तुंग, इतना ही विस्तृत अद्री है।।
इसपे सु चवालिस दिव्यकूट, जिनका वर्णन है मन भाता।
पूरब दिश आठ सूकूट जहां, दिक्कन्याओं का नित दाता।।1।।

विजया विजयंत जयंता अरु अपराजित नंदा नंदवती।
नंदौत्तर नंदीषेणा जिनजन्मोत्सव में झारी धरती।।
दक्षिण दिश आठ कूट ऊपर, इच्छा रु समाहार देवी।
सुप्रकीर्णा यशोधरा लक्ष्मी, अर शेषवती चित्रगुप्ता भी।।2।।

अष्टम हैं वसुंधरा देवी, ये दिक्कन्यायें रहती हैं।
जिन जन्मकल्याणक में आकर, दर्पण को धारण करती हैं।।
पश्चिम के आठ कूट ऊपर, हैं इला सुरादेवी पृथ्वी।
पद्मा अर इकनासा नवमी, सीता भद्रा आठों देवी।।3।।

जिन जन्मोत्सव में जिनमाता, के ऊपर छत्र लगाती हैं।
उत्तरदिश आठों कूटों की, दिक्कन्या चंवर ढुलाती हैं।।
इन नाम अलंभूषा दूजी, मिश्रकेशि तथा पुंडरीकिणी हैं।
वारुणी रु आशा सत्या ह्री, श्रीदेवी ये अतिरुपिणि हैं।।4।।

इन कूट वेदि के अभ्यंतर, उत्तर दिश में क्रम से जानों।
वर चार महाकूटों पे भी, दिक्कन्याओं को पहचानों।।
सौदामिनि इनका शत्रपदा, औ कनकसुचित्रा रहती हैं।
जिनजन्म कल्याणक में ये सब, दशदिश को निर्मल करती हैं।।5।।

इन कूटो अभ्यंतर भागे, पूर्वादि दिशाओं के क्रम से।
चारों कूटों पे दिक्कन्या, रहती हैं अगणित वैभव से।।
रुचका औ रुचककीर्ति देवी, सुरुचककांता अर रुचकप्रभा।
जिनभवन का ये जातकर्म, करती हैं भक्ति भरित शुभा।।6।।

इन चालीस कूटों की चालिस, देवी जिन जन्म कल्याणक में।
निजनिज परिवार विभव संयुत, बहु पुण्य कमाती हैं सच में।।
इन कूटों के अभ्यंतर में, श्रीसिद्धकूट हैं चार कहे।
जो पूरब दक्षिण अपरोत्तर, चारों दिश मणिमय भास रहे।।7।।

इनपे शाश्वत जिन चैत्यालय, अकृत्रिम जिनवर प्रतिमायें।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें उनको शिव मारग दर्शायें।।
मैं भी श्रद्धा से आ करके, जिनवर की पूजन करता हूँ।
निज केवल 'ज्ञानमती' हेतू, सब विघन करम को हरता हूँ।।8।।

दोहा

अचर रुचकवर चारदिश, जिनवर भवन विशाल।
विघ्नहरण मंकलकरण, नमूँ नमूँ नत भाल।।9।।

ॐ ह्रीं रुचकवरपर्वतस्थितचतुर्दिक्सिद्धकूटजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-27

व्यंतरदेव जिनालय पूजा

अथ स्थापना-गीता छंद

व्यंतर सुरों के गेह में जिनधाम शाश्वत स्वर्ण के।
प्रत्येक में जिनबिंब इक सौ आठ शाश्वत रत्न के।।
सब असंख्याते जैन मंदिर जैनप्रतिमा को जजूँ।
आह्वान कर पूजूँ यहाँ निज आत्मसुख संपति भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक-स्रग्विणी छंद –

नीर गंगा नदी का भरा भृंग में।
तीन धारा करूँ नाथ के चर्ण में।।
व्यंतरों के यहाँ जैनमंदिर दिपें।
रतनमय बिंब को पूजते भव खिपे।।1।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णरस के सदृश गंध सौगंध्य ले।
नाथ के पाद अरविंद चर्चूं भले।।
व्यंतरों के यहाँ जैनमंदिर दिपें।
रतनमय बिंब को पूजते भव खिपे।।2।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि अक्षत धुले थाल भरके लिये।
पुंज से पूजहूँ आत्मसुख के लिये।।
व्यंतरों के यहाँ जैनमंदिर दिपें।
रतनमय बिंब को पूजते भव खिपे।।3।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद मंदार चंपा चमेली चुने।
पादपंकज जजूँ इष्ट सुख हों घने।।
व्यंतरों के यहाँ जैनमंदिर दिपें।
रतनमय बिंब को पूजते भव खिपे।।4।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपूआ अंदरसा भरे थाल में।
व्यंजनों से जजूँ तृप्ति हो स्वात्म में।।
व्यंतरों के यहाँ जैनमंदिर दिपें।
रतनमय बिंब को पूजते भव खिपे।।5।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्योति कर्पूर की ज्वाल आरति करूँ।
मोहतम नाश के दिव्य भारति भरूँ।।
व्यंतरों के यहाँ जैनमंदिर दिपें।
रतनमय बिंब को पूजते भव खिपे।।6।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशगंध खेऊँ अगनि पात्र में।
कर्म की भस्म हो नाथ के पास में।।

व्यंतरों के यहाँ जैनमंदिर दिपें।
रतनमय बिंब को पूजते भव खिपे।।7।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम्र दाड़िम अनंनास ले थाल में।
आप को पूजते मोक्षफल आप में।।
व्यंतरों के यहाँ जैनमंदिर दिपें।
रतनमय बिंब को पूजते भव खिपे।।8।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि ले अर्घ अर्पण करूँ।
रत्नत्रय हेतु स्वातम समर्पण करूँ।।
व्यंतरों के यहाँ जैनमंदिर दिपें।
रतनमय बिंब को पूजते भव खिपे।।9।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

हेम भृंग में स्वच्छ जल, जिनपद धार करंत।
तिहुँजग में हो शांतिसुख, परमानंद भरंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली मोंगरा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले आत्मसुखसार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

व्यंतरनिलय असंख्य, जिनगृह संख्यातीत हैं।
जिनवर बिंब असंख्य, पुष्पांजलि से पूजहूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि रत्नप्रभाखरपंकभागे मध्यलोके सर्वत्र च पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

किन्नर के दश कुल भेदों में, किंपुरुष व किन्नर हृदयंगम।
सुर रूपपालि किन्नर किन्नर, आनिंदित मनोरम किन्नरोत्तम।।
रतिप्रति अरु ज्येष्ठ सुदश इनमें, किंपुरुष व किन्नर अधिपति हैं।
किंपुरुष इंद्र के असंख्यात जिनगृह को मेरा वंदन है।।1।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवेषु किंपुरुषेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नर अधिपति के असंख्यात, जिननिलय अकृत्रिम माने हैं।
सामानिक आदि देव के भी, अगणित जिनमंदिर माने हैं।।
इन मंदिर का वंदन पूजन, भावों से करते भविजन हैं।
जिनबिंब एकसौ आठ-एक सौ आठ, सभी को वंदन है।।2।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवेषु किन्नरेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किंपुरुष सुरों के दशविध में, पुरुष रु पुरुषोत्तम सत्पुरुषा।
महापुरुष पुरुषप्रभ अतीपुरुष, मरु पुन मरुदेव सु मरुप्रभा।।
सुर यशस्वान् इनमें अधिपति, सत्पुरुष और महापुरुष द्वि हैं।
सत्पुरुष इंद्र के असंख्यात, जिनगृह को मेरा वंदन हैं।।3।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषदेवेषु सत्पुरुषेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापुरुष इंद्र के असंख्यात, जिनमंदिर मणिमय शाश्वत हैं।
इन सुर के द्वीप समुद्रों में, आवास भवनपुर भासत हैं।।
इन मंदिर का वंदन पूजन, भावों से करते भविजन हैं।
जिनबिंब एकसौ आठ एक सौ, आठ सभी को वंदन है।।4।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषदेवेषु महापुरुषेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव महोरग के भुजंग अरु, भुगंज शालि सु महातनु हैं।
अतिकाय स्कंधशाली मनहर, अशनीजव तथा महेश्वर हैं।।

गंभीर और प्रियदर्शन ये दशविध में दोय इंद्र मानें।
महाकाय और अतिकाय प्रथम के असंख्य जिनगृह पूजूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं महोरगदेवेषु महाकायेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिकाय इंद्र के असंख्यात आवास भवनपुर होते हैं।
उन सबमें जिनमंदिर सुंदर जिनप्रतिमा संयुत होते हैं।।
इन मंदिर का वंदन पूजन, भावों से करते भविजन हैं।
जिनबिंब एकसौ आठ एकसौ आठ सभी को वंदन है।।6।।

ॐ ह्रीं महोरगदेवेषु अतिकायेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधर्व देव के दशविध में, हाहा हू हू नारद तुंबर।
वासव रु कदंब महास्वर अरु हैं, गीतरती गीतरस सुर।।
फिर वज्रवान इनमें अधिपति सुर गीतरती व गीतरस हैं।
सुर इंद्र गीतरति के असंख्य, जिनगृह उनको नित वंदन है।।7।।

ॐ ह्रीं गंधर्वदेवेषु गीतरतिइन्द्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्र गीतरस के असंख्य, जिनभवन अकृत्रिम स्वर्णिम हैं।
गणधर मुनिगण चारण ऋषिगण करते परोक्ष ही वंदन हैं।।
इन मंदिर का वंदन पूजन, प्रत्यक्ष करें भक्तिक सुर हैं।
जिनबिंब एकसौ आठ-एकसौ आठ सभी को वंदन है।।8।।

ॐ ह्रीं गंधर्वदेवेषु गीतरसेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षों के बारह भेद उन्हीं के माणिभद्र अरु पूर्णभद्र।
शैलभद्र मनोभद्र रु भद्रक सुभद्र यक्ष हैं सर्वभद्र।।
मानुष धनपाल स्वरूपयक्ष यक्षोत्तम मनोहरण सुर हैं।
मणिभद्र पूर्णभद्र इंद्र प्रथम के असंख्य जिनगृह पूजूँ मैं।।9।।

ॐ ह्रीं यक्षदेवेषु माणिभद्रइन्द्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधाम अकृत्रिम पूर्णभद्र अधिपति के असंख्यात ही हैं।
आवास भवनपुर सुरगृह में जिनमंदिर असंख्यात ही हैं।।
इन मंदिर की स्तुति करते आतमरसपायी मुनिगण हैं।
जिनबिंब एकसौ आठ एकसौ आठ सभी को वंदन हैं।।10।।

ॐ ह्रीं यक्षदेवेषु पूर्णभद्रइन्द्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षस सुर सात भेद भीम महाभीम विनायक उदक कहें।
राक्षस राक्षस राक्षस व ब्रह्मराक्षस इनमें दो इंद्र रहें।।
देवेन्द्र भीम के असंख्यात आवास भवनपुर भवन भि हैं।
इन सबमें जिनगृह असंख्यात उन सबको मेरा वंदन हैं।।11।।

ॐ ह्रीं राक्षसदेवेषु भीमेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षसकुल अधिपति महाभीम, के असंख्यात जिनमंदिर हैं।
निज आत्मध्यान में रत मुनिवर, इनके वंदन में तत्पर हैं।।
जिनमंदिर जिनप्रतिमाओं की हम नित प्रति अर्चा करते हैं।
जिन भक्ती भववारिधि नौका इस पर चढ़ भवदधि तरते हैं।।12।।

ॐ ह्रीं राक्षसदेवेषु महाभीमेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूतों के कुल में सात भेद, उनमें स्वरूप प्रतिरूप मुख्य।
भूतोत्तम अरु प्रतिभूत महाभूत रु प्रतिच्छन्न आकाश भूत।।
अधिपति स्वरूप के असंख्यात जिनमंदिर शाश्वत स्वर्णमयी।
उन सबमें जिनप्रतिमा अनुपम, सुर वंद्य अकृत्रिम रत्नमयी।।13।।

ॐ ह्रीं भूतदेवेषु स्वरूपेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिरूप इंद्र के असंख्यात, जिनमंदिर शाश्वत अनुपम हैं।
जो पूजें ध्यावें भक्ति करें, वे पावें सुख निधि अनुपम हैं।।

मुनिगण जिनप्रतिमा को ध्याते निजकर्म कालिमा धोते हैं।
हम पूजें अर्घ चढ़ा करके, जिनबिंब पुण्यप्रद होते हैं।।14।।

ॐ ह्रीं भूतदेवेषु प्रतिरूपेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर पिशाच वक्कल चौरह विध, कूष्मांड यक्ष राक्षस संमोह।
तारक अशुची अरु काल महाकाल रु शुचि सहतालक सुदेह।।
महादेह तूष्णीक रु प्रवचन इनमें दो इंद्र कहाये हैं।
अधिपती काल के असंख्य जिनगृह पूजत पाप नशाये हैं।।15।।

ॐ ह्रीं पिशाचदेवेषु कालइन्द्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर महाकाल के असंख्यात, जिनमंदिर अतुल विभव धारें।
सुरगण पिशाच सम्यग्दृष्टी पूजें बहु भक्ति हृदय धारें।।
मिथ्यादृष्टी कुलदेव मान करके भी पूजा करते हैं।
हम पूजें जिनप्रतिमाओं को पूजत भवि पातक हरते हैं।।16।।

ॐ ह्रीं पिशाचदेवेषु महाकालेंद्रस्य असंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

इस रत्न प्रभा[1]भू के पहले, खर भाग में भवन भूतसुर के।
ये चौदह सहस कहें पुनि पंकभाग में भवन राक्षसों के।।
वे सोलहहजार हैं पुनरपि किन्नर आदिक के गृह भूपर।
इन सबमें जिनगृह जिनप्रतिमा मैं पूजूँ अंजलि मस्तक धर।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके भूतराक्षसदेवभवनस्थितत्रिंशत्सहस्रजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन आठ प्रकार व्यंतरों के अगणीत 'भवनपुर'[2] माने हैं।
ये असंख्यात द्वीपों व समुद्रों में स्थित मुनि जाने हैं।।

---

1. त्रिलोकसर गाथा, 290। 2. त्रिलोकसार गाथा, 294।

इन सबमें असंख्यात जिनगृह सबमें इक शत अठ जिनप्रतिमा।
मैं पूजूँ ध्याऊँ भक्ति करूँ जिनदेव देव की बहु महिमा।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टविधव्यंतरदेवभवनपुरस्थितअसंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तालाब व पर्वत वृक्षादिक इन पर व्यंतर 'आवास' बने।
ये मध्यलोक में असंख्यात द्वीपों व समुद्रों तक गिनने।।
इनमें जिनमंदिर असंख्यात मैं अर्घ चढ़ाकर नित पूजूँ।
निज पर का भेद ज्ञान पाकर सब जन्म मरण दुख से छूटूँ।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टविधव्यंतरदेवआवासस्थितअसंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंतर देवों के निलयों में जिनगृह में जिनप्रतिमा सुंदर।
सब रत्नमयी है असंख्यात उन भक्ती भविजन क्षेमंकर।।
मैं बहिरातमता को तजकर अंतर आतम का ध्यान करूँ।
इन पूजा संस्तुति कर करके परमात्म अवस्था प्राप्त करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टविधव्यंतरनिलयस्थितअसंख्यातजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाह।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चैत्यवृक्ष अर्घ्य

चाल-हे दीन.....

किन्नर सुरों का चैत्यवृक्ष तरु 'अशोक' है।
इस मूल चउर्दिश में चार-चार बिंब हैं।।
पर्यंक आसनों से प्रातिहार्य समेता।
मैं चैत्यवृक्ष बिंब नमूँ भाव समेता।।1।।

ॐ ह्रीं किन्नरदेवअशोकचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह।

सुर किंपुरुष के 'चंपाद्रुम' चैत्यवृक्ष कहा।
प्रत्येक दिशा में चउ चउ जिनबिंब युत अहा।।

जिनबिंब प्रातिहार्य सहित रत्नमयी हैं।
मैं चैत्यवृक्ष नित्य नमूँ सौख्यमही हैं।।2।।

ॐ ह्रीं किंपुरुषदेवचंपकचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह।

है चैत्यवृक्ष 'नागवृक्ष'[1] महोरगों में।
चारों दिशा में चार चार जैनबिंब हैं।
ये दर्शमात्र से समस्त पाप हरे हैं।
जो वंदना करें वे पुण्यराशि भरे हैं।।3।।

ॐ ह्रीं महोरगदेवनागद्रुमचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह।

गंधर्व देव यहाँ चैत्यतरू 'तुंबरू'।
उनके समस्त बिंब की मैं अर्चना करूँ।।
ये देव सातस्वर में नाथ कीर्ति गावते।
जो पूजते इन्हें वे सर्व सौख्य पावतै।।4।।

ॐ ह्रीं यक्षदेवन्यग्रोधचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह।

राक्षस सुरों में 'कंटक' तरु चैत्यवृक्ष ह।
उसमें जिनेन्द्र प्रतिमा रत्नाभ स्वच्छ हैं।।
पूजूँ उन्हें रुची से वे रोग शोकहर।
वंदूँ उन्हें सदा ही वे ज्ञान सौख्यकर।।6।।

ॐ ह्रीं राक्षसदेवकंटकतरुचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह।

'तुलसीतरु' है चैत्यवृक्ष भूतसुरों में।
हैं चार-चार बिंब इसके मूल भाग में।।
मैं भक्ति से अनंतबार वंदना करूँ।
निजात्मलब्धि हेतुमात्र प्रार्थना करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं भूतदेवतुलसीवृक्षचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह।

---

1. नागकेसर।

व्यंतर पिशाच के 'कदंब' चैत्यवृक्ष हैं।
गणधर मुनीश वंदे उन चित्त स्वच्छ हैं।।
शीश को नमाऊँ मैं चरणारविंद में।
व्यंतर उपद्रवादी सब दूर हो क्षण में।।8।।

ॐ ह्रीं पिशाचदेवकदंबतरुचैत्यवृक्षस्थितषोडशजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

व्यंतर के आठ चैत्यतरु में इकसौ अट्ठाइस जिनप्रतिमा।
ये रत्नमयी शाश्वत अनुपम अठ प्रातिहार्य संयुत प्रतिमा।।
इनकी भक्ती पूजा करते, भवभव के पाप अनंत टले।
दुख रोग शोक दारिद्र नशें संपूर्ण मनोरथ फलें भले।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टविधव्यंतरदेवनिलयसंबंधिअष्टचैत्यवृक्षस्थितअष्टाविंशत्युत्तरशत जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक जिनेन्द्र बिंब सन्मुख, मानस्तंभ एक एक सुंदर।
ये तीन पीठ ऊपर स्थित, परकोटे तीन साहित मनहार।।
घंटा किंकिणि मोतीमाला ध्वज चंबर छत्र से संयुत हैं।
प्रतिदिश में जिप्रतिमायें हैं मैं उन्हें जजूँ वे सुखप्रद हैं।।2।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवचैत्यवृक्षस्थितजिनबिंबसन्मुखएकशतअष्टाविंशतिमानस्तंभ सर्वजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

व्यंतर देवों के यहां, असंख्यात जिनधाम।
रत्नमयी प्रतिमा वहां, कोटी कोटि प्रणाम।।1।।

गीता छंद

जैवंत हों अकृत्रिम जिनालय स्वर्ण चांदी रत्न के।
जैवंत हों जिनबिंब मणिमय सौम्यछवि सुर वंदते।।

जैवंत हो सबचैत्यतरु जिनबिंब अनुपम रत्न के।
जैवंत मानस्तंभ हों सौइंद्र जिनको वंदते।।2।।

व्यंतर सुरों के आठ विध किन्नर दुतिय किंपुरुष हैं।
सुर महोरय गंधर्व यक्ष राक्षस व भूत पिशाच हैं।।
प्रत्येक में दो दो अधिप ये आठ द्वीपों में रहें।
समभूमि में इन इंद्र के वहं पाँच पाँच नगर कहे।।3।।

द्वीपांजनक में दक्षिणी दिश किंपुरुष अधिपति रहें।
इस द्वीप के उत्तर दिशा में इंद्र किन्नर नगर हैं।।
पुनि वज्रधातुक द्वीप के दक्षिण अधिप सत्पुरुष हैं।
उत्तर दिशा में महापुरुष अधीश निजपुर वसत हैं।।4।।

सुवर्णद्वीप सुदक्षिणी दिश महाकाय अधीश हैं।
उत्तरदिशी अतिकाय इंद्र बसें जजें जिनईश हैं।।
पुनि मनः शिलक सुद्वीप में सुर गीतरति दक्षिणदिशी।
सुर गोतयश हैं इंद्र रहते वहीं पे उत्तरदिशी।।5।।

वर वज्रद्वीप सुदक्षिणी दिश माणिभद्र अधिप रहें।
उत्तर दिशा में पूर्णभद्र सुरेन्द्र निजपुर में रहें।।
भीमेंन्द्र रजत सुद्वीप दक्षिण में रहें जिनभक्त हैं।
उत्तर दिशा में महाभीम अधीश नित निवसंत हैं।।6।।

हिंगुलक द्वीप सुदक्षिणीदिश इंद्र नाम सुरूप हैं।
उत्तर दिशी प्रतिरूप स्वामी के नगर अभिरूप हैं।।
हरितालद्वीप सुदक्षिणी दिश काल इंद्र निवास है।
उत्तर दिशा में महाकाल सुरेन्द्र का अधिवास है[1]।।7।।

व्यंतरनिवास त्रिविध भवनपुर भवन पुनि आवास हैं।
उत्कृष्ट गृह के मध्य कूट सुशोभिते स्वर्णीभ हैं।।
ये तीनसौ योजन सुविस्तृत शतक योजन तुंग हैं।
लघुगृहों में इक कोश चौड़े इकबढ़े[2] त्रय तुंग हैं।।8।।

1. इन आठ द्वीपों में निवास का कथन तिलोयपण्णत्ति व त्रिलोकसार में है। 2. 1/3 कोश ऊँचे हैं।

इन कूट ऊपर रत्न चांदी स्वर्णमय जिनधाम हैं।
प्रतिधाम इकसौ आठ प्रतिमा शाश्वती रत्नाभ है।।
झारी कलश दर्पण ध्वजा चामर व्यजन[1] त्रयछत्र हैं।
ठोना ये इकसौ आठ-आठ प्रतेक मंगलद्रव्य हैं।।9।।

जिनभवन में घंटा मृदंगी दुंदुभी वीणा बजे।
सिंहसनों पे जैनप्रतिमा पद्मआसन से दिपें।।
सम्यक्त्वधारी देव अतिशय भक्ति से वंदन करें।
'कुलदेवता' है समझ मिथ्यादृष्टि भी प्रणमन करें।।10।।

धन धन्य हैं वे भव्य जो सुरगृह जिनालय वंदते।
धन धन्य उन जीवन सफल वे पाप पर्वत खंडते।।
जिनराज पाद प्रसाद से तब तक हृदय में भक्ति हो।
जब तक न निजपद मिले मुझको रत्नत्रय नहि व्यक्त हो।।11।।

घत्ता

जय जय जिन आलय, सर्व सुखालय, व्यंतरसुर के रत्नमयी।
जय ज्ञानमती मुझ, पूर्ण करो शुभ, हो जाऊँ प्रभु मृत्युजयी।।12।।

ॐ ह्रीं व्यंतरदेवभवनभवनपुरआवासस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

1. पंखा।

पूजा नं.-28

ज्योतिष्कदेव जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

पृथ्वी से सात शतक नब्बे योजन ऊपर ज्योतिषसुर हैं।
रवि शशि ग्रह नक्षत्र और तारे ये पाँच भेद ज्योतिषसुर हैं।।
सबके विमान में जिनमंदिर मणिमय शाश्वत जिनप्रतिमायें।
उनको आह्वानन कर पूजूँ ये मोक्षमार्ग को दिखलायें।।1।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक-भुजंगप्रयात छंद –

पयोसिंधु का नीर झारी भराऊँ।
प्रभू के चरण तीन धारा कराऊँ।।
रवी चंद्र ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।1।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधित चंदन घिसा भर कटोरी।
चढ़ाऊँ चरण में कटे कर्म डोरी।।
रवी चंद्र ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।2।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुले शालि तंदुल धरूँ पुंज आगे।
मिले आत्म संपति सभी दुःख भागें।।
रवी चंद्र ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।3।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोंगरा केवड़ा पुष्प लाऊँ।
प्रभू चर्ण में अर्प्य निजसौख्य पाऊँ।।
रवी चंद्र ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।4।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ सेमई खीर लाडू बनाके।
प्रभू को चढ़ाऊँ क्षुधा व्याधि नाशे।।
रवी चंद्र ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।5।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिखा दीप की जगमगे ध्वांत नाशे।
करूँ आरती ज्ञान की ज्योति भासे।।
रवी चंद्र ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।6।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगनि पात्र में धूप खेऊँ सुगंधी।
जलें कर्म फैले सुयश की सुगंधी।।

रवी चंद्र ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।7।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास अंगूर फल थाल भरके।
चढ़ाऊँ तुम्हें मोक्ष फल आश धरके।।
रवी चंद्र ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।8।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिला अर्घ में स्वर्ण चांदी कुसुम को।
चढ़ाऊँ तुम्हें आत्मनिधि पूर्ण कर दो।।
रवी चंद्र ग्रह और नक्षत्र तारे।
इन्हों में जिनालय जजूँ भक्ति धारे।।9।।

ॐ ह्रीं ज्योतिष्कदेवविमानस्थितसंख्यातीतजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

हेम भृंग में स्वच्छ जल, जिनपद धार करंत।
तिहुँजग में हो शांतिसुख, परमानंद भरंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली मोंगरा, सुरभित हरसिंगार।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले आत्म सुखसार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

ज्योतिर्मय जिनधाम, ज्योतिष देवों के यहाँ।
नितप्रति करूँ प्रणाम, पुष्पांजली चढ़ाय के।।।1।।

इति मध्यलोके ज्योतिर्विमानस्थानेषु पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

यह शशि विमान है तीन सहस छहसौ बाहत्तर मील कहा।
सब ढाई द्वीप के शशिविमान इकसौ बत्तिस मुनिनाथ कहा।।
ये भ्रमणशील अर्ध गोलक इन समतल मध्य कूट शोभे।
उस पर जिनमंदिर शाश्वत हैं हम पूजें गुणमणि से शोभें।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिएकशतद्वात्रिंशत्चन्द्रविमानस्थितएतावतजिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भास्कर विमान शशि से छोटे ये जंबूद्वीप में दो ही हैं।
लवणोदधि में चउ धातकि में बारह कालोदधि ब्यालिस हैं।।
वरपुष्करार्ध में बाहत्तर सब मिल कर इकसौ बत्तिस हैं।
इन सबके मध्य जिनालय हैं उनको पूजूँ वे शिवप्रद है।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिएकशतद्वात्रिंशत्सूर्यविमानस्थितएतावतजिनमंदिर जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक चंद्र इंद्र के अट्ठासी ग्रह अर्ध गोल सम चमक रहें।
ग्यारह हजार छह सौ सोलह ये ढाई द्वीप ग्रह बिंब कहे।।
इन ग्रह विमान के मध्य कूट उन पर जिनमंदिर शाश्वत हैं।
इन सब जिनमंदिर को पूजूँ, ये जिनप्रतिमा से भासत हैं।।3।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिएकदशसहस्रषट्शतषोडशग्रहविमानस्थितएतावत् जिनमंदिरजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक चंद्र इंद्र के अट्ठाइस नक्षत्र अर्ध गोलक सम हैं।
सब ढाई द्वीप में तीन सहस छह सौ छियानवे नक्षत्र हैं।।
ये ढाई द्वीप में भ्रमण करें इन सब विमान में जिनगृह हैं।
उन सबको पूजूँ भक्ती से जिन भक्ती अतिशय सुखप्रद हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधित्रयसहस्रषट्शतषण्णवतिनक्षत्रविमानस्थितएतावत् जिनमंदिरजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक चंद्र के छ्यासठ सहस्र नौ सौ पछत्तर कोड़ा कोड़ी।
तोर हैं सब इक सौ बत्तिस गुणिते जितने कोड़ा कोड़ी।।

अठयासि लाख चालिस हजार सुसात शतक कोड़ा कोड़ी।
ये ढाई द्वीप के ताराओं के जिनगृह जजूँ हाथ जोड़ी।।5।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिअष्टाशीतिलक्षचत्वारिंशत्सहकोटिकोटिप्रकीर्णक तारकाविमानस्थितएतावत्जिनमंदिरजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

इन ज्योतिष सुर में चंद्र इंद्र भास्कर प्रतीन्द्र मोन जाते।
ग्रह अट्ठासी नक्षत्र अठाइस शशि के परिकर कहलाते।।
छचासठ हजार नवसौ पचहत्तर कोड़ा कोड़ी तारे हैं।
ये एक चंद्र परिवार इसीविध ढाईद्वीप के सारे हैं।।1।।

दोहा

ढाई द्वीप में एकसौ बत्तीस चंद्र विमान।
सबके परिकर पूर्ववत्, सबमें जिनवर धाम।।
नमूँ नमूँ कर जोड़ के शीश नमाकर आज।
प्रतिगृह इकसौ आठ जिनबिंब नमूं सुखकाज।।3।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपद्वयसमुद्रसंबंधिएकशतद्वात्रिंशत् चंद्रविमानएतत्परिवारविमान स्थितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

स्थिर ज्योतिषसुर जिनालय अर्घ्य

कुसुमलता छंद

अचल मानुषोत्तर से आगे, पुष्करार्ध में चंद्रविमान।
प्रथमवलय में इक शत चौवालिस,सब आठ वलय कुल जान।।
चार-चार बढ़ते वलयों में सब मिल बारह सौ चौंसठ।
गमन नहीं करते ये स्थिर सबमें जिनगृह पूजत ठाठ।।1।।

पुष्करवर समुद्र में बत्तिस वलय प्रथम में दूने जान।
अंतिम वलय चंद्र से दूने आगे द्वीप वलय प्रथमान[1]।।2।।

1. वलय प्रथम में।

इसविध बढ़ते बढ़ते असंख्य द्वीप जलधि तक चंद्रविमान।
असंख्यात हैं स्थिर इनके सब जिनधाम जजूँ सुखदान।।3।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वताद्बहिरसंख्यातद्वीपसमुद्रपर्यंतस्थिरचंद्रविमानस्थित असंख्यातजिनमंदिरजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचल मानुषोत्तर से बाहर द्वीप समुद्र असंख्यों जान।
एक एक लाख योजन पर एक एक हैं वलय महान।।
द्वीप जलधि के अंतवलय से आगे प्रथम वलय का मान।
द्विगुण द्विगुण सब सूर्यबिंब में जिनवरधाम जजूँ अमलान।।4।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वताद्बहिरसंख्यातद्वीपसमुद्रपर्यंतस्थिरसूर्यविमानस्थित असंख्यातजिनमंदिरजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक एक शशि से अट्ठासी अट्ठासी ग्रह संख्यातीत।
असंख्यात द्वीपों तक फैले ज्योतिषसुर विमान अगणीत।।
सबहिं बिमान अर्धगोलक सम सबके मध्य अकृत्रिम कूट।
उन पर जिनवर भवन अकृत्रिम पूजत मिले मोह से छूट।।5।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वताद्बहिरसंख्यातद्वीपसमुद्रपर्यंतस्थिर असंख्यातग्रह विमानस्थितअसंख्यातजिनमंदिरजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक एक शशि के अट्ठाइस, अट्ठाइस नक्षत्र वखान।
संख्यातीत द्वीप वारिधि तक, फैले ज्योतिर्मयी विमान।।
इनमें ज्योषिसुर रहते हैं, सब विमान में जिनवर धाम।
सम्यग्दृष्टि कर्मक्षयार्थ पूजें मैं भी करूँ प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वताद्बहिरसंख्यातद्वीपसमुद्रपर्यंतस्थिरअसंख्यातनक्षत्र विमानस्थितअसंख्यातजिनमंदिरजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक चंद्र परिवार प्रकीर्णक ताराओं के कांत विमान।
छयासठ हजार नव सौ पचहत्तर कोड़ा कोड़ी परिणाम।।
संख्यातीत चंद्र के संख्यातीतहिं तारागण के बिंब।
सब देवों के घर में जिनगृह पूजत नशें कर्म कटुनिंब।।7।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वताद्बहिरसंख्यातद्वीपसमुद्रपर्यंतस्थिर असंख्याततारागण विमानस्थितअसंख्यातजिनमंदिरजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

चंद्र सूर्य ग्रह नखत तारका, ये सब संख्यातीत प्रमाण।
सबके मध्य जिनालय सुंदर शाश्वत शोभे महिमावान।।
प्रतिजिनगृह में प्रतिमा इक सौ आठ-आठ पद्मासन जान।
सब जिनगृह जिनबिंब जजूँ मैं नित नित नव मंगल सुखदान।।1।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वताद्बहिरसंख्यातद्वीपसमुद्रपर्यंतस्थिरअसंख्यातचंद्र रविग्रह नक्षत्रतारकागणविमानस्थितसर्वसंख्यातीतजिनमंदिरजिनप्रतिमोभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा

ज्योतिषदेव विमान के, जिनगृह संख्यातीत।
नमूँ नमूँ कर जोड़ के, बनूँ स्वात्म के मीत।।1।।

गीता छंद

जय जय जिनेश्वर धाम जग में, इंद्र सौ से वंद्य हैं।
जय जय जिनेश्वर मूर्तियाँ, चिंतामणी शुभरत्न हैं।।
जय जय गणाधिप साधुगण नित ध्यावते हैं चित्त में।
जय भव्य पंकज बोध भास्कर मूर्तियाँ रविबिंब में।।2।।

इस भू से इकतिस लाख साठ हजार मील सुगगन में।
तारा विमान सुशोभते नित घूमते हैं अधर में।।
बत्तीस लाख सुमील ऊपर रवि विमान सदा रहें।
पैंतीस लाख सुवीस सहस सुमील पे चंदा रहें।।3।।

नक्षत्र पैंतीस लाख छत्तिस सहस मीलों पे रहें।
बुध लाख पैंतिस सहस बावन मील पे भ्रमते कहें।।
फिर लाख पैंतिस सहस चौंसठ, मील पे ग्रह शुक्र हैं।
पैंतीस लाख सहस छियत्तर मील पर गुरु बिंब हैं।।4।।

मंगल सुपैंतिस लाख अट्ठासी सहस ही मील पे।
शनि ग्रह सुछत्तीस लाख मीलों के उपरि अति उच्च पे।।
चित्राधरा से सात सौ नब्बे से नौ सौ योजनों।
तब एकसौ दस योजनों में ज्योतिषी जग है भणों।।5।।

शशि सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा के विमान नहिं चमकते।
ये अर्ध गोलक सम इन्हीं में सुरनगर में सुर बसें।।
सबसे बड़े शशिबिंब तारा के विमान लघू रहें।
त्रय सहस इक सौ सयेंतालिस मील कुछ अधिकहिं कहें।।6।।

ये बड़े हैं तारा लघू दो सौ पचासहिं मील के।
इनमें बने हैं महल उनमें देवगण रहते सबे।।
ये देव देवी मनुज सम अतिरूपवान वहाँ रहें।
इनके विमानहिं चकमते दिन रात इनसे बने रहें।।7।।

बस पाँचसौदश सही अड़तालिस बटे इकसठ[1] कहे।।
योजनमहा यह जानिये इनका गमन का क्षेत्र है।।
इसमें गली इक सौ तिरासी सूर्य की मानी गईं।
पंद्रह गली हैं चंद्र की दो पक्ष में विचरें यहीं।।8।।

इन सब विमानहिं मध्य में उत्तुंग स्वर्णिम कूट हैं।
उन पर जिनेश्वर भवन शाश्वत शोभते अति पूत[2] हैं।।
सबमें जिनेश्वर बिंब एक सौ आठ इक सौ आठ हैं।
जो देवगण इनको जजें नित भजें मंगल ठाठ हैं।।9।।

जो नर बहुत विध तप तपें बहु पुण्य संचय भी करें।
सम्यक्त्व निधि नहिं पा सकें वे ही यहाँ पर अवतरें।।
जिन दर्श करके तृप्त हों जातिस्मृती वृष श्रवण से।
जिन पंचकल्याणक महोत्सव देखते अन विभव से।।10।।

सम्यक्त्व लब्धी प्राप्तकर निजमें मगन जिनभक्त हों।
भव पंच परिवर्तन मिटा कुछ ही भवों में मुक्त हों।।

1. 510-48/61 महायोजन सर्व ज्योतिषियों का गमनक्षेत्र है। 2. पावन।

सम्यक्त्व निधि अनुपम निधी जिनभक्त ही करते सुलभ।
सुख भोगकर नरतन धरें फिर आत्म निधि उनको सुलभ।।11।।

धन धन्य है यह शुभ घड़ी धन धन्य जीवन सार्थ है।
जिन अर्चना का शुभ समय आया उदय में आज है।।
जिन वंदना से आज मेरे चित्त की कलियाँ खिलीं।
मैं ज्ञानमति विकसित करूँ अब रत्नत्रय निधियाँ मिलीं।।12।।

घत्ता

जय जय जिनमंदिर, भव्य हितंकर, पूजत त्रिभुवन पूज्य बनें।
जय जय जिनप्रतिमा, जिनगुण महिमा, पूजत ही हो सौख्य घने।।13।।

ॐ ह्रीं चंद्रसूर्यग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकताराज्योतिषदेवविमानस्थितसंख्यातीत जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-29

वैमानिक देव जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

ऊर्ध्व लोक में वैमानिक की विमान संख्या मानी है।
चौरासि लाख सत्तानवे हजार तेइस मानी है।।
इन सबमें एक एक जिनगृह शाश्वत मणिमय सुरवंदित हैं।
इन सबमें इकसौ आठ-आठ जिनप्रतिमा पूजूँ शिवप्रद हैं।।1।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकेवैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्र त्रयोविंशतिजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकेवैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्र त्रयोविंशतिजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकेवैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्र त्रयोविंशतिजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक-गीता छंद –

हे नाथ! मेरी ज्ञानसरिता पूर्ण भरदीजे अबे।
इस हेतु जल से आपके पदकमल पूजूँ मैं अबे।।
वैमानिकों के जिनभवन शाश्वत मणीमय शोभते।
उन पूजते निज आत्मगुण संपति मिले मन मोहते।।1।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म में संपूर्ण शीतल सलिल धारी पूरिये।
तुम चरणयुगल सरोज में चंदन चढ़ाऊँ इसिलये।।
वैमानिकों के जिनभवन शाश्वत मणीमय शोभते।
उन पूजते निज आत्मगुण संपति मिले मन मोहते।।2।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अखंडित सौख्यनिधि भंडार भर दीजे प्रभो!।
इस हेतु अक्षत पुंज से मैं पूजहूँ तुम पद विभो!।।
वैमानिकों के जिनभवन शाश्वत मणीमय शोभते।
उन पूजते निज आत्मगुण संपति मिले मन मोहते।।3।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ आत्म गुण सौगंध्यसागर पूर्ण भर दीजे प्रभो!।
इस हेतु मैं सुरभित सुमन ले पूजहूँ तुम पद विभो!।।
वैमानिकों के जिनभवन शाश्वत मणीमय शोभते।
उन पूजते निज आत्मगुण संपति मिले मन मोहते।।4।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरी प्रभो! परिपूर्ण तृप्ती आत्मसुख पीयूष से।
कीजे अतः नैवेद्य से पूजूं चरणयुग भक्ति से।।
वैमानिकों के जिनभवन शाश्वत मणीमय शोभते।
उन पूजते निज आत्मगुण संपति मिले मन मोहते।।5।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञान ज्योती मुझ हृदय में पूर्ण भर दीजे अबे।
मैं अरती रुचि से करूँ अज्ञानतम तुरतहि भगे।।
वैमानिकों के जिनभवन शाश्वत मणीमय शोभते।
उन पूजते निज आत्मगुण संपति मिले मन मोहते।।6।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

मुझ आत्मयश सौरभ गगन में व्याप्तकर दीजे प्रभो!।
इस हेतु खेऊँ धूप मैं कटुकर्म भस्म करो विभो!।।

वैमानिकों के जिनभवन शाश्वत मणीमय शोभते।
उन पूजते निज आत्मगुण संपति मिले मन मोहते।।7।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मगुण संपत्ति को अब पूर्ण भर दीजे प्रभो!।
इस हेतु फल को मैं चढ़ाऊँ आपके सन्निध विभो।।
वैमानिकों के जिनभवन शाश्वत मणीमय शोभते।
उन पूजते निज आत्मगुण संपति मिले मन मोहते।।8।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अनमोल गुण निजके अनंते किस विधी से पूर्ण हों।
बस अर्घ अर्पण करत ही सब विघ्नवैरी चूर्ण हों।।
वैमानिकों के जिनभवन शाश्वत मणीमय शोभते।
उन पूजते निज आत्मगुण संपति मिले मन मोहते।।9।।

ॐ ह्रीं वैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशति जिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

जिनवर पद अरविंद में, धारा तीन करंत।
त्रिभुवन में भी शांति हो, निज गुणमणि विलसंत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिनवर चरण सरोज में, सुरभित कुसुम धरंत।
सुख संतति संपति बढ़े, निज गुण मणि विलसंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

सोरठा

वैमानिक सुविमान, जिनमंदिर पावन वहाँ।
पूजूँ नित धर ध्यान, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

पहले ही सौधर्म स्वर्ग में बत्तिस लाख जिनालय।
गणधर मुनिगण सौ इंद्रों से वंदित सर्व सुखालय।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।1।।

ॐ ह्रीं सौधर्मकल्पस्थितद्वात्रिंशत्लक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय स्वर्ग ऐशान कल्प में लाख अठाइस जानो।
शाश्वत मणिमय जिनमंदिर हैं वंदन कर भव हानो।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।2।।

ॐ ह्रीं ऐशानकल्पस्थितअष्टाविंशतिविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानत्कुमार स्वर्ग में बारह लाख जिनालय सोहें।
ध्वज किंकिणि घंटा चंद्रोपक आदिक से मन मोहें।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।3।।

ॐ ह्रीं सानत्कुमारकल्पस्थितद्वादशलक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथे स्वर्ग माहेंद्रकल्प में आठ लाख जिनधामा।
सुरगण देव अप्सरायें नित गुण गावें अभिरामा।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।4।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्रकल्पस्थितअष्टलक्षतिविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्म ब्रह्मोत्तर स्वर्ग उभय में चार लाख जिनधामा।
आठ द्रव्य मंगलमय शोभें प्रति जिन पास महाना।।

जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।5।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मकल्पस्थितचतुर्लक्षविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लांतव अरु कापिष्ठ स्वर्ग में सहस पचास जिनालय।
शाश्वत रत्नमयी जिनप्रतिमा भविजन हेतु शिवालय।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।6।।

ॐ ह्रीं लावंतकल्पस्थितपंचाशत्सहस्रविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र महाशुक्र उभय स्वर्ग में चालिस सहस जिनालय।
मणिमय रत्नमयी जिनप्रतिमा वंदत सर्व सुखालय।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।7।।

ॐ ह्रीं महाशुक्रकल्पस्थितचत्वारिंशत्सहस्रविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतार अरु सहस्रार कल्प में छह हजार जिनगेहा।
अभिषेक प्रेक्षागृह नर्तन मंडप मंडित गेहा।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।8।।

ॐ ह्रीं सहस्रारकल्पस्थितषट्सहस्रविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनत प्राणत आरण अच्युत चार कल्प में गिनिये।
सात शतक जिनमंदिर शाश्वत वंदत ही भव हनिये।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।9।।

ॐ ह्रीं आनतप्राणतारणाच्युतकल्पस्थित सप्तशतविमानस्थित जिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन अधोग्रैवेयक में जिनगृह इक सौ ग्यारह हैं।
मंगल कलश ध्वजा तोरण से संयुत सुखसागर हैं।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।10।।

ॐ ह्रीं त्रयोधोग्रैवेयकस्थितएकशतएकादशविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यम् ग्रैवेयकत्रय में हैं इकसौ सात जिनालय।
देवच्छंद मध्य जिनप्रतिमा वंदत मिले शिवालय।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।11।।

ॐ ह्रीं त्रयमध्यग्रैवेयकस्थितएकशतसप्तविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपररिमत्रय ग्रैवेयक में जिनमंदिर इक्यानवें हैं।
अहमिंद्रों से सतत पूज्य हैं मुनिगण भी वंदे हैं।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।12।।

ॐ ह्रीं त्रयउपरिमग्रैवेयकस्थितएकनवतिविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव अनुदिश में नवजिनमंदिर मणिमय बिंबसमेता।
सम्यग्दृष्टि अहमिंद्रों से पूजित पुण्य समेता।।
जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।13।।

ॐ ह्रीं नवानुदिशस्थितनवविमानस्थितजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच अनुत्तर में जिनमंदिर पाँच अकृत्रिम सोहें।
अहमिंद्रों से सतत वंद्य ये मुनिगण का मन मोहें।।

जो जन इनकी पूजा करते सर्व उपद्रव चूरें।
निजके ज्ञान दरस वीरज सुख परम सुधारस पूरें।।14।।

ॐ ह्रीं पंचानुत्तरविमानस्थितपंचजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य-शंभु छंद

इंद्रक विमान त्रेसठ मानें इनमें जिनमंदिर अविनश्वर।
अट्ठत्तर सौ सोलह विमान श्रेणीबद्ध में जिनगृह सुंदर।।
चौरासी लाख नवासि सहस इकसौ चौवालिस प्राकीर्णक।
ये सब चौरासी लाख सत्यानवे सहस सुतेइस जिनगृहयुत।।1।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोक त्रिषष्ठिइन्द्रकविमानअष्टस्प्ततिशतशोडशश्रेणीबद्धविमानचतुरशीतिलक्षएकोननवतिसहस्रएकशतचतुश्चत्वारिंशत् प्रकीर्णकविमानसितिसर्वचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रत्रयोविंशतिजिनालेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये कोटि इक्यानवे लाख छियत्तर सहस अठत्तर चार शतक।
चौरासी जिनवर प्रतिमायें मैं मन वच तन से नमूं सतत।।
प्रत्येक जिनालय में ये इकसौ आठ-आठ पद्मासन हैं।
इनकी पूजा वंदन भक्ती दे देती सुख परमानंद हैं।।2।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोके वैमानिकदेवविमानस्थितएकनवतिकोटिषट्सप्ततिलक्षअष्टसप्ततिसहस्रचतुःशतचतुरशीतिजिनप्रातिमीयः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब इंद्रों के गृह के आगे न्यग्रोधवृक्ष अतिशय ऊँचे।
पृथिवीकायिक हैं रत्नमयी ये चैत्यवृक्ष अतिशय शोभें।।
प्रत्येक दिशा में एक एक जिनप्रतिमा रत्नमयी राजें।
इन चैत्यवृक्ष को नित पूजें पूजत ही भव पातक भाजें।।3।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकइंद्रभवनसन्मुखस्थितन्यग्रोधचैत्यवृक्षचतुर्दिक्चतुश्चतुर्जिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय जय तीर्थंकर जिनवर, जय वतीराग सर्वज्ञ प्रभो।
जय जय हित उपदेशी जिनवर, जय परमपिता परमेश्वर भो।।
तुम नाम मंत्र भी अतिशायी तुम प्रतिमायें जन सुखदायी।
जय ऊर्ध्वलोक के जिनमंदिर जिनप्रतिमायें मुनि मन भायीं।।1।।

वैमानिक के कल्पोपपन्न, अरु कल्पातीत भेद दो हैं।
कल्पोपपन्न के बारह विध बारह ही इंद्र-प्रतीन्द्र कहें।।
सौधर्मकल्प ऐशान तथा सानत्कुमार माहेंन्द्र कल्प।
ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर का पंचम वा लांवत कापिष्ठ का छठा कल्प।।2।।

सातवाँ कल्प शुक्र महाशुक्र अष्टम शतार-सहस्रार कल्प।
आनत-प्राणत, आरण-अच्युत इन चार स्वर्ग के चार कल्प।।
बारह कल्पों के द्विदश इंद्र द्वादश प्रतीन्द्र जिनभक्त कहें।
सौधर्म इंद्र सबमें प्रधान जिन पंचकल्याणक में रह है।।3।।

प्रत्येक इंद्र के सामानिक त्रायस्त्रिंश लोकपाल होते।
तनुरक्ष पारिषद अरु अनीक प्राकीर्णक आभियोग्य होते।।
किल्विषक देव सव असंख्यात परिवार देव माने जाते।
निजनिज इंद्रों की आज्ञा से सब वैभव सहित चले आते।।4।।

सत्ताइस कोटी अप्सरियाँ ऐरावत गज पर नृत्य करें।
जब सौधर्मेंद विभव लेकर चलते विस्मय सब विश्व करे।।
कल्पातीतों में ग्रैवेयक नव नव अनुदिश पंचानुत्तर।
इनमें सबहीं अहमिंद्र रहें नहिं देवी हैं नहिं सुर परिकर।।5।।

जो समकित सहित पुण्य करते इन इंद्रों का वैभव पाते।
नंदीश्वर मेरु जिनालय के वंदत करते अति हरषाते।।
जिनवर के पंचकल्याणक में अतिशायी पुण्य कमाते हैं।
तीर्थंकर की भक्ती करके इक भव ले शिवपद पाते हैं।।6।।

दक्षिण के इंद्र-इंद्राणी को मिलता है यह सौभाग्य अहो।
जो जिनभक्ती में दृढ़ रहते वे पा लेते निजराज्य अहो।।
जो जिनमुद्रा धारण करके दृढ़तर चारित्र पालते हैं।
सोलह स्वर्गों के ऊपर में बस वो ही जन्म धारते हैं।।7।।

ये मध्यलोक में नहिं आते वहिं से जिनवंदन करते हैं।
निजगृह के जिनचैत्यालय की पूजा कर आनंद भरते हैं।।
बहुगीत नृत्य संगीत करें जिनगुण कीर्ति को गा गाके।
निजआत्म तत्त्व से प्रीति करें जिनसम निज को भी ध्या ध्याके।।8।।

सौधर्म स्वर्ग में दो सागर कुछ अधिक आयु उत्कृष्ट रहे।
सर्वार्थसिद्धि में तेतिस ही सागर आयु जिनराज कहें।।
सौधर्म स्वर्ग में सात हाथ ऊँचे तनु धारक देव कहें।
सर्वार्थसिद्धि में एक हाथ तनु के ही सुंदर देव रहें।।9।।

सब इंद्र देव निज औपपाद शय्या से जन्म ग्रहण करते।
घंटा ध्वनि आदिक के उठकर क्षण मेंहि अवधिज्ञानी बनते।।
स्नान आदि से हो पवित्र जिनमंदिर में पहले जाते।
नाना स्तुति भक्ति वंदन करते जिनवर को शिर नाते।।10।।

क्षीरोधदि के[1] जल से पूरित इस सहस आठ सुवरण कलशे।
पंकज से ढके इन्हों से सुर जिनबिंबों का सुन्हवन करते।।
मर्दल घंआ दुंदुभि वीणा बहुविध वाद्यों की उच्च ध्वनी।
संगीत गीत नर्तन करते जिनवर गुण गाते मधुर ध्वनि।।11।।

भृंगार कलश दर्पण चामर त्रयछत्र आदि बहु द्रव्यों को।
अर्पण करते अठ मंगलमय शुभ द्रव्य विविध तोरण ध्वज को।।
जल चंदन अक्षत पुष्प चरु दीपक वरधूप सरसफल से।
जिनपूजा करते हर्ष भरे अतिशायी भक्ति करें रुचि से।।12।।

मैं भी जिनमंदिर को पूजूँ वंदूँ ध्याऊँ गुणगान करूँ।
जिनप्रतिमाओं के चरणों में मैं बारंबार प्रणाम करूँ।।

1. तिलोयपण्णत्ति पृ. 855।

प्रभु ऐसी शक्ती दो मुझको निज आत्मसुधारस पान करूँ।
निज के निज ज्ञानमती ज्योती पाकर निजमें विश्राम करूँ।।13।।

दोहा

जय जय जय श्रीजिनभवन, जिनप्रतिमा मुनिवंद्य।
कोटि कोटि वंदन करूँ, पाऊँ परमानंद।।14।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोकेवैमानिकदेवविमानस्थितचतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्र त्रयोविंशतिजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-30

सिद्ध जिनालय पूजा

अथ स्थापना-शंभु छंद

श्री सिद्धशिला नरलोक मात्र पैंतालिस लाख सुयोजन है।
त्रैलोक्य शिखर पर अष्टम भू, पर रुक्मी[1] अर्धचंद्र सम है।।
श्री सिद्ध अनंतानंत इसी पर तिष्ठें अष्टम गुणान्वित हैं।
आह्वानन कर इनको पूजूँ ये देते सौख्य अपरिमित हैं।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक-शंभु छंद –

श्री सिद्ध सुयशसम उज्जवल जल लेकर झारी भर लाया हूँ।
निज समरस सुख पाने हेतू, प्रभू चरण चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्ध शिला पर शीघ्र बसूँ।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्धगुणों सम अतिशीतल चंदन घिसकर ले आया हूँ।
निज की शीतलता पाने को प्रभु चरण चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्ध शिला पर शीघ्र बसूँ।।2।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध सौख्य सम खंड रहित, उज्जवल तंदुल ले आया हूँ।
निज आत्स सौख्य पाने हेतु प्रभु पुंज चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्ध शिला पर शीघ्र बसूँ।।3।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों सम अति सुगंध, पुष्पों को चुनकर लाया हूं।
निज गुण सुगंधि पाने हेतू प्रभु चरणों पुष्प चढ़ाया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्ध शिला पर शीघ्र बसूँ।।1।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध पुष्टि सम नानाविध पकवान बनाकर लाया हूं।
निज आत्म तृप्ति पाने हेतु प्रभु चरण चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्ध शिला पर शीघ्र बसूँ।।5।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध ज्ञान समज्योतिर्मय, कर्पूर जलाकर लाया हूँ।
निज ज्ञानज्योति पाने हेतु, मैं आरति करने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्ध शिला पर शीघ्र बसूँ।।6।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्धगुणों की सुरभि सदृश वर धूप सुगंधित लाया हूं।
निज आत्म सुरभि पाने हेतु अग्नी में धूप जलाया हूँ।।

श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्ध शिला पर शीघ्र बसूँ।।7।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध सुखामृत सदृश मधुर रस भरे बहुत फल लाया हूं।
निज मोक्ष सुफल हेतू भगवान्! फल आज चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्ध शिला पर शीघ्र बसूँ।।8।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध गुणों के सम अनर्घ यह अर्घ सजाकर लाया हूँ।
निज तीन रत्न पाने हेतु प्रभु चरण चढ़ाने आया हूँ।।
श्री सिद्धशिला को नित पूजूँ, सब सिद्ध अनंतानंत जजूँ।
सर्वार्थसिद्धि को पाकर के, इस सिद्ध शिला पर शीघ्र बसूँ।।9।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

सिद्ध शिला पर आज, मन से जल धारा करूँ।
पूर्ण शांति साम्राज्य, मिले त्रिजग में शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सिद्ध शिला पर आज, पुष्पांजलि मन से करूँ।
मिले सिद्धि साम्राज्य, त्रिभुवन की सुख संपदा।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

सिद्ध शिला को पूजते, सर्व कार्य हों सिद्ध।
पुष्पांजलि कर पूजते, हों प्रसन्न सब सिद्ध।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

शंभु छंद

इस जम्बूद्वीप में सात क्षेत्र में कर्म भोग भू आदिक हैं।
निज इच्छा से उपसर्गादिक से सिद्ध हुये मुनि आदिक हैं।।
जिस जिस स्थल से निर्वाण गये बस वहीं शिला पर पहुँच गये।
उन सब सिद्धों को पूजूँ मैं तेरे सब वांछित सिद्ध भये।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिकर्मभूमिभोगभूमिआदिकस्थलेभ्यःसिद्धपदप्राप्तसर्व सिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस द्वीप में सत्रह लाख बानवे हजार नब्बे नदियाँ हैं।
ये शाश्वत हैं कृत्रिम उपसागर सरवर आदिक नदियाँ हैं।।
इन नदियों से उपसर्ग आदि में बहुत मुनीश्वर मुक्त हुये।
उन सब सिद्धों को पूजूँ मैं मेरे सब इच्छित पूर्ण हुये।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिअकृत्रिमनदीकृत्रिमउपसागरनदीसरोवरतडागादिजल स्थानेभ्यःसिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस जम्बूद्वीप में मेरु आदि त्रय शत ग्यारह पर्वत मानों।
ये शाश्वत हैं कृत्रिम बहुते सम्मेदशिखर आदिक जानों।।
इनसे इन मध्य गुफाओं से मेरु की मध्य गुफा से भी।
वृक्षादिक से जो सिद्ध हुये इन नभ सिद्धों को जजूँ अभी।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिअकृत्रिमसुमेर्वादिपर्वतकृत्रिमसम्मेदशिखरादिपर्वतेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लवणोदधि से लंकादि द्वीप कूभोगभूमि बहु स्थल हैं।
वहाँ से जो मुनिवर मुक्त हुये उपसर्ग व इच्छा के वश हैं।।
इन सब सिद्धों को पूजूँ नित ये भव दुःख हरने वाले हैं।
ये स्थलसिद्ध अनंते हैं ये सब सुख करने वाले हैं।।4।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिलंकादिद्वीपकुभोगभूमिआदिस्थलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्व सिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीपों के नदी सरोवर से लवणोदधि के जल ऊपर से।
उपसर्ग आदि के कारण से बहुते मुनिवर शिवपुर पहुँचे।।

इन सब सिद्धों को पूजूँ नित ये परमानंदाबुधि में न्हावें।
ये जल से सिद्ध अनंतें हैं इनको वंदत निज सुख पावें।।5।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिलंकादिद्वीपमध्यस्थितनदी सरोवरकूपतडागादिजलसमुद्र जलस्थानेभ्यःसिद्धपदप्राप्तसर्व सिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लवणोदधि मध्य हंस आदि लंकादि द्वीप में पर्वत हैं।
इन पर से सिद्ध हुये जो मुनि उपसर्ग आदि के कारण हैं।।
लवणोदधि वेदी ऊपर से या वहीं अन्य वृक्षादि से।
जो सिद्ध हुये उनको पूजूँ जिससे निजात्म शक्ति प्रगटे।।6।।

ॐ ह्रीं लवणोदधिसंबंधिलंकादिद्वीपस्थितत्रिकूटाचलादिपर्वतेभ्यः सिद्धपद प्राप्तसर्व सिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वरद्वीप धातकी खंड द्वितिय में कर्मभूमि अरु भोगभूमि।
वन उपवन की भूआदि स्थल से सिद्ध हुये पावनभूमी।।
तीर्थंकरगण मुनिगण बहुते सब कर्म काटकर मुक्त हुये।
उपसर्ग आदि से सब थल से उन पूजत सौख्य अनंत लिये।।7।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपसंबंधिकर्मभूमिभोगभूमिआदिस्थलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्व सिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस द्वीप धातकी में कृत्रिम अकृत्रिम अगणित नदियाँ हैं।
सब आर्यखंड मैं उपसागर सरवर कूपादिक नदियाँ हैं।।
इन सबके जल के ऊपर के बहुतेक साधु गण मुक्ति गये।
चारण ऋद्धीधर या उपसर्ग आदि से हम उन जजत भये।।8।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमनदीउपसारगकूपतडागादिजल स्थानेभ्यःसिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस धातकी में दो मेरु अन्य अगणित पर्वत कूटादिक हैं।
धात्री तरु शाल्मलितरु आदि बहुविध उपवनतरु आदिक हैं।।
इन नभस्थान से सिद्ध हुये ऋद्धीबल उपसर्गादिक से।
उन सब सिद्धों को पूजूँ मैं आतमनिधि मिल जावे जिससे।।9।।

ॐ ह्रीं धातकीखंडद्वीपसंबंधिमेर्वादिपर्वतकृत्रिमहवेतकृत्रिमअकृत्रिमवृक्षादिन भस्थानेभ्यःसिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कालोदधि मध्य कुभोगभूमि से मगध आदि द्वीप थल से।
चारणऋषिया उपसर्ग आदि कारण से मुनि शिवपुर पहुँचे।।
वर द्वीप जलधि के वेदी के थल से भी जो मुनि सिद्ध हुये।
उन सब सिद्धों को पूजूँ मैं ये मेरे सिद्धि निमत्त हुये।।10।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिकुभोगभूमिआदिस्थलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कालोदधि के जल से कुभोगभूमि के नदी सरोवर से।
चारण ऋषिमुनिया उपसर्गादिक से मुनिगण शिवपुर पहुँचे।।
इन जल से मुक्ति प्राप्त मुनि को मैं नितप्रति शीश झुकाता हूँ।
इस सब सिद्धों को अर्घ चढ़ाकर शिव की आश लगाता हूँ।।11।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिकुभोगभूमिआदिमध्यस्थितनदीसरोवरजलसमुद्रजलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस सागर मध्य कुभोगभूमि मागध सुर आदि निवास बनें।
उनमें जो पर्वतकूट शिखर तरु आदि नभस्थल हों जितनें।।
उन पर से जो मुनि सिद्ध हुये उण सबको वंदन करता हूँ।
सब इष्ट वियोग अनिष्ट योग टल जावे अर्चन करता हूँ।।12।।

ॐ ह्रीं कालोदधिसंबंधिकुभोगभूमिमागधद्वीपादिमध्यस्थितपर्वतकूटवृक्षादि स्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करवर द्वीप मध्य वलयाकृति मनुजोत्तर पर्वत सोहे।
इस परे मनुषनहिं जा सकते इस तक नरलोक चित्त मोहें।
इसमें जो कर्मभूमि अरु भोगभूमि वन उपवन स्थल हैं।
उन सबसे सिद्ध हुये जिनवर मुनिगण उन सबको वंदन है।।13।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधिकर्मभूमिभोगभूमिवनउपवनवेदिकादिस्थलेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पुष्करार्ध में गंगादिक अगणित अकृत्रिम नदियाँ हैं।
कृत्रिम सरवर कूपादि तथा उपसागर आदिक नदियाँ हैं।।

इन जल से चारण बल से या उपसर्ग आदि से सिद्ध हुये।
उन सबको पूजूँ अर्घ्य चढ़ा मेरे सब मनरथ सफल हुये।।14।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधिकृत्रिमअकृत्रिमनदीसरोवरउपसागरकूपतडागादि जलेभ्यःसिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पुष्करार्ध में दो मेरु हिमवन आदिक बहुपर्वत हैं।
शाश्वत पर्वत कृत्रिम पर्वत इन गुफा कंदरा आदिक हैं।।
इन ऊपर से मुनि सिद्ध हुये पुष्कर शाल्मलि तरु आदिक से।
इन सब सिद्धों को पूजूं में रत्नत्रय निधी मिले जिससे।।15।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्धद्वीपसंबंधिमेर्वादिअकृत्रिमकृत्रिमपर्वततन्मध्यगुहादिवृक्षादि स्थानेभ्यः सिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सिद्धशिला पैंतालिस लाख सुयोजन मनुज लोक प्रम है।
सर्वत्र अनंतानंत सिद्ध से भरी अकृत्रिम अनुपम हैं।।
गणधर मुनिगण से वंद्य शिला इसको मेरा शत शत वंदन।
यह सिद्ध शिला न मिले जब तक तब तक इसको शत शत वंदन।।16।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थितपंचचत्वारिंशल्लक्षयोजनप्रमाणसिद्धशिलायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

इन ढाई द्वीप दो सागर तक पैंतालिस लाख सुयोजन हैं।
यह मनुज लोक इसमें ही मानव मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।।
इसमें थल जल पर्वत चोटी आदिक सब थल से सिद्ध हुये।
अणुमात्र जगह नहिं रिक्त यहाँ सब सिद्धों को मैं धरूँ हिये।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपद्विसमुद्रप्रमितमनुष्यलोकस्थितसर्वजलस्थपर्वतवृक्षगुहादि स्थानेभ्यःसिद्धपदप्राप्तसर्वसिद्धेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

चाल-शेर

जय जय त्रिलोक शिखर अग्र सिद्ध शिला है।
जय जय त्रिलोक शिखर अग्र मोक्ष इला है।।
जय जय अनंतानंत सिद्ध इसपे राजते।
जय जय त्रिकाल सिद्ध अनंत गुण से भासते।।1।।

सर्वार्थ सिद्धि इंद्रक के ध्वजादंड से।
बारह सुयोजनोपरि भू आठवीं लसे।।
यह पूर्व अपर दिश में सुएक राजु है।
उत्तर दखिन में कुछ कम यह सात राजु।।2।।

योजन सुआठ मोटी वायूवलय घिरी।
घरउदधि घनवायु तनुवायु से घिरी।।
इस मध्य 'ईषत्प्राग्भार' नाम क्षेत्र है।
चांदी सुवर्ण रत्नपूर्ण सिद्धक्षेत्र हैं।।3।।

उत्तान धवल छत्र सदृश सिद्धशिला ये।
योजन सुपैंतालिसलाख सिद्धशिला ये।।
ये आठ योजन मध्य में फिर अंततक घटती।
नरलोक के प्रमाण है इस क्षेत्र की परिधी[1]।।4।।

यह अर्ध चंद्रसम त्रिलोक अग्रभाग में।
अनंत अनंत सिद्ध वहाँ राजते निज में।।
तीर्थेश होके सिद्ध अनंते वहाँ तिष्ठें।
तीर्थेश बिन सिद्ध अनंतानंत वहाँ पे।।5।।

जल थल व गगन से अनंत सिद्ध हुये हैं।
सामान्यकेवलि अंतकृत केवलि भि सिद्ध हैं।।
उत्कृष्ट पांचसौ पचीस धनु शरीर से।
जघन्य साढ़े तीन हाथ देह मात्र से।।6।।

1. तिलोयपण्णत्ति, अधिकार आठवां, गाथा 652 से।

मध्यम अनेक विधि की अवगाहाना धरें।
ये सिद्ध हुये हम उन्हों को चित्त में धरें।।
जो ऊर्ध्व लोक अधोलोक तिर्यक् लोक से।
सब कर्म नाश सिद्ध हुये मर्त्यलोक से।।7।।

उत्सर्पिणी अवसर्पिणी के छहों काल से।
उपसर्ग निमित्त सिद्ध हुये नमूं भाल से।।
उपसर्ग बिना सिद्ध चौथे काल से हुये।
इन पाँच भरत पाँच ऐरावत से शिव गये।।8।।

दो ज्ञान त्रय व चार से कैवल्य पायके।
जो सिद्ध हुये हैं अनंत सौख्य पायके।।
जो साधु संहरण से सिद्ध भी अनंत हुये हैं।
बिन संहरण अनंत सिद्ध हो रहे यहाँ।।9।।

कुछ साधु समुद्घात करके सिद्ध हुये हैं।
कुछ केवली बिन समुद्घात सिद्ध हुये हैं।।
खड्गासनों से सिद्ध भी अनंत हुये हैं।
पद्मासनों से भी अनंत सिद्ध हुये हैं।।10।।

सब द्रव्य से पुंवेदी ही सिद्ध हुये हैं।
हां भाव से त्रय वेद से भी सिद्ध हुये हैं।।
प्रत्येक बुद्ध स्वयं बुद्ध सिद्ध हुये हैं।
बोधित प्रबुद्ध भी अनंत सिद्ध हुये हैं।।11।।

सब आठ कर्म नाश करके सिद्ध हुये हैं।
वे इस सौ अड़तालीस प्रकृति नष्ट किये हैं।।
सब सिद्ध अंतिम देह से कुछ न्यून कहे हैं।
इस विध सो अन्त्यदेह के आकार रहे हैं।।12।।

ये सर्व सिद्ध गुण अनंतानंत धारते।
ये सर्व सिद्ध सुख अनंतानंत धारते।।

ये सर्व सिद्ध जन्म मरण शून्य हो गये।
ये सर्व सिद्ध ज्ञान गुण से पूर्ण हो गये।।13।।

इन ढाई द्वीप से अनंत सिद्ध हुये हैं।
दो ही समुद्र से अनंत सिद्ध हुये हैं।।
नरलोक में सब एक सौ सत्तर हैं कर्मभू।
इनमें जनम के प्राप्त करें मनुज मुक्तिभू।।14।।

नरलोक के अणुमात्र भी ना रिक्त थान है।
जहाँ से न हुये सिद्ध सब निर्वाण स्थान है।।
मेरु की चूलिका से भी सिद्ध हुये हैं।
वे मेरु की गुफा से ही सिद्ध हो हुये हैं।।15।।

अनंतानंत सिद्धों की वंदना करूँ।
मैं नित अनंतानंत बार वंदना करूँ।।
श्री सिद्धशिला को नमूँ मैं भक्ति भाव से।
ये सिद्धशिला प्राप्त करूँ भक्ति नाव से।।16।।

दोहा

नमूँ सिद्ध परमात्मा, सिद्धशिला मुनिवंद्य।
ज्ञानमती गुण पूर्णकर, पाऊँ परमानंद।।17।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकशिखरस्थितसिद्धशिलोपरिविराजमानअनंतानंतसिद्धेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-31

कृत्रिम जिनालय पूजा

अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद

ढाई द्वीप में पाँच भरत हैं पाँच कहे ऐरावत।
पाँच महाविदेह क्षेत्रों में कर्मभूमि है शाश्वत।।
सुर नर निर्मापित बहु पूजित मुनि गण से नित वंदित।
जिनप्रतिमा जिनमंदिर अगणित थापूँ यहाँ जजूँ नित।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्ब समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथअष्टक-भुजंगप्रयात छंद –

मुनीचित्त सम नीर उज्जवल लिया है।
प्रभू पाद में तीन धारा किया है।।
जजूँ जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूँ जैनप्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूरादि से मिश्र चंदन घिसाया।
प्रभूपाद अरविंद में मैं चढ़ाया।।
जजूँ जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूँ जैनप्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धुले श्वेततंदुल धरूँ पुंज आगे।
मिले सौख्य अक्षय सभी दुःख भागे।।
जजूँ जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूँ जैनप्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं।।3।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जुही मोगरा केवड़ा पुष्प लाऊँ।
प्रभू को चढ़ाते निजी सौख्य पाऊँ।।
जजूँ जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूँ जैनप्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ खीर मोदक इमरती चढ़ाऊँ।
क्षुधा व्याधि हरके अतुल तृप्ति पाऊँ।।
जजूँ जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूँ जैनप्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं।।5।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणीदीप को ज्योति तम को हरे हैं।
करूँ आरती ज्ञानज्योती भरे है।।
जजूँ जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूँ जैनप्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं।।6।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांगी सुरभि धूप खेऊँ अगनि में।
जलें कर्म वैरी मिले शांति चित्त में।।

जजूँ जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूँ जैनप्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं।।7।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंनास नींबू बिजौरा चढ़ाऊँ।
महामोक्ष की आश से शीश नाऊँ।।
जजूँ जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूँ जैनप्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं।।8।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

रजतपुष्प ले अर्घ अर्पण करूँ मैं।
प्रभो! रत्नत्रय हेतु अर्चन करूँ मैं।।
जजूँ जैनमंदिर त्रिकालीक जो हैं।
नमूँ जैनप्रतिमा जिनेश्वर सदृश हैं।।9।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

जिनप्रतिमा जिनरूप, चरणों में धारा करूँ।
मिले स्वात्म चिद्रूप, शांतीधारा शिव करे।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हरसिंगार गुलाब, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।
मिले स्वात्मसुख लाभ, चहुंगति भ्रमण विनाश हो।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

दोहा

गणधर मुनिगण इंद्रगण, नित्य नमें नतशीश।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, नमूँ नमूँ जगदीश।।1।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

नरेन्द्र छंद

जंबूद्वीप के दक्षिण दिश में, भरत क्षेत्र सुखकारी।
छह खंडों में आर्यखंड इक कर्मभूमि अति प्यारी।।
इंद्र चक्रवर्ती मानव गण जिनमंदिर बनवाते।
उनकी जिनप्रतिमा को पूजत कर्मशत्रु भग जाते।।1।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप के उत्तर दिश में, ऐरावत अति सोहे।
छहखंडों में आर्यखंड इक कर्मभूमि जहाँ होहैं।।
इंद्र चक्रवर्ती मानव गण जिनमंदिर बनवाते।
उनकी जिनप्रतिमा को पूजत कर्मशत्रु भग जाते।।2।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जम्बूद्वीप के पूर्व अपर में क्षेत्र विदेह सुहावे।
बत्तिस कर्मभूमि में छह खंड आर्यखंड मन भावें।।
इंद्र चक्रवर्ती मानव गण जिनमंदिर बनवाते।
उनकी जिनप्रतिमा को पूजत कर्मशत्रु भग जाते।।3।।

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपसंबंधिमहाविदेहक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वधातकी में दक्षिणदिश भरतक्षेत्र छह खंडा।
आर्यखंड में चौथे युग में तीर्थंकर सुखकंदा।।
इंद्र चक्रवर्ती मानव गण जिनमंदिर बनवाते।
उनकी जिनप्रतिमा को पूजत कर्मशत्रु भग जाते।।4।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी में उत्तरदिश ऐरावत शुभ सोहे।
छह खंडों मधि आर्यखंड में कर्मभूमि मन मोहे।।

इंद्र चक्रवर्ती मानव गण जिनमंदिर बनवाते।
उनकी जिनप्रतिमा को पूजत कर्मशत्रु भग जाते।।5।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व धातकी के पूर्वापर क्षेत्र विदेह सुहावे।
इसमें बत्तिस देश सभी में आर्यखंड मन भावे।।
इंद्र चक्रवर्ती मानव गण जिनमंदिर बनवाते।
उनकी जिनप्रतिमा को पूजत कर्मशत्रु भग जाते।।6।।

ॐ ह्रीं पूर्वधातकीखंडद्वीपसंबंधिमहाविदेहक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरधातकी में दक्षिणदिश, भरतक्षेत्र छहखंडा।
आर्यखंड में छहपरिवर्तन कर्मभूमि सुखकंदा।।
इंद्र चक्रवर्ती मानव गण जिनमंदिर बनवाते।
उनकी जिनप्रतिमा को पूजत कर्मशत्रु भग जाते।।7।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरधातकी में उत्तर दिश, ऐरावत शुभक्षेत्रा।
छहखंडों मधि आर्यखंड में तृषित सुरों के नेत्रा।।
इंद्र चक्रवर्ती मानव गण जिनमंदिर बनवाते।
उनकी जिनप्रतिमा को पूजत कर्मशत्रु भग जाते।।8।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपरधातकी में पूर्वापर महाविदेह कहावे।
उसमें बत्तिस देश सभी में कर्मभूमि मन भावे।।
इंद्र चक्रवर्ती मानव गण जिनमंदिर बनवाते।
उनकी जिनप्रतिमा को पूजत कर्मशत्रु भग जाते।।9।।

ॐ ह्रीं पश्चिमधातकीखंडद्वीपसंबंधिमहाविदेहक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मितसर्वजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छंद

वर पूर्वपुष्करद्वीप में दक्षिण दिशी शुभ भरत है।
इसमें छहों खंड मध्य में इक आर्यखंड सुलसंत है।।
सुर इंद्र चक्री मनुजगण जिनधाम बनवाते सदा।
उनमें जिनेश्वरमूर्तियाँ वंदूँ इन्हें ये सौख्यदा।।10।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पूर्वपुष्करद्वीप में उत्तरदिशी ऐरावता।
छहखंड में इक आर्य है नर जन्म लेते सासता।।
सुर इंद्र चक्री मनुजगण जिनधाम बनवाते सदा।
उनमें जिनेश्वरमूर्तियाँ वंदूँ इन्हें ये सौख्यदा।।11।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पूर्वपुष्करद्वीप में पूरब व पश्चिम दिक्क में।
बत्तीस देश विदेह में षट्खंड मध्ये आर्य में।।
सुर इंद्र चक्री मनुजगण जिनधाम बनवाते सदा।
उनमें जिनेश्वरमूर्तियाँ वंदूँ इन्हें ये सौख्यदा।।12।।

ॐ ह्रीं पूर्वपुष्करार्धद्वीपसंबंधिपूर्वापरविदेहक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम सुपुष्करद्वीप में दक्षिण दिशी शुभ भरत है।
इस मध्य आरजखंड में जब कर्मभू वर्तत है।।
सुर इंद्र चक्री मनुजगण जिनधाम बनवाते सदा।
उनमें जिनेश्वरमूर्तियाँ वंदूँ इन्हें ये सौख्यदा।।13।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिभरतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम सुपुष्करद्वीप में उत्तरदिशी ऐरावता।
इस मध्य आरजखंड में जब कर्मभू हो शर्मदा[1]।।

1. सुख देने वाली।

सुर इंद्र चक्री मनुजगण जिनधाम बनवाते सदा।
उनमें जिनेश्वरमूर्तियाँ वंदूँ इन्हें ये सौख्यदा।।14।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिऐरावतक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालयजिन बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पश्चिम सुपुष्करद्वीप में पूरब अपर सुविदेह हैं।
उनमें सदा है कर्मभूमी नर बनें गतदेह हैं।।
सुर इंद्र चक्री मनुजगण जिनधाम बनवाते सदा।
उनमें जिनेश्वरमूर्तियाँ वंदूँ इन्हें ये सौख्यदा।।15।।

ॐ ह्रीं पश्चिमपुष्करार्धद्वीपसंबंधिमहाविदेहक्षेत्रस्थसुरनरनिर्मापितसर्वजिनालय जिनबिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

इन ढाई द्वीपों में कही हैं कर्मभू पंद्रह शुभा।
इन मध्य आरज खंड में जिनधर्म भास्कर की प्रभा।।
कृत्रिम जिनालय अगणिते मणिरत्न पार्थिव हैं यहाँ।
मैं जजूँ अर्घ चढ़ायके देवें अतुल सुख निधि यहाँ।।1।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिमध्यइंद्रचक्रवर्तिमनुष्यादिनिर्मापित मणिरत्नस्वर्णपार्थिवघटितत्रैकालिक सर्वजिनालयेभ्यःपूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन ढाई द्वीपों के जिनालय सुर मनुजकृत अगणिते।
इन मध्य जिनवर बिंब राजें रत्नमणि के निर्मिते।।
चांदी कनक पाषाण आदि धातु की जिनमूर्तियाँ।
मैं नमूँ शीश नमायके ये भरें आत्म विभूतियाँ।।2।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिमध्यसुरनरनिर्मापितजिनालयमध्य-विराजमानपर्वतदीगुहादिविराजमानमणिरत्नस्वर्णरजतअन्यधातुपाषाणघटित सर्वजिनप्रतिमाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजिनालयजिनबिम्बेभ्यो नमः।

जयमाला

शंभु छंद

जय जय अर्हंतों की प्रतिमा, जय जय सिद्धों की प्रतिमायें।
जय जय आचार्यों की प्रतिमा, जय उपाध्याय की प्रतिमायें।।
जय जय साधूगण की प्रतिमा, जय जय जय जिनवर प्रतिमायें।
जय जय तीर्थंकर की प्रतिमा, इन वंदत आत्म निधी पायें।।1।।

इस युग में सुरपति के आकर सब प्रथम अयोध्या पुरी रची।
इस मध्य जैनमंदिर रचके चहुँदिश में जिन रचना की।।
भरतेश्वर ने भि अयोध्या में बहुते जिनमंदिर बनवाये।
कैलाशगिरि पर त्रय चौबीसि बहत्तर मंदिर बनवाये।।2।।

हरिषेण चक्रपति ने रत्नों के अगणित मंदिर बनवाये।
श्रीरामचंद ने कुंथलगिरि पर बहुते मंदिर चिनवाये।।
युग आदी से अब तक लेकर जिनगृह असंख्य ही माने हैं।
उन सबकी जिनप्रतिमा पूजूँ ये भव भव के दुख हाने हैं।।3।।

जय पांच भरत के जिनमंदिर जय पाँच ऐरावत के मंदिर।
जय पाँच विदेहों के मंदिर जय मुनिगण वंदित जिनमंदिर।।
इन पाँच विदेहों के सब इक सौ साठ देश कहलाते हैं।
पण भरत पांच ऐरावत मिल इक सौ सत्तर बन जाते हैं।।4।।

इनमें भरतैरावत दश में षट् काल परावर्तन होते।
चौथे व पांचवें कालों में जिनमंदिर भविजन मल धोते।।
सब इक सौ आठ विदेहों में शाश्वत ही कर्मभूमि रहती।
जिनमंदिर वहाँ निरतंर हैं जिनधर्म ध्वजा वहां फरहरती।।5।।

सुरगण भी कभी कभी जिनगृह जिनप्रतिमा की रचना करते।
नरपति खगपति साधारण नर जिनगृह को निर्मापित करते।।
माणिक्य नीलमणि गरुत्मणी रत्नों की प्रतिमा बनवाते।
सोना चांदी पीतल तांबा पाषाण आदि की बनवाते।।6।।

फिर पंच कल्याण प्रतिष्ठाकर मूर्ती को पूज्य बनाते हैं।
जिनवर के गुण आरोपण कर वर प्राण प्रतिष्ठा करते हैं।।

ये मूर्ति अचेतन होकर भी चेतन भगवान बनें तब ही।
निज भक्तों को वांछित देकर चेतन भगवान करें तब ही।।7।।

अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु पांच परमेष्ठी हैं।
जिनधर्म जिनागम जिनप्रतिमा जिनगृह मिल नवों देवता हैं।।
पांचों परमेष्ठी नवदेवों की मूर्ति मंदिरों में सोहें।।
माँ सरस्वती की मूर्ति मुनी गणधर की प्रतिमा मन मोहें।।8।।

निजमूर्ति सहस्रकूट मंदिर अरुतीस चौबीसी प्रतिमायें।
महाव्रत के पवित्र आर्यिकाओं की मूर्ति नमत ही सुख पाये।।
जिनशासन यक्ष यक्षिणी की मूर्ती जिनगृह में रहती हैं।
दिक्पाल क्षेत्रपालों की भी मूर्ती विघ्नों को हरती हैं।।9।।

इन पंद्रह कर्मभूमियों के सब जिनमंदिर मैं नमूँ नमूँ।
सब जिनवर की प्रतिमाओं को, मैं नित्य नमूँ मैं नित्य नमूँ।।
सब पंच परमगुरु आदि बिंब जितने भी कृत्रिम इस जग में।
मैं नमूँ नमूँ नित भक्ती से मुझ मनरथ पूरे हों क्षण में।।10।।

दोहा

जितने जिनमंदिर यहाँ, जिनप्रतिमा सुरवंद्य।
जजत स्वात्मसुख प्राप्त हो, ज्ञानमती आनंद।।11।।

ॐ ह्रीं सार्धद्वयद्वीपसंबंधिपंचदशकर्मभूमिस्थितसर्वकृत्रिमजिनालयजिनबिम्बेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं.-32

भगवान् बाहुबली पूजा

–स्थापना-शंभु छंद –

वृषभेश्वर के सुत बाहुबली, प्रभु कामदेव तनु सुन्दर हैं।
मुनिगण भी ध्यान करें रुचि से, नित जजते चरण पुरंदर हैं।।
निज आतमरस के आस्वादी, जिनका नित वंदन करते हैं।
उन प्रभु का हम आह्वानन कर, भक्ती से अर्चन करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –शंभु छंद –

भव भव में जल पीते-पीते, अब तब नहिं तृषा समाप्त हुई।
इस हेतू जिनपद पूजूँ मैं, जल से यह इच्छा आज हुई।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन धन कुटुम्ब की चाह दाह, नितप्रति मन को संतप्त करे।
चंदन से जिनपद चर्चत ही, मन को अतिशय संतृप्त करे।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम सुख को कर्मों ने, बस खंड-खंड कर दुःख दिया।
निज सुख अखंड मिल जावे बस, उज्ज्वल अक्षत से पुंज किया।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कामदेव होकर के भी, अरि कामदेव को भस्म किया।
इस हेतु सुगंधित पुष्प बहुत, तुम चरणकमल में चढ़ा दिया।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु एक वर्ष उपवास किया, हुई कायबली ऋद्धी जिससे।
मेरा क्षुध रोग विनाश करो, पक्वान्न चढ़ाऊँ बहुविध के।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर शिखा जगमग करती, बाहर में ही उद्योत करे।
दीपक से तुम आरति करके, अंतर में ज्ञान उद्योत करे।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप सुगंधित खे करके, संपूर्ण पाप को भस्म करें।
निज गुण समूह की प्राप्ति हेतु, जिन पद पंकज की भक्ति करें।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवांछित फल पाने हेतू, बहुतेक देव का शरण लिया।
नहिं मिला श्रेष्ठ फल अब तक भी, इस हेतु सरस फल अर्प दिया।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन तंदुल पुष्प चरू, दीपक वर धूप फलों से युत।
क्षायिक लब्धी हित "ज्ञानमती", यह अर्घ समर्पण करूँ सतत।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

शांतीधारा मैं करूँ, बाहुबली पदपद्म।
आत्यंतिक सुख शांतिमय, मिले निजातम सद्म।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जुही चमेली केतकी, चंपक हरसिंगार।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जयमाला

–शंभु छंद –

जय जय श्रीबाहुबली भगवन्, जय जय त्रिभुवन के शिखामणी।
जय जय महिमाशाली अनुपम, जय जय त्रिभुवन के विभामणी।।
जय जय अनंत गुणमणिभूषण, जय भव्य कमल बोधन भास्कर।
जय जय अनंत दृग ज्ञानरूप, जय जय अनंत सुख रत्नाकर।।1।।

तुम नेत्र युद्ध जल मल्ल युद्ध, में चक्रवर्ति को जीत लिया।
चक्री ने छोड़ा चक्ररत्न, उसने भी तुम पद शरण लिया।।
फिर हो विरक्त भरताधिप की, अनुमति ले जिनदीक्षा लेकर।
प्रभु एक वर्ष का योग लिया, ध्यानस्थ खड़े निश्चल होकर।।2।।

निःशल्य ध्यान का ही प्रभाव, सर्वावधिज्ञान प्रकाश मिला।
मनपर्यय विपुलमती ऋद्धी से, अतिशय ज्ञान प्रभात खिला।।

तप बल से अणिमा महिमादिक, विक्रिया ऋद्धियाँ प्रकट हुईं।
आमौषधि सर्वौषधि आदिक, औषधि ऋद्धी भी प्रकट हुईं।।3।।

क्षीरस्रावी घृत मधुर अमृत, स्रावी रस ऋद्धी प्रगटी थीं।
अक्षीण महानस आलय क्या, संपूर्ण ऋद्धियाँ प्रकटी थीं।।
वे उग्र-उग्र तप करते थे, फिर भी दीप्ती से दीप्यमान।
वे तप्त घोर औ महाघोर तप, तपते फिर भी शक्तिमान।।4।।

इन ऋद्धी से नहिं लाभ उन्हें, फिर भी इंद्रादिक नमते थे।
खग आकर प्रभु की ऋद्धी से, निज रोग निवारण करते थे।।
सर्पों ने वामी बना लिया, प्रभु के तन पर चढ़ते रहते।
बिच्छू आदिक बहु जंतु वहाँ, प्रभु के तन पर क्रीड़ा करते।।5।।

बासंती बेल चढ़ी तन पर, पुष्पों की वर्षा करती थीं।
मरकत मणिसम सुंदर तन पर, बेलें अति मनहर दिखती थीं।।
सब जात विरोधी जीव वहाँ, आपस में प्रेम किया करते।
हाथी नलिनीदल में जल ला, प्रभु पद में चढ़ा दिया करते।।6।।

प्रभु एक वर्ष उपवास पूर्ण कर, शुक्लध्यान के सम्मुख थे।
उस ही क्षण भरताधिप ने आ, पूजा की अतिशय भक्ती से।।
होता विकल्प यह कभी-कभी, मुझसे चक्री को क्लेश हुआ।
इस हेतु अपेक्षा उनकी थी, आते ही केवलज्ञान हुआ।।7।।

तत्क्षण सुरगण ने गंधकुटी, रच करके अतिशय पूजा की।
भरतेश्वर भक्ती में विभोर, बहुविध रत्नों से पूजा की।।
प्रभु ने दिव्यध्वनि से जग को, उपदेशा पुण्य विहार किया।
फिर शेष कर्म का नाश किया, औ मुक्ती का साम्राज्य लिया।।8।।

–दोहा –

धन्य धन्य बाहूबली, योगचक्रेश्वर मान्य।
पूर्ण 'ज्ञानमति' हेतु मैं, नमूँ नमूँ जग मान्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

श्रीबाहुबली विधान ये, जो भव्य श्रद्धा से करें।
वे रोग शोक दरिद्र दुखहर, सर्वसुख संपति भरें।।
मनबल वचनबल प्राप्त कर, तनु में अतुलशक्ती धरें।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्यकर, फिर सिद्धिकन्या वश करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

त्रैलोक्य जिनचैत्य वंदना

–बड़ी जयमाला –

चाल-शेर

जैवंत अनादी अनंत जैनमूर्तियाँ।
जैवंत धर्ममूर्तिमंत जैनमूर्तियाँ।।
जैवंत मणिमयादि अकृत्रिम जिनालया।
जैवंत सर्वसौख्य के आलय जिनालया।।1।।

जैवंत भवनवासि के जिनधाम सासते।
जो सातकोटि, लाख बाहत्तर विभासते।।
जैवंत मध्यलोक के शाश्वत जिनालया।
जैवंत पंचमेरु के अस्सी जिनालया।।2।।

जैवंत जंबू आदि तरु के दश जिनालया।
जैवंत हस्तिदंत[1] बीस के जिनालया।।
जैवंत कुलगिरी के तीस जैन आलया।
जैवंत नगवक्षार के अस्सी जिनालया।।3।।

जय रजतगिरि के एकसौ सत्तर जिनालया।
जैवंत इष्वाकार चार के जिनालया।।
जैवंत मानुषोत्तर के चउ जिनालया।
जैवंत नंदीश्वर के बावन जिनालया।।4।।

जैवंत कुंडलाद्रि के भी चउ जिनालया।
जैवंत रुचकपर्वत के चउ जिनालया।।
जैवंत चार शतक अट्ठावन जिनालया।
जैवंत मध्यलोक के ये सब जिनालया।।5।।

जैवंत व्यंतरों के असख्ये जिनालया।
जैवंत ज्योतिषों के असंख्ये जिनालया।।

वैमानिकों के जैनभवन लाख चुरासी।
सत्यानवे हजार हैं तेईस विभासी।।6।।

जैवंत तीनलोक के शाश्वत जिनालया।
जैवंत जैनधाम सर्वसंपदालया।
ये आठ कोटि छप्पन सुलाख बताये।
सत्यानवे सहस चउसौ इक्यासि गाये।।7।।

गणधर मुनीद्रवृन्द वंद्य श्रीजिनालया।
शिवकन्यका के स्वयंवर मंडप जिनालया।।
प्रत्येक जिनालय में मूर्ति इकसौ आठ हैं।
ये पाँच सौ धनुष उतुंग मुक्तिनाथ हैं।।8।।

नवसौ पचीस कोटि और लाख त्रेपना।
सत्ताइस सहस नवसौ अड़तलिसे भणा।।
शाश्वत जिनेद्रबिंब इतने जान लीजिये।
इनको सदैव शिरझुका प्रणाम कीजिये।।9।।

व्यंतर व ज्योतिषी के जिनालय असंख्य हैं।
उनकी असंख्य मूर्तियों को नित्य नमन है।।
इस मर्त्यलोक में बहुत कृत्रिम जिनालया।
उनको नमूँ मैं बार बार सुख सुधालया।।10।।

मणि स्वर्ण रजत दृषद् घटित जैनमूर्तियाँ।
ये प्राणप्रतिष्ठा से साधुवंद्य मूर्तियाँ।।
इन मूर्तियों की बारबार वंदना करूँ।
नित भाव भक्ति से प्रभू की अर्चना करूँ।।11।।

अर्हंत सिद्ध सूरि उपाध्याय साधु जी।
जैवंत पंच परमगुरु तीर्थनाथ जी।।
जैवंत जैनधर्म जिनागम महान् हैं।
जैवंत जैनमूर्ति जिनालय प्रधान हैं।।12।।

जैवंत महावीर वीर सन्मती प्रभो।
जैवंत हो गौतमगुरु जिनभक्तिरत विभो।।
जैवंत जैनशासन की वंदना करूँ।
निज 'ज्ञानमती' ज्योति पा मुक्त्यंगना वरूँ।।13।।

दोहा

जय जय त्रिभुवन जिनभवन, जिनप्रतिमा अभिराम।
शीश नमाकर नित करूँ, कोटीकोटि प्रणाम।।14।।

ॐ ह्रीं त्रिलोकसंबंधिकृत्रिमाकृत्रिमसर्वजिनालयजिनबिंबअर्हंतसिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुकेवलिप्रज्ञप्तधर्मजिनवाणीतीर्थक्षेत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छंद

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, त्रैलोक्य जिन पूजा करें।
सब रोग शोक विनाश कर, भवसिंधु जल सूखा करें।।
चिंतामणी चिन्मूर्ति को, वे स्वयं में प्रगटित करें।
''सुज्ञानमति'' रविकिरण से, त्रिभुवन कमल विकसित करें।।

इत्याशीर्वादः।

त्रैलोक्य विधान प्रशस्ति

–दोहा –

जिनपति जिनवरबिंबजिन, धाम कल्याणस्थान।
नमूँ नमूँ नित भाव से, मिले निजात्मस्थान।।1।।

मूलसंघ में कुंदकुंद, आम्नाय विख्यात।
गच्छ सरस्वति मानय गण-बलात्कार प्रख्यात।।2।।

चक्रवर्ति चारित्र के, शांतिसागराचार्य।
पट्टशिष्य इनके प्रथित, वीरसागराचार्य।।3।।

इनकी शिष्या ज्ञानमति, मैं आर्यिका प्रसिद्ध।
''इंद्रध्वजविधान'' मुझ रचना सर्वप्रसिद्ध।।4।।

अष्टसहस्री आदि का, भाषा में अनुवाद।
नियमसार टीका रची, प्रगट जहाँ स्याद्वाद।।5।।

जिनप्रतिमा की भक्ति से, श्री त्रैलोक्य विधान।
हस्तिनागपुर में रचा, स्वात्महितंकर जान।।6।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, तेरह दिन शशिवार।
पौषशुक्ल तेरस तिथी, यह विधान सुखकार।।7।।

त्रिभुवन शाश्वत जिनभवन, जिनभक्ती मन धार।
लघु ''त्रिलोक विधान'' यह, पूर्ण किया सुखकार।।8।।

जब तक रवि शशि अभ्र में, विचरें करें प्रकाश।
तब तक यहाँ विधान यह, भविमन करे निवास।।9।।

भवि त्रैलोक्य विधान यह, करो करावो नित्य।
भक्ति गीत संगीत कर, फल पावो सुअचिन्त्य।।10।।

रत्नत्रय निधि पूर्ण हो, गुणमणिछवि प्रद्योत।
''ज्ञानमती'' ज्योती जगे, हो जग में उद्योत।।11।।

इति त्रैलोक्य विधान प्रशस्तिः संपूर्णा।